इँगलैंड का इतिहास

[द्वितीय भाग]

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(माधुरी-संपादक)

पुस्तक-सूची

गंगा-पुस्तकमाला का आठवाँ पुष्प

इँगलैंड का इतिहास

[द्वितीय भाग]

प्रणेता

(डॉक्टर) प्राणनाथ विद्यालंकार

जिससे होता चित्त में स्वाधीनता-विकास,
पढ़िए-सुनिए धन्य वह देशोन्नति-इतिहास ।
(संपादक)

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
२६-३०, अमीनाबाद-पार्क
लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द २)] सं० १९८२ वि० [सादी १॥)

प्रकाशक
श्रीछोटेलाल भार्गव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीकेसरीदास सेठ
नवलकिशोर-प्रेस
लखनऊ

वक्तव्य

प्रिय पाठक,

इँगलैंड के इतिहास का यह दूसरा भाग भी आज सेवा में उपस्थित किया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि यह भाग प्रकाशित होने में बड़ी देर हो गई है—और इसके लिये उलाहने भी हमारे पास कम नहीं आए—परंतु इसमें हमारा कुछ विशेष दोष नहीं। इस इतिहास के संशोधन और संपादन में बहुत अधिक समय हमको लगाना पड़ा है, और फिर भी हमारे मन के माफ़िक़ सर्वांगसुंदर, सर्वथा शुद्ध संस्करण नहीं प्रकाशित हो सका। आशा है, इस बार जो कुछ छोटी-मोटी त्रुटियाँ रह भी गई हैं, वे अगले संस्करण में बिलकुल न रह जायँगी। एक और त्रुटि यह रह गई है कि इसका छपना बीच-बीच में अनिश्चित समय तक स्थगित रखने के लिये विवश होने के कारण कुछ शब्द, भिन्न-भिन्न स्थलों पर, भिन्न-भिन्न रूप में छप गए हैं। यह अनिच्छा-कृत अल्प त्रुटि भी अब की सुधार दी जायगी। इन त्रुटियों का उल्लेख हमने इसीलिये स्वयं कर दिया है कि समालोचक सज्जनों को व्यर्थ इनके वर्णन में अपना अमूल्य समय नष्ट न करना पड़े।

इन क्षुद्र-क्षुद्र त्रुटियों के रह जाने पर भी इस इतिहास की उपयोगिता अथवा असाधारणता अणु-मात्र भी कम नहीं होती। हिंदी-संसार में इसके प्रथम भाग का यथेष्ट आदर और प्रचार हो चुका है, और यही इसकी उत्तमता अथवा उपयोगिता का प्रबल प्रमाण है। प्रथम भाग साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग की मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में स्वीकृत हो चुका है। आशा है, यह दूसरा भाग भी हिंदी-

साहित्य में अपना उचित स्थान ग्रहण करेगा। हिंदी-साहित्य में ऐसे इतिहास आदि के सर्वांग-पूर्ण संपूर्ण सुलिखित ग्रंथों का अभी अभाव ही है, जिन्हें उच्च कक्षाओं के लिये पाठ्य-ग्रंथ बनाया जा सके। इसी अभाव की आंशिक पूर्ति करने के लिये हमने यह इतिहास प्रकाशित किया है। इसका यथेष्ट आदर और प्रचार अगर होगा, तो उससे उत्साहित होकर हम अन्य इसी कोटि के ग्रंथ लिखाकर प्रकाशित करने के लिये उद्योग करेंगे। इस पुस्तक में काग़ज़ अच्छा लगाया गया है, छपाई और शुद्धता पर भी यथेष्ट ध्यान दिया गया है, जिसके देखते मूल्य अधिक नहीं रक्खा गया।

१।६।२९ } संपादक

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

षष्ठ परिच्छेद

सप्तम परिच्छेद

अष्टम परिच्छेद

द्वितीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद

द्वितीय परिच्छेद

तृतीय परिच्छेद

चतुर्थ परिच्छेद

पंचम परिच्छेद

षष्ठ परिच्छेद

तृतीय अध्याय

पंचम परिच्छेद

हिंदी-प्रेमियों से

आवश्यक अपील

माननीय महाशय,

हमारी गंगा-पुस्तकमाला को राष्ट्रभाषा हिंदी की सफलता-पूर्वक सेवा करते हुए आज ६-७ वर्ष हो चुके हैं। आप-जैसे गुण-ग्राहकों ने इसकी ख़ूब ही क़द्र की है। इसका ज्वलंत प्रमाण यह है कि जितने स्थायी ग्राहक इस माला के हैं, उतने आज तक किसी भी माला के नहीं हुए। इसकी ग्राहक-संख्या २,००० के ऊपर पहुँच चुकी है, तो भी अभी इसके और अधिक प्रचार की ज़रूरत है—सुचारु रूप से 'माला' को चलाते रहने के लिये हमें कम-से-कम २,००० ही स्थायी ग्राहक और चाहिए। यदि हिंदी-हितैषी, गुणज्ञ, सहृदय सज्जन ज़रा-सी कोशिश करें, तो उनके लिये गंगा-पुस्तकमाला के २,००० स्थायी ग्राहक और जुटा देना कुछ कठिन काम नहीं। हमारी 'माधुरी' के तो वे १०,००० से भी ऊपर ग्राहक बना चुके हैं। अतएव कृपा करके आप स्वयं स्थायी ग्राहक बनें, और अपने इष्ट-मित्रों को भी आग्रह-पूर्वक बनावें। इस "अपील" के साथ लगा हुआ "आदेश-पत्र" भरकर भेजें और भिजवाएँ। आपकी यह ज़रा-सी सहायता हमारे सभी मनोरथ सिद्ध कर देगी, और इसके लिये हम आपके सदा कृतज्ञ रहेंगे।

अस्तु। हमने तो अपना कर्तव्य पालन कर दिया। अब देखें, हमारी इस "आवश्यक अपील" का आपके ऊपर भी कुछ असर होता है या नहीं। हम उत्सुकता के साथ आपकी सहायता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आइए-आइए, हिंदी-माता की सेवा में हमारा हाथ बँटाइए, और इस प्रकार स्वयं भी पुण्य-लाभ कीजिए।

निवेदक—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला

के

स्थायी ग्राहकों के लिये नियम

(१) स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ ॥) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले दाम आदि का "सूचना-पत्र" * भेज देने के बाद—स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन काटकर वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ५-६ रुपए की ४-५ पुस्तकें एकसाथ भेजी जाती हैं, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें माला से अलग निकलती हैं, उन पर भी स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

(४) स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें; जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। वे चाहे जिस पुस्तक की चाहे जितनी प्रतियाँ, चाहे जब, ऊपर-लिखे कमीशन पर मँगा सकते हैं।

(५) बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकों को ‑) रुपया कमीशन पर मिलती हैं।

(६) स्थायी ग्राहक की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उनको ही देना पड़ता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब] न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तकें मँगानी हों, तो "सूचना-पत्र" मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए; जिसमें इच्छानुसार काररवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

इँगलैंड का इतिहास

[द्वितीय भाग]

प्रथम अध्याय

स्टुअर्ट वंश का राज्य

प्रथम परिच्छेद

जेम्स प्रथम और दैवी अधिकार (Divine Right)

(१६०३—१६२५)

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६०३	जेम्स प्रथम का राज्याभिषेक
१६०५	बारूद-षड्यंत्र (Gunpowder Plot)
१६०७	वर्जीनिया में अँगरेज़ी उपनिवेशों की स्थापना
१६१०	अल्स्टर में अँगरेज़ों का उपनिवेश और जेम्स प्रथम का पार्लियामेंट का विसर्जन
१६१४	अडल्ड पार्लियामेंट (The Addled Parliament)
१६१८	रैले को फाँसी और तीस साल का युद्ध
१६२१	बेकन का अधःपतन
१६२४	स्पेन के साथ युद्ध
१६२५	जेम्स प्रथम की मृत्यु

(१) उत्पात का स्रोत

स्कॉटलैंड के राजा जेम्स छठे के इँगलिस्तान के राज्य पर आने

से इँगलैंड के इतिहास ने नया रूप धारण किया। स्कॉटलैंड का छठा जेम्स इँगलैंड के इतिहास में प्रथम जेम्स के नाम से लिखा जाता है। जेम्स का यह विश्वास था कि एलिज़बेथ के बाद इँगलिस्तान के राज्य का वंशपरंपरागत यथार्थ उत्तराधिकारी मैं ही हूँ। वह राजा का दैवी अधिकार मानता था, अर्थात् कोई जाति किसी व्यक्ति को राजा नहीं बना सकती; राजा तो ईश्वर ही बनाता है। यह ईश्वर-कृत नियम है कि देश के राजवंश में उत्पन्न हुआ राजकुमार ही उक्त जाति का राजा बने। अँगरेज़-जाति राजा के दैवी अधिकार-संबंधी इस सिद्धांत को न मानती थी। वह राजा को नियत करना अपना अधिकार समझती थी। इस तरह अँगरेज़-जाति और जेम्स की सम्मति में भेद होने के कारण दोनों में झगड़ा होना स्वाभाविक ही था। यह उत्पात तब तक रुका रहा, जब तक जेम्स पार्लिया-मेंट के नियमों के अनुसार ही अँगरेज़ों पर शासन करता रहा। इसमें संदेह नहीं कि सबसे पहले जेम्स ने ही दैवी अधिकार-रूपी उत्पात के बीज को इँगलैंड में बोया। आगे चलकर इसका भयंकर परिणाम यह हुआ कि उसके उत्तराधिकारी प्रथम चार्ल्स को अँगरेज़-जाति ने सूली पर चढ़ा दिया, और कुछ समय के लिये एक-सत्तात्मक राज्य को उखाड़कर प्रजा-सत्तात्मक राज्य स्थापित कर दिया।

सबसे पहले दो बातों में अँगरेज़-जाति और जेम्स की टक्कर हुई। पहला विषय था धर्म, और दूसरा राज्य-कर। प्यूरिटनिज़्म और कर-संबंधी विरोध जेम्स की विदेशी नीति के कारण उत्पन्न हुआ। इन दोनों बातों पर लिखने से पहले उस समय की योरप की राजनीति पर कुछ शब्द लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है। एलिज़बेथ की मृत्यु के समय स्पेन का राजा फ़िलिप तृतीय था। फ़िलिप का पिता एलिज़बेथ के प्राणों का गाँहक शत्रु था। इसी तरह

फ्रांस में हैनरी चतुर्थ का राज्य था, जिसने नांट (Nantes) की घोषणा द्वारा, राज्य के कैथलिक होने पर भी, फ्रांस में धार्मिक सहिष्णुता की घोषणा कर दी थी। जर्मनी में भी लगभग आधी सदी से हरएक राजा धर्म-ग्रहण करने के विषय में स्वतंत्र था। जर्मनी का कोई भी सम्राट् प्रोटेस्टेंट न था। पर उनमें से किसी ने भी धर्म-ग्र[illegible]के मामले में जनता को विवश भी नहीं किया। ऐसे समय [illegible]दर्लैंड स्पेन से अलग होना चाहता था; क्योंकि वहाँ के लोग प्रोटेस्टेंट थे, और स्पेन के लोग कैथलिक। योरपियन प्रोटेस्टेंट स्पेन से डरते थे; क्योंकि वह कैथलिक-मत फैलाने के लिये अत्यंत उत्सुक था। स्पेन ही की तरह आस्ट्रिया भी कैथलिक-मत को पसंद करता था, और चाहता था कि संपूर्ण योरप में कैथलिक-मत ही रहे। सम्राट् हेनरी चतुर्थ राजनीति में अत्यंत निपुण था, और इसी कारण उसे बहुत पहले ही मालूम हो गया था कि योरप को आस्ट्रिया से अधिक डरना चाहिए, न कि स्पेन से। स्पेन शक्ति-रहित था, पर आस्ट्रिया नहीं।

सन् १६१० में सम्राट् की मृत्यु हो गई। योरप की राजनीति ने एक नया ढंग पकड़ा। सम्राट् का उत्तराधिकारी फ़र्डिनंड कैथलिक था। वह योरप में अपने ही मत को फैलाना चाहता था। ऐसे विकट समय में बोहीमिया ने फ़र्डिनंड को अपना राजा न माना, और प्रोटेस्टेंट-मतावलंबी पैलेटाइन फ्रेडरिक को अपना राजा चुन लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़र्डिनंड ने बोहीमिया पर चढ़ाई कर दी। योरप के कुछ राष्ट्रों ने फ़र्डिनंड का साथ दिया, और कुछ ने बोहीमिया का पक्ष लिया। इस तरह प्रायः संपूर्ण योरप में युद्ध की धूम मच गई। यह युद्ध १६१८ में शुरू हुआ, और ३० साल तक जारी रहा। इसी से योरप के इतिहास में इस युद्ध को **तीससाला युद्ध** कहते हैं। यद्यपि उक्त युद्ध का

आरंभ उत्तराधिकार के झगड़े से हुआ था, लेकिन शीघ्र ही उसने धार्मिक झगड़े का रूप धारण कर लिया। इसी युद्ध में इस बात का निर्णय होना था कि आगे चलकर योरप में कौन-सा धर्म प्रबल रहेगा।

ऐसे भयंकर समय में फ़्रांस की दशा विचित्र थी। फ़्रांस का राजा लुई तेरहवाँ बालक था, इस कारण संरक्षक-सभा ही वहाँ शासन का सारा काम करती थी। संरक्षक-सभा के सभ्य परस्पर एक दूसरे की बढ़ती को न देख सकते थे, और इसी कारण उनमें सदा झगड़े होते रहते थे। १६२१ में लुई तेरहवें ने राजशासन की बागडोर अपने हाथ में ली, और कार्डिनल रिशल्यू (Cardinal Richelieu) को अपना मुख्य मंत्री बनाया। रिशल्यू ने धीरे-धीरे सब ज़मींदारों और मांडलिक शासकों को अपने वश में कर लिया। सारांश यह कि तीससाला युद्ध में फ़्रांस ने जो भाग लिया, उसका कारण धार्मिक विचार नहीं था। वह अपने सभी प्रांतों में अपना प्रभुत्व मनवाने के लिये ही इस भयानक लड़ाई में शामिल हुआ। तीससाला युद्ध में इँगलैंड की क्या नीति रही, इस पर कुछ लिखने के पहले अँगरेज़ों की आंतरिक दशा पर कुछ लिखना ज़रूरी जान पड़ता है।

(२) प्यूरिटंस, कैथलिक्स और राज्य कर

जेम्स के राज्यारोहण के बाद दो षड्यंत्र रचे गए। उनमें एक मुख्य और दूसरा गौण था। गौण षड्यंत्र का उद्देश्य यह था कि राजा को क़ैद करके कैथालिक-मत पर चलने और राज्य में उसी मत का प्रचार करने के लिये विवश किया जाय। किंतु मुख्य षड्यंत्र का मतलब यह नहीं था। मुख्य षड्यंत्र की रचना करनेवाले लोग अर्बेला स्टुअर्ट को राजगद्दी पर बिठाना चाहते थे। प्रधान मंत्री राबर्ट सीसिल ने दोनों ही षड्यंत्रों का पता लगा लिया। अपराधी लोग फाँसी पर लटका दिए गए। सर वाल्टर

रैले से सीसिल की शत्रुता थी। इसलिये उसने यह प्रकट किया कि षड्यंत्र में रैले भी शरीक है। इसका परिणाम यह हुआ कि रैले लंदन-टावर में जन्म-भर के लिये क़ैद कर दिया गया, और सीसिल सदा के लिये राजा का दाहना हाथ हो गया।

सभी दलों ने जेम्स को राजा स्वीकार कर लिया था। कैथलिक लोग समझते थे कि जेम्स प्रोटेस्टेंट होकर भी उन कठोर नियमों को हटा देगा, जो उनके विरुद्ध प्रचलित हैं। जॉन नाक्स (John Knox) के संप्रदाय में जेम्स की शिक्षा हुई थी, इसी से नॉन्-कॉनफ़र्मिस्टस (Nonconformists) लोगों को विश्वास था कि वह उन लोगों के कष्टों को अवश्य दूर करेगा। जेम्स जब स्कॉटलैंड से लंदन जा रहा था, तब प्यूरिटन लोगों ने इसी विचार से उसे एक प्रार्थना-पत्र (Milleniy Petition) दिया, जिसमें कुछ भ्रम-मूलक प्रथाओं और पूजा-पाठों को बंद करने की बात लिखी थी। उसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स ने १६०४ में हैंपटन कोर्ट के अंदर एक सभा की, और उसमें प्यूरिटन और कैथलिक दोनों दल के लोगों को बुलाया। परंतु वहाँ कोई विशेष निर्णय न हुआ; केवल प्रार्थमा-पुस्तक में कुछ थोड़े-से परिवर्तन किए गए। प्यूरिटन लोग इससे संतुष्ट न थे। नए ढंग से बाइबिल का अनुवाद करने के लिये आज्ञा दी गई। १६११ में राज्य की ओर से बाइबिल का नया अनुवाद प्रकाशित हुआ, और अँगरेज़-प्रोटेस्टेंटों ने हृदय से उसका स्वागत किया।

रोमन कैथलिक लोग जेम्स से बहुत ही अधिक रुष्ट थे; क्योंकि उनके विरुद्ध जो कठोर नियम थे, वे पहले की तरह बने ही रहे। उन कठोर नियमों से तंग आकर उन्होंने एक भयंकर काम करना चाहा। १६०५ के नवंबर की ५ तारीख़ को पार्लियामेंट का अधिवेशन था। गाइफ़ाउक्स (Guy Fonkes) को नेता बनाकर बहुत-से रोमन

कैथलिकों ने राजा, राजदरबारी और सारे प्रतिनिधियों के सहित पार्लियामेंट को बारूद से उड़ा देने का प्रबंध किया। दैवसंयोग से सीसिल को इसका भेद मालूम हो गया। ४ नवंबर को तलाशी ली गई। गाइफ़ाउक्स पकड़ा गया। पार्लियामेंट-भवन के नीचे बहुत-से बारूद के पीपे मिले। इस षड्यंत्र का पता लगने से जेम्स कैथलिकों से बहुत डर गया। उसने उनको दबाने के लिये और भी कठोर नियम बनाए।

(३) जेम्स और उसके मंत्री

जेम्स प्रथम दयालु, विश्वासी और विद्वान् था। वह शांति-प्रिय भी था। किंतु दुर्भाग्य-वश अँगरेज़ों के रीति-रिवाज और स्वभाव को ठीक-ठीक नहीं समझता था। राज्य का काम-काज तो अपने कृपा-पात्रों पर छोड़ देता था, और आप शिकार और अध्ययन में ही अपना समय बिताना पसंद करता था। इसके साथ ही राजा के दैवी अधिकार का भूत भी उसके सिर पर सवार था। इसका परिणाम यह हुआ कि इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश में वह शासन के काम को सफलता-पूर्वक न कर सका। जेम्स योरप की राजनीति को अच्छी तरह समझता था। पर उसमें वह पूर्ण रूप से भाग न ले सका; क्योंकि उसे अँगरेज़ों के स्वभाव का पूर्ण परिचय प्राप्त नहीं था, और इसी कारण वह अक्सर ऐसी बातें कर बैठता था, जिनसे व्यर्थ ही गड़बड़ मच जाती थी।

लॉर्ड सीसिल की मृत्यु होने पर जेम्स ने अपने कृपा-पात्रों का सहारा लिया। उन सबमें मुख्य राबर्ट कर था। यह जाति का स्काच्, बहुत ही सुंदर और वीर था। पर इसमें सबसे बड़ा दोष यह था कि यह मोटी बुद्धि का था—साधारण-से-साधारण बात को भी समझ नहीं पाता था। ऐसी दशा में कर ने सर टामस ओवर्बरी का सहारा लिया, और उसकी मंत्रणा पर चलने लगा। कर की स्त्री

ओवर्बरी से शत्रुता रखती थी। उसने अपने नौकरों से ओवर्बरी को क़ैद कराया, और क़ैदख़ाने में मरवा भी डाला। उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद तक दिन-ब-दिन कर की शक्ति बढ़ती गई। इन्हीं दिनों उसने घमंड में आकर और लोगों से अच्छा व्यवहार न किया। यह बात इस दर्जे तक पहुँच गई कि जेम्स भी उससे कुछ-कुछ तंग आ गया। दैवसंयोग से एक दिन ओवर्बरी की मृत्यु का रहस्य सबको मालूम हो गया। लॉर्ड सभा में कर तथा उसकी स्त्री पर अभियोग चलाया गया, जिसमें उन दोनों को मृत्यु-दंड की आज्ञा हुई। जेम्स ने दया करके दोनों को क्षमा किया, और कर को भिन्न-भिन्न राज्य-पदों से सदा के लिये हटा दिया।

कर के अधःपात के उपरांत जेम्स ने जार्ज विलियर्स को अपना कृपा-पात्र बनाया। वह इस सफलता से अभिमान में चूर हो गया और दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने लगा। कुछ भी हो, जेम्स ने इसको धीरे-धीरे नौ-सेनापति तथा पहले दर्जे का अर्ल बनाया। कुछ ही समय के बाद इसे बकिंघम का ड्यूक भी बना दिया। अन्य योग्य लोगों ने बकिंघम की कृपा से अपने को उच्च पद पर पहुँचाना शुरू किया। फ्रांसिस बेकन इसी की कृपा से चांसलर के उच्च पद पर पहुँच सका था।

(४) जेम्स और परराष्ट्र-नीति

जेम्स तथा उसके कृपा-पात्रों का ध्यान विदेशी नीति पर बहुत ही अधिक था। जेम्स को स्पेन से भय था। इसीलिये उसने १६०४ में स्पेन से संधि की, और फ्रांस से भी पहले की तरह मित्रता क़ायम रक्खी। १६१० में फ्रांस का हेनरी चतुर्थ मर गया। इसका पुत्र बच्चा था, इसलिये हेनरी चतुर्थ की विधवा स्त्री ही फ्रांस का शासन करने लगी। वह स्पेन और कैथलिक-दल के पक्ष में थी।

स्पेन अँगरेज़ों की सहायता चाहता था। जेम्स ने इस अवसर

को अपने हाथ से खोना उचित न समझा, इसलिये उसने स्पेन के राजा फ़िलिप की तृतीय पुत्री इनफ़ैंटा मेरिया से अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह निश्चय किया। १६१६ में इस विवाह के लिये पत्र-व्यवहार शुरू हो गया। ऐसे ही समय में धन की आवश्यकता आ पड़ी, जिसके कारण जेम्स ने एक ऐसा काम कर डाला, जो उसे न करना चाहिए था। सर वाल्टर रैले अपनी यात्राओं के दिनों में गायना की सैर कर चुका था। क़ैद के दिनों में उसकी कल्पना-शक्ति ने उसको यह सुझाया कि गायना में बहुत ही अधिक सोने की खानें हैं। उसने जेम्स से प्रार्थना की—"तू मुझे इस क़ैद से छोड़ दे, तो मैं तुझको बहुत ही अधिक धन दूँगा।" धन के लोभ में फँसकर उसने रैले को क़ैद से छोड़ दिया, और दक्षिण-अमेरिका में जाने की आज्ञा दे दी। साथ ही उससे यह भी कहा गया कि इस महान् कार्य में वह ऐसा कोई काम न करे, जिससे स्पेनिश लोग रुष्ट हो जायँ। रैले ने राजा की सब शर्तों को मानकर दक्षिण-अमेरिका की ओर प्रस्थान किया। स्पेनिश लोग गायना को अपना प्रांत समझते थे, और इसी कारण रैले की इस यात्रा से असंतुष्ट थे। रैले ने दक्षिण-अमेरिका पहुँचते ही पहले की तरह स्पेनिशों पर आक्रमण किया। पर अपने साथियों के कायरपन से इस आक्रमण में रैले सफलता न पा सका। उसको इँगलैंड लौटना पड़ा। स्पेनिश राज्य ने जेम्स से रैले की बहुत ही शिकायत की, और उसको दंड देने के लिये आग्रह किया। जेम्स स्पेन को खुश करना चाहता था, इसलिये उसने १६०३ के पुराने दंड के अनुसार रैले को फाँसी पर लटकवा दिया। रैले के फाँसी पर चढ़ने से अँगरेज़ों में बहुत ही असंतोष फैला। वे जातीय नेता या जातीय हीरो (वीर) की तरह उसका सम्मान करने लगे।

जेम्स योरप के कैथलिकों और प्रोटेस्टेंटों से एक-सा व्यवहार करना चाहता था। धर्म के कारण किसी से विरोध करना उसे

अभीष्ट न था। यही कारण है कि उसने एक ओर अपनी पुत्री का ब्याह जर्मनी के प्रिंस के साथ किया, जो कि प्रोटेस्टेंट था, और दूसरी ओर अपने पुत्र का ब्याह वह एक स्पेनिश राजपुत्री के साथ करना चाहता था, जो केथलिक थी।

इसी समय बोहीमिया में लोगों ने सम्राट् फ़र्डिनंड के धार्मिक अत्याचारों से असंतुष्ट होकर जेम्स के दामाद फ्रेडरिक को, जो प्रोटे-स्टेंट था, अपना राजा चुना। इसका परिणाम यह हुआ कि योरप में एक भीषण युद्ध छिड़ गया, जो तीससाला युद्ध के नाम से विख्यात है। फ्रेडरिक को यह आशा थी कि जेम्स तीससाला युद्ध में उसका साथ देगा। मगर जेम्स ने यह नहीं किया। कारण, उसे धार्मिक युद्धों से घृणा थी। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रेडरिक अपनी स्थिति को देर तक स्थिर न रख सका। उसको बोहीमिया के साथ ही अपने प्राचीन राज्य से भी हाथ धोना पड़ा। इससे जर्मनी के लोगों को बहुत ही अधिक चिंता हो गई। अँगरेज़ जनता ने स्वयं-सेवक बनकर जर्मनी को सहायता पहुँचाना शुरू किया; मगर जेम्स के कानों में जूँ तक न रेंगी। इसी अवसर पर स्पेनिश लोगों ने स्पेन की राजपुत्री इनफ्रेंटा के साथ अपने पुत्र के ब्याह की बातचीत करने के लिये जेम्स को उत्तेजित किया। जेम्स ने भी इस ओर अपना ध्यान दिया। उसका विचार था कि ब्याह का मामला शुरू करके वह किसी उपाय से फ्रेडरिक का उद्धार कर दे। पर स्पेनिश लोग उससे चतुर थे। वे कब जेम्स का कहना मानने लगे! प्रश्न तो यह था कि यदि वे उसका कहा मानकर फ्रेडरिक को बोहीमिया आदि प्रदेश दिलाना भी चाहते, तो जर्मन कैथलिक लोग कब माननेवाले थे? असल बात यह थी कि स्पेनिशों ने जेम्स को धोका देकर अपना मतलब साधने का ढोंग रचा था। जेम्स पूरी तरह से बेवक़ूफ़ बनाया गया। उसने स्पेनिशों से शादी के मामले में जब जल्दी करने को कहा,

तो उन्होंने टालमटूल शुरू की। उन्होंने कहा—तुम अँगरेज़ कैथलिकों को पहले पूजा-पाठ करने की पूरी स्वतंत्रता दे दो, तब हम तुम्हारे पुत्र के साथ इनफ़ैंटा का विवाह कर देंगे। यह ऐसी बात थी जो जेम्स की शक्ति के बाहर थी। बकिंघम ने जेम्स के पुत्र चार्ल्स को इसी मतलब से स्पेन भेजा कि ब्याह का मामला पूरे तौर पर तय हो जाय। स्पेन जाने पर चार्ल्स को मालूम हुआ कि स्पेनिश उसके पिता को धोका दे रहे थे। इस पर उसको बहुत ही क्रोध आया। उसने अपने पिता को स्पेन के साथ युद्ध करने के लिये उत्तेजित किया।

जेम्स ने फ़्रांस के साथ संधि करके फ़्रेडरिक को बोहीमिया आदि प्रांत दिलाने का यत्न किया, परंतु इसमें सफल न हुआ। उसने अपने दामाद को जो सहायता पहुँचाई, उससे भी कुछ फल न निकला।

(५) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि स्कॉटलैंड का ही राजा जेम्स प्रथम के नाम से इँगलैंड के राज्यासन पर बैठा। जेम्स के कारण इँगलैंड और स्कॉटलैंड परस्पर शांति-पूर्वक मिल गए। जेम्स दोनों ही देशों को स्थिर रूप से सदा के लिये परस्पर मिला देना चाहता था। इसी प्रयोजन से उसने कुछ-कुछ अँगरेज़ों के फ़ैशन और रस्म-रिवाजों को ग्रहण कर लिया, और स्कॉटलैंड में भी उनका प्रचार किया। इससे स्काच् लोगों का रुष्ट होना स्वाभाविक था। अँगरेज़ भी जेम्स के व्यवहार से अधिक संतुष्ट न थे; क्योंकि उनको किसी प्रकार का भी नया परिवर्तन पसंद नहीं था। अँगरेज़ों को बड़ा डर यह था कि कहीं स्काच् लोगों के कारण उनकी शासन-पद्धति में फेर-बदल न हो जाय। कुछ भी हो, जेम्स ने यह नियम कर ही दिया कि इँगलैंड में स्काच् और स्कॉटलैंड में अँगरेज़ विदेशी न समझे जायँ, और दोनों देशों में परस्पर समान रूप से व्यवहार हो। इस नियम को १६०७ की पार्लियामेंट ने मंज़ूर न किया। इस पर

उसने न्यायाधीशों का आश्रय लिया, और उनसे यह कहला लिया कि उसके अँगरेज़ी-सिंहासन पर बैठने के अनंतर जो स्काच् उत्पन्न हुआ हो, उसे अँगरेज़-नागरिकों के सभी अधिकार प्राप्त हैं। इतना ही नहीं, उसने अँगरेज़ी धार्मिक संस्थाओं के समान ही स्काच् धार्मिक संस्थाओं का निर्माण किया। छुट्टियों के दिन भी वे ही नियत किए, जो कि ट्वीड् के दक्षिण में प्रचलित थे। इससे स्काच् लोग बहुत ही क्रुद्ध हो गए। उनके क्रोध को देखकर उस समय यही मालूम पड़ता था कि इँगलैंड और स्कॉटलैंड का आपस में मिलना अभी शताब्दियों की बात है।

(६) अल्स्टर का बसाया जाना

जेम्स के इँगलैंड के सिंहासन पर बैठने के पहले ही ट्यूडर लोगों ने आयर्लैंड को जीत लिया था। जेम्स को सारे आयलैंड और ग्रेटब्रिटन का पहला ही राजा समझना चाहिए; क्योंकि इसके पहले किसी भी अँगरेज़ राजा का स्कॉटलैंड, आयर्लैंड, वेल्स और इँगलैंड पर पूर्ण रूप से एकाधिपत्य न था। आयर्लैंडवाले कैथलिक थे। उन्हें अपने ऊपर अँगरेज़ों का आधिपत्य बिलकुल पसंद न था। वे समय-समय पर विद्रोह मचाकर स्वतंत्रता प्राप्त करने का यत्न किया करते थे। १६०७ में हीरोन के अर्ल ने विद्रोह करके अँगरेज़ों को आयर्लैंड से निकाल देने का यत्न किया; परंतु उसे सफलता नहीं मिली, और देश से भागना पड़ा। उसकी रियासत को अँगरेज़ों ने ज़ब्त कर लिया, और उस पर अल्स्टर का प्रसिद्ध उपनिवेश बसाया। इस उपनिवेश ने रोमन सैनिक-उपनिवेश का काम किया, और आयरिश लोगों के स्वतंत्र होने में सर्वदा के लिये बाधा डाल दी। इससे जहाँ इँगलैंड को लाभ पहुँचा, वहाँ कुछ विकट समस्याएँ भी उसके सिर पर आ खड़ी हुईं। दूसरे देश के पैरों में परतंत्रता की बेड़ियाँ डालने का फल कभी अच्छा नहीं होता।

(७) वर्जीनिया तथा अन्य उपनिवेशों की स्थापना

जेम्स के राज्य में इँगलैंड के राज्य का विस्तार दूर-दूर के देशों तक हो गया। अटलांटिक के पार बहुत-से अँगरेज़ उपनिवेश बस गए। १६०७ में वर्जीनिया का उपनिवेश अँगरेज़ों ने बसाया, और उसके एक नगर का नाम जेम्स टाउन रक्खा। इस उपनिवेश की शासन-प्रणाली एक प्रकार से प्रजातंत्रात्मक थी। कुछ ही वर्षों के बाद लॉर्ड बाल्टिमोर ने वर्जीनिया के पास ही मेरीलैंड-नामक उपनिवेश बसाया, और वह १६३२ में चार्ल्स प्रथम से अधिकार-पत्र (Charter) प्राप्त कर उसका मुख्य स्वामी बन गया। १६२५ में बार्बूडास का अँगरेज़ उपनिवेश बसा। इस उपनिवेश के लोगों ने नीग्रो दासों के द्वारा अपने यहाँ खेती का काम आरंभ किया।

वर्जीनिया के उत्तर में न्यू इँगलैंड नाम का उपनिवेश बसाया गया। प्लमथ-नामक उपनिवेश को उन अँगरेज़ों ने बसाया, जो इँगलैंड की धार्मिक बाधाओं से तंग आकर देश के बाहर चले गए थे। १६२० में मैसाचूसैट्स-नामक प्रांत में भी वे लोग बस गए, और उन्होंने उसकी राजधानी का नाम बोस्टन रक्खा। अमेरिका के उत्तरीय भाग में जो उपनिवेश बसाए गए, उनके बसानेवाले लोग अक्सर व्यापारी, भठियारे और किसान आदि ही थे। उनमें कोई बड़े ज़मींदार नहीं थे। परंतु दक्षिणी भाग के उपनिवेशों के बारे में यह बात न थी। उनमें बड़े-बड़े ज़मींदार लोग बसे थे, जो नीग्रो लोगों से ही खेती का काम कराते थे। इस भेद के होने पर भी समग्र अमेरिका में प्यूरिटन लोग ही अधिक थे। ये कैथलिक-मत के विरोधी और प्रजातंत्र राज्य के पक्षपाती थे। सत्रहवीं सदी के मध्यभाग तक इन अँगरेज़ों ने ख़ूब उन्नति की, और इँगलैंड की कीर्ति को दूर-दूर तक फैलाया।

(८) जेम्स और पार्लियामेंट

जेम्स के समय में अँगरेज़ों में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया था। अब वे राजा के स्वेच्छाचार को ज़रा भी नहीं पसंद करते थे। उनको राजा के अनुगत होकर चलना बिलकुल ही नापसंद था। पार्लियामेंट की शक्ति दिन-दिन बढ़ती जाती थी। इन सब परिवर्तनों के कारण राजा और प्रजा का झगड़ा अनिवार्य हो गया।

जेम्स था विदेशी। उसको अँगरेज़ों के स्वभाव का ठीक-ठीक ज्ञान न था। शिक्षित, योग्य, दयालु और ईमानदार होने पर भी वह प्रजा-प्रिय न बन सका। उसके स्वभाव में हठ की मात्रा बहुत ही अधिक थी। अँगरेज़ लोग भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिये पूर्ण रूप से दृढ़ थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स से पार्लियामेंट की नहीं पटी। एलिज़बेथ किफ़ायत-पसंद थी; परंतु जेम्स में यह बात न थी। उसको बारंबार पार्लियामेंट से धन माँगना पड़ता था, और धन के बदले में पार्लियामेंट को अधिकार देने पड़ते थे।

जेम्स के समय में सबसे पहला पार्लियामेंट का अधिवेशन १६०४ में हुआ। १६११ तक उसके प्रतिनिधि नए सिरे से नहीं चुने गए। पहले अधिवेशन में ही पार्लियामेंट ने अपने अधिकारों को जेम्स के प्रति प्रकट किया, और धन देने के बदले बहुत-सा उपदेश दिया। इससे तंग आकर जेम्स ने न्यायाधीशों से सलाह ली, और आयात-निर्यात-कर की दर तथा कर लगनेवाली चीज़ों की संख्या बढ़ा दी। जनता ने १६१० में राजा का विरोध किया, और नवीन राज्य-करों को अनुचित ठहराया। इससे राजा और प्रजा में झगड़ा बढ़ गया। जेम्स ने १६११ में पार्लियामेंट को बर्ख़ास्त कर दिया।

उसने तीन साल तक पार्लियामेंट से धन नहीं माँगा, और राज-काज चलाया। उसकी आर्थिक स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई थी कि १,००० पौंड के बदले में ही उसने बैरोनट् की उपाधि लोगों

को बाँटना शुरू कर दिया। लाचार होकर उसको पार्लियामेंट की बैठक करनी ही पड़ी। परंतु उसको पार्लियामेंट से पूरी सहायता नहीं मिली, और बेकार झगड़ा बढ़ गया। इतिहास में यह पार्लियामेंट अडल्ड पार्लियामेंट (Addled Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। उसके बाद सात साल तक जेम्स ने पार्लियामेंट का अधिवेशन नहीं किया, और चुपचाप काम चलाता रहा।

फ़्रेडरिक को सहायता पहुँचाने की इच्छा और तीससाला युद्ध के झमेलों को तय करने के उद्देश्य से जेम्स ने १६२१ और १६२४ में पार्लियामेंट की फिर बैठक की। जेम्स ने धन की सहायता माँगी, और साथ ही यह भी कहा कि जहाँ तक हो सकेगा, मैं युद्ध नहीं करूँगा। इस पर पार्लियामेंट ने उसको वही पुराना उत्तर दिया कि पहले हमारी शिकायतों को दूर करो, तब हम सहायता देंगे। उसके सभ्य पहले ख़ासकर एकाधिकारों (इज़ारों) को हटाना चाहते थे; क्योंकि सर गाइल्ज़ मांपेसन ने राज्य से शराब का इज़ारा प्राप्त करके लोगों में मद्यपान की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ा दी थी। इसी प्रकार की अन्य बुराइयाँ भी एकाधिकारों के कारण उत्पन्न हो गई थीं। प्रजा इन बुराइयों को दूर करना चाहती थी। बेकन एकाधिकारों के पक्ष में था, इसलिये उस पर पार्लियामेंट में रिशवत लेने का मुक़द्दमा चलाया गया। उसने अपराध स्वीकार कर लिया। इस पर पार्लियामेंट ने उसको पदच्युत करके क़ैद कर दिया। पर राजा ने शीघ्र ही उसको छोड़ दिया। बेकन अपने समय का एक विद्वान् पुरुष था। यह दर्शन-शास्त्र का अच्छा मौलिक विद्वान् था। अपने मौलिक विचारों के कारण यह दर्शन-शास्त्र के इतिहास में अमर रहेगा। उक्त घटना के पाँच ही वर्ष बाद बेकन की मृत्यु हो गई।

बेकन और इज़ारों के मामले में जेम्स ने लोकसभा का कहना मान लिया। इस पर पार्लियामेंट ने जेम्स को धन की सहायता दे

दी। कुछ ही महीनों के बाद पार्लियामेंट का फिर अधिवेशन हुआ। सभ्यों ने जेम्स को यह सलाह दी कि वह अपने लड़के की शादी किसी प्रोटेस्टेंट-मत को माननेवाली कन्या से करे। इस पर जेम्स को क्रोध आ गया। उसने पार्लियामेंट को बर्खास्त कर दिया। १६२४ में पार्लियामेंट का अधिवेशन फिर हुआ। इजारों को राज्य-नियम-विरुद्ध ठहराया गया। कोषाध्यक्ष मिडिलसैक्स पर मुक़द्दमा चलाया गया। इसी बीच में वृद्ध राजा जेम्स २७ मार्च, १६२५ को परलोक सिधारा।

(६) इंगलैंड की आर्थिक दशा

जेम्स प्रथम के समय में अँगरेज़ों का व्यापार पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया था। फ़िलिप द्वितीय की मृत्यु के उपरांत हालैंडवालों ने सिर उठाया, और पुर्तगालवालों का व्यापार अपने हाथ में कर लिया। उनकी सफलता देखकर अँगरेज़ों ने भी अपनी एक ईस्ट-इंडिया कंपनी बनाई। इस कंपनी ने सन् १६०० में एलिज़बेथ से प्रमाण-पत्र प्राप्त किया, और भारत आदि देशों से व्यापार शुरू किया।

हालैंड से कब यह सहा जा सकता था? भारत में अँगरेज़ों और डचों में घोर शत्रुता हो गई। एक दूसरे का जानी दुश्मन हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि १६२३ में अंब्योना के छोटे-से द्वीप में डचों ने अँगरेज़ों का क़त्लेआम कर दिया। पर भारत में अँगरेज़ों के पैर जम गए। उन्होंने मुग़ल-सम्राट् से कोठी खोलने का अधिकार-पत्र प्राप्त किया। १६१२ में सूरत में और १६३९ में मदरास में अँगरेज़ों की व्यापारी कोठियाँ खुल गईं। डचों ने केप ऑफ़ गुड्होप पर प्रभुत्व प्राप्त किया, और उसे बंदरगाह बनाया। सेंट हेलेना-द्वीप को अँगरेज़ों ने अपने ठहरने का स्थान बनाया। धीरे-धीरे ईस्ट-इंडिया कंपनी का व्यापार और शक्ति बढ़ती गई, जिसका उल्लेख आगे चलकर किया जायगा।

द्वितीय परिच्छेद

चार्ल्स प्रथम (१६२५—१६४६)

(१) चार्ल्स प्रथम का राज्याधिरोहण और स्वभाव

जेम्स प्रथम का पुत्र चार्ल्स 'चार्ल्स प्रथम' के नाम से इँगलैंड की राजगद्दी पर बैठा । उस समय उसकी अवस्था पचीस वर्ष की थी । सुंदर, प्रभावशाली और गंभीर होने पर भी उसमें ज्ञान और दूरंदेशी की कमी थी । वह शरमीला, घमंडी, संसार से अनभिज्ञ, रूखा और शक्की मिजाज़ का था । यद्यपि वह जान-बूझकर झूठ नहीं बोलता था, तथापि सत्य भी शायद ही कभी बोलता हो । इसी कारण मित्र और शत्रु, कोई कभी उस पर किसी तरह का विश्वास न रखता था । वह बहुत ही अधिक गंभीर था, और वह गंभीरता इस हद तक जा पहुँची थी कि उसने हँसना जैसे छोड़ ही दिया था । वह न तो किसी की बात को ठीक-ठीक समझता था, और न खुद ही ठीक तौर से बोल पाता था । वह अपनी कल्पनाओं में ही मस्त रहता था । हठी तो वह परले सिरे का था । विद्या-प्रेम, पवित्र आचार तथा गंभीरता आदि गुणों को देखकर कुछ लोग उसके अनन्य भक्त थे । परंतु अँगरेज़-जनता के साथ उसका संबंध सर्वदा खींच-तान का ही रहा । इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि जनता के साथ उसकी तिल-भर भी सहानुभूति नहीं थी । वह लोक-मत की रत्ती-भर पर्वा नहीं करता था । बकिंघम से उसे विशेष अनुराग था । मंत्रियों को हमेशा यह शिकायत बनी रही कि वह अपने जी की बात नहीं बताता । इसलिये राजा की स्थिर नीति क्या थी, यह बताना कठिन है । उसकी स्त्री हैनिरिटा कैथलिक और धूर्त थी । उसका चार्ल्स पर बहुत ही अधिक प्रभाव था ।

(२) इँगलैंड में राजनीतिक परिवर्तन

चार्ल्स के राजसिंहासन पर बैठने के समय इँगलैंड और स्पेन में लड़ाई हो रही थी। चार्ल्स, फ्रेडरिक का फिर उद्धार करना और स्पेनिशों से लड़ना चाहता था। इसी मतलब से उसने डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन को इस शर्त पर सहायता देने का वचन दिया कि वह जर्मनी के प्रोटेस्टेंटों का पक्ष लेकर सम्राट् तथा कैथलिक-लीग पर आक्रमण कर दे। चार्ल्स को पार्लियामेंट से धन मिलने की बहुत अधिक आशा थी। कारण, वह कैथलिकों के विरुद्ध लड़ना चाहता था।

१६२५ में प्रथम पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ। पार्लियामेंट ने इस शर्त पर राजा को धन देना मंजूर किया कि वह बकिंघम को सारे राज्य के पदों से अलग कर दे। इस पर चार्ल्स बहुत ही कुपित हो गया। उसने पार्लियामेंट की बैठक बर्खास्त कर दी। वह विना किसी प्रकार की आर्थिक सहायता के ही योरप के युद्ध को चलाने के लिये तैयार हो गया।

चार्ल्स तथा बकिंघम ने अँगरेज़ी व्यापारी जहाज़ों से लड़ाई के जहाज़ों का काम लेना शुरू कर दिया; बहुत-से आदमियों को ज़बरदस्ती सैनिक बनाया। उस सेना का सेनापति सीसिल बनाया गया। सीसिल को स्पेनिशों के सोने-चाँदी से लदे हुए जहाज़ पकड़ने की आज्ञा दी गई। साथ ही उसको यह आज्ञा भी मिली कि वह स्पेन के कुछ नगरों को भी जीत ले। उसने कैडिज़ के प्रसिद्ध क़िले को शीघ्र ही जीत लिया, और खाद्य सामग्री न रहने पर भी स्पेन-विजय के लिये रवाना हो गया। राह में अँगरेज़ सैनिकों को बहुत-सी शराब की बोतलें मिल गईं। भूके तो वे पहले ही से थे, इसलिये उन्होंने शराब पीकर ही अपना पेट भरा। आख़िरकार सीसिल भी हैरान हो गया, और उन बेहोश, बदमस्त सैनिकों को

लेकर जहाज़ पर लौट आया। इस घटना के बाद उसने स्पेन-विजय का विचार बिलकुल ही छोड़ दिया, और चुपचाप इँगलैंड लौट पड़ा। इस युद्ध के कारण चार्ल्स ऋणी हो गया। उसने जो मूर्खता की थी, उसका फल उसको मिला। पार्लियामेंट और स्पेन, दोनों से एक-साथ ही झगड़ा करने की योग्यता और शक्ति न होने पर भी उसने इसी को पसंद किया। यही कारण है कि न वह स्पेन को ही जीत सका, और न पार्लियामेंट को ही अपनी इच्छा के अनुसार चला सका।

१६२६ में उसने फिर दूसरी बार पार्लियामेंट का अधिवेशन किया। इस बैठक के बुलाने में उसने चतुरता से काम लिया। प्रथम अधिवेशन में जो लोग विरोधी दल के नेता थे, उनको उसने शेरिफ़ या मंडल-शासक बना दिया। यह इसीलिये कि ये प्रतिनिधि बनकर पार्लियामेंट में न आ सकें। इस चतुरता में भी वह सफल न हुआ। अधिवेशन के आरंभ ही में सर जॉन इलियट ने कहा—"राज्य के कुप्रबंध की जाँच की जाय और बकिंघम पर अभियोग चलाया जाय ; क्योंकि उसने इँगलैंड का सत्यानाश और शाही ख़ज़ाने को ख़ाली कर दिया है। उसकी फ़िज़ूलख़र्ची, उसकी फ़िज़ूल दावतें, उसके शानदार मकान और भोग-विलास के सामान में राज्य की सारी आमदनी ख़र्च हो गई है। उसी के कारण इँगलैंड पर अगणित कष्टों का भार आ पड़ा है। इस कारण उस पर अभियोग चलाना अत्यंत आवश्यक है।" इस पर चार्ल्स ने इलियट को क़ैद कर लिया। परंतु जब पार्लियामेंट ने इलियट के विना अधिवेशन करना स्वीकार न किया, तब चार्ल्स ने विवश होकर इलियट को छोड़ दिया। इसके बाद पार्लियामेंट ने बकिंघम को राज्य के पद से हटाने के लिये भी चार्ल्स से अनुरोध किया। इस पर चार्ल्स ने क्रुद्ध होकर पार्लियामेंट को बर्ख़ास्त कर दिया।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि चार्ल्स धन के अभाव से

विदेशी नीति में सफल न हो सका । स्पेन ज्यों-का-त्यों शक्तिशाली बना रहा। चार्ल्स उसका कुछ न बिगाड़ सका। डेन्मार्क के क्रिश्चियन ने १६२६ में जर्मन-केथलिकों पर आक्रमण किया । मगर चार्ल्स की सहायता न पाने के कारण उसकी बुरी तरह से हार हुई। बेचारा चार्ल्स भी क्या करता? जब उसको सभा ने सहायता ही नहीं दी, तो वह उसको कहाँ से सहायता पहुँचाता? इन सब घटनाओं से दुःखित होकर उसने लारोशेल के ह्यूगेनोज़ के विद्रोह करते ही फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। इस काम में धन की ज़रूरत थी। इससे विवश होकर उसने अँगरेज़ी प्रजा से धन लेना शुरू किया। अँगरेज़ी क़ानून (Law) के अनुसार राजा प्रजा को धन देने के लिये विवश नहीं कर सकता था। रिचार्ड तृतीय के समय से ही यह क़ानून था कि राजा किसी से भी ज़बरदस्ती धन न ले सकता था। चार्ल्स ने जजों से सलाह ली । जजों ने उससे कहा—"लोगों को बाधित करके ऋण लेने में कुछ भी बुराई नहीं है।" इस पर चार्ल्स ने धनाढ्य अँगरेज़ों से ऋण लेना शुरू कर दिया। अस्सी अँगरेज़ों ने ऋण देना अस्वीकार किया । इस पर उसने उनको 'मार्शल-ला' के अनुसार क़ैद में डाल दिया। इलियट भी इन्हीं क़ैदियों में से एक था। जो अँगरेज़ निर्द्धनता के कारण ऋण न दे सकते थे, उनको सैनिक बनने के लिये विवश किया गया। वे योरप में युद्ध करने के लिये भेज दिए गए।

इन क़ैदियों में पाँच नाइट थे, जिन्होंने राजा की इस आज्ञा को अँगरेज़ी क़ानून के विरुद्ध बतलाया। उन्होंने अपने तईं न्यायाधीश के सामने उपस्थित करने का यत्न किया। इस यत्न में उन्हें सफलता भी हुई। राजा ने उनमें से केवल डार्नेल-नामक व्यक्ति को न्यायाधीशों के निकट नहीं भेजा। न्यायाधीश भी राजा से डर गए, इसी से उन्होंने डार्नेल के छुटकारे के लिये राजा पर कुछ ज़्यादा

ज़ोर नहीं डाला। अस्तु। इस संपूर्ण घटना का फल बहुत ही अच्छा हुआ। राजा को यह मालूम पड़ गया कि पार्लियामेंट का सहारा मिले विना विदेशी राष्ट्रों से लड़ना बहुत ही कठिन है। राजा ने पाँचों नाइटों को छोड़ दिया, और पार्लियामेंट को तीसरी बार बुलाया।

सन् १६२८ में पार्लियामेंट का तीसरा अधिवेशन बड़े समारोह के साथ हुआ। सर टामस वैंटवर्थ ने इलियट ही के समान लोक-सभा में बड़ा जोश दिखलाया। इन दोनों के नेतृत्व में अँगरेज़ों ने यह प्रण किया कि हम लोग अपनी स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा करेंगे, और राजा को स्वेच्छाचार अर्थात् मनमानी नहीं करने देंगे। वैंटवर्थ बकिंघम से बहुत ही असंतुष्ट था, और इसी कारण उसको राज्य के सभी पदों से हटाना चाहता था। इसके साथ ही उसने पार्लियामेंट के सामने यह प्रस्ताव रक्खा कि आगे से किसी भी अँगरेज़ को विना वारंट के पकड़ा नहीं जा सकता, और न किसी अँगरेज़ से, उसको विवश करके, ऋण ही लिया जा सकता है। इलियट इससे भी कुछ आगे बढ़ गया। उसने एक अधिकार-पत्र (Petition of Right) का मसविदा तैयार किया, और उसमें चार्ल्स के निम्न-लिखित कार्यों को ग़ैर क़ानूनी ठहराया—

(१) पार्लियामेंट की आज्ञा या मंजूरी के विना धन का लेना।
(२) लोगों को विवश करके उनसे ऋण लेना।
(३) व्यापार के जहाज़ों को सैनिक बेड़े का रूप देना।
(४) नए-नए राज्य-करों को लगाना।
(५) विना कारण लोगों को क़ैद करना।
(६) ग़रीब अँगरेज़ों को सैनिक बनने के लिये बाध्य करना।
(७) देश में मार्शल-ला का जारी करना।

अँगरेज़ी इतिहास में यह अधिकार-पत्र बहुत ही अधिक प्रसिद्ध

है। आरंभ में चार्ल्स ने टालमटूल की; लेकिन अंत को हारकर उसे उक्त अधिकार-पत्र पर हस्ताक्षर करने ही पड़े। हस्ताक्षर करते ही लोक-सभा ने उसे बहुत ही अधिक धन दे दिया। अधिकार-पत्र प्राप्त करने की प्रसन्नता में सारे इँगलैंड के भीतर छुट्टी मनाई गई। गिरजों में घंटे बजाए गए। सब ओर खेल-तमाशों की धूम मच गई। इन्हीं बातों से मालूम पड़ता है कि उस समय लोग स्वतंत्रता के कितने भूके थे।

पार्लियामेंट से धन प्राप्त करके चार्ल्स ने अपनी सेना लारोशेल की ओर भेजी। उस समय फ़्रांस के राजा लुई १३वें की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई थी। उसने प्रोटेस्टेंट लोगों के बड़े-से-बड़े क़िले को घेर लिया था। सारे प्रोटेस्टेंट अँगरेज़ी सेना की प्रतीक्षा कर रहे थे। दैवसंयोग से पोर्टस्माउथ की ओर जाते समय बाकिंघम को फ़ेल्टन-नामक एक अँगरेज़ ने मार डाला। अँगरेज़ फ़ेल्टन से बहुत प्रसन्न हुए। इस पर चार्ल्स के क्रोध की आग भड़क उठी। अँगरेज़ों से उसका संबंध और भी खींच-तान का हो गया। राजा ने फिर पुरानी नीति का अनुसरण और प्रजा की स्वतंत्रता को हरना शुरू किया।

सन् १६२९ में चार्ल्स की तीसरी पार्लियामेंट का दूसरा अधिवेशन हुआ। पार्लियामेंट ने अधिकार-पत्र के झगड़े को उठाकर राजा को बहुत भला-बुरा कहा। उसका कहना था कि राजा ने कुछ क़ानून-विरुद्ध चुंगी (Custom duties) लगाई है। इस पर राजा ने पार्लियामेंट के एक सदस्य को क़ैदख़ाने में डाल दिया। कारण, उस सदस्य ने राज्य-कर देना अस्वीकार किया था। पार्लियामेंट ने राजा के इस कार्य को अपनी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करना समझा, और उस सभ्य को क़ैद से छुड़ाना चाहा। उसी समय चार्ल्स ने आर्मीनियन दल के कुछ पादरियों को बिशप बना दिया। प्यूरिटन

लोग इससे बहुत ही ख़फ़ा हो गए। यह झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि राजा ने पार्लियामेंट का अधिवेशन बंद करना चाहा। मगर हालैंड और वैलंटाइन ने पार्लियामेंट-भवन के द्वार बंद कर दिए। राजकर्मचारी को बाहर ही से लौटा दिया। सदस्यों ने अध्यक्ष को कुर्सी से नीचे उतारकर बिठा दिया; क्योंकि वह डर के मारे सभा-विसर्जन कर देना चाहता था। इलियट ने प्रस्ताव उपस्थित किए, और लोक-सभा ने उनको पास किया। इन प्रस्तावों के अनुसार वे सब लोग देश-द्रोही ठहराए गए, जिन्होंने धर्म में आर्मीनियन लोगों को दाख़िल किया, और राजा को व्यापार का कर दिया था। इसके उपरांत पार्लियामेंट का विसर्जन कर दिया गया। चार्ल्स ने इलियट से नाराज़ होकर उसे टावर में क़ैद करके उससे कठोर व्यवहार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह तीन साल के बाद अंत को क्षय-रोग से मर गया।

तीसरी पार्लियामेंट के विसर्जन के साथ ही चार्ल्स के राज्य की प्रथम यवनिका गिरती और दूसरी उठती है, जो १६२९ से १६४० तक नित्य नवीन दृश्य दिखाती है। उसके पतन के साथ ही इँगलैंड एक भयंकर नए युग में प्रवेश करता है, जिसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

(३) चार्ल्स का स्वेच्छाचारी राज्य

सन् १६२९ से १६४० तक चार्ल्स ने पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी राज्य किया। पार्लियामेंट भी अपने अधिकारों की रक्षा का पूर्ण प्रयत्न करती रही। पार्लियामेंट में ट्यूडर-काल की अपेक्षा बहुत ही अधिक परिवर्तन हो गया था। उसके सभ्यों की यह इच्छा थी कि पार्लियामेंट की इच्छा के अनुकूल काम करनेवाले व्यक्ति ही राजा के मंत्री बनें। राजा को यह पसंद न था। जब कभी पार्लियामेंट राजा से किसी मंत्री को हटाने के लिये कहती थी, तभी राजा क्रुद्ध

हो जाता और इस बात को अपने अधिकारों में हस्तक्षेप करना समझता था। उसका ख़याल था कि पार्लियामेंट अब देश के शासन की क्षमता भी अपने ही हाथ में लेना चाहती है; उसका इरादा है कि राजा को एक कठपुतली बना दे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा और प्रजा का झगड़ा चरम सीमा तक पहुँच गया। किसी को भी यह ख़याल नहीं था कि यह झगड़ा देश को कहाँ ले जायगा। इसमें संदेह नहीं कि इस झगड़े के दो ही परिणाम हो सकते थे। या तो चार्ल्स लुई १३वें की तरह स्वेच्छाचारी राजा बन जाता, या अँगरेज़ी पार्लियामेंट की शक्ति अनंत सीमा तक बढ़ जाती, और राजा एक खिलौना-भर रह जाता। चार्ल्स ने इन ग्यारह वर्षों में जिस तरह स्वेच्छाचारी राज्य किया, और अपने अधिकारों को लोक-सभा के हस्तक्षेप से बचाया, उसका वर्णन आगे दिया जाता है।

पार्लियामेंट को धता बताकर चार्ल्स ने सबसे पहले धन एकत्र करने का उपाय सोचा। इस उद्देश्य से उसने संपूर्ण राज्य के व्यय को घटा दिया। फ़्रांस और स्पेन से युद्ध बंद कर दिया, और उनसे संधि कर ली। परंतु जर्मनी से तीस वर्ष चलनेवाला युद्ध जारी ही रहा। दैवसंयोग से स्वीडन के राजा गस्टावस अडल्फ़स ने, और उसकी मृत्यु के बाद लुई १३वें के मंत्री रिशल्यू ने, प्रोटेस्टेंट-मत के उद्धार का यत्न पहले की ही तरह जारी रक्खा।

संधि करने के बाद भी चार्ल्स को राज्य-कर से इतना धन नहीं मिला, जिससे वह ठीक ढंग पर राज-काज चला सकता। उसने किसी-न-किसी प्रकार राज्य-नियमों को तोड़ना शुरू किया, उन नियमों के नए-नए अर्थ निकालकर धन प्राप्त किया। उसने व्यापार के करों को बढ़ा दिया। शाही ज़मीन और नए जंगल बढ़ाने में भी उसने किसी तरह की कमी नहीं की।

इँगलैंड में, प्राचीन समय में, एक प्रथा यह थी कि एक निश्चित आमदनी से अधिक आमदनीवाले ज़मींदार को 'नाइट' की उपाधि लेनी पड़ती थी, जिसके लिये कुछ फ़ीस पड़ती थी। यदि उपयुक्त व्यक्ति नाइट की उपाधि न ले, तो उस पर जुर्माना होता था। जब लोगों में नाइटों की अधिक क़दर न रह गई, तब ज़मींदारों ने नाइट बनना छोड़ दिया। अतएव बहुत-से ऐसे ज़मींदार थे, जो नाइट बनने के उपयुक्त होने पर भी नाइट न बने थे। अपनी आय बढ़ाने के लिये चार्ल्स ने उन पर जुर्माना कर दिया। इतना ही नहीं, उसने बहुत पुराने जहाज़ी कर (Ship money) फिर से बाँध दिए, और इस तरह समुद्र-तटवासियों से धन लेना शुरू कर दिया। इन उपायों से जो धन प्राप्त होता था, वह जहाज़ों के बढ़ाने में ही ख़र्च होता था, जिसमें इंगलैंड के व्यापार को धक्का न पहुँचे। जहाज़ी कर वसूल करने में उसने पूर्ण सफलता प्राप्त की। इस सफलता से उत्साहित होकर उसने देश के भीतरी भाग पर भी यही राज्य-कर लगा दिया। किंतु समुद्र-तट पर न रहनेवालों ने जहाज़ी कर देने से इनकार किया। राजा उसे ज़बरदस्ती वसूल करने लगा।

चार्ल्स के इन ऊपर लिखे कामों से जनता बहुत ही अधिक असंतुष्ट थी। सारे इँगलैंड पर जहाज़ी कर लगते ही देश-भर में खलबली मच गई। इलियट के परम मित्र और पार्लियामेंट के सभ्य हैंपडन ने जहाज़ी कर को, राज्य-नियम के विरुद्ध कहकर, देने से इनकार कर दिया। १६३८ में उस पर राज्य की ओर से मुक़द्दमा चलाया गया। न्यायाधीशों ने डर के मारे राजा के पक्ष में फ़ैसला दिया, और जहाज़ी कर को राज्य-नियम के अनुकूल ठहराया। कुछ हो, इस निर्णय का जनता पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। जनता राजा और राजकर्मचारियों से असंतुष्ट होकर जहाज़ी कर के वसूल होने में बाधाएँ डालने लगी।

चार्ल्स ने धन एकत्र करने के समान ही धर्म में भी पूरी तौर से स्वेच्छाचारिता से काम लेना शुरू किया। प्यूरिटन लोग पार्लियामेंट के पक्ष में थे। इस कारण चार्ल्स उनका जानी दुश्मन हो गया। वह लाड (Laud) का शिष्य था, इस कारण आर्मीनियन दल पर पूर्ण श्रद्धा रखता था। इसी से प्यूरिटन लोग उससे और भी अधिक चिढ़ गए। आर्मीनियन लोग राजा के दैवी अधिकार मानते थे। यही कारण है कि चार्ल्स ने १६२८ में लाड को लंदन का बिशप बनाया, और १६३३ में आर्च-बिशप ऐबट के मरने पर उसको कैंटरबरी का आर्च-बिशप बना दिया। लाड ने भी राजा का अच्छी तरह से साथ दिया, और समय-समय पर उसको उचित सलाह देता रहा।

लाड बहुत ही विद्वान् था। उसके आचार-विचार उच्च और शक्ति अपरिमित थी। वह धार्मिक संस्था की हालत सुधारना चाहता था। उसमें एक ही दोष था, और वह यह कि दुनियादारी नहीं थी। इसी कारण वह जनता के स्वभाव को न पहचान सका, चार्ल्स ही की तरह भूलें करता गया। प्यूरिटन लोग स्वतंत्र विचार के थे। वे पुराने रस्म-रिवाज और संस्कारों में शिथिलता चाहते थे। लाड को कब यह स्वीकार हो सकता था? इसका परिणाम यह हुआ कि प्यूरिटन लोगों को धार्मिक बातों के लिये मजबूर किया गया। प्यूरिटन लोग कब इसे मंजूर कर सकते थे? इसके साथ ही उन्हें यह संदेह हो गया कि शायद प्रोटेस्टेंट-मत के नाम पर वह कैथलिक-मत का ही प्रचार न करता हो। रानी के कैथलिक होने के कारण उनका यह संदेह पक्का हो गया। कुछ समय तक देश में भीतर-ही-भीतर आग सुलगती रही। लाड ने चर्च की शक्ति को बढ़ाना शुरू कर दिया। उसने अपराधियों को कठोर दंड भी दिया। स्टार-चैंबर ने भी राजा की इच्छाओं के अनुकूल ही निर्णय किया। अलेग्ज़ैंडर

लेटन नाम के एक डॉक्टर ने बिशपों के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी, इसलिये उसके कोड़े लगवाए गए, उसके कान कटाकर वह क़ैद कर लिया गया। इसी तरह विलियम प्रीन (William Prynne) को तत्कालीन नाटकों के विरुद्ध पुस्तक लिखने के कारण कारावास-दंड दिया गया। यह क्यों ? इसलिये कि रानी को नाटकों का बड़ा शौक़ था, और वह ख़ुद कभी-कभी खेल में पार्ट लिया करती थी। अधिकार-पत्र लेते समय सर टामस बैंटवर्थ ने जो वीरता प्रकट की थी, और लोक-सभा का साथ दिया था, उसका विस्तार के साथ वर्णन किया जा चुका है। बकिंघम के मरने के बाद उसमें आकाश-पाताल का अंतर हो गया। लाड के साथ रहने से राजा में उसकी भक्ति हो गई। बेकन की तरह उसका भी यह विचार हो गया कि अशिक्षित पार्लिया-मेंट से देश की वह उन्नति नहीं हो सकती, जो एक शिक्षित और स्वेच्छाचारी राजा से। चार्ल्स ने भी बैंटवर्थ को अपनाया। शुरू में उसने उसको उत्तरी सभा (The Council of North) का प्रधान और उसके बाद आयर्लैंड का शासक बना दिया। बैंटवर्थ ने दृढ़ता से आयर्लैंड का शासन और साथ ही देश के व्यापार-व्यवसाय व कृषि की उन्नति करने का यत्न भी किया। उसने लाड के सिद्धांतों और विचारों को आयर्लैंड में फैलाया।

आयर्लैंड ही की तरह स्कॉटलैंड पर भी अँगरेज़ी राज्य का प्रभाव पड़ा। चार्ल्स ने स्काटिश चर्च को अँगरेज़ी चर्च के साथ मिलाने का यत्न किया, और स्कॉटलैंड को पूर्ण रूप से इँगलैंड बनाना चाहा। परंतु यह काम बहुत कठिन था। १६३३ में चार्ल्स एडिनबरा पहुँचा, और वहाँ उसने अपना राज्याभिषेक करवाया। लाड राजा के साथ था। उसने एडिनबरा में एक नई बिशपरिक् स्थापित की। १६३७ में स्कॉटलैंड के धर्म में सुधार करवाने का यत्न किया गया। उन्हें भी अँगरेज़ों की प्रार्थना-पुस्तक पढ़ने के लिये विवश किया गया।

स्काच् लोग इस प्रार्थना-पुस्तक को पोपों की पुस्तक समझते और उसे बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखते थे।

उक्त नवीन प्रार्थना-पुस्तक का पढ़ना अनिवार्य किए जाने के कारण सारे स्कॉटलैंड में क्रोध की आग भड़क उठी। वहाँ के निवासी विद्रोह करने के लिये तैयार हो गए। एडिनबरा के सेंट-गाइल नाम के चर्च में ज्यों ही नवीन प्रार्थना-पुस्तक पादरियों ने पढ़ी, त्यों ही लोग शोर-गुल और दंगा करने लगे। स्काच् जनता और सरदार राजा के विरुद्ध उठ खड़े हुए। ग्रामीणों, पादरियों, नागरिकों और सरदारों की भिन्न-भिन्न चार सभाएँ बन गईं। वे ही स्कॉटलैंड का शासन करने लगीं। ग्लासगो में स्काच् लोगों ने एक बड़ी भारी जातीय सभा की। राजा ने जब इस सभा को बर्ख़ास्त करना चाहा, तो सभा के सभ्यों ने वह आज्ञा नहीं मानी। उन्होंने राजा से कह दिया कि तुम्हें हमारे धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।

चार्ल्स इस कठिन समस्या को हल न कर सका। न तो उसके पास सेना थी, और न धन, जिसके बल पर वह स्कॉटलैंड की स्वतंत्रता को मिटाता। लाचार होकर उसने अँगरेज़ों को स्काचों के विरुद्ध भड़काने का यत्न किया। परंतु अँगरेज़ बिलकुल न भड़के। उन्होंने स्काच् लोगों का पूरे तौर पर साथ दिया। लाचार होकर चार्ल्स ने इधर-उधर के गँवार तथा अशिक्षित लोगों को इकट्ठा किया, और स्काच् लोगों से लड़ने के लिये यात्रा कर दी। स्काचों की सेना बहुत सुशिक्षित थी, और उसमें अलेग्ज़ैंडर लैस्ले-जैसे योग्य आदमी थे, जो कि युद्ध-कौशल में अपने समय में एक ही माने जाते थे। परिणाम यह हुआ कि १६३९ के युद्ध में चार्ल्स बुरी तरह पराजित हुआ। यह युद्ध इतिहास में प्रथम बिशप-युद्ध के नाम से प्रख्यात है। चार्ल्स ने स्काच् लोगों से संधि कर ली (यह संधि बार्बिक की संधि के नाम से प्रसिद्ध है), और

स्काच् लोगों की शिकायतों को स्काच् लोगों के द्वारा ही दूर करने का प्रण किया ।

इस संधि के बाद ही चार्ल्स ने वैंटवर्थ को आयर्लैंड से बुला लिया । उसको स्टैफ़ोर्ड का अर्ल बनाया, और सारी कठिनाइयाँ उसके सामने रक्खीं । वैंटवर्थ बहुत ही समझदार तथा नीति-निपुण आदमी था । उसने चार्ल्स को सलाह दी कि विना पार्लियामेंट की सहायता के स्काच् लोग न दबाए जा सकेंगे । इस पर उसने एप्रिल, १६४० में पार्लियामेंट का अधिवेशन किया । हैंपडन तथा जान पिम के नेतृत्व में लोक-सभा ने राजा से साफ़ शब्दों में कह दिया कि हम सहायता देने के लिये तैयार हैं, बशर्ते कि आप हमारी शिकायतों को दूर कर दें । राजा को यह मंजूर न था, अतः उसने इस चतुर्थ पार्लियामेंट को भी बर्ख़ास्त कर दिया । इतिहास में यह क्षणिक पार्लियामेंट (Short Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है ।

पार्लियामेंट से सहायता न पा सकने पर चार्ल्स ने फिर सेना एकत्रित की और स्कॉटलैंड पर चढ़ाई करने की तरकीब सोची । ज्यों ही यह समाचार स्काच् लोगों को मालूम पड़ा, उन्होंने इंगलैंड पर आक्रमण कर दिया । चार्ल्स प्रत्येक स्थान पर उनसे पराजित हुआ । लाचार होकर उसने उनसे संधि कर ली । यह संधि रिपन की संधि के नाम से पुकारी जाती है । रिपन की संधि के अनुसार राजा ने स्काच् लोगों को पूरे तौर पर धार्मिक स्वतंत्रता दे दी । इससे स्पष्ट है कि यह द्वितीय बिशप-युद्ध राजा चार्ल्स के लिये प्रथम बिशप-युद्ध की अपेक्षा भी अधिक भयंकर सिद्ध हुआ । रिपन की संधि में चार्ल्स ने यह प्रण किया था कि वह स्काच्-सेना को पूरी तनख़्वाहें दे देगा । इससे उसकी आर्थिक दशा और भी बिगड़ गई । लोक-सभा से डरकर उसने यार्क नगर में लार्ड लोगों की एक महासभा की । लार्डों ने उसको पार्लियामेंट का अधिवेशन करने की सलाह दी । "मरता

क्या न करता " के अनुसार ३ नवंबर, १६४० को उसने पाँचवीं पार्लियामेंट बुलाई, जो कि इतिहास में लॉङ्ग पार्लियामेंट (Long Parliament) के नाम से प्रख्यात है।

(४) लॉङ्ग पार्लियामेंट का अधिवेशन

अभी लिखा जा चुका है कि ३ नवंबर, १६४० को वेस्ट मिनिस्टर में सब पार्लियामेंट के सभ्य एकत्र हुए। उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि राजा के शासन में जब तक पूरे तौर पर सुधार न कर लेंगे, तब तक इस सभा को विसर्जित न होने देंगे।

सभा ने सबसे पहले राजा के मंत्रियों पर आक्रमण किया, और उनको दोषी ठहराया। बेंटवर्थ तथा लाड पर अभियोग चलाए गए। बेंटवर्थ का कोई भी अपराध सिद्ध न हुआ ; क्योंकि उसने जो कुछ किया था, सो राजा की आज्ञा से, और राज्य के मामलों में राजा की आज्ञा पालन करने से उन दिनों किसी को दंड नहीं मिल सकता था। जब पार्लियामेंट ने देखा कि क़ानूनी रीति से उसको दंड देना असंभव है, तो उसने बेंटवर्थ के विरुद्ध यह प्रस्ताव पास किया कि वह देश-द्रोही है, और उसे फाँसी दी जाय। राजा को भी लाचार होकर फाँसी की आज्ञा पर सही करनी पड़ी। लाड को भी कुछ समय के लिये लंडन-टावर में क़ैद कर दिया। इसके अनंतर लॉङ्ग पार्लियामेंट ने राजा के संपूर्ण ढंग को ही बदलने का यत्न किया। उसने हाई कमीशन का न्यायालय, कोर्ट ऑफ़ स्टार चेंबर तथा अन्य स्वच्छंद न्यायालयों को बंद कर दिया, और उन्हें ग़ैरक़ानूनी ठहराया। पिम को क़ैद से छुड़ाया। डार्नेल तथा हैंपडन आदि के विषय में न्यायाधीशों ने जो निर्णय किया था, उसको ग़ैरक़ानूनी कहकर पलट दिया। पार्लियामेंट ने त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) पास किया। अभी तक पार्लियामेंट का अधिवेशन राजा की इच्छा पर निर्भर था। अब इसके अनुसार तीन वर्षों के

बीच में कम-से-कम एक बार उसका अधिवेशन होना आवश्यक हो गया। साथ ही यह भी नियम बनाया कि लॉङ्ग पार्लियामेंट तब तक विसर्जित नहीं की जा सकती, जब तक वह स्वयं ही विसर्जित होना मंजूर न करे।

इन ऊपर-लिखे क़ानूनों को बनाने के बाद लोक-सभा ने चर्च की ओर अपना ध्यान दिया, तथा हैंपडन की सलाह से रूट ऐंड ब्रांच बिल (Root and Branch Bill)-नामक प्रस्ताव पेश किया गया। इसके अनुसार पादरियों की शक्ति सर्वथा चकनाचूर हो जाना और पादरियों को साधारण लोगों के कमीशन के अधीन रहना निश्चित होता। इस प्रस्ताव पर लोक-सभा के सभ्य दो दलों में बँट गए। अतः यह प्रस्ताव अभी पास नहीं हुआ था कि लोक-सभा के सभ्य छुट्टी पर चले गए।

पार्लियामेंट के सभ्यों के तितर-बितर होते ही चार्ल्स स्कॉटलैंड जा पहुँचा। दैवी घटना से स्काचों को एक षड्यंत्र का पता लगा, जो इसलिये बना था कि स्काच्-नेताओं को किसी-न-किसी तरीक़े से मार डाला जाय। स्काचों ने राजा को ही इस षड्यंत्र का मूल समझा। परंतु उसने स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया कि मुझको इस षड्यंत्र का कुछ भी ज्ञान न था। जो कुछ हो, इस षड्यंत्र के कारण राजा की बहुत ही अधिक बदनामी फैल गई। लोगों का उस पर से बिलकुल ही विश्वास उठ गया।

इसी समय आयर्लैंड में विद्रोह की आग भड़क उठी। वेंटवर्थ की सख़्ती से लोग बहुत ही तंग थे। उसके वहाँ से हटते ही उन्होंने अँगरेज़ी-राज्य की कठोरता से अपने को बचाना चाहा। आयरिश लोगों ने अँगरेज़ों पर ख़ूब अत्याचार किए। हज़ारों अंगरेज़ नवयुवकों को उन्होंने जान से मार डाला। इस विद्रोह में भी लोगों ने चार्ल्स का हाथ समझा। परंतु उनको इसका कोई दृढ़ प्रमा न मिला।

१६४१ ई० में पुनः पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ। राजा के विरुद्ध जो-जो किंवदंतियाँ उड़ी थीं, पार्लियामेंट ने उनसे लाभ उठाने का यत्न किया। उसने एक दस्तावेज़, जिसका नाम (Grand Remonstrance) था, तैयार किया, जिसमें चार्ल्स के सारे अत्याचार लिखे, और चार्ल्स को इस बात पर विवश किया कि उसके सब मंत्री लोक-सभा के विश्वास-पात्र व्यक्ति ही होने चाहिए। बहुत विवाद के अनंतर पिम तथा हैंपडन ने लोक-सभा से यह पास करवा लिया।

ऊपर लिखा जा चुका है कि धर्म-विषयक प्रश्न पर लोक-सभा के अंदर दो दल हो गए थे। उक्त लेख के प्रश्न पर तो दोनों दल एक दूसरे से सर्वथा ही लड़ पड़े। यही कारण है कि यह बहुत थोड़ी ही सम्मतियों से पास हुआ।

चार्ल्स ने इस झगड़े से लाभ उठाया। उसने ३ जनवरी, १६४२ को लॉर्ड किंबोल्डन तथा पार्लियामेंट के पाँच सभ्यों पर देश-द्रोह का दोष लगाया। इन पाँच सभ्यों में पिम तथा हैंपडन भी सम्मिलित थे। यहीं पर न रुककर वह स्वयं लोक-सभा के भवन में गया, और सभा से कहा कि पाँचों सभ्यों को मेरे सुपुर्द करो; क्योंकि उन्होंने देश-द्रोह किया है। पाँचों को राजा की शैतानी पहले से ही मालूम थी, अतः वे लंदन-नगर में छिप गए थे। पार्लियामेंट के काम में राजा का हस्तक्षेप करना पार्लियामेंट की स्वतंत्रता और अधिकार के विरुद्ध है। अतएव राजा के बाहर निकलते ही सभ्यों ने "अधिकार, अधिकार" की पुकार से सभा-भवन को गुँजा दिया, और पाँचों सभ्यों को राजा के हाथ में देने से इनकार कर दिया। सभ्यों ने वेस्ट मिनिस्टर से हटकर लंदन-नगर में शरण ली, और वहीं पर सभा का अधिवेशन करना शुरू किया। लंदन-निवासी सभा के पक्ष में थे, अतः सभ्यों को राजा के स्वेच्छाचार से कुछ भी भय न था।

राजा ने बहुत ही अधिक यत्न किया कि वह पाँचों सभ्यों को किसी तरीक़े से पकड़ ले, परंतु वह अंत तक सफल न हो सका। लंदन-निवासी बहुत ही शक्तिशाली थे। उन्होंने पाँचों सभ्यों को केवल सुरक्षित ही नहीं रक्खा, बल्कि वे उनको पार्लियामेंट की उपसमितियों में भी प्रतिदिन भेजते रहे। एक सप्ताह के बाद वे लोक-सभा में आकर बैठे। जब यह बात चार्ल्स को मालूम हुई, तब उसने यह समझ लिया कि लंदन-निवासी उसको अपना राजा नहीं मानते। इस अपमान से क्रुद्ध होकर वह हैंपडन-कोर्ट में चला गया, और रत्नादि संपत्ति लेकर रानी नीदरलैंड को चल दी, जिससे वह वहाँ से अपने पति को सहायता पहुँचा सके।

(५) राजा तथा प्रजा का युद्ध

चार्ल्स, प्रजा तथा पार्लियामेंट से युद्ध करने के लिये तैयार था, और वे अपने आपको बचाना चाहती थीं। यही कारण है कि १६४२ के पहले छः महीनों में कोई भी युद्ध न छिड़ा। "लॉर्ड-सभा से पादरियों को अलग कर देना चाहिए", इस लोक-सभा के प्रस्ताव को भी बड़ी ही कठिनता से चार्ल्स ने मंजूर किया। कुछ ही समय के बाद सभा का मिलीशिया बिल (Militia Bill)-नामक दूसरा प्रस्ताव राजा के सामने आया। इसका मतलब यह था कि आगे से जल तथा स्थल के सेनापतियों को पार्लियामेंट स्वयं ही चुनेगी। जब राजा ने इस प्रस्ताव को मंजूर न किया, तो सभा ने सारे देश में यह घोषणा कर दी कि आगे से इस प्रस्ताव को सभा की आज्ञा के अनुसार राज्य-नियम ही समझा जाय। इतने ही पर सभा ने संतोष नहीं किया, उसने राजा की स्वीकृति के लिये नाइंटीन प्रॉपोज़िशंस (Nineteen Propositions) अर्थात् उन्नीस प्रस्ताव भेजे, जिनके अनुसार राजा की सारी शक्ति प्रजा के हाथ में चली जाती, और राजा एक कठपुतली के सदृश पार्लियामेंट का खिलौना बन जाता। उसने

इन प्रस्तावों को मंजूर न किया और स्वयं धन तथा सेना इकट्ठी करना शुरू किया। २२ अगस्त को नाटिंघम-शहर में अपना शाही झंडा खड़ा करके वह अपने पक्ष के लोगों को बड़ी शीघ्रता से एकत्र करने लगा।

राजा तथा प्रजा के इस गृह-युद्ध में सारी अँगरेज़-जाति दो समान भागों में विभक्त हो गई। चार्ल्स को यह देखकर बहुत ही खुशी हुई कि जनता के एक बड़े भाग ने पूरे तौर पर उसका साथ दिया है। हाइड् (Hyde) तथा फ़ाकलैंड के निवासियों ने, लोक-सभा के एकतिहाई तथा लॉर्ड-सभा के आधे के लगभग सभ्यों ने राजा का पक्ष लिया। दोनों ही दलों के लोग यह कहते थे कि हम प्राचीन शासन-पद्धति के पक्ष में हैं। पादरी लोग खुल्लमखुल्ला पार्लियामेंट के विरुद्ध थे। एक-मात्र प्यूरिटन लोग ही पार्लियामेंट के लिये जान देने को तैयार थे। कौन-कौन लोग राज-दल में थे, और कौन-कौन प्रजा-दल में, इसका वर्गीकरण करना कठिन है। पर इसमें संदेह नहीं कि ग्रामीणों तथा लॉर्डों का अधिक अंश राज-दल में और मध्य श्रेणी के अँगरेज़ तथा व्यापारी और व्यवसायी पार्लियामेंट-दल में सम्मिलित थे। भौगोलिक विचार से यदि राज-दल तथा प्रजा-दल का वर्गीकरण किया जाय, तो यह साफ़ ही है। दक्षिणी-पश्चिमी प्रांत, वेल्स तथा उत्तरी प्रांत राजा के और लंदन तथा उसके आसपास के मंडल पार्लियामेंट के पक्ष में थे। जो कुछ हो, लोक-सभा के पास धन था, किंतु राजा के पास धन की कमी थी। वैसे ही राजा के पास शिक्षित सैनिक तथा अश्वारोही थे, परंतु लोक-सभा के पास इनकी कमी थी।

१६४२ का पहला युद्ध—मिड्लैंड में चार्ल्स के अनुयायियों की संख्या बहुत थी। उसने लिंडसे के अर्ल को मुख्य सेनापति नियत किया, और प्रिंस रूपर्ट को अश्वारोहियों का सेनापति बनाया। राजा

का विचार था कि लंदन के दक्षिणी भाग पर सबसे पहले आक्रमण करूँ; परंतु पार्लियामेंट के सेनापति ऐसेक्स की चतुरता से उसको ऑक्सफ़ोर्डशायर तथा वार्विकशायर की सीमा पर स्थित एजहिल (Edge Hill)-नामक स्थान पर ही लड़ाई करनी पड़ी। प्रिंस रूपर्ट ने पार्लियामेंट की अश्वारोही सेना पर पूर्ण विजय प्राप्त की। परंतु पार्लियामेंट की पैदल सेना ने हार न खाई। उसने राजा की पैदल सेना को पूरी तरह से नीचा दिखाया। रात होते ही ऐसेक्स पीछे हट गया। इससे ऑक्सफ़ोर्ड पर राजा का प्रभुत्व स्थापित हो गया। इसको अपना मुख्य स्थान बनाकर राजा रीडिंग होते हुए लंदन की ओर रवाना हुआ। ब्रैंटफ़ोर्ड में पहुँचते ही उसे लंदन-निवासियों की सेना लड़ने को तैयार मिली। उसे उस सेना से लड़ने की हिम्मत न पड़ी, इसी से वह ऑक्सफ़ोर्ड में फिर लौट आया।

१६४३ का दूसरा युद्ध—१६४३ के दूसरे युद्ध में पहले-पहल राजा की जीत हुई। ऑक्सफ़ोर्ड तथा लंदन के मध्य-स्थित शालग्रो और फ़ील्ड में दोनों दलों का युद्ध हुआ। इस युद्ध में हैंपडन घायल हुआ, और मारा गया। इसकी मृत्यु से पार्लियामेंट-दल को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा; क्योंकि पिम पहले ही मर चुका था। ऐसे ही कष्टमय समय में राजा के सेनापति अर्ल न्यूकैसल ने लॉर्ड फ़ेयरफ़ैक्स तथा उसके पुत्र सर टामस फ़ेयरफ़ैक्स को एड्वाल्टन मूर में पराजित किया। स्ट्राटन-नामक स्थान पर जो युद्ध हुआ, उसमें भी राज-दल ही विजयी रहा। इस प्रकार हल-नगर को छोड़कर सारा यार्कशायर, कार्नवाल, डेवन, समरसेट तथा विल्टशायर के प्रदेश राजा के हाथ में आ गए। ग्लास्टर को छोड़कर सैवर्न-घाटी के सब नगर भी राजा के ही क़ब्ज़े में आ गए। ब्रिस्टल ने राज-दलवालों के लिये अपने दरवाज़े खोल दिए। पश्चिम में प्लमथ ने लोक-दल का अभी तक साथ न छोड़ा था।

राज-दलवालों ने प्रमथ, हल तथा ग्लास्टर की विजय में अपना सारा ज़ोर लगा दिया। ग्लास्टर के घेरे में राजा स्वयं ही उपस्थित था। इधर पार्लियामेंटवालों ने ग्लास्टर को सहायता पहुँचाने के लिये ऐसेक्स को ससैन्य भेजा। ऐसेक्स का आना सुनते ही राजा भाग गया, और ग्लास्टर-नगर राजा की क्रोधाग्नि में पड़ने से बच गया। ऐसेक्स लंदन की ओर लौट रहा था; राह में उसको न्यूवरी-नामक स्थान पर राज-दल से लड़ना पड़ा। यह युद्ध २० सितंबर, १६४३ में हुआ। इसमें राज-दल का नेता फ़ाक्लैंड मारा गया, और लंदन-निवासियों की पूरी जीत हुई। यह युद्ध इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है; क्योंकि इसी युद्ध के अनंतर राज-दल कमज़ोर पड़ गया, और लोक-दल की शक्ति बढ़ गई।

न्यूवरी तथा ग्लास्टर के युद्ध के बाद, साल के अंत तक, कोई नया युद्ध नहीं हुआ। इँगलैंड के पूर्वी प्रदेश में प्यूरिटन लोगों का ज़ोर था। युद्ध छिड़ते ही पूर्वी प्रदेश के सारे ज़िलों का एक सम्मेलन बन गया, जो कि पूर्वी सम्मेलन के नाम से पुकारा जाता है। पूर्वी सम्मेलन ने प्यूरिटन लोगों की एक सेना बनाई, जिसके नेता आलिवर क्राम्बैल, लॉर्ड किंवोल्टन तथा प्रलंब-पार्लियामेंट के कुछ सदस्य थे। वास्तव में पूर्वी सम्मेलन तथा उसकी सेना का मुख्य नेता आलिवर क्राम्बैल ही था। उसकी सेना ने विंस्वी-युद्ध में उसी दिन लिंकनशायर को फ़तह किया, जिस दिन न्यूकैसल को हल-नगर का घेरा छोड़ने के लिये विवश होना पड़ा।

दो वर्ष के युद्धों के अनंतर पार्लियामेंट तथा राजा ने बाहर के लोगों से सहायता माँगने का यत्न किया। सौभाग्य से योरप के राष्ट्र तीससाला युद्ध में फँसे हुए थे। इसी से कोई भी इँगलैंड में अपनी सेना न भेज सका। इस दशा में चार्ल्स ने आयर्लैंड से और पार्लियामेंट ने स्कॉटलैंड से सहायता माँगी। दोनों ही देशों ने कुछ

ख़ास-ख़ास शर्तें मान लेने पर अपने-अपने पक्षवालों को सहायता पहुँचाई ।

१६४४ का तीसरा युद्ध—सन् १६४४ शुरू होते ही दोनों दलों ने फिर नए सिरे से लड़ना शुरू किया । आयर्लैंड ने जो सेना राजा के पास भेजी, वह राजा तक नहीं पहुँच सकी । पार्लियामेंट ने उसको इधर-उधर ही तितर-बितर कर दिया । स्कॉटलैंड की सेना बहुत ही शिक्षित थी । वह किसी-न-किसी उपाय से पार्लियामेंट-दल के पास पहुँच ही गई । उस सहायता के पहुँचते ही प्यूरिटन सेनाओं ने यार्क में न्यूकैसल तथा उसकी सेना को चारों तरफ़ से घेर लिया । मंचेस्टर तथा क्राम्वैल भी पार्लियामेंट-दल की सहायता के लिये पहुँच गए । इधर चार्ल्स ने न्यूकैसल की सहायता के लिये प्रिंस रूपर्ट को भेजा । २ जूलाई, १६४४ को मार्स्टनमूर का प्रसिद्ध युद्ध हुआ । इसमें राज-दल पराजित हुआ, और सारा उत्तरी इँगलैंड पार्लियामेंट-दल के प्रभुत्व में आ गया ।

ऐसे उत्तम समय में ऐसेक्स ने कार्नवाल पर आक्रमण कर दिया । इस प्रयत्न में उसकी सारी सेना नष्ट हो गई । क्राम्वैल तथा मंचेस्टर को न्यूवरी के दूसरे युद्ध में ऐसेक्स की सुस्ती के कारण पूरी सहायता नहीं पहुँची, इससे उनको इस युद्ध में भी सफलता न प्राप्त हुई । दैवसंयोग से स्कॉटलैंड में मांट्रोज़ के अर्ल जेम्स ग्राहम ने राजा का पक्ष लिया, और उत्तरी स्कॉटलैंड से बहुत-सी सेना इकट्ठी कर ली । इसने लोक-दल के पक्षपाती कैम्बल लोगों को बुरी तरह से हराया ।

इस घटना से पार्लियामेंट-दल घबरा गया : क्योंकि उत्तरी स्कॉटलैंड के लोग लड़ाई तथा वीरता में अपना सानी न रखते थे । परिणाम यह हुआ कि सभी लोक-दल के पक्षपाती एकत्र जमा हुए । उन्होंने असंगठन को ही अपनी पराजय का मुख्य कारण समझकर

सर टामस फ्रेयरफ़ैक्स को सारी सेना का मुख्य सेनापति नियत किया, और आलिवर क्राम्बैल को उसका सहायक सेनापति तथा अश्वारोहियों का मुख्य सेनापति बनाया।

१६४५ का चौथा युद्ध—१६४५ के युद्ध में इस संगठन का महत्त्व प्रकट हुआ। नेसूबी-नामक स्थान पर १४ जून को पार्लियामेंट-दल के साथ राज-दल का भयंकर युद्ध हुआ। इसमें क्राम्बैल की सेना जीती। सितंबर, १६४५ में मांट्रोज़ का अर्ल भी पराजित हुआ, और योरप को भाग गया। इससे चार्ल्स बिलकुल निराश हो गया। वह स्कॉटलैंड पहुँचा, परंतु वहाँ उसको कुछ भी सहायता न मिली। उसको स्काच् लोगों ने क़ैद कर लिया। इन्हीं दिनों पार्लियामेंट के भीतर फूट पड़ गई। धार्मिक मामलों में पार्लियामेंट के सभ्य दो दलों में विभक्त हो गए। जो स्काच् चर्च के पक्ष में थे, वे प्रैस्बिटीरियन, और जो इसके विरुद्ध थे, वे इंडिपेंडेंट के नाम से पुकारे जाने लगे। क्राम्बैल तथा उसके सैनिक प्रैस्बिटीरियन-मत के विरुद्ध थे। इसका परिणाम यह हुआ कि पार्लियामेंट-दल में झगड़ा तथा युद्ध आरंभ हो गया।

१६४८ का गृह-युद्ध—१६४८ में अँगरेज़ प्रैस्बिटीरियन लोगों ने स्काचों से मित्रता की। इनकी सेना लंकाशायर तथा कंबरलैंड की ओर से आगे बढ़ी; और उसने राजा को क़ैद करने का यत्न किया। परंतु क्राम्बैल ने प्रैस्टन तथा वारिंगटन-नामक स्थानों पर स्काचों तथा अँगरेज़ों की सम्मिलित सेना को बुरी तरह से परास्त किया। इससे सारा इँगलैंड प्यूरिटन लोगों के अधिकार में आ गया।

सेना के लोग धर्म के संबंध में सहिष्णुता चाहते थे, और इसीलिये वे प्रलंब-पार्लियामेंट के असहिष्णु सदस्यों से नाराज़ थे। इसी से ६ दिसंबर, १६४८ के दिन कर्नल प्राइड् नाम का एक फ़ौजी

अफ़सर पार्लियामेंट-भवन में पहुँचा, और उसने लोक-सभा के सारे प्रेस्बिटीरियन सभ्यों को बाहर निकाल दिया। यह घटना इतिहास में Pride's Purge के नाम से प्रसिद्ध है। क्राम्वैल तथा उसके सैनिकों ने चार्ल्स पर मुक़द्दमा चलाया। लोक-सभा के ५३ सभ्यों ने मिलकर १३५ सभ्यों का एक न्याय-समिति बनाई, और उसका प्रधान ब्रैडशा (Bradshaw) को चुना। इस न्याय-समिति का एक सभ्य क्राम्वैल भी था। विचार के समय किंतु १३५ में से केवल ६३ ही सभ्य आए। इन सभ्यों के सामने २० जनवरी, १६४६ को चार्ल्स पर मुक़द्दमा चलाया गया। उस पर अत्याचारी, देश-द्रोही तथा घातक होने के अपराध लगाए गए। चार्ल्स ने उत्तर देने में अपना अपमान समझा, और वह चुपचाप शांत भाव से खड़ा रहा।

न्यायालय ने उसको फाँसी का दंड दिया। अपनी स्त्री और बाल-बच्चों से प्रेम-पूर्वक मिल लेने के बाद वह ३० जनवरी के दिन ह्वाइटहॉल-पैलेस में मार डाला गया। मृत्यु के समय लोगों के सामने उसके सारे गुण प्रकट हुए। उसके धैर्य, उसकी शांति और पवित्रता देखकर लोगों ने रोना शुरू कर दिया। चर्च तथा शासन-पद्धति के लिये जो-जो आदमी शहीद हुए हैं, उनमें उसका नाम भी लिखा गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६२५	चार्ल्स प्रथम का राज्याधिरोहण
१६२८	अधिकार-पत्र (the Petition of Right)
१६२६	चार्ल्स का तृतीय पार्लियामेंट को विसर्जित करना
१६३३	कैंटर्बरी का आर्च बिशप लाड को बनाना
१६३८	हैंपडन का अभियोग
१६४०	प्रलंब-पार्लियामेंट का अधिवेशन
१६४१	स्टैफ़ोर्ड को फाँसी चढ़ाना

१६४२	एजहिल का युद्ध
१६४३	न्यूबरी का युद्ध
१६४४	मार्स्टनमूर का युद्ध
१६४५	नेस्बी का युद्ध
१६४८	द्वितीय गृह-युद्ध
१६४९	चार्ल्स प्रथम को फाँसी

तृतीय परिच्छेद

इँगलैंड में प्रजा-तंत्र तथा संरक्षित राज्य

(१६४९—१६६०)

चार्ल्स की फाँसी के बाद हाउस ऑफ़ कामंस ने लॉर्ड-सभा तथा राजा, दोनों को ही जनता की स्वतंत्रता का नाशक ठहराकर अकेले आप ही राज-काज चलाने का इरादा किया। प्रबंध का कार्य बहुत ही अधिक अनुभव के विना सुगमता से नहीं हो सकता, यह विचार कर हाउस ऑफ़ कामंस ने उक्त कार्य ४१ सभ्यों की एक स्थायी राष्ट्र-सभा को सौंप दिया। उक्त राष्ट्र-सभा को प्राचीन प्रिवी-कौंसिल का स्थानापन्न कहा जा सकता है। क्राम्वेल के चित्त में शुरू से ही वीनिस तथा हालैंड के सदृश ही इँगलैंड में भी कुलीन-तंत्र राज्य स्थापित करने की इच्छा थी। इसके साथ ही वह प्यूरिटनों के लिये धार्मिक सहिष्णुता (Religious toleration) तथा देश में शांति-स्थापना का इच्छुक था। चार वर्ष तक इँगलैंड में एक-मात्र प्रतिनिधि-सभा ही शासन का काम करती रही। इन वर्षों में शत्रुओं ने इँगलैंड को किस प्रकार घेरे रक्खा, और इँगलैंड ने भी संपूर्ण शत्रुओं को किस प्रकार परास्त किया, इसका इतिहास अति रोचक है। अतएव अब उसी पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न किया जायगा।

(१) युद्ध

चार्ल्स के वध से सारे योरप में आतंक छा गया था। रूस, फ्रांस तथा डच प्रतिनिधि-राज्य ने इँगलैंड के प्रतिनिधि-तंत्र राज्य को अनुचित ठहराया, और उसके राज-दूत अपने यहाँ रखने से इनकार कर दिया। स्कॉटलैंडवालों ने भी अँगरेज़ प्रतिनिधि-तंत्र राज्य का साथ नहीं दिया, और चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा मान लिया। आयर्लैंड के राज-पक्षपाती दल ने स्काचों का साथ दिया, और डच प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने चार्ल्स द्वितीय को, अपने पिता के वध का अँगरेज़ों से बदला लेने के लिये, सेना आदि के द्वारा सहायता पहुँचाई।

इन ऊपर-लिखी बाह्य विपत्तियों के सदृश ही अँगरेज़ प्रतिनिधि-तंत्र राज्य आंतरिक विपत्तियों से भी त्रस्त था। चार्ल्स के वध के अनंतर राज-पक्षपाती दल की सहानुभूति प्रतिनिधि-तंत्र राज्य से नहीं रही। अँगरेज़-जनता का पूर्व राजा के प्रति जो भाव हो गया था, उसका अनुमान तत्कालीन राजकीय मूर्ति (Kingly Image)-नामक पुस्तक से किया जा सकता है। यह किंवदंती थी कि मारे जाने के पहले चार्ल्स की बनाई हुई कविताएँ इस पुस्तक में मौजूद हैं। लेवलर्स-नामक आदर्शवादियों के एक संप्रदाय ने प्रतिनिधि-तंत्र राज्य के विरुद्ध सेना तथा जनता को भयंकर रूप से भड़काया। इन सब विपत्तियों के बादल चारों तरफ़ से घिरते हुए देखकर क्राम्वेल ने राष्ट्र-सभा में स्पष्ट रूप से यह कह दिया—"इनके शीघ्र ही टुकड़े-टुकड़े कर दो। यदि तुम इनके टुकड़े-टुकड़े न कर दोगे, तो ये तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देंगी।" क्राम्वेल ने लेवलर्स को शीघ्र ही दबाया, और सेना में बढ़ रहे विद्रोह को भी शीघ्र ही शांत कर दिया।

(क) आयर्लैंड की विजय
१६४९ से १६५० तक

आयर्लैंड का बहुत-सा भाग कैथलिकों के हाथ में था। ये लोग राज-दलवालों के साथ मिल गए। १६४९ में क्राम्बैल ने सेना लेकर आयर्लैंड पर चढ़ाई की। पहले-पहल उसने ड्रागेडा (Drogheda) तथा वैक्सफ़र्ड (Wexford)-नामक नगरों को फ़तह किया। संपूर्ण आयर्लैंड पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिये उसने ३,००० सिपाहियों को मरवा डाला। १,००० आयरिश-सिपाहियों ने एक गिरजे में शरण ली; परंतु इसने उन पर भी कोई दया न की, और उनको भी मरवा डाला। अन्य नगरों की विजय में भी उसने ऐसे ही क्रूर कर्म किए। १६५० में आयर्लैंड की विजय को समाप्त करके क्राम्बैल इँगलैंड चला गया, और अपने एक लेफ़्टिनेंट को वहाँ का प्रबंध दे गया।

क्राम्बैल के द्वारा आयर्लैंड की विजय आयरिश लोगों के लिये बहुत ही हानिकर प्रकट हुई। राज-दलवालों ने उनकी उत्तम-उत्तम ज़मीनें छीन लीं, और अँगरेज़ों तथा स्काचों को बाँट दीं। कैथलिक-धर्म का प्रचार रोकने का यत्न किया गया। आयरिश ज़मींदारों की जायदादें नीलाम की गईं। इन अत्याचारों का परिणाम यह हुआ कि आयरिश लोगों को अँगरेज़ों के प्रति हार्दिक घृणा हो गई।

(ख) स्कॉटलैंड से युद्ध
१६५० से १६५१ तक

स्कॉटलैंड में प्रैस्बिटीरियन लोग राजा के पक्षपाती थे। उन्होंने चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा मान लिया था। चार्ल्स द्वितीय भी प्रैस्बिटीरियन लोगों की शर्तें मानकर जनवरी, १६५१ में राज-सिंहासन पर बैठा। अँगरेज़ों की राष्ट्र-सभा ने

स्काचों को शीघ्र ही दबाना चाहा ; क्योंकि ऐसा किए बिना स्काच्-आक्रमण से उनको स्वयं दबना पड़ता। १६५० में, गरमियों में, क्राम्बैल ने स्कॉटलैंड पर चढ़ाई की। ३ सितंबर को उसने डनबर-नामक स्थान में स्काच्-सेना पर एक अपूर्व विजय प्राप्त की । इस घटना से भय-भीत होकर स्काचों ने इँगलैंड पर चढ़ाई करने का इरादा किया। उनका ख़याल था कि राज-दलवाले अँगरेज़ उनका साथ देंगे, इँगलैंड में आंतरिक विप्लव हो जायगा, और क्राम्बैल को स्कॉटलैंड छोड़कर इँगलैंड लौटना पड़ेगा। इँगलैंड पर चढ़ाई करने से स्काचों को मालूम पड़ा कि उनका ख़याल ग़लत था ; क्योंकि अँगरेज़ों ने उनका साथ नहीं दिया । इसका कारण यह था कि वे पहले ही युद्ध से तंग आ चुके थे । क्राम्बैल ने स्काच्-सेना का पीछा न छोड़ा, और ३ सितंबर, १६५१ को वार्सेस्टर-नामक स्थान पर उसको पराजित किया। इस विजय से स्कॉटलैंड में भी इँगलैंड के सदृश ही प्रतिनिधि-सभा के राज्य की स्थापना हो गई । चार्ल्स द्वितीय बहुत कठिनाइयाँ झेलकर योरप को भाग गया ।

(ग) डचों के साथ युद्ध
१६५२ से १६५४ तक

ब्रिटिश-द्वीपों की विजय के अनंतर प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने अपना ध्यान विदेशी शत्रुओं की ओर फेरा । परस्पर व्यापारिक स्पर्द्धा के कारण डच तथा अँगरेज़ों में द्वेष था। १६५१ में प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने नाविक क़ानून (Navigation Act) पास किया। इस क़ानून का मतलब यह था कि इँगलैंड में आनेवाला सामान या तो इँगलैंड के जहाज़ों द्वारा आवे, और या उस देश के जहाज़ों द्वारा आवे, जिस देश में वह सामान बना या पैदा हुआ है । इस नियम के विरुद्ध आनेवाला सामान ज़ब्त कर लिया जायगा । चूँकि सामान ढोने का काम डच लोगों के ही हाथ में था, इससे उन्हें बड़ी हानि हुई। इस क़ानून का

अंतिम परिणाम यह हुआ कि डचों तथा अँगरेज़ों का एक भयंकर सामुद्रिक युद्ध हुआ। आरंभ में डच ही विजयी रहे। इसका कारण यह था कि उन दिनों योरप में डच ही नौ-शक्ति में प्रधान थे। ईश्वर के अनुग्रह से इस कठिन समय में अँगरेज़ों को राबर्ट ब्लेक नाम के पुरुष ने बचा लिया। राबर्ट ब्लेक ने प्रथम युद्ध में डचों से पराजित होकर १६५३ में पोर्टलैंड पर एक अपूर्व विजय प्राप्त की। इस विजय से डच तथा अँगरेज़ नौ-शक्ति में एक दूसरे के बराबर हो गए। इससे प्रतिनिधि-तंत्र राज्य शत्रुओं से निश्चिंत हो गया। उसने इँगलैंड के आंतरिक प्रबंध पर फिर ध्यान दिया।

(२) इँगलैंड में राजनीतिक परिवर्तन

चार्ल्स की मृत्यु होने पर प्रतिनिधि-सभा में ८० सभ्य थे। नियमानुसार सभा का विसर्जन करके नए सभ्यों का निर्वाचन होना चाहिए था। परंतु ऐसा न किया गया। अतः इसको प्रतिनिधि-सभा कहना कुछ कठिन ही प्रतीत होता है। यही नहीं, इसके सभ्य न्याय-परायण तथा सत्य-प्रिय भी न थे। अतः संपूर्ण शासन में गड़बड़ थी। सभ्यों के मित्र भिन्न-भिन्न राज्य-पदों पर विद्यमान थे। राज-पक्षपातियों तथा धर्म पर अंध विश्वास रखनेवालों पर अकारण ही अत्याचार किए जाते थे।

क्राम्वैल इस अवस्था को न देख सका। वह प्रतिनिधि-सभा का नया निर्वाचन करवाना चाहता था। परंतु उससे प्रतिनिधि-सभा सहमत न थी। लाचार होकर क्राम्वैल ने ये शब्द कहकर कि "मैं तुम्हारी बकवाद को बंद करूँगा; यहाँ से निकल जाओ; उत्तम सभ्यों को अपना स्थान दो; तुम जनता के प्रतिनिधि नहीं हो; ईश्वर को तुम्हारा अंत अभीष्ट है" प्रतिनिधि-सभा ज़बर्दस्ती बरख़ास्त कर दिया। प्रजा प्रतिनिधि-सभा से पहले से ही क्रुद्ध थी, अतः किसी ने भी क्राम्वैल के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाए।

दिसंबर, १६५३ में राज्याधिकारियों की सभा ने इँगलैंड के भावी शासन के लिये राज्य का साधन (The Instrument of Government) नाम की एक स्कीम तैयार की, जिसकी मुख्य-मुख्य बातें निम्न-लिखित थीं—

१—इँगलैंड, स्कॉटलैंड तथा आयर्लैंड एक ही राष्ट्र के भिन्न-भिन्न भाग हैं, अतः इन तीनों की एक ही प्रतिनिधि-सभा तथा एक ही शासक-सभा होनी चाहिए।

२—इस प्रतिनिधि-तंत्र राज्य का शासन एक ही सभा के द्वारा होगा। अर्थात् इसमें सभा-उपविधि के सिद्धांत पर काम न किया जायगा।

३—तीनों देशों के प्रतिनिधियों की कुल संख्या ४०० होगी। सभ्यों का निर्वाचन धन तथा पद के अनुसार होगा। २०० पौंड से कम संपत्तिवाले व्यक्ति को 'प्रतिनिधि' चुनने का अधिकार न होगा।

४—प्रतिनिधि-सभा के ही हाथ में राष्ट्र की नियामक शक्ति (Legislative power) रहेगी।

५—प्रतिनिधि-सभा किसी एक व्यक्ति को राष्ट्र का संरक्षक (Lord protector) नियत करेगी, जो कि राष्ट्र-सभा (Council of State) की सहायता से संपूर्ण राष्ट्र का शासन करेगा।

क्राम्वैल ब्रिटिश राष्ट्र का संरक्षक नियत किया गया। उसने बहुत बुद्धिमत्ता से शासन का काम प्रारंभ किया। नवीन प्रतिनिधि-सभा ने अपनी पहली बैठक में ही सबसे पहले निर्वाचन की नवीन विधियों की आलोचना शुरू की। इस पर क्राम्वैल ने प्रतिनिधि-सभा से कहा कि तुमको राज्य-साधन (Instrument of Government) के मुख्य सिद्धांत स्वीकृत करने ही पड़ेंगे। जो व्यक्ति इन सिद्धांतों को स्वीकृत न कर सके, उसको इस सभा से निकल जाना चाहिए। इस पर भी प्रतिनिधि-सभा ने जब अकारण ही क्राम्वैल को तंग करना शुरू किया, तो उसने प्रतिनिधि-सभा को सदा के

लिये बरख़ास्त कर दिया, और एक-मात्र आप ही इँगलैंड का शासन करने लगा।

प्रतिनिधि-सभा को बरख़ास्त करके क्राम्बैल ने स्वेच्छा-पूर्ण शासन शुरू किया। देश पर उसने नए-नए कर लगाए। उसने उन लोगों को पदच्युत कर दिया, जो उसकी शासन-प्रणाली की समालोचना करते थे। इँगलैंड को दस ज़िलों में बाँटकर उन पर अपने ही सैनिकों को, मेजर जनरल (Major-General) का पद देकर, शासक के तौर पर नियत किया। धर्म के मामले में क्राम्बैल ने सहिष्णुता (Toleration) का प्रचार किया। चर्च के भिन्न-भिन्न मतवादियों को उसने स्वतंत्रता से राज्य के ओहदे दिए। एडवर्ड प्रथम के बाद यह पहला ही अवसर था कि उसने यहूदियों को इँगलैंड में बसने की आज्ञा दी।

धार्मिक नीति के सदृश ही विदेशी नीति में भी क्राम्बैल ने अपूर्व चातुरी प्रकट की। सारे योरप में उसने अपने को प्रोटेस्टेंट-मतवादियों का संरक्षक घोषित किया। इसी उद्देश्य से उसने १६५४ में डचों से संधि कर ली, और प्रोटेस्टेंट राष्ट्रों का एक संघ बनाने का यत्न किया। स्पेन तथा फ़्रांस की शत्रुता थी। क्राम्बैल ने फ़्रांस से मित्रता करके स्पेन के सोने तथा चाँदी से भरे जहाज़ों को लूटने का इरादा किया। १६५५ में अँगरेज़ों ने स्पेनिश लोगों से जमैका-द्वीप छीन लिया। फ़्लांडर्स की लड़ाई में अँगरेज़ों को डंकर्क का प्रसिद्ध बंदरगाह मिल गया। इस प्रकार क्राम्बैल की विदेशी नीति से योरप में इँगलैंड का दबदबा छा गया।

प्रथम यत्न में एक बार असफल होकर भी क्राम्बैल ने १६५६ में फिर एक द्वितीय प्रतिनिधि-सभा बुलाई। इसने १६५७ में शासन की एक नई योजना तैयार की, जिसका नाम "विनीत सलाह तथा प्रार्थना" (Humble Petition and advice) रक्खा गया। इसने शासन में ये परिवर्तन किए—

१—क्राम्वैल को इँगलैंड का संरक्षक नियत किया और उसको अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार दिया।

२—लॉर्ड-सभा को प्रतिनिधि-सभा के [illegible] से स्थापित किया।

इस नवीन परिवर्तन को चिरकाल तक देखने का अवसर क्राम्वैल को न मिला। कार्य अधिक होने से उसका [illegible] ख़राब हो चुका था। ३ सितंबर, १६५८ को उसका देहांत हो गया। यह वही दिन था, जिस दिन उसने [illegible] तथा वार्सेस्टर पर अपूर्व विजय प्राप्त की थी!

क्राम्वेल के पुत्र रिचर्ड का इँगलैंड पर शासन

क्राम्वेल की मृत्यु होने पर उसका पुत्र रिचर्ड इँगलैंड का संरक्षक बना। प्रतिनिधि-सभा ने रिचर्ड का साथ नहीं दिया। सैनिकों के साथ झगड़ा हो जाने पर रिचर्ड ने २५ मई, १६५९ को इँगलैंड के संरक्षक-पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

रिचर्ड के राज्य त्यागकर चले जाने पर इँगलैंड में बहुत ही अधिक विक्षोभ हुआ। सैनिकों ने शासन-कार्य को [illegible] से सुधारने का प्रयत्न किया; परंतु जब सफलता न प्राप्त हुई, तो प्रतिनिधि-सभा बुलाई गई। प्रतिनिधि-सभा ने यह [illegible] पास किया कि "आगे से राजा, लॉर्ड् लोगों तथा प्रतिनिधि-सभा के द्वारा इँगलैंड का राज्य-कार्य चलाया जायगा।" २९ मई के दिन [illegible] द्वितीय को इँगलैंड का राजा नियत किया गया, और [illegible] फिर पूर्ववत् किया जाने लगा।

सन्	मुख्य-मुख्य [illegible]एँ
१६४९	प्रजा-तंत्र राज्य की स्थापना, क्राम्वैल का आयर्लैंड को जीतना
१६५०	डनबर का युद्ध

१६५१	नेवीगेशन ऐक्ट
१६५२	डचों के साथ युद्ध
१६५३	राज्य का साधन
१६५५	जमैका का युद्ध
१६५७	विनीत सलाह तथा प्रार्थना
१६५८	क्राम्वैल की मृत्यु
१६५९	रिचर्ड क्राम्वैल का पदत्याग

चतुर्थ परिच्छेद

चार्ल्स द्वितीय (१६६०—१६८५)

(१) चार्ल्स द्वितीय का राज्याधिरोहण

चार्ल्स द्वितीय का पुनरुद्धार करने के अनंतर इँगलैंड को बहुत-से झगड़े तय करने पड़े। प्रेस्बिटीरियन-मत के लोगों ने राजा को बाहर से बुलाया था। राजा के इँगलैंड में पहुँचते ही राज-दल के लोग भी इँगलैंड में आ गए। सब लोगों ने मिलकर बहुत ख़ुशी मनाई।

चार्ल्स द्वितीय को जिस लोक-सभा ने बुलाया था, वह कन्वैंशन पार्लियामेंट के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इँगलैंड को विपत्ति में पड़ा हुआ देखकर जार्ज मांक नाम के सेनापति ने लोक-सभा के सभ्यों को नए सिरे से एकत्र होने के लिये आज्ञा दी। कर्नल-प्राइड् ने जिन-जिन सभ्यों को लोक-सभा-भवन से निकाल दिया था, वे भी बुलाए गए। कन्वैंशन ने बैठते ही यह प्रस्ताव पास किया कि इस समय प्रलंब-पार्लियामेंट को विसर्जित समझा जाय। इस प्रस्ताव के बाद कन्वैंशन ने चार्ल्स से ब्रेडा की घोषणा (Proclamation of Breda) प्रकाशित करवाई, जिसके अनुसार प्रत्येक धर्म तथा विश्वास के व्यक्ति को क्षमा किया गया। कुछ ही सप्ताहों के बाद

कन्वेंशन का फिर अधिवेशन हुआ। इसमें यह पास किया गया कि आगे से राजा, प्रजा तथा लॉर्डों के द्वारा इँगलैंड का शासन हुआ करेगा। साथ ही इसने ऐक्ट ऑफ़ इंडम्निटी (Act of Indemnity) नाम का क़ानून भी पास किया, जिसके अनुसार उन सब अँगरेज़ों के अपराध क्षमा किए गए, जो कि चार्ल्स प्रथम से लड़े थे। फिर भी इनमें से १३ मनुष्यों को फाँसी पर चढ़ाया ही गया। आलिवर क्राम्वैल, ब्रेड्शा तथा आइरटन आदि के शव क़बरों से निकालकर उनके मुर्दों को फाँसी दी गई!

मांक की सेना को तनख़्वाह दी गई, और केवल ५,००० सैनिकों को ही स्थायी रूप से रक्खा गया। इँगलैंड की स्थायी सेना का आरंभ इसी सेना से समझा जाता है। त्रैवार्षिक नियम हलका कर दिया गया, और विषयों को फिर वे ही पुराने अधिकार दिए गए। प्रलंब-पार्लियामेंट की कुछ काररवाइयों को छोड़कर शेष सब काररवाइयाँ नाजायज़ ठहराई गईं। संरक्षित राज्य के जो नियम उचित तथा अच्छे मालूम पड़े, उनको नए सिरे से पास किया गया। इन नियमों में नाविक नियम ही मुख्य था; क्योंकि इससे अँगरेज़ों की नौ-शक्ति बढ़ती थी। यही कारण है कि इसको कन्वेंशन ने भी फिर से मंज़ूर किया। सभा ने चार्ल्स को जीवन-भर के लिये १२ लाख पौंड वार्षिक धन देना मंज़ूर कर लिया, और उसको कुछ और भी अधिक धन दिया।

(२) इँगलैंड में धार्मिक सुधार

कन्वेंशन के कार्यों के विरुद्ध लोगों में आवाज़ उठने लगी। राज-दलवालों ने सभा के कार्यों से अपना मत-भेद प्रकट किया। उनको यह पसंद न था कि एक प्यूरिटन-सभा लोगों के भाग्य का निर्णय करे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा ने दिसंबर में कन्वेंशन का विसर्जन कर दिया। १६६१ में नई पार्लियामेंट चुनी

गई । इसने सबसे पहला काम यह किया कि चर्च का नए सिरे से सुधार कर डाला । प्रार्थना-पुस्तक तथा विषयों को नियम के अनुकूल ठहराया । जो-जो बिशप अपने-अपने पदों से हटा दिए गए थे, उनको उन-उन पदों पर पहुँचा दिया गया । बिशपों के जो स्थान ख़ाली थे, उनमें बिशप नियुक्त किए गए । इस काम में पार्लियामेंट को कठिनता यह पड़ी कि छोटे-छोटे मंडलों के पादरी प्रायः प्यूरिटन लोग थे, जो प्रार्थना-पुस्तक को घृणा की दृष्टि से देखते और उसे पोपों की पुस्तक समझते थे ।

इस ऊपर लिखी विकट समस्या को हल करने के लिये १६६१ में स्ट्रैंड के सेवाय पैलेस के अंदर एक धर्म-महासभा की गई । इसमें बिशपों तथा प्रेस्बिटीरियन-धर्म के नेताओं को ही मुख्य रूप से बुलाया गया था । सभा में बिशपों तथा प्रेस्बिटीरियन लोगों का भयंकर झगड़ा हो गया, और किसी भी तरीक़े से उनमें समझौता न कराया जा सका । इस सभा का जो मुख्य परिणाम कहा जा सकता है, वह यही कि प्रार्थना-पुस्तक में कुछ ऐसे परिवर्तन कर दिए गए, जो प्यूरिटन लोगों को बिलकुल ही पसंद न थे ।

पार्लियामेंट ने बहुत-से राज-नियम पास किए, जिनसे चर्च का पुनरुद्धार हुआ । उसने १६६१ में कार्पोरेशन ऐक्ट (Corporation Act) पास किया, जिसके अनुसार म्युनिसिपल कार्पोरेशन के सभ्यों के लिये प्रचलित चर्च के रस्म-रवाज मान लेना आवश्यक ठहराया गया । १६६२ में ऐक्ट ऑफ़ यूनिफ़ार्मिटी (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार संशोधित प्रार्थना-पुस्तक का प्रयोग करने के लिये सब लोग बाध्य किए गए । जब ये राज-नियम काम में लाए गए, तब लगभग एक हज़ार पादरियों ने अपने-अपने पदों से इस्तीफ़ा दे दिया । ये लोग इतिहास में डिस्सेंटर्स के नाम से प्रसिद्ध हैं । १६६४ में कन्वेंटिकल ऐक्ट (Conventicle

Act) पास किया गया। इसके अनुसार धार्मिक मामलों के लिये कोई भी सभा नहीं की जा सकती थी, और पाँच डिस्सैंटर्स एक जगह जमा नहीं हो सकते थे। १६६५ में फ़ाइव् माइल ऐक्ट (Five miles Act) पास किया गया, जिसके अनुसार डिस्सैंटरों का स्कूलों में पढ़ाने के लिये जाना बंद कर दिया गया, और उन शहरों में उनका घुसना रोक दिया गया, जिनमें वे पहले रहा करते थे। इन नियमों का परिणाम यह हुआ कि डिस्सैंटर लोगों से इँगलैंड के क़ैदख़ाने भर गए। जॉन बनियन-जैसे व्यक्ति वेड्फ़ोर्ड की जेल में १२ वर्ष तक क़ैद रहे। यह पिल्ग्रिम्स प्रोग्रैस (Pilgrims Progress)-नामक पुस्तक का प्रसिद्ध लेखक था। यह पुस्तक इसने क़ैदख़ाने में ही लिखी थी।

स्पष्ट है कि इस प्रकार इँगलैंड में लाड तथा चार्ल्स प्रथम का ज़माना फिर आ गया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये सारे धार्मिक संशोधन पार्लियामेंट ने स्वयं ही किए। लाड के धार्मिक विचारों के फैलने से लोगों में राजा का महत्त्व बढ़ गया। नए-नए चर्चों ने चार्ल्स प्रथम को शहीद-बादशाह माना, और उसकी तसवीर अन्य साधु-संतों के चित्रों के बीच में रक्खी जाने लगी। पादरियों ने राजा के दैवी अधिकार का प्रचार करना शुरू किया।

इँगलैंड के सदृश ही स्कॉटलैंड तथा आयर्लैंड के धर्म में भी परिवर्तन किया गया। रैसिसरी ऐक्ट के द्वारा वे सब राजनियम अनुचित ठहराए गए, जो सन् १६३३ के बाद बने थे। प्रैस्बिटी-रियन-धर्म के नेता आर्गाइल को चार्ल्स प्रथम की हत्या के अपराध में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इससे स्कॉटलैंड में विक्षोभ उत्पन्न हो गया, और छोटे-छोटे विद्रोहों का होना शुरू हो गया। आयर्लैंड को स्वतंत्रता देने का किसी के जी में ख़याल भी न था। इस देश को प्यूरिटन लोगों के उपनिवेश ने इँगलैंड के अधीन रक्खा था। अतएव वहाँ धार्मिक सुधार करना बहुत भयंकर

था; क्योंकि इससे आयर्लैंड सदा के लिये इँगलैंड के हाथ से निकल जाता। इस उद्देश्य से १६६१ में ऐक्ट ऑफ़ सेटिलमेंट (Act of Settlement) पास किया गया, जिसके अनुसार प्यूरिटन लोगों से उनकी ज़मीनें न छीनी गईं, और उन संपूर्ण आयरिशों और अँगरेज़ों को सांत्वना दी गई, जिनकी ज़मीनें चार्ल्स प्रथम का साथ देने के कारण छीन ली गई थीं। ऐक्ट ऑफ़ एक्सप्लेनेशन (Act of Explanation) के द्वारा संपूर्ण राज-पक्षपातियों को ज़मीनें बाँट दी गईं।

(३) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

चार्ल्स द्वितीय ने इँगलैंड की वैदेशिक नीति वही रक्खी, जो क्राम्बैल के समय में थी; उसमें उसने किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं किया। उसने लुई चौदहवें के साथ मित्रता क़ायम रक्खी। इस मित्रता में जो कुछ दोष था, वह यही कि इससे योरप में शक्ति-सामंजस्य नष्ट होता था; क्योंकि लुई चौदहवें की शक्ति पहले ही अधिक थी। और, भेद यह था कि क्राम्बैल उससे प्रोटेस्टेंट लोगों को सुविधाएँ दिलाने के लिये उसे दबाया करता था; किंतु चार्ल्स लुई के दबाव में स्वयं आ जाता था, और अपने ही देश में कैथलिक लोगों को सुविधाएँ कर देता था।

फ़्रांसीसियों के साथ अँगरेज़ों की संधि होने से दो फल हुए—

१. चार्ल्स ने १६६२ में डंकर्क को फ़्रांसीसियों के हाथ बेच दिया। इससे अँगरेज़ बहुत ही असंतुष्ट हो गए। लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि चार्ल्स लुई को ख़ुश करना चाहता है।

२. इसी वर्ष चार्ल्स ने पुर्तगाल के राजा की बहन—ब्रागंजा की राजपुत्री—कैथराइन से बिवाह कर लिया। यह प्रदेश १६४० में स्पेन से जुदा हो गया था, और फ़्रांसीसियों के सहारे ही अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर रहा था। इससे स्पेन बहुत ही क्रुद्ध हो गया; क्योंकि

उसको यह विश्वास हो गया कि पुर्तगाल अब उसके हाथ में कभी भी न आवेगा। जो कुछ हो, इँगलैंड को इस विवाह से अप्रत्यक्ष लाभ बहुत ही अधिक हुआ; क्योंकि पुर्तगाल ने विवाह में चार्ल्स को जहाँ बहुत-सा धन दिया, वहाँ जिबराल्टर के पास टंजियर तथा भारत में बंबई भी अँगरेज़ों को दे दिया। चार्ल्स ने बंबई-नगर, जो उस समय गाँव था, ईस्ट इंडिया कंपनी को किराए पर दे दिया, जिसके सहारे कंपनी ने मरहठा-साम्राज्य में प्रवेश किया, और शनैः-शनैः उस पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

चार्ल्स इँगलैंड के व्यापार को बढ़ाना चाहता था। इसने सबसे पहला जो युद्ध किया, उसका मुख्य उद्देश्य का व्यापार बढ़ाना ही था। इन दिनों अँगरेज़ों तथा डचों का व्यापारिक संबंध दिन-पर-दिन बिगड़ रहा था। नाविक नियमों (नेविगेशन ऐक्ट) को फिर से प्रचलित करने के कारण हालैंड के लोग क्रुद्ध थे। आफ्रिका तथा उत्तर-अमेरिका में अँगरेज़ों तथा डचों का वैसे भी सदा ही झगड़ा होता रहता था। अंत को, १६६५ में, अँगरेज़-व्यापारियों की शिकायतों के कारण इँगलैंड ने हालैंड से युद्ध ठान दिया।

डचों के नौ-सेनापति रीटर (Ruyter) और अँगरेज़ों के नौ-सेनापति प्रिंस रूपर्ट तथा मांक और चार्ल्स के छोटे भाई जेम्स ड्यूक ऑफ् यार्क थे। दो वर्ष तक लगातार युद्ध होने के बाद अँगरेज़ों ने अपने जहाज़ अपने ही बंदरगाह में खड़े कर दिए। इससे सारे समुद्र पर डचों का ही प्रभुत्व हो गया। डचों ने लंदन का सब ओर से संबंध तोड़ दिया। इँगलैंड में बहुत ही अधिक घबराहट फैल गई। ठीक इसी समय लुई चौदहवें ने डचों को सहायता देना शुरू किया। इस पर अँगरेज़ों ने डचों से ब्रेडा-नामक स्थान पर संधि कर ली। संधि के अनुसार न्यू-अमस्टर्डम नाम के डच उपनिवेश पर अँगरेज़ों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। आजकल

यही शहर न्यूयार्क के नाम से प्रसिद्ध है। इसके मिलने से अँगरेज़ों को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा।

इन्हीं दिनों अँगरेज़ों के बहुत-से उपनिवेश अमेरिका में स्थापित हुए। इन उपनिवेशों के कारण अँगरेज़ों का व्यापार-व्यवसाय पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया। उपनिवेशों में खेती का काम प्रायः आफ़्रिकन नीग्रो दासों के द्वारा करवाया जाता था। उत्तरी अमेरिका में फ़्रांसीसियों के उपनिवेश भी स्थापित होने लगे। १६६३ में लूसियाना का उपनिवेश इन्हीं लोगों ने बसाया था। पैंसलवेनिया, न्यू-ज़र्सी आदि उपनिवेशों को अँगरेज़ों ने बसाया। इस प्रकार अमेरिका के बहुत-से भाग में योरपियन जातियों के उपनिवेश स्थापित हो गए।

इन्हीं दिनों लंदन-नगर पर दो बड़ी भारी विपत्तियाँ आईं। १६६५ में लंदन के भीतर पहलेपहल प्लेग ने प्रवेश किया, जिससे बहुत-से लोग मरे। १६६६ में, शहर में, आग लग गई। इससे भी लंदन-नगर को बहुत अधिक हानि पहुँची। इन दुर्घटनाओं से क्षुब्ध होकर लोगों ने क्लेरेंडन से बदला लिया। यह राजा का कोषाध्यक्ष था। जब इस पर लॉर्ड-सभा में अभियोग चला, तब किसी ने इसका साथ न दिया। परिणाम यह हुआ कि इसको देश छोड़कर बाहर चले जाना पड़ा। यह फ़्रांस पहुँचा। राजा ने इसकी जायदाद ज़ब्त कर ली। चार्ल्स के राज्य का पहला युग यहीं पर समाप्त होता है।

क्लेरेंडन के निकाले जाने के बाद अँगरेज़-शासन में पाँच लोगों ने ज़ोर पकड़ा, जिनके नाम ये हैं—

१. क्लिफ़र्ड	इसके नाम के आरंभ का अक्षर	=C.
२. आर्लिंगटन	,, ,, ,, ,,	=A.
३. बकिंघम	,, ,, ,, ,,	=B.
४. आस्ले	,, ,, ,, ,,	=A.

५. लाडर डेल इसके नाम के आरंभ का अक्षर =L.

सब अक्षर मिलाकर हुआ Cabal = कबाल।

इस कबाल-मंत्रिमंडल ने संपूर्ण राज्य का कार्य बड़ी बुद्धिमानी से चलाना शुरू किया। इसने लुई चौदहवें की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहा, और इसी कारण स्वीडन तथा हालैंड से संधि कर ली। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्रांस की गति रुक गई। लुई ने इस संधि की जड़ हालैंड को समझा, अतएव उसने इँगलैंड से डोवर की गुप्त संधि की। इसके अनुसार उसने चार्ल्स को प्रतिवर्ष तीन लाख पौंड देना स्वीकार किया, और चार्ल्स से वचन लिया कि वह इँगलैंड में कैथलिक-मत का प्रचार करेगा।

१६७२ में लुई तथा चार्ल्स ने हालैंड पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स के पास धन की यहाँ तक कमी हो गई कि उसने राजकोष का वह सब धन भी ख़र्च करना शुरू कर दिया, जो अन्य सेठ-साहूकारों ने वहाँ जमा किया था। लोग जब अपना धन माँगने आते, तब निराश होकर लौट जाते।

लुई ने अपनी सेना से हालैंड को इस प्रकार घेरा कि उसकी स्वतंत्रता संकट में पड़ गई। इस पर योरपियन जातियों ने मिलकर हालैंड को बचाने का यत्न किया। प्रोटेस्टेंट होने के कारण अँगरेज़-जनता की सहानुभूति भी हालैंड के साथ ही हो गई। इन्हीं दिनों हालैंड के आरेंज-प्रदेश के स्वामी विलियम ने हालैंड का नेतृत्व ग्रहण किया। यह बहुत ही वीर, बुद्धिमान् तथा प्रजा का हितैषी था। इसने अपने जीवन का यह उद्देश्य बना लिया कि किसी-न-किसी तरह लुई चौदहवें को अवश्य ही नीचा दिखाना चाहिए। इसने सारे योरप को अपने साथ मिलाने का यत्न किया।

दैवसंयोग से डोवर की गुप्त संधि का हाल जनता को कुछ-कुछ ज्ञात हो गया। अँगरेज़-जनता अपने धर्म तथा स्वतंत्रता को बचाने

के लिये कटिबद्ध हो गई। फलतः कबाल-मंत्रिमंडल पर आक्षेप-पर-आक्षेप होने लगे। इन आक्षेपों से अपने को बचाने के लिये कबाल ने धार्मिक स्वतंत्रता देना आरंभ किया। इससे डिस्सैंटरों को प्रत्यक्ष और कैथलिकों को परोक्ष रूप से लाभ होता था। डिस्सैंटर लोग समझदार थे। वे भली भाँति जानते थे कि यह स्वतंत्रता देने में राजा की धूर्तता है; वह इस स्वतंत्रता की आड़ में कैथलिक लोगों की शक्ति बढ़ाना चाहता है।

१६७३ की पार्लियामेंट में प्रोटेस्टेंट लोगों ने टैस्ट-ऐक्ट पास किया जिसके अनुसार प्रत्येक राज-कर्मचारी के लिये इस शपथ का लेना आवश्यक कर दिया गया कि उसे कैथलिक-मत पर कुछ भी विश्वास नहीं है। राजा को बाध्य होकर इस ऐक्ट पर हस्ताक्षर करने पड़े। कबाल-मंत्रिमंडल शक्ति-रहित कर दिया गया। राज्य की सारी शक्ति डैन्वी के अर्ल सर टामस अस्वार्न के हाथ में चली गई।

(४)

(क) डैन्वी का सचिव-तंत्र-राज्य

(ख) पहले ह्विग तथा टोरी-दल का उदय पार्लियामेंट डैन्वी का बहुत अधिक विश्वास करती थी। डैन्वी ने शक्ति प्राप्त करते ही अँगरेज़ों की वैदेशिक नीति को बदलना चाहा; परंतु चार्ल्स ने उसको ऐसा न करने दिया। चार्ल्स ने लुई से एक और गुप्त संधि की, जिसके अनुसार उसने प्रतिज्ञा की कि मैं फ्रांस के विरुद्ध किसी भी योरपियन राष्ट्र से संधि न करूँगा। चार्ल्स तथा उसके दरबारियों ने लुई से घूस लेना शुरू किया, और देश के हित की हत्या कर डाली। डैन्वी को यह मंजूर न था। इसलिये उसने अँगरेज़-सेना जमा करके फ्रांस के विरुद्ध लड़ने का यत्न किया। यार्क की राजकुमारी मेरी का आरेंज के विलियम के साथ, जो प्रोटेस्टेंटों की ओर से फ्रांस के साथ लड़ रहा था, विवाह कर दिया।

चार्ल्स को डैन्वी की नीति पसंद न थी। उसने फ्रांस से १६७८ में निमूजेन (Nymgen) की संधि की। इन सब संधियों से भी जब फ्रांस को इँगलैंड का सहारा न मिला, तो लुई ने क्रोध में आकर चार्ल्स तथा उसके दरबारियों की सारी काररवाइयाँ और गुप्त संधियाँ अँगरेज़-जनता के आगे प्रकट कर दीं।

लोगों ने सारा क्रोध क्लेरेंडन के सदृश डैन्वी पर निकालना चाहा। इस पर चार्ल्स ने १६७६ में पार्लियामेंट विसर्जित कर दी। इन्हीं दिनों ओट्स नाम के पादरी ने लोगों को यह ख़बर दी कि कैथलिक लोग राजा को मार डालने के लिये एक षड्यंत्र की रचना कर रहे हैं। यह पादरी बड़ी दुष्ट प्रकृति का मनुष्य था। अतएव इसकी बात पर किसी को विश्वास न हुआ। यह चुप हो गया; किंतु थोड़े दिनों बाद इसने फिर ऐसी ही बात फैलाना आरंभ किया, और इस बार यह सफल हुआ। इसकी सफलता देखकर बहुत-से अन्य लोगों ने भी इस प्रकार की बातों का फैलाना अपना पेशा-सा बना लिया। बेचारे निरपराध कैथलिक फाँसी पर चढ़ाए जाने लगे।

१६७६ में नवीन पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ। शैफ़्टसबरी ने इस सभा का नेतृत्व ग्रहण किया। दो राजनियम पास किए गए—

१. हेबियस कार्पस ऐक्ट (Habeas Corpus Act)। इस ऐक्ट के अनुसार किसी भी अँगरेज़ को राजा विना सम्मन के नहीं पकड़ सकता था।

२. एक्सक्ल्यूशन बिल (Exclusion Bill)। इस नियम के अनुसार चार्ल्स के भाई यार्क के ड्यूक को राज्याधिकार से च्युत करने का प्रस्ताव किया गया; क्योंकि वह कैथलिक था।

आरंभ में एक्सक्ल्यूशन बिल नहीं पास हुआ। राजा ने अपने भाई को बचाने के लिये जुलाई, १६७६ में पार्लियामेंट को विसर्जित कर दिया। कुछ समय पीछे नई पार्लियामेंट का संगठन हुआ। यह भी पुरानी पार्लियामेंट की तरह ही बिल को पास करना चाहती थी, इस-

लिये राजा ने इसका अधिवेशन ही करना उचित न समझा। बिल के पक्षपातियों ने राजा के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा कि वह पार्लियामेंट का अधिवेशन करे। अँगरेज़ी इतिहास में ये लोग प्रार्थी या पेटीशनर (Petitioners) के नाम से प्रसिद्ध हैं। बहुत-से लोग इस बिल को पास करने से डरते थे, और राजा के अनन्य भक्त थे। इनको इतिहास में एभोरर्स (Abhorers) के नाम से पुकारा जाता है। पहलेवालों को ह्विग तथा पिछलों को टोरी नाम दिया गया। इसी प्रकार का भेद चर्च में भी कर दिया गया। इँगलैंड के चर्च के पक्षपातियों को हाई-चर्चमैन और प्यूरिटन लोगों को लो-चर्चमैन नाम दिया गया। क्रमशः ह्विग तथा लो-चर्च और टोरी तथा हाई-चर्च के लोगों के विचार एक-से थे। अतएव समय-समय पर ये शब्द एक दूसरे के अर्थ में भी प्रयुक्त किए जायँगे।

१६७९ में स्कॉटलैंड के प्रैस्बिटीरियन लोगों ने आर्च बिशप—शार्प—की हत्या कर डाली, और वे राजा तथा बिशपों के विरुद्ध विद्रोही बन गए। शैफ़्टसबरी के कहने से मन्मथ का ड्यूक जेम्स विद्रोह को शांत करने के लिये गया, और उसने बोथवैल-ब्रिज पर विद्रोहियों को परास्त किया। चार्ल्स ने ड्यूक ऑफ़ यार्क को विद्रोह-दमन के लिये भेजा था। उसने आर्गाइल के ड्यूक को स्कॉटलैंड से भगा दिया और मार ही डाला। यह घटना १६६१ में हुई।

१६८० के ऑक्टोबर में पार्लियामेंट का अधिवेशन हुआ। सभा ने एक्सक्ल्यूशन बिल पास कर दिया। परंतु लॉर्ड-सभा ने न मंजूर किया। तब चार्ल्स ने पार्लियामेंट विसर्जित कर दी। १६८१ के मार्च में आक्सफ़ोर्ड में पार्लियामेंट का फिर अधिवेशन हुआ। परंतु इसको भी राजा ने विसर्जित कर दिया; क्योंकि राजा यार्क के ड्यूक को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था; पर एक्सक्ल्यूशन बिल के अनुसार मन्मथ का ड्यूक उत्तराधिकारी होता। वह प्रोटेस्टैंट था, इस-

लिये लोग उसे उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। किंतु वह चार्ल्स का दोगला पुत्र था, और चार्ल्स इँगलैंड के सिंहासन पर एक दोगले को बैठाने के लिये राज़ी न होता था।

चार्ल्स ने धीरे-धीरे टोरी लोगों को संगठित किया, और इस संगठन से शैफ़्टसबरी को नीचा दिखाया। शैफ़्टसबरी तथा मन्मथ डर के मारे हालैंड भाग गए। ह्विगों ने बेवकूफ़ी से एक षड्यंत्र रचा, और राई-नामक मकान के सामने राजा को मार डालने का निश्चय किया। टोरी लोगों को इस षड्यंत्र का पता लग गया। इसमें जो-जो लोग सम्मिलित थे, उनको क़तल करवाया गया। अँगरेज़ी इतिहास में यह षड्यंत्र राई-हाउस-षड्यंत्र (Rye House plot) के नाम से प्रसिद्ध है।

चार्ल्स के अंतिम दिनों तक टोरी लोगों की शक्ति बढ़ी रही। फ़रवरी, १६८५ में चार्ल्स की मृत्यु हुई। अँगरेज़-जनता ने इसकी मृत्यु पर बहुत ही अधिक शोक मनाया; क्योंकि यह अच्छे स्वभाव का मनुष्य था। इसमें जो कुछ दोष था, वह यही कि यह असदाचारी, स्वार्थी, अपव्ययी और अदूरदर्शी था। एक प्रकार से इसने इँगलैंड को लुई चौदहवें के हाथ बेच ही दिया था। इसने लुई के धन पर अपने देश का धर्म बेच दिया था, और हर्ष के साथ इँगलैंड में कैथलिक-मत फैलाना मंज़ूर कर लिया था। फिर भी यह प्रजा की सम्मति पर ध्यान देता था, और भरसक देश के राजनीतिक संगठन के अनुसार इँगलैंड का राज्य करता था। इसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ निम्न-लिखित हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६६०	चार्ल्स द्वितीय का राज्याधिरोहण
१६६२	ऐक्ट ऑफ़ यूनिफ़ार्मिटी
१६६३	कैरोलीना की स्थापना

१६६५	डच-युद्ध, महाप्लेग
१६६६	लंदन में आग लगना
१६६७	ब्रेडा की संधि, क्लेरंडन का अधःपतन
१६६८	त्रिराष्ट्रीय सम्मिलन (Triple alliance)
१६७०	डोवर की संधि
१६७९	डैन्बी का अधःपतन, हेबियस कार्पस ऐक्ट
१६८०	एक्सक्ल्यूशन बिल का न पास होना
१६८१	पैंसलवानिया को बसाना
१६८२	राई-हाउस-प्लाट
१६८५	चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु

पंचम परिच्छेद
जेम्स द्वितीय
(१६८५-१६८८)

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के अनंतर इँगलैंड में टोरी-दल ही प्रधान था। इसलिये यार्क के ड्यूक को जेम्स द्वितीय के नाम से इँगलैंड का राजा बनाया गया। यद्यपि यह अपने भाई के समान योग्य न था, तथापि सावधान प्रकृति का तथा सुशासक था। कैथलिक होने पर भी इसने प्रोटेस्टेंट-मत के अनुसार अपना राज्याभिषेक-संस्कार करवाया। इसने पहलेपहल टोरी-मंत्रियों को ही राज-काज चलाने के लिये नियत किया।

जेम्स प्रजा-मत से न डरता था। उसने एकदम स्कार्चों तथा अँगरेज़ों के प्रतिनिधियों को बुलाकर पार्लियामेंट का अधिवेशन किया, और उनसे यथेष्ट सहायता प्राप्त की। उसके टोरी-सभ्यों ने अपनी बहुसम्मति से जेम्स को १९,००,००० पौंड वार्षिक वृत्ति आजीवन देना स्वीकृत किया। प्रतिनिधि-सभा ने डैन्बी को क़ैद से छुटकारा दिया।

(१) राज-विद्रोह

जब ह्विग-दल ने देखा कि जेम्स के राज्यारोहण पर किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ, तो उसे बड़ी निराशा हुई। शांतिमय साधनों से नवीन राजा को वश में करना असंभव समझकर उन्होंने कुटिल मार्ग का सहारा लिया। १६८५ की गरमियों में ह्विगों के दो दल ब्रिटन में आए। इन दलों को सरकार ने विद्रोही क़रार दिया था। उन्होंने इँगलैंड में विद्रोहाग्नि प्रज्वलित करने का प्रयत्न किया। इन संघों में से एक संघ का नेता आर्गाइल का ड्यूक था। इसने विद्रोह खड़ा करने में पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त की। कुछ ही समय के बाद यह राजा के आदमियों के हाथ क़ैद हो गया, और अपने पिता के समान ही फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

जून-मास में मन्मथ के ड्यूक ने इँगलैंड में पदार्पण किया, और अपने को इँगलैंड का वास्तविक राजा प्रकट किया। जो कुछ हो, समरसट्-ज़िले में कुछ अधिकार प्राप्त करने पर भी वह ब्रिस्टल तथा बाथ नाम के नगरों को अपने वश में न कर सका। परिणाम यह हुआ कि यह राजा की सेना से पराजित होकर पकड़ा गया, और १५ जुलाई को इसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इसके अनंतर चीफ़ जस्टिस जैफ़रीज़ ने सारे इँगलैंड में भ्रमण किया, और उसको जो-जो लोग राजद्रोही जान पड़े, उन सबको उसने कठोर दंड दिया। इस काम से प्रसन्न होकर जेम्स ने जेफ़रीज़ को पीयर बना दिया, और लॉर्ड-चांसलर के पद पर नियत किया। जेफ़रीज़ ने अपना काम इस निर्दयता से किया—और कुछ लोगों की सम्मति है कि इतने अन्याय से किया—कि वह इतिहास में बहुत ही बदनाम है। उसकी अदालत को लोग 'खूनी अदालत' कहते थे।

(२) धार्मिक क्रांति के लिये जेम्स का अंतिम प्रयत्न

इन दो विद्रोहों को थोड़े ही समय में सहज ही नष्ट कर देने के कारण जेम्स समझने लगा, उसमें इतनी शक्ति आ गई है कि वह लोगों की इच्छाओं का ध्यान न करके मनमाना काम कर सकता है। अतएव उसने अपनी शक्ति का अनुचित लाभ उठाना आरंभ किया। वह हृदय से कैथलिक-मतावलंबी था, और उसके लिये यह असह्य था कि उसके धर्मभाई कैथलिक लोगों को राज्य का एक छोटे-से छोटा पद भी न मिल सके, जब कि वह स्वयं इँगलैंड का राजा हो। उसने पार्लियामेंट से प्रार्थना की कि वह टैस्ट ऐक्ट (Test Act) को हटा दे। पर उसने इसे स्वीकार न किया। निराश होकर जेम्स ने प्रतिनिधि-सभा को बरख़ास्त किया, और संपूर्ण टोरी-मंत्रियों को राजपदों से हटा दिया।

ऊपर लिखे गए कार्य के करने के अनंतर जेम्स ने राबर्ट स्पेंसर को अपना सलाहकार बनाया। यह बुद्धिमान् तथा राजनीतिज्ञ होने पर भी अत्यंत स्वार्थी था। राजा को ख़ुश करने के इरादे से इसने इँगलैंड में कैथलिक-मत फैलाने की कोशिश शुरू कर दी।

चार्ल्स द्वितीय के राज्य-काल में ही इँगलैंड में इस विषय पर विशेष विवाद छिड़ा था कि किसी राजनियम को कुछ समय के लिये काम में न लाने की शक्ति (dispensing power) राजा में है या नहीं? इसी शक्ति से काम लेकर चार्ल्स द्वितीय ने डिस्सेंटरों (अर्थात् इँगलैंड के चर्च को न माननेवालों) को धार्मिक स्वतंत्रता दे दी थी।

जेम्स ने कैथलिक-धर्मावलंबी एडवर्ड हेल्ज़ को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त किया। धीरे-धीरे उसने अन्य राजपदों पर भी कैथलिकों को रखना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, जेम्स ने कैंब्रिज-विश्वविद्यालय को लिखा कि तुम फ्रांसिस-नामक बेनडिक्टाइन

भिक्षु को एम्० ए० की उपाधि दे दो । उसने ऑक्सफ़ोर्ड के मेग्डलीन कॉलेज के प्रबंध-कर्ताओं को भी इस बात के लिये विवश किया कि वे अपनी प्रबंध-कारिणी सभा का प्रधान एक कैथलिक को चुनें। आयर्लैंड का शासक भी एक कैथलिक नियत किया गया। इस प्रकार शिक्षा, सेना और शासन, सभी विभागों में जेम्स अपने सहधर्मियों (कैथलिकों) को भरने लगा।

इन सब घटनाओं का परिणाम यह हुआ कि १६८८ में सात बड़े-बड़े बिशपों ने राजा के पास प्रार्थना भेजी कि पादरियों को पुराने नियम तोड़ने के लिये लाचार न किया जाय। जेम्स ने क्रुद्ध होकर उन पादरियों पर मुक़द्दमा चलाया। यह मुक़द्दमा चल ही रहा था कि जेम्स के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस घटना से अँगरेज़ों का चित्त क्षुब्ध हो गया; क्योंकि उनको यह भय था कि जेम्स की मृत्यु होने पर उसका पुत्र भी कैथलिक-मत का ही प्रचार करेगा। अभी तक जेम्स के कोई पुत्र न था। इससे लोगों को इस बात की आशा थी कि उसके मरने पर कोई प्रोटेस्टेंट राजा होगा, और शीघ्र ही उनके दुःख दूर होंगे। किंतु जब जेम्स के पुत्र उत्पन्न हुआ, तब उन्हें इस बात का भय हुआ कि अब कैथलिक-धर्म राजवंश का परंपरागत धर्म हो जायगा। कुछ लोगों का यह भी विश्वास था कि राजा के लड़का हुआ ही नहीं, और षड्यंत्र करके बाहर से एक लड़का महल में पहुँचा दिया गया है। इसलिये इँगलैंड के बड़े-बड़े व्यक्तियों ने जेम्स के दामाद विलियम ऑफ़ ऑरेंज को, जो प्रोटेस्टेंट था, इँगलैंड में राज्य करने के लिये बुलाया। विलियम ने अँगरेज़ों की इच्छा के अनुसार ५ नवंबर को इँगलैंड में प्रवेश किया, और एग्ज़ीटर से लंदन की ओर धीरे-धीरे बढ़ना शुरू किया। इसी अवसर पर जेम्स के साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया। उसकी कन्या एनी तथा प्रसिद्ध सैनिक लॉर्ड चर्चिल ने भी जब उसका साथ न दिया, तो जेम्स फ़्रांस

भाग गया। २२ जनवरी, १६८९ में पार्लियामेंट-सभा का अधिवेशन हुआ। उसमें जेम्स की प्रवर्तित आज्ञाओं को रद करके विलियम को इँगलैंड का राज्य सौंप दिया गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६८५	जेम्स का राज्याधिरोहण, आर्गाइल तथा मन्मथ का विद्रोह
१६८८	जेम्स द्वितीय का अधःपतन

षष्ठ परिच्छेद

विलियम तृतीय (१६८९—१७०२) और मेरी (१६८९—१६९४)

१३ फ़रवरी, १६८९ को विलियम तथा मेरी को राज्य-सिंहासन पर बैठाया गया। जेम्स द्वितीय के भागने के कारण राज्य-नियमों में बहुत परिवर्तन की ज़रूरत थी। २२ जनवरी, १६८९ की प्रतिनिधि-सभा को राज्य-नियमानुसार वास्तव में प्रतिनिधि-सभा नहीं कहा जा सकता; क्योंकि विलियम ने ही कुछ सभासदों को एकत्र करके इसका निर्माण किया था। वास्तव में वे सभासद् जनता के प्रतिनिधि नहीं कहे जा सकते थे। जो हो, इसी प्रतिनिधि-सभा (Convention) ने वास्तविक प्रतिनिधि-सभा का रूप धारण कर लिया, और बहुत-से राज्य-नियम पास किए, जो इस प्रकार हैं—

(१) राज्य-नियम

१. जेम्स के बहुत-से शासन-पद्धति-विरोधी कार्यों को अनुचित ठहराने के लिये अधिकारों का पत्र (Bill of Rights) फिर पास किया गया। इसके अनुसार पार्लियामेंट की आज्ञा के विना राजा के बहुत-से कार्य, जैसे स्थायी सेना रखना, प्रजा पर कर लगाना आदि, ग़ैर-

क़ानूनी ठहराए गए। इसी की एक शर्त यह भी थी कि "आगे से वह व्यक्ति इँगलैंड का राजा न बन सकेगा, जो प्रोटेस्टेंट-मत का न होगा, या जिसने ऐसी स्त्री से विवाह किया होगा, जो प्रोटेस्टेंट-मत को न मानती हो।"

२. Petition of Rights के द्वारा कोर्ट मार्शल से बाग़ी सिपाहियों का विचार करना बंद कर दिया गया था। जब सिपाहियों पर शासन की कठिनाइयाँ दिखलाई पड़ने लगीं, तब पार्लियामेंट ने म्यूटिनी-ऐक्ट (विद्रोह के विरुद्ध क़ानून) पास किया। इस क़ानून के अनुसार छः महीने तक फ़ौजी अदालतों द्वारा सिपाहियों पर शासन किया जा सकता था। इसके बाद यह क़ानून हर साल पास किया जाने लगा। यदि किसी साल यह पास न होता, तो राजा के पास सिपाहियों को शासन में रखने का कोई क़ानूनी अस्त्र न रह जाता।

३. स्थायी सेना देश में रखने से अँगरेज़-जनता डरती थी। इसी विचार से एप्रोप्रिएशन-ऐक्ट (Appropriation Act) पास किया गया, जिसके अनुसार पार्लियामेंट में प्रतिवर्ष यह घोषणा की जाती थी कि "शांति के समय इँगलैंड में स्थायी सेना रखना राज्य-नियम के विरुद्ध है; इँगलैंड में शांति-स्थापित करने के लिये स्थायी सेना नहीं रक्खी गई है। योरपियन जातियों में शक्ति-सामंजस्य (Balance of powers) करने के लिये ही पार्लियामेंट ने स्थायी सेना का रखना आवश्यक समझा है। अतः सेना रखने के व्यय के लिये प्रतिवर्ष पार्लियामेंट रुपए देना स्वीकृत करे। यदि पार्लियामेंट रुपए देना मंज़ूर न करे, तो स्थायी सेना बर्ख़ास्त कर दी जाय।"

पार्लियामेंट ने १६९० में चार वर्ष के लिये एकमुश्त रुपए दे दिए। तदनंतर प्रति वर्ष रुपए मंज़ूर करना ही पार्लियामेंट ने उचित समझा।

४. राजद्रोही लोग अपने मुक़दमों में अपनी ओर से वकील खड़ा कर सकें, इसके लिये १६९६ में 'राजद्रोही नियम' (Treason Act)

पास किया गया। इसके पहले राजद्रोह के अभियुक्तों को वकील करने की आज्ञा नहीं थी।

५. ह्विग-दल के लोग, बहुत-से लोगों को राजकर्मचारी बनाकर उनसे अपने लिये सम्मतियाँ (Votes) ले लेते थे। इससे ह्विग-दल की शक्ति का बढ़ना स्वाभाविक ही था। इसको रोकने के लिये 'स्थान-प्रस्ताव' (Place Bill) पार्लियामेंट के सम्मुख उपस्थित हुआ। परंतु यह प्रस्ताव पास न हुआ। यदि पास हो जाता, तो किसी भी राजकर्मचारी को, चाहे वह मंत्री या कोषाध्यक्ष ही क्यों न होता, वोट देने का अधिकार न रहता।

६. विलियम की शक्ति कम करने के लिये त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) पास किया गया। इसके अनुसार तीन-तीन वर्ष बाद पार्लियामेंट का नवीन निर्वाचन होना आवश्यक ठहराया गया। यह राजनियम जॉर्ज प्रथम का 'सप्तवार्षिक नियम' (Septennial Act) बनने से पहले तक इँगलैंड में प्रचलित रहा। अतएव ध्यान देने के योग्य है।

७. त्रित्व (Trinity) का सिद्धांत माननेवाले प्रोटेस्टेंट डिस्सेंटर लोगों को पूजा-पाठ में स्वतंत्रता देने के लिये 'सहिष्णुता-नियम' (Toleration Act) पास किया गया। हाई चर्च-दल (High Church Party) सहिष्णुता-नियम के विरुद्ध था। इसके कुछ नेता राजा के दैवी अधिकार न मानते थे, और इस प्रकार विलियम को अपना राजा मानने को तैयार न थे। विलियम ने जब इन लोगों से राजभक्ति की शपथ लेने को कहा, तो इन्होंने शपथ न ली। इस पर उसने इन लोगों से सब राजकीय पद छीन लिए। इतिहास में ये लोग नानज्यूरर्स (Non-jurors) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हीं का एक दल विलियम से क्रुद्ध होकर जेम्स द्वितीय का पक्षपाती हो गया था। इस दल को हम आगे चलकर जकोबाइट्स (Jacobites) के नाम से

लिखेंगे। इन लोगों ने जेम्स से मिलकर विलियम को बहुत ही तंग किया।

(२) युद्ध

आयर्लैंड-निवासी जेम्स द्वितीय के पक्षपाती थे। अपने राज्य-काल में जेम्स ने आयरिश कैथलिकों को कोई विशेष सहायता नहीं दी। कारण, वह नहीं चाहता था कि आयर्लैंड इँगलैंड से सर्वथा स्वतंत्र हो जाय। इँगलैंड से भाग जाने के बाद जेम्स ने आयरिश कैथलिकों को अपने साथ मिला लेने का यत्न किया। थोड़े-से फ़्रांसीसी सैनिकों के साथ वह मार्च, १६८६ में आयर्लैंड आया। उसने डबलिन में एक आयरिश पार्लियामेंट का अधिवेशन किया। इसमें १६६१ का 'औपनिवेशिक नियम' (Act of Settlement) रद्द करके एक नवीन नियम (Act of attaindar) पास किया गया। उसके अनुसार, विलियम ऑफ़ आरेंज़ के दो हज़ार आयर्लैंड-निवासी, विलियम के पक्षपाती होने के कारण, दोषी ठहराए गए।

(क) आयर्लैंड से युद्ध

बहुत-से आयरिश प्रोटेस्टेंट जेम्स की आज्ञा पर चलने के लिये विवश किए गए। इस पर अलस्टर-निवासियों ने जेम्स के विरुद्ध हथियार उठा लिए। इस विरोध में अलस्टर के लंडनडैरी तथा एन्निसकिलेन-नामक दो नगरों ने बड़ा भारी भाग लिया। जेम्स की सेनाओं ने दोनों नगरों को चारों ओर से घेर लिया। दोनों नगरों की चहारदीवारी कमज़ोर थी, और उनमें भोजन-सामग्री भी बहुत अधिक न थी। इँगलैंड से अन्न-भरे जहाज़ भेजे गए। परंतु वे उन नगरों तक न पहुँच सके; क्योंकि जेम्स ने नदी में एक बाँध बाँध दिया था, जिसको पार करना जहाज़ों के लिये कठिन था। अंत में, ३० जुलाई को, एक व्यापारी जहाज़ बाँध तोड़कर पार हो गया। इससे नगरों में भोजन पहुँच गया, और जेम्स के सैनिकों में नगर-

विजय का कुछ भी साहस न रहा। इसी घटना के तीन दिन बाद न्यूटन-बटलर के युद्ध में एनिसकिलेन के प्रोटेस्टेंटों ने जेम्स की सेना को बुरी तरह से हरा दिया।

ऊपर की घटना होने के कुछ ही दिनों पीछे शांवर्ग के नेतृत्व में विलियम की भेजी हुई अँगरेज़ी सेना आयर्लैंड पहुँच गई। किंतु रोग फैल जाने के कारण यह सेना जेम्स के विरुद्ध कोई विशेष काम न कर सकी। १६६० में विलियम स्वयं आयर्लैंड में आया, और उसने पहली जुलाई को बॉइन पर जेम्स को परास्त किया। इसी युद्ध में शांवर्ग मारा गया। धीरे-धीरे कैथलिकों पर विजय प्राप्त करता हुआ विलियम आयर्लैंड की राजधानी डबलिन पहुँच गया। जेम्स भागकर फ़्रांस चला गया। आयरिश कैथलिकों ने विलियम का विरोध नहीं छोड़ा, और वे बड़े धैर्य के साथ लिमरिक पर लड़ते रहे। विलियम लाचार होकर इँगलैंड लौट आया। इँगलैंड लौटकर उसने अपने डच सेनापति गिंकल को आयर्लैंड-विजय के लिये भेजा। गिंकल ने आयरिश लोगों से लिमरिक पर संधि कर ली, संधि की शर्तें ये थीं—

१. जो आयरिश सैनिक फ़्रांस आदि देशों में जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं।

२. जो आयरिश कैथलिक विलियम का साथ देने की क़सम खायँगे, उनको धार्मिक स्वतंत्रता दे दी जायगी।

यह बड़े खेद की बात है कि अँगरेज़ों ने इस संधि के बंधन को पूर्ण रूप से तोड़ डाला, और आयरिश कैथलिकों पर अत्याचार करने में कुछ उठा न रक्खा। उन्होंने आयरिश पार्लियामेंट में अँगरेज़ प्रोटेस्टेंटों की संख्या अधिक करके लिमरिक की संधि की शर्तों को रद करवा दिया; कैथलिक अध्यापकों को पढ़ाने से रोक दिया; और संपत्ति-संबंधी कठोर नियमों को पहले की अपेक्षा और भी अधिक कठोर बना दिया।

कैथलिक लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये फ्रांस में न भेज सकते थे। इतना ही नहीं, उनसे हथियार भी छीन लिए गए। कैथलिक पुरोहितों को देश-निकाला दे दिया गया; प्रोटेस्टेंटों का विवाह कैथलिकों के साथ होना बंद कर दिया गया। आयरिश-व्यापार को नष्ट करने में भी अँगरेज़ों ने कोई कसर न की।

(ख) स्कॉटलैंड से युद्ध

इँगलैंड के समान ही स्कॉटलैंड में भी अशांति फैल गई। जेम्स के भाग जाने से स्काच् जनता अत्यंत प्रसन्न थी। स्काच् पार्लियामेंट ने विलियम तथा मेरी को अपना राजा स्वीकार किया। कुछ सरदार इस परिवर्तन के विरुद्ध थे। उन्होंने विलियम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। विलियम ने इनको किलीक्रैंकी के युद्ध में हराया। जो सरदार युद्ध से भाग गए थे, उनको १६९१ के अंत तक राजभक्ति की शपथ लेने पर अभय-दान की घोषणा की गई। दैव-संयोग से ग्लैंको की घाटी में रहनेवाले मैकआइन-नामक वंश के लोगों ने इस बात में अपना गौरव समझा कि वे सबके अंत में राजभक्ति की शपथ लें। इसका परिणाम यह हुआ कि वे नियत तिथि तक राजभक्ति की शपथ लेने के लिये न पहुँच सके। इस पर जॉन डालरिंपल (John Dalrymple) ने विलियम के "राष्ट्र की रक्षा के लिये चोरों के दल का नाश करना अच्छा है" इन शब्दों का अर्थ ग्लैंको-निवासियों की हत्या के अनुकूल करके १३ फ़रवरी, १६९२ को, रात में, सोते हुए ग्लैंको लोगों को मरवा डाला। इस भयंकर घटना से संपूर्ण स्कॉटलैंड में तहलका मच गया। लाचार होकर, अपने को सुरक्षित करने के उद्देश से, विलियम ने जॉन डालरिंपल को अपनी सेना से अलग कर दिया।

(ग) फ्रांस से युद्ध

विलियम के इँगलैंड का राज्य सँभालने के कुछ ही समय बाद

योरप में युद्ध शुरू हो गया। १६७८ में निमजन (Nymegen) की संधि हुई थी। उसके अनंतर लुई चौदहवें ने समीपवर्ती योरपियन राष्ट्रों को अपने आक्रमणों से तंग कर दिया था। विलियम लुई चौदहवें का दुश्मन था। उसने इँगलैंड का राजा होना भी इसीलिये स्वीकार किया था कि उसको लुई के विरुद्ध अँगरेज़ों से सहायता मिल सकेगी। अँगरेज़-जनता भी लुई से क्रुद्ध थी; क्योंकि उसने जेम्स को सहायता पहुँचाई थी। १६८६ से १६९७ तक फ़्रांस के साथ युद्ध होता रहा। हालैंड, ब्रैंडनबर्ग, स्पेन तथा इँगलैंड के सम्मिलित यत्न से भी लुई पीछे न हटा, और बराबर युद्ध करता ही चला गया।

नीदरलैंड में फ़्रांसीसियों ने सभी युद्ध जीते। सामुद्रिक युद्ध में भी फ़्रांसीसियों ने मित्र-राष्ट्रों को बहुत ही तंग किया। फ़्रांसीसी सामुद्रिक सेनापति टूरविल (Tourville) ने, ३० जून, १६९० को, बीचीहेड (Beachy Head) के पास, मित्र-राष्ट्रों का सामुद्रिक बेड़ा नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इसी विजय से सफलता प्राप्त करके लुई ने आयर्लैंड के कैथलिकों को सहायता पहुँचाई। उसने देश-द्रोही अँगरेज़-मंत्रियों तथा जैकोबाइट् लोगों की प्रेरणा से इँगलैंड पर आक्रमण करने का इरादा किया। सौभाग्य से १९ मई, १६९२ को सामुद्रिक सेनापति रसल ने ला-हौग (La-Hougue)-नामक स्थान पर फ़्रांसीसी बेड़े को परास्त किया। इसके बाद योरप में, हालैंड और इँगलैंड के पास ही, सामुद्रिक शक्तियाँ प्रबल रह गईं। स्थल पर लुई चिरकाल तक विजय पाता रहा। विलियम प्रत्येक सम्मुख युद्ध में फ़्रांसीसियों से हारा; परंतु हारने पर भी उसने धैर्य न छोड़ा। वह अपनी सेना को बड़ी बुद्धिमानी के साथ एकत्र करता रहा। १६९५ में विलियम का भाग्य चमका। उसने नामूर के प्रसिद्ध दुर्ग को फ़्रांसीसियों से छीन लिया। इस विजय से फ़्रांस तथा मित्र-राष्ट्रों की शक्ति बराबर हो गई, और किसी को भी

किसी पर विजय प्राप्त करने की आशा न रही। अंत में, १६९७ में, हेग के समीप रिज़विक (Ryswick)-नामक स्थान पर दोनों दलों की संधि हो गई। संधि के अनुसार लुई ने विलियम को इँगलैंड का राजा मान लिया; जो-जो इलाक़े फ़तेह किए थे, वे वापस कर दिए; और हालैंड के साथ व्यापारिक संबंध, पहले की अपेक्षा, अच्छे कर दिए।

(घ) ऊपर लिखे युद्धों का परिणाम

ऊपर जिन युद्धों का उल्लेख किया गया, उनका व्यय अपने ऊपर लादना इँगलैंड के लिये असंभव हो गया। उसके लिये देश में नवीन कर बढ़ाने पड़े। उनमें एक कर भूमि-कर (Land-tax) भी था। इससे कृषक अत्यंत असंतुष्ट हो गए। किंतु इस कर-वृद्धि से भी युद्धों का ख़र्च पूरा न हुआ। तब चार्ल्स मांटेगू ने जातीय ऋण (National debt) की प्रथा डाली। इसके अनुसार रुपया स्थायी रूप से उधार लिया गया, और उसके बदले में इँगलैंड ने प्रतिवर्ष व्याज देना मंजूर किया। आरंभ में कुछ व्यापारियों के एक संघ ने बहुत-सा रुपया दिया। धीरे-धीरे इसी संघ ने बैंक ऑफ़ इँगलैंड (Bank of England) का रूप धारण कर लिया। राज्य ने इस बैंक को बहुत-से नवीन अधिकार दिए, जो अन्य बैंकों को नहीं प्राप्त थे। यह जातीय ऋण लेने से राज्य में विलियम की जड़ जम गई; क्योंकि जिन-जिन अँगरेज़ों ने विलियम को रुपए उधार दिए थे, वे रुपए मारे जाने के भय से जेम्स का राजा होना न चाहते थे।

विलियम का स्वास्थ्य ठीक न था। दैव-योग से १६९४ में रानी मेरी की मृत्यु हो गई। इससे विलियम को बहुत ही धक्का लगा, और उसकी कठिनाइयाँ पूर्वापेक्षा अधिक बढ़ गईं; क्योंकि मेरी की छोटी बहन एनी विलियम से रुष्ट थी। विलियम की मृत्यु होने पर उसी को रानी बनना था। इँगलैंड में विलियम के विरुद्ध षड्यंत्र-

पर-षड्यंत्र रचे जाने लगे। इन षड्यंत्रों से डरकर पार्लिंयामेंट ने यह निश्चय किया कि वह विलियम के बाद प्रोटेस्टेंट-मत के व्यक्ति को राजा बनावेगी; और यदि विलियम को किसी के कारण कुछ भी हानि पहुँची, तो उसका पूरा बदला लिया जायगा।

(३) राजनीतिक परिवर्तन

विलियम बहुत ही चालाक तथा दूरदर्शी था। आरंभ में उसने पार्लियामेंट में ह्विग तथा टोरी, इन दोनों ही दलों में से मंत्री चुने। यहीं से वर्तमानकालीन अँगरेज़ी सचिव-तंत्र राज्य की नींव पड़ी, जिसका वर्णन इस प्रकार है—

(क) पहला—ह्विग तथा टोरी-दलों का मिलित सचिव-तंत्र राज्य

१६८९ से १६९६ तक

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, विलियम ने अपने राज्य के आरंभ में ह्विग तथा टोरी, दोनों ही दलों से मंत्री चुने थे। ह्विग तथा टोरी-दलों का यह सम्मिलित मंत्रि-मंडल १६८९ से १६९६ तक इँगलैंड में रहा। दोनों ही दलों के मंत्री परस्पर मिल-जुलकर काम करने को तैयार न थे। टोरी-दल के लोग फ़्रांसीसी युद्ध के बरख़िलाफ़ थे। इससे दोनों दलों के लोगों का मिलकर काम करना और भी कठिन हो गया। टोरी लोग योरपियन राजनीति से अँगरेज़ों को पृथक् रखना चाहते थे। वे स्थिर सेना का रखना अँगरेज़ों की स्वतंत्रता के लिये भयानक समझते थे। इन्हीं दिनों संडरलैंड ने विलियम को यह सलाह दी कि वह एक ही दल से सब मंत्री चुने। राजा को यह सलाह पसंद आई। उसने धीरे-धीरे टोरियों को सभी राजकीय पदों से हटा दिया, और उनके स्थान पर ह्विगों को चुन लिया।

(ख) दूसरा—ह्विगों का सचिव-तंत्र राज्य

१६९६ से १७०१ तक

विलियम ने जो राजनीतिक परिवर्तन आरंभ किया, वह १६९६ में

पूर्णता को प्राप्त हुआ। १६९६ में ह्विग-दल का मंत्रि-मंडल स्थापित हुआ। यह ह्विग जंटो (Whig Junto) के नाम से प्रसिद्ध है। इस दल के नेता लॉर्ड सौमर्स, सामुद्रिक सेनापति रसल (ला-हौग का जेता), संडरलैंड, श्रूसबरी, मांटेगू आदि थे। विलियम ने ह्विग मंत्रि-मंडल की सलाह के अनुसार संपूर्ण राज-काज करना शुरू किया। १६९४ में विलियम त्रैवार्षिक नियम स्वीकृत कर ही चुका था, और अब उसने १६९५ में प्रेस ऐक्ट को भी हटा दिया। इससे संपूर्ण अँगरेज़ों को विचार-संबंधी स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। इँगलैंड के इतिहास में यह एक अत्यंत आवश्यक घटना है; क्योंकि इसके अनंतर इँगलैंड में बड़ी शीघ्रता के साथ उन्नति होने लगी।

इन्हीं दिनों "स्पेन-राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा?"—इस प्रश्न पर योरपियन राजों में बड़ा भारी आंदोलन उठ खड़ा हुआ। स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय निस्संतान था। उसके दो बहनें थीं। उनमें से एक आस्ट्रिया के सम्राट् लियोपोल्ड को और दूसरी फ़्रांस के चौदहवें लुई को ब्याही थी। लुई की रानी क़सम खा चुकी थी कि मैं स्पेन के उत्तराधिकारी होने का अपना-अपना अधिकार छोड़ती हूँ। लियोपोल्ड की माता चार्ल्स द्वितीय की बुआ थी। इस दशा में बुआ के रिश्ते से लियोपोल्ड स्पेन का राज्याधिकारी था; क्योंकि उसकी माता ने कोई ऐसी क़सम नहीं खाई थी कि वह स्पेन के राज्य पर दावा न करेगी। फिर भी फ़्रांस का राजा स्पेन-जैसे प्रदेश को छोड़ने के लिये तैयार न था। आस्ट्रिया के राजा लियोपोल्ड का तो स्पेन पर वास्तविक अधिकार ही था। इँगलैंड को कठिनता यह थी कि आस्ट्रिया या फ़्रांस, किसी के अधिकार में स्पेन का राज्य जाने से योरप का शक्ति-सामंजस्य (Balance of powers) नष्ट होता था। इस कठिनता को दूर करने के लिये विलियम ने फ़्रांस के राजा को लियोपोल्ड से लड़ने से रोका।

यह निश्चय हुआ कि स्पेन का राज्य लियोपोल्ड के नाती बैवेरिया के ऐलेक्टर प्रिंस को दिया जाय। यह एक छोटा राजा था, और इसके पास स्पेन का राज्य जाने से शक्ति-सामंजस्य नष्ट होने का भय न था। फ़्रांस और आस्ट्रिया को स्पेन के वैदेशिक राज्य से कुछ हिस्से मिलने की बात तय हुई। किंतु ऐलेक्टर प्रिंस के मर जाने से यह संधि रद हो गई। फिर दूसरी संधि की गई। इसके अनुसार लियोपोल्ड के दूसरे लड़के आर्च ड्यूक चार्ल्स को स्पेन का राजा बनाने की बात तय हुई; किंतु स्पेनवालों को इन गुप्त संधियों की ख़बर न हुई। दैव-संयोग से यह सारी गुप्त मंत्रणा स्पेनिश लोगों के कानों तक पहुँच गई। वे लोग अपने देश को कई भागों में विभक्त करने के लिये तैयार न थे। ऐसे भयंकर समय में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हो गई। मृत्यु के पहले उसने अपने राज्य को आंजू के ड्यूक फ़िलिप के नाम लिख दिया। यह फ़िलिप लुई चौदहवें का नाती था। नाती को स्पेन का राज्य मिलते देखकर लुई ने सन् १७०० की द्वितीय विभाग-संधि की अवहेलना की। विलियम इस अवसर पर कुछ भी न कर सका; क्योंकि स्पेन के राजा ने स्वयं ही लुई के पोते को अपना राज्य सौंप दिया था।

प्रथम विभाग-संधि तथा द्वितीय विभाग-संधि की असफलता से ह्विग लोगों का पार्लियामेंट में ज़ोर घट गया। लॉर्ड-सभा में तो ह्विग लोगों की बहुसंख्या स्थायी रूप से थी, परंतु प्रतिनिधि-सभा में अब टोरी-दल की संख्या अधिक हो गई। सन् १७०० में विलियम ने रोचस्टर के अर्ल तथा लॉर्ड गाडाल्फ़िन के नेतृत्व में टोरी-मंत्रि-मंडल को इँगलैंड का शासक नियत किया।

(ग) तीसरा—टोरियों का सचिव-तंत्र राज्य

(१७०१—१७०८)

टोरियों का मंत्रि-मंडल नियत करने में विलियम को किसी तरह

की भी खुशी नहीं हुई ; क्योंकि टोरी लोग योरप की राजनीति में दख़ल देना नहीं चाहते थे; और उनको इसकी कुछ भी चिंता न थी कि स्पेन का राजा कौन हो, या कौन न हो। सन् १७०१ में प्रतिनिधि-सभा का पुनर्निर्वाचन हुआ; परंतु टोरी-दल ही प्रधान रहा। उन्होंने उत्तराधिकारित्व का क़ानून (Act of Settlement) पास किया, जिसके अनुसार विलियम तथा एनी की मृत्यु पर इँगलिस्तान के राज्य का राजा कौन बने, इसका निर्णय किया गया। यह नियम पास करके टोरियों ने राजा के दैवी अधिकार के सिद्धांत का परित्याग और जाति को ही राजा नियत करने का सिद्धांत स्वीकृत कर लिया। टोरी लोग विलियम से असंतुष्ट थे, अतः वे राजा की शक्ति को बहुत ही परिमित करना चाहते थे। इसी कारण उत्तराधिकारित्व के नियम के साथ उन्होंने निम्न-लिखित बातें और जोड़ दीं—

(१) विलियम तथा एनी के बाद सोफ़िया (हनोवर की रानी) की संतान इँगलेंड के राज्य पर हुकूमत करेगी।

(२) हनोवर का राजा इँगलैंड के चर्च में शामिल होगा।

(३) इँगलेंड का राजा अपने योरप के इलाक़ों की रक्षा के लिये पार्लियामेंट की आज्ञा लिए बिना किसी पर-राष्ट्र से युद्ध न करेगा।

(४) पार्लियामेंट की स्वीकृति बिना इँगलैंड का राजा किसी अन्य देश में भ्रमण के लिये न जा सकेगा।

(५) कोई भी व्यक्ति, जो विदेश में अँगरेज़ माता-पिता से या इँगलैंड में उत्पन्न न हुआ हो, गुप्त सभा (Privy Council) या पार्लियामेंट में न बैठ सकेगा, और न उसे जागीर ही मिल सकेगी।

(६) राजा न्यायाधिकारियों (Judges) को पदच्युत न कर सकेगा।

(७) गुप्त सभा में जो प्रस्ताव पास हों, उनसे सहानुभूति रखने-

वाले लोग उन पर हस्ताक्षर करें। परंतु इस नियम को एनी के समय में हटा दिया गया।

(८) राज्य-पदाधिकारी या राज्य से पेंशन पानेवाले व्यक्ति हाउस ऑफ़ कामंस में नहीं बैठ सकते।

इस नियम को भी एनी के समय में कुछ-कुछ बदल दिया गया। यदि यह नियम ब्रिटिश शासन-पद्धति में विद्यमान रहता, तो इँगलैंड से सचिव-तंत्र राज्य कभी न उठ सकता।

विलियम का स्वास्थ्य दिन-दिन बिगड़ता जाता था। अपनी शक्ति के परिमित होने से वह अपने मनोरथों को पूर्ण करने में सर्वथा असमर्थ था। जेम्स द्वितीय १७०१ में मर गया। लुई चौदहवें ने ग़लती से जेम्स के पुत्र को इँगलैंड का वास्तविक राजा घोषित कर दिया। ऐसा करना रिज़विक-संधि की शर्तों का तोड़ना था। कुछ भी हो, लुई की इस कार्यवाही से इँगलैंड की जनता क्रुद्ध हो गई। टोरी-दल भी फ़्रांस से लड़ने के पक्ष में हो गया। तब विलियम ने फ़्रांस तथा स्पेन के विरुद्ध बहुत-से राष्ट्रों को खड़ा कर दिया, और महासम्मेलन (Grand Alliance) बनाया। प्रतिनिधि-सभा का नए सिरे से निर्वाचन हुआ, और संख्याधिक्य के कारण प्रतिनिधि-सभा में ह्विग-दल का बहुमत हो गया। ह्विग लोगों का ही मंत्रि-मंडल चुना गया। ऐसे सुअवसर पर विलियम ८ मार्च, १७०२ को अचानक घोड़े से गिरकर मर गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६८६	विलियम तथा मेरी का राज्याभिषेक, बिल ऑफ़ राइट्स तथा टालरेशन बिल
१६६०	बायन का युद्ध
१६६२	ला-हौग का युद्ध तथा ग्लैंको की हत्या
१६६४	रानी मेरी की मृत्यु

१६९६	प्रथम ह्विग सचिव-तंत्र राज्य
१६९७	रिज़विक-संधि
१६९८	प्रथम विभाग-संधि *
	डेरियन स्कीम की असफलता
१७००	द्वितीय विभाग-संधि
१७०१	उत्तराधिकारित्व का नियम
१७०१	महासम्मेलन (Grand alliance)
१७०२	विलियम तृतीय की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

एनी (१७०२-१७१४)

(१) एनी का राज्याधिरोहण

रानी एनी धर्मात्मा थी, और उसका आचार-व्यवहार पवित्र था। स्वभाव मधुर तथा हृदय भी कोमल था। टोरी और हाई चर्च के दलों से उसे सहानुभूति थी। विश्वासघात से उसे घृणा थी। इन सब गुणों के साथ ही उसमें कुछ दोष भी थे। स्टुअर्ट-वंश के समान उसका स्वभाव हठीला था। विचारों की स्वतंत्रता उसमें न थी। उसकी मित्रता मार्लबरा की स्त्री सारा से थी। सारा बहुत ही चालाक, समझदार तथा प्रतिभाशालिनी स्त्री थी। मार्लबरा का उस पर अधिक प्रभाव था। इन सब पारस्परिक संबंधों का परिणाम यह हुआ कि एनी के समय में इँगलेंड के राज्य की बागडोर मार्लबरा के हाथ में आ गई। यह बहुत ही स्वार्थी तथा कठोर हृदय का आदमी था। जेम्स द्वितीय तथा विलियम के साथ इसने विश्वासघात किया था।

---

* इस पुस्तक में लेखक ने डेरियन की स्कीम का हाल नहीं दिया।

—संपादक

परंतु इसमें भी संदेह नहीं कि यह अपने समय का अद्वितीय साहसी और चतुर सेनापति था। सारे योरप में इसके युद्ध-कौशल का आतंक छाया हुआ था।

मार्लबरा टोरी-दल का था। यही कारण है कि रानी मेरी के राज्य के आरंभ में टोरियों का ही सचिव-तंत्र राज्य शुरू हुआ। नवीन सचिव-मंडल का मुखिया गोडाल्फ़िन था। यह मार्लबरा का परम मित्र था। आय-व्यय के ऊपर दृष्टि रखने में यह बहुत ही चतुर था। गोडाल्फ़िन ने मार्लबरा को धन की पूरी सहायता दी, और उसने भी योरप को जीतने में किसी प्रकार की कमी न की।

(२) स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध (१७०२-१७१३)

The War of the Spanish Succession.

एनी के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही सप्ताहों के बाद योरप में स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। महासम्मेलन में हालैंड और इँगलैंड का ही मुख्य भाग था। इनका साथ जर्मनी (आस्ट्रिया) के सम्राट् ने दिया; क्योंकि वह अपने छोटे लड़के आर्च ड्यूक चार्ल्स को स्पेन का बादशाह बनाना चाहता था। सम्राट् की देखा-देखी ब्रांडन-बर्ग के इलेक्टर ने फ़्रांस का विरोध किया। सम्राट् ने इस युद्ध में उसकी सहायता पाने की आशा से उसे प्रशिया के राजा की उपाधि दे दी थी। लुई की शक्ति भी कुछ कम न थी। फ़्रांस बहुत ही समृद्ध था। उसका शासन बहुत उत्तम रीति से होता था। फ़्रांसीसी सेना अपनी वीरता तथा युद्ध-कौशल के लिये योरप-भर में प्रसिद्ध थी। उसके सेनापति तथा राजनीतिज्ञ अपने समय में अनुपम थे। स्पेनिश नीदरलैंड पर लुई का आतंक जमा हुआ था। यही कारण है कि हालैंड पर वह बेरोक-टोक आक्रमण कर सकता था। स्पेन फ़्रांस का मित्र था। कोलोन तथा बवेरिया के राजा लुई के पक्ष

में थे। इटली भी फ़ांस की ओर से लड़ने को तैयार था। इस प्रकार स्पष्ट है कि योरप के लिये यह कितना भयंकर युद्ध था।

प्रारंभिक युद्ध (१७०२-१७०३)

शुरू-शुरू के युद्धों में कुछ भी ध्यान देने की बात नहीं है। १७०२ से १७०३ तक मार्लबरा ने हालैंड को आक्रमण से ही बचाया। साथ ही बर्न तथा लीज़ (Liege) को जीता भी, और कोलोन के इलेक्टर को उठने से रोका भी। उत्तरी जर्मनी में फ़ांसीसी और बवेरियन सेनाओं ने आस्ट्रिया पर आक्रमण किया। हंगरी में विद्रोह हो गया। अतः जर्मन-सम्राट् आस्ट्रिया की सहायता के लिये न पहुँच सका। स्पेन तथा इटली पर फ़ांसीसियों का इस क़दर ज़ोर था कि बेचारा पुर्तगाल घबरा गया। उसने इँगलैंड के साथ मेथ्यून-संधि कर ली। इसी संधि के अनुसार पुर्तगाल ने अँगरेज़ों का व्यावसायिक (ऊनी) माल अपने यहाँ खुले तौर पर आने दिया, और अपनी शराब इँगलैंड में भेजनी शुरू कर दी। अँगरेज़ों ने इस शराब पर फ़ांसीसी शराब की अपेक्षा केवल दो-तिहाई चुंगी रक्खी। यह संधि बहुत ही प्रसिद्ध है; क्योंकि इस संधि के कारण पुर्तगाल के सारे-के-सारे व्यवसाय नष्ट हो गए, और उसको इँगलैंड के व्यावसायिक पदार्थ ख़रीदने पड़े।

ब्लैनहम का युद्ध (१७०४)

१७०४ में मित्र-मंडल की दशा बहुत ही नाज़ुक हो गई। हंगरी तथा बवेरिया की सेनाएँ वियना पर आ चढ़ी थीं। जर्मन-सम्राट् को यह न सूझता था कि वह वियना की रक्षा किस प्रकार करे। एक-मात्र मार्लबरा ही उसको सहायता पहुँचाता था; परंतु वह कोसों दूर था। और, डच लोग अपने बचाव की चिंता में थे, अतः उसको अपने देश से बाहर न जाने देना चाहते थे। फिर भी मार्लबरा ने जर्मन-सम्राट् को सहायता पहुँचाने का पूरे तौर

पर इरादा कर लिया था। उसने शीघ्र ही राइन की ओर अपनी सेना के साथ बढ़ना शुरू करके बवेरिया पर आक्रमण कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्रांसीसी तथा बवेरियन सेनाएँ बवेरिया की रक्षा के लिये पीछे लौटीं। ब्लैनहम-नामक स्थान पर १३ अगस्त, १७०४ को भयंकर संग्राम हुआ। मार्लबरा ने विजय प्राप्त की। इस विजय से उसकी कीर्ति सारे योरप में फैल गई।

मित्र-मंडल की विजय

(१७०४—१७०६)

मार्लबरा ने नीदरलैंड में रैमिलीज़ का युद्ध (The battle of Ramellies) जीता। इससे सारे-के-सारे नीदरलैंड पर उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया। आस्ट्रियन सेनापति प्रिंस यूज़ीन ने ट्यूरिन का युद्ध (The battle of Turin) जीता, और फ़्रांसीसियों को इटली से निकाल दिया। अँगरेज़ नौ-सेनापति रुक (Rooke) ने १७०४ में जिबराल्टर और १७०५ में बार्सिलोना को फ़तेह किया।

आल्मंज़ा का युद्ध

(१७०७)

ऊपर लिखी सब पराजयों से भी लुई तथा उसका पोता हताश नहीं हुआ। उन्होंने युद्ध की फिर तैयारी की। दैव-संयोग से स्पेनवालों ने आस्ट्रिया के विरुद्ध विद्रोह और फ़्रांसीसियों का स्वागत किया। १७०७ में इँगलैंड का मित्र-मंडल स्पेन में, आल्मंज़ा के युद्ध (Battle of Almanza) में, भयंकर रूप से परास्त हुआ। इससे फ़िलिप पंचम फिर मेड्रिड का स्वामी बन गया। नीदर-लैंड के बहुत-से दुर्गों को फ़्रांसीसियों ने फिर जीत लिया। ऊडनार्ड के युद्ध (१७०८) में अँगरेज़ों ने नीदरलैंड के खोए हुए दुर्गों को फिर जीत लिया। मार्लबरा तथा प्रिंस यूज़ीन ने ऊडनार्ड का प्रसिद्ध

युद्ध जीता। लिली के फ़तेह करने से इन दोनों सेनापतियों को लुई के राज्य पर आक्रमण करने का अच्छा अवसर मिला। इस पर लुई ने संधि की प्रार्थना की; परंतु अँगरेज़ मंत्रि-मंडल ने न माना। "मरता क्या न करता" के अनुसार उसने वीरता-पूर्वक युद्ध करने के लिये फिर तैयारियाँ करना शुरू कर दिया।

मालप्लैकट का युद्ध

(१७०९)

१७०९ में मार्लबरा ने मालप्लैकट का युद्ध जीता। इसमें अँगरेज़ों को बहुत-सा नुक़सान उठाना पड़ा। १७०८ में सेनापति स्टैनहोप ने माइनार्का का प्रसिद्ध द्वीप जीता, और १७१० में मैड्रिड पर फिर प्रभुत्व प्राप्त किया। इसी वर्ष के अंत में ब्रिह्यूग पर स्टैनहोप बुरी तरह से परास्त हुआ। नीदरलैंड पर अँगरेज़ों का प्रभुत्व पहले ही की तरह बना रहा। तीन ही दिनों में इँगलैंड में कुछ ऐसे राजनीतिक परिवर्तन हो गए, जिनसे उसको कुछ ही वर्षों में युद्ध बंद करना पड़ा।

(३) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

एनी के राज्याधिरोहण के कई वर्षों बाद तक गोडाल्फ़िन तथा मार्लबरा इँगलैंड का शासन करते रहे। ये टोरी-दल के होने पर भी युद्ध के पक्ष में थे। यही कारण है कि इन्होंने ह्विग-दल के नेताओं से मेल-जोल बनाए रक्खा। इन्होंने डिस्सैंटर लोगों के साथ भी बुरा व्यवहार नहीं किया, और ह्विग-दल के लोगों को राज्य-पद पर नियुक्त किया। संडरलैंड-जैसे कट्टर ह्विग राष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त हो गए, और सचिव-मंडल में ह्विग-दल की प्रधानता हो गई। इससे टोरी-दल के लोग निराश हो गए। उन्होंने राजदरबारियों से मेल-जोल बढ़ा करके मार्लबरा को एनी से जुदा करने का यत्न किया। मिसेज़ मेशम ने एनी पर

अपना प्रेम प्रकट किया, और उसको ह्विग-दल के लोगों से अलग कर दिया।

मार्लबरा ने रानी को समझाया-बुझाया, और टोरियों के नेता हार्ले को राजदरबार से निकलवा दिया। राबर्ट वालपोल तथा अन्य कुछ ह्विगों को उसने अपने सचिव-मंडल में मिला लिया। १७०८ से १७१० तक गोडाल्फ़िन तथा मार्लबरा ही राज-काज चलाते रहे। योरप के युद्धों से जनता घबरा गई थी। १७१० में पार्लियामेंट का जो चुनाव हुआ, उसमें टोरी-दल का बहुपक्ष था। परिणाम यह हुआ कि एनी ने हार्ले से सलाह ली, और सारे-के-सारे ह्विगों को राज्य के पदों से अलग कर दिया। राबर्ट हार्ले बहुत ही चालाक तथा दुनियादार था। इसमें जो कुछ कमी थी, वह यही कि यह डरपोक था, और इसे व्याख्यान देने की आदत न थी। राष्ट्र-सचिव-पद पर उसने हेनरीसेंट जॉन को नियत किया। शीघ्र ही इसको वाइकाउंट बालिंब्रुक बना दिया गया। यह अपने समय का प्रसिद्ध लेखक और व्याख्यानदाता था। यह राजनीति को एक खेल-सा समझता था। इसको उसमें विश्वास न था। इन दोनों महाशयों ने किसी-न-किसी तरीक़े से १७१३ में योरप के युद्ध को बंद किया, और स्पेन तथा फ़्रांस के साथ यूट्रेक्ट की संधि की, जिसकी शर्तें निम्न-लिखित हैं—

(१) एनी के पश्चात् इँगलैंड का राजा हनोवर-वंश का ही कोई व्यक्ति हो।

(२) स्पेन के राजा फ़िलिप ने यह प्रण किया कि वह फ़्रांस के राज्य पर अपना अधिकार न प्रकट करेगा।

(३) स्पेनी अमेरिका में अँगरेज़ ३० वर्षों तक नीग्रो बेचने का काम कर सकते हैं। फ़्रांसीसियों को यह अधिकार नहीं दिया गया।

(४) दक्षिणी अमेरिका के तट पर वर्ष में एक बार अँगरेज़ अपना एक जहाज़ व्यापार के लिये भेज सकते हैं।

(५) स्पेन ने जिबराल्टर तथा माइनारका और फ़्रांस ने नोवास्कोशिया तथा न्यूफ़ाउंडलैंड अँगरेज़ों को दे दिए। सिसली का प्रदेश ड्यूक ऑफ़ सेवाय को मिला।

(६) फ़्रांस ने डंकर्क-नामक नगर के दुर्गों को गिराना स्वीकार किया।

(७) जेम्स को फ़्रांस में रहने से रोक दिया गया।

(८) नीदरलैंड आस्ट्रिया को दिया गया। हालैंडवालों को दक्षिण के दुर्गों की रक्षा के लिये उनमें अपनी सेना रखने की आज्ञा दी गई।

योरप तथा इँगलैंड के इतिहास में यूट्रेक्ट की संधि बहुत ही प्रसिद्ध है—(१) इसी संधि से लुई की शक्ति नष्ट कर दी गई, (२) ब्रैंडनबर्ग (प्रशिया) और सिसली (सेवाय)-नामक दो राज्यों का योरप में उदय हुआ, (३) इँगलैंड का मध्यसागर पर प्रभुत्व हो गया। उसको बहुत-से उपनिवेश मिल गए। संसार में वह नौशक्ति बन गया।

हार्ली, जो अब आक्सफ़ोर्ड का अर्ल हो गया था, तथा वालिंब्रुक की शक्ति एनी के अंतिम दिनों तक स्थिर रही। यूट्रेक्ट की संधि को अँगरेज़ों ने बहुत ही पसंद किया। इँगलैंड दिन-पर-दिन समृद्ध हो रहा था। १७११ के ऐक्ट 'अगेंस्ट ओकेज़नल कॉन्फ़ार्मिटी' (Act against occassional conformity) के साथ १७१४ में स्कीम्स ऐक्ट (Scheme Act) और जोड़ दिया गया। उसके अनुसार डिस्सैंटर लोगों का स्कूल-मास्टर होना बंद कर दिया गया।

एनी का स्वास्थ्य दिन-पर-दिन ख़राब हो रहा था। इन्हीं दिनों हनोवर की सोफ़िया की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र जॉर्ज था।

बालिंब्रुक की इच्छा थी कि जॉर्ज राज्य पर न बैठे; क्योंकि इससे ह्विग लोगों की प्रधानता हो जाने की संभावना थी। ऐक्ट ऑफ् सेटिलमेंट या उत्तराधिकारी-क़ानून के अनुसार जेम्स राज्य पर न बैठ सकता था; क्योंकि वह कैथलिक था।

बालिंब्रुक ने धीरे-धीरे अपने अन्य साथियों को जेम्स के पक्ष में करना शुरू किया। आक्सफ़ोर्ड के साथ-साथ सीमांतों में उसका झगड़ा हो गया। एनी ने बालिंब्रुक का पक्ष लिया, और आक्सफ़ोर्ड को पदच्युत कर दिया। दैवी घटना से पहली अगस्त के दिन एनी की मृत्यु हो गई।

आर्गाइल तथा सोमर्स के ह्विग-दल के ड्यूकों के प्रबल प्रयत्न से मंत्रणासभा (Privy Council) ने जॉर्ज प्रथम को इँगलैंड का राजा माना, और उसको हनोवर-प्रांत से बुला लिया। रानी एनी के आधिपत्य में स्कॉटलैंडवालों को रहना मंजूर था; परंतु वे अँगरेज़ों के धर्म, व्यापार तथा स्वभाव से असंतुष्ट थे। अतः उन्होंने एंड्रयू फ़्लेचर के नेतृत्व में अपने को इँगलैंड से जुदा करने का प्रयत्न किया। १७०३ में स्काच् लोगों ने ऐक्ट ऑफ् सिक्योरिटी (Act of Security) पास किया। इसके अनुसार उन्होंने मेरी की मृत्यु के बाद अँगरेज़ों से भिन्न किसी दूसरे अन्य प्रोटेस्टेंट राजा को अपना राजा बनाना निश्चित किया। अँगरेज़ राजा भी तभी उनका राजा बन सकता था, जब वह स्काच्-समिति द्वारा स्कॉटलैंड का शासन करे। १७०४ में इस नियम को रानी ने स्वीकृत कर लिया, और उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए।

इन्हीं दिनों स्कॉटलैंड के अंदर एक फ़्लाइंग स्क्वैड्रन (Flying Squadron)-नामक नया दल उत्पन्न हो गया, जो कि इँगलैंड स्कॉटलैंड का मेल करवाना चाहता था। १७०७ में ऐक्ट ऑफ् यूनियन (Act of Union) पास किया गया। उसके अनुसार

स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड सदा के लिये परस्पर मिल गए। ये संयुक्त-राज्य ग्रेट ब्रिटन के नाम से पुकारे जाने लगे। दोनों जातियों के झंडों को परस्पर मिलाकर ग्रेट ब्रिटन का एक झंडा बन गया। स्कॉटलैंड ने १६ लॉर्डों तथा ४५ प्रतिनिधियों को पार्लियामेंट में भेजने का अधिकार प्राप्त किया। दोनों ही देशों को एकसदृश व्यापारिक अधिकार मिले। स्काचों को अँगरेज़-उपनिवेशों के साथ बिना किसी प्रकार की रुकावट के व्यापार करने का अधिकार मिला।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७०२	एनी का राज्याधिरोहण
१७०४	ब्लैनहेम का युद्ध। ऐक्ट ऑफ़् सिक्योरिटी
१७०६	रैमिलीज़ का युद्ध
१७०७	स्कॉटलैंड का इँगलैंड के साथ मिल जाना
१७०८	आल्मंज़ा और ऊडनार्ड के युद्ध
१७०९	मालप्लैकट का युद्ध
१७१०	ह्विगों का अधःपतन
१७१३	यूट्रेक्ट की संधि
१७१४	एनी की मृत्यु

अष्टम परिच्छेद

स्टुअर्ट राजों के समय में ग्रेट ब्रिटन की सभ्यता

(१) इँगलैंड की आर्थिक उन्नति

स्टुअर्ट राजों के समय में इँगलैंड के उपनिवेश दूर-दूर तक जा बसे। उसका व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया। यह पूर्व ही लिखा जा चुका है कि भारतवर्ष, उत्तरी अमेरिका, वेस्ट इंडीज़ तथा आफ़्रिका आदि देशों में उसकी व्यापारिक कोठियाँ तथा बंदरगाह विद्यमान थे। इँगलैंड तथा पोर्चुगाल को उसने व्यापार

में नीचा दिखाया। फ्रांस पर भी कई अपूर्व विजय प्राप्त कीं। लुई चौदहवें ने जो उपनिवेश बड़ी ही मेहनत से बसाए थे, इँगलैंड ने बड़ी ही चतुरता से उन उपनिवेशों को अपने हाथ में कर लिया। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति से इँगलैंड में मध्यश्रेणी के लोग प्रबल हो गए। ज़मींदारों की शक्ति पूर्वापेक्षा कम हो गई। राज्य ने आर्थिक प्रश्नों की ओर विशेष ध्यान देना शुरू किया। अधिक क्या कहें, राजनीति का झुकाव देश की आर्थिक उन्नति की ओर हो गया। राज्य की आमदनी पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई। नौ-सेना की वृद्धि में बहुत-सा धन ख़र्च किया जाने लगा। बैंक ऑफ़ इँगलैंड की स्थापना से देश में बैंकों की वृद्धि दिन-पर-दिन होने लगी। राज्य को धन रखने तथा प्राप्त करने में पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक सुगमता हो गई। संपत्ति-शास्त्र के अध्ययन में लोग दत्तचित्त हो गए। व्यावसायिक प्रणाली (Mercantile System) के सिद्धांतों की सचाई का लोगों को ज्ञान हो गया। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति में ही देश की समृद्धि होने के सूत्र को सम्मुख रखकर अँगरेज़-जनता ने पग बढ़ाना शुरू किया। प्रत्येक अँगरेज़ को सोना-चाँदी प्राप्त करने की चाह थी। राज्य देश के सपक्षीय व्यापार के संतुलन को विशेष ग़ौर से देखता था। यदि व्यापारिक संतुलन पर चोट होने लगती तो उसका शीघ्र ही उपाय करता था।

व्यापार तथा कृषि-प्रधान होने पर भी इँगलैंड का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक प्रधानता होना ही था। भारतवर्ष से उत्तम-उत्तम कपड़े इँगलैंड में पहुँचते थे। लुई चौदहवें ने अपने देश के प्रोटेस्टेंट कारीगरों को देश छोड़ने की आज्ञा दे दी। उन बेचारों ने इँगलैंड की शरण ली। इँगलैंड ने उनका स्वागत किया, और उनके सहारे व्यावसायिक देश बनने का प्रयत्न करने लगा। हालैंड के इंजीनियरों ने इँगलैंड

की दलदलों को सुखाया, और उसको कृषि-योग्य बना दिया। इससे इँगलैंड की कृषि में बहुत ही अधिक उन्नति हो गई।

किसान लोग अमीर हो गए। भिखमंगों तथा दरिद्रों की संख्या देश में पहले की अपेक्षा बहुत ही कम हो गई। १६६२ में ऐक्ट ऑफ् सेटिलमेंट पास किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक ज़िले के राज-कर्मचारी को यह आज्ञा दी गई कि वह किसी दूसरे ज़िले के अँगरेज़ों को अपने यहाँ न बसने दे। इस नियम का यह प्रभाव हुआ कि प्रत्येक ज़िले में जन-संख्या परिमित रही। इससे किसी भी ज़िले पर मनुष्य सँभालने का अधिक भार नहीं पड़ा। यह नियम बनने के पहले भिखमँगे, बेकार, दरिद्र लोग जिस ज़िले में इकट्ठे हो गए, उसी ज़िले पर ख़र्च का भार बढ़ जाता था। स्टुअर्ट राजों के समय में इँगलैंड की आबादी पहले से बढ़ गई। इँगलैंड तथा वेल्स में ५० लाख की आबादी थी। एक-मात्र लंदन की आबादी ५ लाख के लगभग थी। इससे दूसरे नंबर पर ब्रिस्टल तथा नार्विच के नगर थे, जिनकी आबादी ३० हज़ार से अधिक न थी।

देश के फ़ैशन, राजनीति, तथा रीति-रिवाज आदि पर लंदन का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा। देश के सारे छापेख़ाने तथा योग्य मनुष्य लंदन में ही रहते थे। लोगों को लंदन में बीमारी फैल जाने का बहुत ही अधिक डर था। शहर के पश्चिम ओर राजा तथा अमीर लोगों के मकान थे, और पूर्व की ओर व्यापारिक कोठियाँ तथा कारख़ाने। पानी का प्रबंध जेम्स प्रथम से कठिन था। लोग टेम्स-नदी या कुँओं का पानी पीते थे। जेम्स के समय में एक न्यूरिवर-नामक कंपनी स्थापित हुई, जो हर्टफ़ोर्ड शायर से स्वच्छ पानी को नहर बनाकर लाई। प्लेग और आग लगने के बाद भी नगर को ठीक ढंग पर न बनाया गया। गलियाँ पहले ही की तरह तंग बनी रहीं। पुलिस के ठीक न होने से शहर में डाके, चोरियाँ तथा हत्याएँ

आम तौर पर होती रहतीं। कुछ गुंडों के जत्थे चलते-चलाते लोगों को अकारण ही तंग किया करते थे।

(२) इँगलैंड की सामाजिक उन्नति

इँगलैंड ने स्टुअर्ट-काल में आर्थिक उन्नति के सदृश ही सामाजिक उन्नति भी यथेष्ट से अधिक की। १६४२ में थिएटरों से सारा इँगलैंड भरा हुआ था। नाचने-गाने में लोगों की रुचि बहुत अधिक थी। थिएटरों में स्त्रियाँ भी पात्र बनने लगीं। टेनिस, घुड़-सवारी आदि में लोग अपना फुरसत का समय बिताते थे। जुआ, घुड़-दौड़ और मुर्गी लड़ाने में भी बहुत-से लोगों को आनंद आता था। मुक्केबाज़ी तथा तलवार के युद्ध में इनाम बँटते थे। फिर भी योरपियन लोग अँगरेज़ों को उजड्ड ही समझते थे।

सड़कों के ठीक न होने पर भी लोग लंदन में आया-जाया करते थे। अमीर लोग छुट्टी के दिन ऐसे मकानों में बिताते थे, जो पानी के नीचे बने हुए थे। राज्य की ओर से चिट्ठी भेजने का प्रबंध भी हो गया था। इक्के-ताँगे प्रतिदिन ५० मील चलते थे।

कपड़ों में भी लोगों ने यथेष्ट उन्नति की थी; पर कपड़ों की काट-छाँट की ओर लोगों का ज़्यादा ध्यान था।

(३) इँगलैंड की साहित्यिक उन्नति

पढ़ाई-लिखाई की ओर लोगों का ध्यान पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक हो गया था। अख़बार, पैंफ़्लेट तथा पुस्तकों की छपाई में बहुत ही अधिक उन्नति हो गई थी। लोग बहुत शौक से अख़बारों को पढ़ते थे। महाशय बेकन ने दर्शन-शास्त्र में उन्नति की और वैज्ञानिक चीज़ों के अध्ययन तथा अन्वेषण में ऐतिहासिक शैली (Inductive Method) का प्रयोग किया। विलियम हार्वे ने रक्त की गति का पता लगाया। १६६२ में रॉयल सोसाइटी की नींव रक्खी गई। इसी का एक सभ्य आइज़क न्यूटन था।

विज्ञान के सदृश ही गृह-निर्माण में भी अँगरेज़ों ने उन्नति की। शिल्प-कला तथा चित्र-कला की ओर तो लोगों का बहुत ही अधिक ध्यान था। चार्ल्स प्रथम ने बहुत-से चित्रों को इधर-उधर से जमा किया। प्यूरिटन लोग इन सब बातों के विरुद्ध थे। अतएव अपने शासन-काल में उन्होंने इन विद्याओं को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँचाया। एलिज़बेथ के बाद नाटक लिखने की ओर अँगरेज़ों की रुचि दिन-पर-दिन कम होती गई। पर इसमें संदेह नहीं कि कविता की ओर उन्होंने अच्छी उन्नति की। राबर्ट हेरिक तथा जॉन मिल्टन स्टुअर्ट-काल के ही फल हैं, जिन पर इँगलैंड को विशेष अभिमान है। इस समय ड्राइडन ने अँगरेज़ी-पद्य में बड़ी भारी उन्नति की। जॉन बानियन ने गद्य की निराली शैली निकाली, इसकी लेख-शैली बहुत ही उत्तम थी। स्टुअर्ट-काल में ही अँगरेज़ी-गद्य का पुनरुद्धार होता है। पत्र आदि के निकलने और छापेख़ानों के जगह-जगह पर होने से पुस्तकें तथा लेख बहुत जल्दी-जल्दी प्रकाशित होते थे। इससे भाषा में सरलता आ जाना स्वाभाविक ही था। ड्राइडन ने अपने लेखों के द्वारा अँगरेज़ी-गद्य को अच्छी स्थिति पर पहुँचा दिया।

द्वितीय अध्याय

हनोवर-वंश तथा कुलीन-तंत्र राज्य

प्रथम परिच्छेद

जॉर्ज प्रथम

(१७१४—१७२७)

जॉर्ज प्रथम पचास वर्ष की उम्र में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा। वह आलसी, प्रमादी तथा अस्थिर स्वभाव का था। अपने हनोवर-प्रांत को ही नज़र के सामने रखकर वह परराष्ट्र-नीति में हस्तक्षेप करता था। उसको अँगरेज़ी भाषा का ज्ञान न था, और उसने उसे सीखने का प्रयत्न भी नहीं किया। इसी कारण वह ह्विगों का अत्यधिक विश्वास करता था; क्योंकि अँगरेज़ी सिंहासन भी उसे उन्हीं की कृपा से मिला था। टोरी-दल के मंत्रियों को उसने समस्त राजकीय पदों से अलग कर दिया। आक्सफ़ोर्ड को टावर में क़ैद कर दिया। बालिंब्रुक तथा आर्मोंड फ़्रांस भाग गए। टोरी-दल अपने नेताओं के देश-द्रोह के कारण शनैः-शनैः नष्टप्राय हो गया, और ह्विग-दल बहुत दिनों तक प्रधान रहा। जनता में यह धारणा फैल गई कि टोरी-दल के लोग इँगलैंड में स्वेच्छाचार के राज्य का युग लाना चाहते हैं। यही कारण है कि १७१४ से १७६१ तक ह्विग-दल ही संपूर्ण राज-काज करता रहा।

(१) राजनीतिक अवस्था

(क) सचिव-तंत्र राज्य की स्थिरता

इँगलैंड में, विलियम तथा एनी के ज़माने में, किस प्रकार सचिव-

तंत्र राज्य की स्थापना हुई, यह पहले ही लिखा जा चुका है। ह्विग-दल की प्रधानता से हनोवर-वंश के राजों के समय में सचिव-तंत्र राज्य स्थिर हो गया। प्राचीन शासन-पद्धति-संबंधी नियम ज्यों-के-त्यों बने रहने पर भी शासन-पद्धति में बहुत कुछ रद्दोबदल हो गया। सारांश यह कि अँगरेज़ी शासन-पद्धति देश-प्रथा के अनुसार चलने लगी। पहले के बने हुए शासन-पद्धति-संबंधी नियम के अनुसार तो शासन की बागडोर राजा तथा उसके सहायक दरबारियों के ही हाथ में होनी चाहिए थी, परंतु विलियम के समय से आरंभ हुई देश-प्रथा के अनुसार पार्लियामेंट के प्रधान-दल के नेता के हाथ में शासन का कार्य चला गया, और राजा को भी ऐसा ही करने के लिये बाध्य होना पड़ा। इस प्रकार सचिव-तंत्र राज्य के दो आवश्यक परिणाम हुए, जो कि भुलाए नहीं जा सकते।

(१) राजा के बहुतेरे अधिकार बेकार हो गए। उदाहरण-स्वरूप पहले पार्लियामेंट के हाउस ऑफ़् कामंस के पास किए हुए नियमों को स्वीकृत तथा अस्वीकृत करना राजा के हाथ में था; परंतु सचिव-तंत्र राज्य के कारण यह राजा का अधिकार जाता रहा। इससे राजा की शक्ति बहुत अधिक घट गई।

(२) इँगलैंड का शासन हाउस ऑफ़् कामंस के हाथ में आ गया; क्योंकि आर्थिक मामलों में एक-मात्र प्रतिनिधि-सभा का ही प्रभुत्व हो गया था। इसी प्रभुत्व के बल पर लॉर्ड-सभा तथा राजा की शक्ति को भी उसने अपने हाथ में कर लिया। अब लॉर्ड-सभा के पास प्रस्तावों के संशोधन तथा निरीक्षण का ही काम रह गया।

प्रतिनिधि-सभा की शक्ति बढ़ जाने पर भी इँगलैंड में प्रतिनिधि-तंत्र राज्य की प्रधानता तथा मुख्यता प्रकट करना ठीक नहीं। इस समय के इँगलैंड के राज्य को केवल कुलीन-तंत्र के नाम से पुकारा जा सकता है। इसके मुख्य दो कारण हैं। एक तो तत्कालीन जनता

का स्वभाव ही ऐसा था कि वह प्रतिनिधि-तंत्र या प्रजा-तंत्र राज्य को ठीक-ठीक चला नहीं सकती थी। दूसरे, इँगलैंड में प्रतिनिधि-निर्वाचन का ढंग ही कुछ ऐसा था, जिससे वहाँ कुलीन-तंत्र राज्य स्थापित हो गया। अँगरेज़-जनता साधारणतः राजनीति में बहुत भाग न लेती थी। लॉर्ड लोग (ज़मींदार) तथा व्यापारी ही राजनीति की बातों में दिलचस्पी रखते और शरीक होते थे। क्राम्वैल ने प्रतिनिधि-निर्वाचन की विधि को सुधारना चाहा था; परंतु वह सफलता नहीं पा सका। उसकी असफलता के बाद इँगलैंड का निर्वाचन उसी विधि से होता रहा, जो कि मध्यकाल में प्रचलित थी। प्रतिनिधि-निर्वाचन में प्रत्यक्ष रूप से जनता का संपर्क बहुत ही कम था। काउंटियों से दो प्रतिनिधि निर्वाचित होते थे; परंतु वास्तव में उनका निर्वाचन लॉर्ड लोग ही करते थे। यही नहीं, पार्लियामेंट में बड़े-बड़े नगरों का कोई भी प्रतिनिधि नहीं था; पर छोटे-छोटे उजड़े ग्रामों को दो-दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त था। बड़े-बड़े लॉर्ड तथा धनिक लोग ऐसे उजड़े ग्रामों को ख़रीद लेते और इस प्रकार बहुत-से प्रतिनिधि राज्य में भेजकर देश के शासन में बहुत कुछ अपना हाथ रखते थे। बड़ी-बड़ी काउंटियों तथा ग्रामों में भी प्रतिनिधि-निर्वाचन उचित रीति से नहीं हो पाता था। राज-कर्मचारी तथा धनाढ्य लोग निर्वाचकों को घूस देकर अपने ही मतलब के प्रतिनिधि चुनवाते थे। ह्विग-दल के लोगों ने इन प्रतिनिधियों को अपने पक्ष में और हाथ में रखने की ख़ूब कोशिश की। इसी उपाय से उन्होंने देश का शासन केवल अपने ही हाथ में कर लिया था। इस प्रकार ५० वर्षों तक इँगलैंड में ह्विग लोगों का कुलीन-तंत्र राज्य रहा। प्रतिनिधि-सभा तथा राजा उन्हीं की इच्छा के अनुसार चलते रहे। इस काल में ह्विग-दल शनैः-शनैः उदार से अनुदार बनता गया। फिर भी ह्विगों ने इँगलैंड को बहुत कुछ लाभ

पहुँचाया। उन्होंने देश की समृद्धि बढ़ाई तथा शांति स्थापित की।

ह्विगों की प्रधानता के दिनों में टोरी-दल अपने नेताओं की बेवकूफ़ी से जनता को बहुत ही अधिक अप्रिय हो गया। जेम्स के पक्षपातियों ने १७१५ में, इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड में, विद्रोह फैलाने का प्रयत्न किया। पर उनको पग-पग पर असफलता ही हुई। विद्रोह की चेष्टा के समय में ही लुई चौदहवाँ मृत्यु को प्राप्त हुआ। इससे जेम्स के पक्षपातियों को बहुत ही अधिक सहायता प्राप्त होने की आशा थी। लुई की मृत्यु होने पर उसके उत्तराधिकारी, आर्लियन्स के ड्यूक फ़िलिप ने जॉर्ज प्रथम से मित्रता कर ली, और जेम्स के पक्षपातियों को कुछ भी सहायता न दी।

१७१५ में पार्लियामेंट ने विद्रोह-नियम (The Riot Act) पास किया। इससे अँगरेज़ी-मंत्रि-मंडल को विद्रोह शांत करने के लिये विशेष शक्ति मिल गई। मंत्रियों ने शीघ्र ही देश-द्रोह और षड्यंत्र करनेवालों को पकड़ा, और यथोचित दंड दिया। इस प्रकार सारे इँगलैंड में विद्रोह न फैल सका। सिर्फ़ नार्थंबरलैंड में कुछ-कुछ हलचल हुई थी; पर इस उत्तेजना से अँगरेज़-राज्य को कुछ भी भय न था। जेम्स के पक्षपातियों ने स्कॉटलैंड में भी विद्रोह खड़ा करने का यत्न किया, और वहाँ वे कुछ सफल भी हुए। इसका कारण यह था कि उत्तरी स्काच् लोगों की सभ्यता अभी बहुत पिछड़ी हुई थी। उनके विश्वास और विचार पहले ही-जैसे भ्रांत और अपरिमार्जित बने हुए थे। दरिद्र जीवन व्यतीत करने से उनका जीवन कठोरता-पूर्ण हो गया था। जॉन अर्स्किन (John Erskine Earl of Mar) ने स्काच् विद्रोहियों को उभारा, और जॉर्ज की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। शेरिफ़ म्योर (Sheriff muir)-नामक स्थान पर जॉन अर्स्किन और जॉर्ज का सहायक आर्गाइल का

ड्यूक, दोनों भिड़ गए। इस समर में दोनों पक्ष समान रहे, युद्ध का कोई नतीजा न निकला। अगले साल फिर युद्ध हुआ। उसमें स्काच्-सेना हारी, और जॉन अर्स्किन फ़्रांस भाग गया।

ऊपर लिखे गए विद्रोह से अँगरेज़-सचिव-मंडल डरता था। उसे यह डर था कि कहीं नए निर्वाचन में टोरी-दल फिर प्रधान न हो जाय। अतः उसने निर्वाचन का त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) हटाकर सप्तवार्षिक नियम (The Septennial Act) पास किया। इससे पार्लियामेंट के पुनर्निर्वाचन की अवधि सात वर्ष की हो गई।

(ख) छठे टाउनशैंड का सचिव-तंत्र राज्य (१७१४—१७१६)

जॉर्ज प्रथम का राज्याधिरोहण होने के बाद १७१७ तक अँगरेज़ों के सचिव-तंत्र राज्य में कोई नई घटना नहीं हुई। पुराने ह्विग राजनीतिक मर चुके थे। केवल मार्लबरा बच रहा था। परंतु उस पर कोई विश्वास न करता था। उसकी जगह पर वाईकाउंट टाउनशैंड प्रधान-मंत्री का काम करता था। इसकी मातहती में राबर्ट वालपोल चांसलर था, संडरलैंड आयर्लैंड का शासक था, और भूतपूर्व सेनापति जेनरल स्टैनहोप राज्य के शासन का काम करता था। स्टैनहोप तथा संडरलैंड जॉर्ज की परराष्ट्र-नीति के पक्षपाती और समर्थक थे।

स्टैनहोप १७१६ में जॉर्ज के साथ हनोवर को गया। वहाँ जाकर फ़्रांस और हालैंड के साथ संधि की। टाउनशैंड ने प्रधान-मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया, और स्टैनहोप प्रधान-मंत्री बना।

(ग) सातवाँ स्टैनहोप का सचिव-तंत्र राज्य

टाउनशैंड की अपेक्षा स्टैनहोप अधिक कर्मपरायणता के साथ राज्य का काम करने लगा। इसके समय में अँगरेज़ी-राज्य ने पूर्ण रूप से कुलीन-तंत्र राज्य बनने का प्रयत्न किया। लॉर्ड-सभा में ह्विगों का बहुमत स्थिर करने के मतलब से पियरेज-बिल (Peerage

Bill) पेश किया गया, जिसके अनुसार एक समय में केवल ६ ही नए लॉर्ड लॉर्ड-सभा में सभ्य बनाकर रक्खे जा सकते थे। इस बिल के पेश करने का एक यह भी मतलब था कि राजा लॉर्ड-सभा में अपना बहुमत करने के लिये मनमानी संख्या में नए लार्ड बनाकर लार्ड-सभा में न भेज सके। इसके पास हो जाने से लॉर्ड-सभा राजा की शक्ति के प्रभाव से मुक्त हो जाती और विना क्रांति किए उसकी शक्ति घटाई न जा सकती। अस्तु। लॉर्ड-सभा में यह बिल पास हो जाने के बाद वालपोल तथा टोरी-दल ने प्रतिनिधि-सभा में इसे नहीं पास होने दिया।

स्टैनहोप के सचिव-दल की परराष्ट्र-नीति अकर्मण्य नहीं थी। पहले ही लिखा जा चुका है कि १७१६ में हालैंड तथा फ़्रांस से मित्रता और संधि करने की सफलता से ही स्टैनहोप को प्रधान-मंत्री का पद मिला था। यूट्रेक्ट की संधि के आधार पर योरप में शांति स्थापित करने के लिये ही इँगलैंड, हालैंड तथा फ़्रांस का यह राष्ट्रीय तिगुट बना था। इस मित्र-दल के विरुद्ध स्पेन, स्वीडन तथा रूस ने अपना एक नया गुट बनाया। इस गुट ने आस्ट्रिया तथा इटली पर आक्रमण किया। स्पेन ने सार्डीनिया तथा सिसली को जीत लिया। यदि जल-सेना के सेनापति बिंग (Byng) ने सिसली में (१७१७)भू-मध्य-सागर के बीच सामुद्रिक विजय न प्राप्त कर ली होती, तो यह विजय यहीं पर न रुकती। इसी समय में सम्राट् चार्ल्स छठे ने स्पेन के विरुद्ध अँगरेज़ों का साथ दिया, जिससे अँगरेज़ों का पक्ष प्रबल हो गया। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि सम्राट् ने सिसली-प्रदेश हस्तगत कर लिया। तभी से सेवाय (Savoy) का ड्यूक सार्डीनिया का राजा कहा जाने लगा।

(२) आर्थिक अवस्था

अँगरेज़-जनता व्यापार-व्यवसाय में बहुत ही अधिक उन्नति कर

रही थी। नए-नए साहस के कामों में हाथ डालना अँगरेज़ों के लिये साधारण-सी बात थी । यूट्रेक्ट की संधि के बाद वे अपने बचे हुए धन को किसी लाभदायक व्यवसाय में लगाने की फ़िक्र में थे। नित्य ही सम्मिलित पूँजी की कंपनियाँ खड़ी होती थीं, और अँगरेज़ उनके हिस्से ख़रीद लेते थे। ऐसे उत्साह के समय में, १७११ में, हार्ले ने दक्षिण-सागर कंपनी (South Sea Company) खड़ी की, और लोगों को बहुत अधिक लाभ की आशा दिलाई। साधारणतः यह कंपनी अपना काम अच्छी तरह करने लगी; परंतु स्पेनिश लोगों की डाली हुई बाधाओं या रुकावटों के कारण उक्त कंपनी स्पेनिश अमेरिका में उस सफलता के साथ काम न चला सकी, जिसकी उससे आशा की जाती थी । ऐसे कठिन समय में इस कंपनी ने यह बेवक़ूफ़ी की कि बैंक ऑफ़् इँगलैंड के साथ लाग-डाँट ठान दी, और राज्य को रुपए उधार देना शुरू किया। स्टैन-होप के मंत्रि-मंडल ने भी मूर्खता की, जो कंपनी से ऋण ले लिया। तब तो कंपनी ने सर्वसाधारण के बीच अपने हिस्सों को और भी अधिक लाभदायक प्रकट करके गवर्नमेंट-बांड के साथ एक्सचेंज शुरू कर दिया। जनता ने कंपनी के हिस्सों को अतीव लाभदायक समझकर उन्हें ख़रीदने की ओर अधिक उत्सुकता प्रकट की। इससे कंपनी के हिस्सों की दर दसगुनी तक चढ़ गई। यह देखकर इँगलैंड में और नई-नई कंपनियाँ खड़ी होने लगीं। उनमें से बहुत-सी तो देश के रुपए लूटने के लिये ही खुली थीं। समय पर ढोल की पोल खुल गई। झूठी कंपनियाँ टूटने लगीं । इससे अच्छी कंपनियों के हिस्सों की दर भी गिर चली । दक्षिण-सागर कंपनी पर भी विपत्ति आ पड़ी। उसके डाइरेक्टरों की संपत्ति छीन ली गई। इसी समय जनता को यह भी पता लगा कि इस कंपनी में कई मंत्रियों का भी हाथ है, और उन्होंने कंपनी के ज़रिए बहुत-सी

रक़म जेबों में भर ली है। फिर क्या था, पार्लियामेंट में मंत्रियों पर आक्षेप-पर-आक्षेप होने लगे। ऐसी विपत्ति के समय ही स्टैनहोप की मृत्यु हो गई। और एक मंत्री ने आत्महत्या कर ली। संडरलैंड पर मुक़द्दमा चला। मुक़द्दमे से छुटकारा पाने के बाद वह भी मर गया।

इस दुर्घटना के बाद टाउनशेंड तथा वालपोल फिर मंत्रि-मंडल में प्रविष्ट हुए। १७२१ में वालपोल प्रधान-मंत्री बना।

(३) आठवाँ वालपोल का सचिव-तंत्र राज्य (१७२१-१७४२)

वालपोल बहुत ही योग्य आदमी था। उसने देश की आर्थिक अवस्था को बहुत कुछ सुधार लिया। १७२० की दुर्घटना के बाद १७२६ तक देश में शांति रही। १७२७ में जॉर्ज प्रथम की मृत्यु हो गई, और उसका पुत्र जॉर्ज द्वितीय इँगलैंड की गद्दी पर बैठा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७१४	जॉर्ज प्रथम का राज्याधिरोहण
१७१५	जेम्स के पक्षपातियों का विद्रोह
१७१६	राष्ट्र-त्रयी-सम्मिलन (Triple Alliance)
१७२०	दक्षिण-सागर की दुर्घटना (The South Sea Bubble)
१७२१	वालपोल का सचिव-तंत्र राज्य
१७२७	जॉर्ज प्रथम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

जॉर्ज द्वितीय

(१७२७—१७६०)

जॉर्ज द्वितीय चालीस वर्ष की उम्र में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा। वह पिता के सदृश ही अपने व्यवहार तथा चाल-चलन

में जर्मन था। इसमें संदेह नहीं कि उसे पिता की अपेक्षा अँगरेज़ी-भाषा और अँगरेज़ी-रस्म-रिवाजों का अधिक ज्ञान था। उसका जीवन नियम-पूर्ण और व्यवहार सरल था। वैदेशिक राजनीति को वह पूर्ण रूप से समझता था। साथ ही उसमें बहुत-से दोष भी थे। वह ओछी प्रकृति का, स्वार्थी, क्रोधी, विद्या-द्वेषी तथा लोभी था। उस पर उसकी स्त्री का पूरा प्रभाव था। स्त्री के कहने से ही उसने राबर्ट वाल्पोल को प्रधान-मंत्री के पद से नहीं हटाया। इसी कारण वाल्पोल २० वर्ष से कुछ अधिक समय तक अपने पद पर क़ायम रह सका।

राजनीतिक दशा

वाल्पोल का सचिव-तंत्र राज्य (१७२१—१७४२)

राबर्ट वाल्पोल १६७६ में एक मध्यवित्त-श्रेणी के घराने में उत्पन्न हुआ था। पिता की मृत्यु होने पर वह १७०० में, २४ वर्ष की उम्र में, पार्लियामेंट का मेंबर बना। शुरू से ही वह ह्विग-दल का था। वह चतुर, सावधान, उद्यमी, धैर्यशाली, उत्साही, हाज़िर-जवाब तथा महत्त्वाकांक्षी था। इन गुणों के सहारे वह शीघ्र-शीघ्र उन्नति करने लगा। १७१२ में टोरी-दल पर उसने ख़ूब आक्षेप और आक्रमण किए। इन आक्षेपों के कारण ही वह कुछ वर्षों तक राज्य के किसी भी पद पर न पहुँच सका। १७२१ में दक्षिण-सागर की दुर्घटना होने पर उसका सितारा चमका, और वह चांसलर के पद पर नियुक्त हुआ।

इँगलैंड में वाल्पोल का सचिव-तंत्र राज्य बहुत दिनों तक रहा। इसी से यह अनुमान किया जा सकता है कि वह कितना योग्य था, और ह्विग-दल के कुलीन-तंत्र राज्य में भीतरी त्रुटि क्या थी। वाल्-पोल बहुत अच्छा वक्ता न था। वह वाद-विवाद में विशेष निपुणता रखता था। इसी के सहारे वह प्रतिनिधि-सभा को अपने वश में

रखता था। योग्य शासन के साथ ही वह अर्थसचिव के कार्य में भी अति चतुर था। वृथा के झगड़े बढ़ाकर अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ाना उसे पसंद न था। बल्कि वह भिन्न-भिन्न स्वार्थ रखनेवाले जुदे-जुदे दलों को बड़ी चतुरता से अपने अनुकूल कर लेता था। इसमें संदेह नहीं कि डिस्सेंटरों को कठोर दंडों से, जो कि क़ानून भंग करने के कारण उन्हें दिए जा सकते थे, इंडेमूनिटी ऐक्ट (Indemnity Act) के द्वारा वह बचाता रहा। १७२७ से १८२८ तक डिस्सेंटरों की रक्षा इसी प्रकार की जाती रही। परंतु उनके विरुद्ध जो नियम बने थे, व न हटाए गए। प्रतिनिधि-सभा अर्थात् पार्लियामेंट में अपने ही प्रतिनिधि जायँ, इस पर वालूपोल ने बहुत अधिक ध्यान रक्खा। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये वह घूस तक देने में नहीं हिचकता था। अधिक क्या, इसी के समय में प्रतिनिधि-निर्वाचन के अवसर पर रिश्वत के उपयोग ने एक असाधारण रूप धारण कर लिया। जो कुछ हो, वालूपोल अतीव देश-भक्त था। उसने देहाती जनता को जेम्स के पक्ष से हटाकर जॉर्ज का भक्त बना दिया। अपनी व्यापारिक तथा व्यावसायिक नीति से उसने अँगरेज़ व्यापारियों और व्यवसायियों को ह्विग-दल के पक्ष में कर लिया। बड़े-बड़े योग्य राजनीतिज्ञों ने भी शायद ही अपने देश को उतना ही लाभ पहुँचाया होगा, जितना वालूपोल ने इँगलैंड को पहुँचाया। वालूपोल से पहले इँगलैंड में प्रधान-मंत्री (Prime Minister) का पद नियत न हुआ था; क्योंकि अँगरेज़-जनता प्रधान-मंत्री के नाम से डरती थी। पूर्व परिच्छेदों में जहाँ-जहाँ प्रधान-मंत्री तथा प्रधान-सचिव का उल्लेख किया भी गया है, वहाँ-वहाँ उसका मतलब मुख्य नेता ही था। उसका भाव वह न था, जो आजकल इँगलैंड का प्रधान-मंत्री कहने से व्यक्त हो जाता है। वर्तमान समय के प्रधान-मंत्री का स्वरूप राबर्ट वालूपोल से शुरू

होता है। अँगरेज़-जनता के डर से वाल्पोल ने कभी मुख्य मंत्री (Prime Minister) की उपाधि का उल्लेख अपने नाम के साथ स्वयं नहीं दिया। किंतु वह मुख्य मंत्री के सभी काम करता था।

वाल्पोल से पहले मंत्रि-मंडल के अंतर्गत सभी व्यक्ति अधिकार तथा पद में बहुत कुछ बराबर ही होते थे। वाल्पोल ने शनैः-शनैः मंत्रि-मंडल पर अपना प्रभुत्व प्रकट करना शुरू किया। उसने अपनी ही नीति स्वीकृत करने के लिये सभी मंत्रियों को बाध्य किया। परिणाम यह हुआ कि बहुत-से मंत्रियों के साथ झगड़ा हो गया, जिसमें उनको उसके मंत्रि-मंडल से अलग होना पड़ा। वाल्पोल ने १७२४ में राजा के कृपापात्र लॉर्ड कार्टरट को अपने मंत्रि-मंडल से निकाल दिया; क्योंकि वह उसको फ्रांस के साथ संधि करने से रोकना चाहता था। इसी प्रकार टाउनशैंड के संबंधी प्रसिद्ध वक्ता पुल्टने से भी वाल्पोल की भिड़ंत हो गई। पर इसका परिणाम उसके लिये अच्छा न हुआ। वाल्पोल के विरोधी लोगों ने एक दल बना लिया, और अपने को देश-भक्त ह्विग (The Patriot Whigs) के नाम से प्रसिद्ध किया।

समय के फेर से अँगरेज़ नवयुवकों का समूह वाल्पोल का साथ देने की जगह पर देश-भक्त ह्विगों का साथ देने लगा। इन नवयुवकों में विलियम पिट भी था। विलियम पिट बहुत ही योग्य, उच्च आचारवाला तथा सच्चा देश-भक्त था। उसको प्रतिनिधि-निर्वाचन में घूस देना-लेना बिलकुल नापसंद था। बालिंब्रुक का अधःपतन होने के बाद पार्लियामेंट में टोरी दल के आदमी बहुत थोड़े रह गए थे। बालिंब्रुक १७२३ में जॉर्ज की आज्ञा से इँगलैंड को लौट आया; क्योंकि उसकी भक्ति जेम्स के ऊपर से हटकर जॉर्ज के ऊपर हो गई थी। इँगलैंड में आते ही उसने टोरी-दल के लोगों को जमा करना शुरू किया। जॉर्ज का पुत्र फ्रेडरिक बहुत ही ओछी प्रकृति

का आदमी था। अपने पिता को तंग करने में ही उसको प्रसन्नता होती थी। इसी उद्देश्य से उसने बालिंब्रुक से दोस्ती कर ली। जॉर्ज द्वितीय को उस पर बहुत विश्वास न था। बालिंब्रुक तथा टोरी-दल के लोग फ्रेडरिक के अनुयायी होने लगे।

सभी के विरोधी होने पर भी वाल्पोल लोक-सभा में बहुमत पाता रहा, और अपने पद पर क़ायम रहा। १७३७ में रानी कैरो-लाइन के मरने पर उसे बहुत धक्का पहुँचा। राज्य के कार्य करने में रानी का उसको बड़ा भारी सहारा था।

१७३३ में विरोधियों ने वाल्पोल की एक्साइज़ स्कीम (Excise Scheme) न पास होने दी। इस स्कीम के बनाने में उसको बहुत ही अधिक समय लगाना पड़ा था। इस स्कीम के अनुसार वह पहले तमाखू और फिर शराब के व्यवसाय पर एक नई रीति से कर लगाना चाहता था। वाल्पोल इन पदार्थों पर से चुंगी हटाना चाहता था; क्योंकि लोग चोरी से माल निकाल ले जाते थे। यह स्कीम बनाने में उसका दूसरा उद्देश्य यह था कि इँगलैंड किसी-न-किसी तरीक़े से इन पदार्थों के लिये संसार का बाज़ार बन जाय। सामुद्रिक कर हटाने से ही यह बात संभव थी। इस स्कीम के सहारे राज्य की आय बढ़ जाती और ग़रीब किसानों पर से भौमिक कर की मात्रा भी कम की जा सकती। ख़ैर, विरोधी लोगों ने यह कहकर जनता को भड़का दिया कि एक्साइज़ स्कीम का प्रयोग धीरे-धीरे सभी पदार्थों पर होने लगेगा, और इस तरह राज्य का हस्तक्षेप जनता के घरों तक जा पहुँचेगा। लोग बहुत ही अधिक भड़क गए। अतः वाल्पोल ने इस स्कीम को पार्लियामेंट में नहीं पेश किया। १७३७ में एडिनबरा के लोग पोर्च्युअस-नामक राज-कर्मचारी से तंग होकर खीझ उठे। उन्होंने टाल्बूथ-नामक क़ैदख़ाने

को तोड़ डाला, और पोर्च्युअस को फाँसी पर लटका दिया । इस घटना से वाल्पोल को क्रोध चढ़ आया । वह एडिन्बरा का चार्टर इस अपराध पर छीनना चाहता था; परंतु विरोधियों ने यहाँ पर भी उसका विरोध किया । वाल्पोल ने लाचार होकर इस मामले को ठंडा कर दिया । केवल पोर्च्युअस की विधवा स्त्री को पार्लिया-मेंट से कुछ रुपए दिलवा दिए ।

वाल्पोल की परराष्ट्र-नीति

वाल्पोल की परराष्ट्र-नीति पर भी विरोधियों ने पूर्ण रूप से आक्रमण किया । वाल्पोल योरप के मामलों में बहुत अधिक हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था । फ़िलिप पंचम ने वारंवार यूट्रेक्ट की संधि तोड़ने का यत्न किया । इससे योरप को हर घड़ी लड़ाई का ख़ौफ़ बना रहता था । इँगलैंड तथा हालैंड से चार्ल्स छठे का व्यवहार अच्छा न था । १७२५ में एक साहसी डच ने चार्ल्स को यह समझाया कि शांति से रहने में ही उसका भला और हित है । १७२५ में वियना की प्रथम संधि (First Treaty of Vienna) हुई । इसी के एक साल बाद, १७२६ में, हालैंड तथा इँगलैंड ने फ़्रांस के साथ संधि कर ली । जिसका मुख्य उद्देश्य यह था कि स्पेन तथा आस्ट्रिया यूट्रेक्ट की संधि को न तोड़ने पावें । इस पर स्पेन तथा इँगलैंड के बीच १७२७ में युद्ध छिड़ गया । १७२६ में सैविल-नामक स्थान पर दोनों देशों में मेल हो गया । १७३१ में वियना की द्वितीय संधि हुई, जिससे योरप में फिर युद्ध छिड़ने का डर कुछ-कुछ कम हो गया ।

वियना की तृतीय संधि (१७३८)—पर दो वर्ष के बाद ही योरप में पोलैंड के उत्तराधिकार (War of the Polish Succession) का युद्ध छिड़ गया । इस युद्ध का मुख्य उद्देश्य आस्ट्रियन लोगों को निकालकर नेपल्स के राज्यासन पर फ़िलिप पंचम के पुत्र

डान चार्ल्स को बिठाना था। फ्रांस तथा स्पेन ने परस्पर मेल कर लिया। स्पेनिश नेताओं ने चार्ल्स छठे को सिसली तथा नेपल्स के बाहर कर दिया। इससे यूट्रैक्ट की संधि टूट गई ; क्योंकि यह काम उसकी शर्तों के ख़िलाफ़ था। वाल्पोल योरप के युद्ध में शामिल नहीं हुआ चाहता था। उसने एक बार घमंड के साथ यह कहा था कि इस वर्ष १०,००० मनुष्य योरप में मारे-काटे गए, और ख़ुशी की बात यह है कि उनमें एक भी अँगरेज़ न था। इँगलैंड के युद्ध में न शामिल होने से १७३८ में आस्ट्रिया हार गया, और उसने डान चार्ल्स को नेपल्स का राजा मान लिया। यह संधि वियना की तृतीय संधि (The Third Treaty Vienna) कही जाती है।

वाल्पोल का स्पेन से न लड़ना उसके पतन का एक कारण बन गया। बहुत-से अँगरेज़ इसी के लिये उससे असंतुष्ट हो गए। स्पेन ने शक्ति-संचय करते ही अँगरेज़ों के साथ बुरा व्यवहार शुरू कर दिया। उसने अँगरेज़ों के व्यापार में तरह-तरह की बाधाएँ डालीं। स्पेनी राज्य अँगरेज़-जहाज़ों को बहुत बुरी दृष्टि से देखता था। उसके उपनिवेश में जब अँगरेज़-जहाज़ माल लाते थे, तो जहाज़ी अफ़सर उनकी तलाशी लेता था कि कहीं वे उन पदार्थों को तो नहीं ले आए हैं, जिनके लाने की मनाही है। इससे अँगरेज़ व्यापारी चिढ़ गए। १७३६ में उन्होंने स्पेन से युद्ध की घोषणा कर दी। यह युद्ध 'जैन्किन्स के कान' का युद्ध कहलाता है ; जैन्किन्स-नामक एक जहाज़ी कप्तान ने यह कहा था कि स्पेनिशों ने मेरे कान काट डाले हैं। उसने अपने कटे हुए कानों को एक बोतल में भरकर पार्लियामेंट के सामने रक्खा, तब लोगों में बड़ा क्रोध और जोश पैदा हुआ। १७४० में सम्राट् चार्ल्स छठे की मृत्यु हो गई। योरप के राजा लोग चार्ल्स की कन्या मेरिया थैरेसा का

सम्राज्ञी के आसन पर न बैठने देना चाहते थे। वाल्पोल ने इसमें भी हाथ डालना ठीक न समझा। इस पर तो अँगरेज़-जनता और राजा, दोनों ही उससे नाराज़ हो गए। १७४२ में राजा ने उसको इस्तीफ़ा देने के लिये मजबूर किया।

कार्टरट और पैल्हम का सचिव-तंत्र राज्य
(१७४३—५४)

वाल्पोल का अधःपतन होने के बाद भी अँगरेज़ों की नीति ज्यों की-त्यों बनी रही। राज्य-शासन में ह्विगों की ही प्रधानता रही। विरोधी-दल के लोग किसी भी राजकीय पद पर अपना अधिकार नहीं जमा पाए। वाल्पोल के मित्र पैल्हम के घराने की शक्ति का परिमाण राज्य में पूर्ववत् ही बना रहा। राजा ने वाल्पोल का स्थान लॉर्ड विलमिंङ्गटन को दिया; परंतु वह काम ठीक तौर से न चला पाया। १७४३ में उसकी मृत्यु हो गई, और पैल्हम प्रधान मंत्री बनाया गया। लॉर्ड कार्टरट राष्ट्र-सचिव (Secretary of State) था। वह परराष्ट्र-नीति में बहुत ही चतुर और राजा का कृपापात्र भी था; क्योंकि जर्मन-भाषा पर उसका पूरा दख़ल था, उसे वह बहुत अच्छी तरह बोल सकता था। वह नियम की पाबंदी का क़ायल न था, इसी से राज्य का काम ठीक ढंग से नहीं चला सका। इस कारण पैल्हम की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई। उसने वाल्पोल की नीति के अनुसार ही इँगलैंड का शासन शुरू किया। परंतु, इसके साथ ही, यह उन ग़लतियों से बचा रहा, जो वाल्पोल ने की थीं। उसने राज्य के निवासी योग्य-योग्य व्यक्तियों को एकत्र किया, और उनको अपने पक्ष में मिला लिया। आश्चर्य तो यह है कि एक या दो टोरियों को भी उसने अपने मंत्रि-मंडल में मिला लिया था। इन्हीं दिनों विलियम पिट ने राजनीतिक क्षेत्र में नाम पैदा करना शुरू किया। परंतु राजा के नाराज़ होने के कारण वह प्रधान-मंत्री न बन

सका । १७५४ तक पैल्हम का सचिव-तंत्र शासन रहा । इस बीच में उसको किसी तरह के किसी विरोधी का सामना नहीं करना पड़ा ।

आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध

(१७४०—१७४८)

योरप में आस्ट्रियन उत्तराधिकार का भयंकर युद्ध छिड़ गया । अतः इँगलैंड में भीतरी शांति का होना आवश्यक हो गया । यह प्रथम ही लिखा जा चुका है कि १७३६ में इँगलैंड तथा स्पेन की लड़ाई ('जैन्किन्स के कान' की लड़ाई) छिड़ गई थी । १७४३ में जॉर्ज और कार्टरट ने आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध में इँगलैंड को भी घसीट लिया । योरप में आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध का बीज इस तरह बोया गया—

१७४० में सम्राट् चार्ल्स छठे की मृत्यु हो गई । इसके कोई भी पुत्र न था । अतः इसने अपना सारा साम्राज्य अपनी कन्या मेरिया थैरेसा को दे दिया । उसने जो वसीयत लिखी, वह प्रैग्मैटिक् सैंकशन (Pragmatic sanction) के नाम से प्रसिद्ध है । योरप-खंड के राजों को यह वसीयतनामा पसंद न था । वे उसके साम्राज्य को हड़पना चाहते थे । इन राजों का नेता प्राशिया का राजा फ्रेडरिक (द्वितीय) दि ग्रेट था । इसने सबसे पहले (१७४० में चार्ल्स छठे की मृत्यु के बाद ही) आस्ट्रिया के एक प्रांत (साइलीसिया) पर आक्रमण कर उसे जीत लिया । इसकी देखादेखी बवेरिया तथा सैक्सनी ने बोहीमिया पर आक्रमण किया । स्पेन तथा सार्डीनिया ने मिलान को जीतने का प्रयत्न किया । बेचारी मेरिया थैरेसा पर सब ओर से विपत्ति ही फट पड़ने लगी ।

इँगलैंड ने १७४३ में मेरिया थैरेसा को बड़ी भारी सहायता पहुँचाई । जॉर्ज द्वितीय ने हनोवर तथा इँगलैंड की सेनाओं को योरप

में भेजा, और मेरिया थैरेसा के राज्य को बचाने का प्रयत्न किया। २७ जून के दिन जॉर्ज ने डैटिंजन (Dettingen) का युद्ध जीता। इसका बहुत ही अच्छा असर हुआ। इँगलैंड से फ़्रांस भिड़ गया। इँगलैंड ने मेरिया थैरेसा को इसके लिये लाचार किया कि वह साइलीसिया-प्रांत फ़्रेडरिक दि ग्रेट को देकर उसे अपना सहायक बना ले। उसने लाचार होकर अँगरेज़ों की यह सलाह मान ली, और फ़्रेडरिक को अपना सहायक बना लिया। अँगरेज़ों की इस चाल से आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध का रूप बिलकुल ही बदल गया। एक तरह से यह युद्ध इँगलैंड, स्पेन तथा फ़्रांस में व्यापार और उपनिवेश के लिये हो गया था। फ़्रांस तथा स्पेन ने मिलकर १७४५ में नीदलैंड के अंदर फ़ांटनाय पर अँगरेज़ों तथा डचों पर आक्रमण किया, और वे विजयी हुए। इस विजय से प्रसन्न होकर उन्होंने इँगलैंड पर आक्रमण करने की चेष्टा की। दैवसंयोग से उनका जहाज़ी बेड़ा समुद्री तूफ़ान से नष्ट हो गया, और इँगलैंड इस आफ़त से बच गया। निर्वासित जेम्स का पुत्र चार्ल्स एडवर्ड बहुत ही वीर पुरुष था। उसने बड़े साहस से चुपके-चुपके दो जहाज़ों को मोल ले लिया। फिर कुछ साथियों को लेकर वह स्कॉटलैंड में जा धमका। स्काच् कैथलिक लोगों ने उसका साथ दिया। परिणाम यह हुआ कि उसने स्कॉटलैंड को फ़तह किया। एडिन्बरा, मंचेस्टर तथा डर्बी तक का सारा प्रदेश उसके हाथ में आ गया। फिर भी अँगरेज़ों ने उसका साथ न दिया। इससे वह फिर स्कॉटलैंड को लौट गया। १७ जनवरी, १७४६ को अँगरेज़ों के साथ फ़ाल्कर्क-नामक स्थान पर उसका युद्ध हुआ, जिसमें वह जीत गया। परंतु इसके कुछ ही समय बाद वह कुलोडनमूर के युद्ध में अँगरेज़ों से बुरी तरह परास्त भी हुआ, और फ़्रांस को भाग गया। इस असफलता से वह निराश हो गया, और शराब के नशे में चूर रहकर अपनी बेचैनी दूर करने

लगा। उसका भाई बहुत ही ग़रीब था। उसने इँगलैंड पर आक्रमण करने के बजाय जॉर्ज तृतीय से पेंशन लेकर गुज़ारा करना शुरू किया।

जॉर्ज ने इस घटना से पूरी शिक्षा ग्रहण की। उसने उत्तरी स्काचों को शस्त्र-रहित कर दिया, वहाँ के कैथलिक लोगों को बहुत ही तंग किया, बड़ी-बड़ी सड़कें बनाईं, और उन सड़कों का छावनियों के साथ सीधा संबंध कर दिया। स्काच् ज़मींदारों की शक्ति बहुत ही कम कर असामियों के साथ उनका संबंध शिथिल कर दिया। इन सब उपायों का परिणाम यह हुआ कि उत्तरी स्काच् भी लोलैंड के स्काचों तथा अँगरेज़ों के समान शांतिप्रिय हो गए।

योरप में अभी लड़ाई जारी ही थी। अँगरेज़ों के ऊपर-लिखे आंतरिक विक्षोभ से फ़्रांसीसियों ने पूरा लाभ उठाया। उन्होंने नीदर्लैंड का बहुत-सा भाग जीत लिया, पर अन्य स्थलों में वे अँगरेज़ों से हारे भी। परिणाम यह हुआ कि दोनों ही ने १७४८ में ए-ला-शेपल की संधि (Treaty of Aix-la-chappell) कर ली, और मेरिया थरेसा को भी यह संधि मानने के लिये विवश किया। इस संधि के अनुसार मिलान का कुछ बढ़िया भू-भाग सार्डीनिया को दे दिया गया। परमा फ़िलिप पंचम के पुत्र फ़िलिप को मिला। बेचारी मेरिया थेरेसा की बात किसी ने भी न पूछी। किंवदंती है कि वह ज़िंदगी-भर यही कहती रही कि "अँगरेज़ों से बढ़कर स्वार्थी कोई भी नहीं है। अपने स्वार्थ के आगे सत्य, न्याय तथा धर्म को भी ये लोग तिलांजलि दे देते हैं।"

इँगलैंड का भीतरी सुधार

ए-ला-शेपल की संधि के बाद अँगरेज़ों की समृद्धि दिन-दिन बढ़ती ही गई। हैनरी पैलहम ने बहुत ही दूरदर्शिता तथा बुद्धिमत्ता से देश का शासन किया। वह वाल्पोल की तरह बहुत-से परिवर्तनों

को नापसंद करता था, साथ ही विरोधियों के साथ मेल-जोल भी बनाए रखता था।

उसने इँगलैंड की आंतरिक दशा सुधारने का यत्न किया। उसने नई जंत्री बनवाई, भिन्न-भिन्न जातीय ऋण-पत्रों को मिलाकर एक ही पत्र बना दिया, और ३% ब्याज देना शुरू किया। १७१४ में बड़ी शांति के साथ वह परलोक सिधारा। उसकी मृत्यु होने पर जॉर्ज द्वितीय ने यह कहा था—"अब मुझको शांति की आशा नहीं है।" उसके ये शब्द किसी हद तक ठीक भी थे; क्योंकि हेनरी पेलहम के समान शांतिप्रिय तथा योग्य मनुष्य उस समय इँगलैंड में दूसरा नहीं देख पड़ता था।

पेलहम के बाद उसका भाई न्यूकैसल महामंत्री बना। यह झगड़ालू था। इसको शक्तिशाली बनने की बहुत ही अभिलाषा थी। अतएव यह किसी दूसरे के ऊपर विश्वास न करता था। धूर्तता तथा चालाकी में इसका कोई सानी न था। इसने पार्लियामेंट का प्रधान अपने भाई को बनाया। परंतु उसको इसकी कुछ शर्तें नामंजूर थीं, अतः उसने उस पद को छोड़ दिया। उसके बाद कुछ समय तक सर टामस राबिंसन ने पार्लियामेंट के प्रधान का काम किया। राबिंसन पार्लियामेंट का नियंत्रण न कर सका, अतः उसको यह पद स्वयं ही छोड़ देना पड़ा। लाचार होकर न्यूकैसल ने हेनरी फ़ॉक्स को प्रधान के पद पर नियुक्त किया। फ़ॉक्स की विलियम पिट से कुछ भी समता न थी। विलियम पिट दृढ़ तथा सदाचारी था उसको घूस देकर पद प्राप्त करना पसंद न था। वालपोल तथा कार्टरट के दोषों को उसी ने प्रजा के सम्मुख प्रकट किया था। वह उन महात्माओं में से था, जो बहुत समय बाद कभी-कभी ही देश में उत्पन्न हुआ करते हैं। न्यूकैसल ने ऐसे मनुष्य को अपने मंत्रि-मंडल में नहीं लिया। इससे उसका मंत्रि-मंडल बहुत कुछ शक्तिहीन हो गया।

संभव था कि न्यूकैसल का सचिव-तंत्र राज्य कुछ समय तक और बना रहता; परंतु इन्हीं दिनों इँगलैंड किसी एक और नए युद्ध की तैयारी कर रहा था, और न्यूकैसल इस भयंकर भावी युद्ध को सँभालने में सर्वथा असमर्थ था। अतएव उसके विरुद्ध सर्व-साधारण जनता की आवाज़ें उठने लगीं। १७५६ में न्यूकैसल ने इस्तीफ़ा दे दिया। इसके स्थान पर डेवनशायर का ड्यूक महामंत्री बना। इसने पिट को बहुत उच्च पद दिया। पिट तथा डेवनशायर का सचिव-तंत्र राज्य भी कुछ ही समय तक रहा; क्योंकि न्यूकैसल ने अपने वोट इन्हें नहीं दिए। १७५७ में पिट और डेवनशायर ने इस्तीफ़ा दे दिया। लाचार होकर लोगों ने पिट तथा न्यूकैसल से काम सँभालने को कहा; क्योंकि इँगलैंड पर सब ओर से विपत्तियाँ पड़नेवाली थीं। न्यूकैसल तथा पिट ने जनता की आवाज़ सुनी और राज्य-कार्य अपने हाथ में ले लिया। न्यूकैसल इधर-उधर की चालाकियों तथा धूर्तताओं में लगा रहा। पिट को इन बातों से घृणा थी, अतः वह इस ओर से सर्वथा उदासीन रहा। उसने अपनी सारी शक्ति उस युद्ध में लगाई, जिस पर इँगलैंड का भविष्य निर्भर था। पिट के पहले इँगलैंड की बहुत बुरी दशा थी। योरप में जो युद्ध हो रहे थे, उनमें उसकी स्थिति बहुत शोचनीय थी। धन्य है पिट को, जिसने इँगलैंड को ऐसे भयानक संकट के समय बचाया।

सप्तवार्षिक युद्ध (The Seven Years' War)

आस्ट्रियन अधिकार-युद्ध के सदृश ही सप्तवार्षिक युद्ध भी भयंकर था। इसके मुख्य कारण दो थे—

(१) फ्रांस व्यापारिक, व्यावसायिक तथा औपनिवेशिक राष्ट्र बनना और इँगलैंड को नीचा दिखाना चाहता था।

(२) इँगलैंड यदि लड़ाई में न शामिल होता, तो योरप में शक्ति-साम्य (Balance of Power) का सिद्धांत नष्ट होता था।

घरू क्रांति के अनंतर इँगलैंड वैदेशिक व्यापार से प्रतिदिन समृद्ध हो रहा था। दूर-दूर के देशों में उसका व्यापार फैला था, और सब ओर उसके उपनिवेश मौजूद थे। १७वीं शताब्दी में हालैंड उन्नति करना चाहता था; परंतु इँगलैंड ने उसको ऊपर उठने न दिया। इन सब बातों को फ्रांस तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था। उसको इँगलैंड की समृद्धि से डाह था। यही कारण है कि १८८८ के वाटर्लू के युद्ध तक इँगलैंड और फ्रांस में परस्पर युद्ध होता रहा। इस युद्ध का क्षेत्र भारतवर्ष, अमेरिका तथा समुद्र ही था।

भारतवर्ष में योरप के व्यापारी तथा उनकी विजय—१६वीं शताब्दी के आरंभ से ही भारतवर्ष की ओर योरप के व्यापारियों का ध्यान लगा था; क्योंकि उस ज़माने में भारतवर्ष व्यापार-व्यवसाय से संपन्न तथा कृषि-प्रधान देश था। उसकी समृद्धि जगद्विख्यात थी। स्पेन-पुर्तगाल और हालैंड की देखादेखी इँगलैंड ने भी भारतवर्ष में व्यापार करना चाहा, और अपनी ईस्ट इंडिया कंपनी बनाई। कंपनी की मुख्य-मुख्य कोठियाँ निम्न-लिखित तीन स्थानों पर थीं—

(१) फ़ोर्ट विलियम (कलकत्ता)
(२) फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज (मदरास)
(३) बंबई

लुई चौदहवें के बाद फ़्रांसीसियों ने भी अपनी ईस्ट इंडिया कंपनी बनाई। इससे अँगरेज़ों तथा फ़्रांसीसियों की दुश्मनी का बढ़ जाना स्वाभाविक ही था। फ़्रांसीसियों की मुख्य कोठी पांडिचेरी में थी। १६वीं शताब्दी में, भारतवर्ष में, मुग़ल-सम्राटों का आधिपत्य था। उनकी शक्ति अनंत थी। यदि वे चाहते, तो इन योरप के व्यापारियों की जड़ ही उखाड़ डालते। परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। भारतीयों ने भी उनको अपने देश में शरण दी।

औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद भारतवर्ष भिन्न-भिन्न प्रांतों में बँट

गया। स्थान-स्थान पर भिन्न-भिन्न नवाब शासन करने लगे। कोई किसी का प्रभुत्व मानने को तैयार न था। इस अराजकता से योरप के व्यापारियों ने लाभ उठाने का प्रयत्न किया।

अभी लिखा जा चुका है कि फ्रांस की मुख्य कोठी मदरास के पास पांडिचेरी में थी। पांडिचेरी का शासक डूप्ले था। वह बहुत ही बुद्धिमान् तथा राजनीतिज्ञ था। उसने भारतीयों के राजनीतिक असंघटन से लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उसने एक नवाब को दूसरे नवाब से लड़ाना चाहा, और उसी तरह शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया, जिस तरह अँगरेज़ योरप के राष्ट्रों को शक्ति-सामंजस्य के नाम पर परस्पर लड़ाकर स्वयं शक्तिशाली बनते थे। धर्म, भाषा तथा देशाचार भिन्न-भिन्न होने के कारण भारतीयों में एकता न थी। लोग शत्रु तथा मित्र को न पहचानते थे। उनको इस बात का ज्ञान न था कि जातीयता किस चिड़िया का नाम है। रुपयों के लिये वे अपने भाइयों से लड़ने के आदी थे। चिरकाल से अराजकता तथा नवाबी देखते-देखते उनके वैयक्तिक स्वतंत्रता, देश-प्रेम तथा स्वराज्य के भाव नष्ट हो चुके थे। लोगों को शासन की विधि नहीं मालूम थी, और प्रतिनिधि-तंत्र शासन से तो वे सर्वथा अपरिचित थे। यही नहीं, युद्ध-कौशल में भी वे योरपियनों का मुक़ाबला न कर सकते थे।

इन सारी बातों को सोचकर फ़ांसीसी शासक डूप्ले ने मदरास को जीतने का साहस किया। [illegible] में उसने मदरास को फ़तह किया। ए-ला-शेपल की संधि के अनुसार उसे यह नगर अँगरेज़ों को फिर लौटा देना पड़ा। परंतु उसकी धाक मदरासी नवाबों के दिल में बैठ गई। इस संधि के बाद डूप्ले ने भिन्न-भिन्न नवाबों की लड़ाई से लाभ उठाने का यत्न किया। अँगरेज़ भला कब चूकनेवाले थे!

मदरास में अँगरेज़ क्लर्कों की स्थिति में थे। परंतु फ़ांसीसियों की

यह स्थिति न थी। डूप्ले सेनापति तथा राजनीतिज्ञ था। उसके पास पांडिचेरी का प्रांत था। फिर भी अँगरेज़ों में राबर्ट क्लाइव नाम के एक मनुष्य ने साहस करके फ़्रांसीसियों को नीचा दिखाने का यत्न किया। क्लाइव ने चालाकी से कुछ ही मनुष्यों के सहारे कर्नाटक की राजधानी अर्काट को अपने हाथ में कर लिया, और अंत तक उसको अपने हाथ से न जाने दिया। डूप्ले अर्काट को क्लाइव के हाथ से न छुड़ा सका। इस पर फ़्रांसीसी घबरा गए, और उन्होंने उसको बेइज़्ज़त करके फ़्रांस में बुला लिया। इस जल्दबाज़ी का परिणाम फ़्रांसीसियों के लिये अच्छा न हुआ। उनके हाथ से भारतवर्ष सदा के लिये निकल गया।

कुछ ही वर्षों के बाद अँगरेज़ों ने डूप्ले की नीति का बंगाल में प्रयोग करके नवाब सिराजुद्दौला को कठपुतली बनाने का प्रयत्न किया। दैवसंयोग से नवाब ने कुछ अँगरेज़ों को एक कोठरी में बंद कर दिया। किंवदंती है कि इस कालकोठरी में कुछ अँगरेज़ मृत्यु को प्राप्त हो गए थे। अँगरेज़ों ने सिराजुद्दौला के दरबारियों को उससे फोड़ दिया, और उनमें से किसी एक को नवाब बना देने का प्रयत्न किया। इस नीति का परिणाम यह हुआ कि नवाब सिराजुद्दौला २३ जून, १७५७ को पलासी के युद्ध में पराजित हुआ। यह विजय प्राप्त करके अँगरेज़ों ने बंगाल का राज्य करना आरंभ किया, और एक मुसलमान (मीर जाफ़र) को नाम-मात्र के लिये नवाब बना दिया।

पलासी के युद्ध के तीन वर्ष बाद उन्होंने वाँदेवाश के प्रसिद्ध युद्ध में (१७६०) विजय प्राप्त की, और वे कर्नाटक के स्वामी बन बैठे। १७६१ में उन्होंने फ़्रांसीसियों का पांडिचेरी पर से भी प्रभाव हटा दिया। इस प्रकार कर्नल कूट तथा राबर्ट क्लाइव ने भारतवर्ष में इँगलैंड का राज्य स्थापित कर दिया।

नॉर्थ अमेरि[illegible] तथा इँगलैंड—उत्तरी अमेरिका में भी फ़्रांस और इँगलै[illegible] युद्ध हुए। यूट्रैक्ट की संधि के बाद सेंट लारेंस से लेकर [illegible]ना तक सारे अमेरिकन उपनिवेश इँगलैंड के ही पास थे[illegible]७३१ में अँगरेज़ों ने जार्जिया-नामक अपना एक और उपनिवेश[illegible]या, जो कि स्पेनिश उपनिवेशों के पास था। कनाडा में मुख्यतः फ़्[illegible]सियों के ही उपनिवेश थे। सेंट जॉन (प्रिंस एडवर्ड का द्वीप)-नामक फ़्रांसीसी द्वीप के पास केपब्रिटन-नामक द्वीप अँगरेज़ों के क़ब्ज़े में था। लूसीनिया का फ़्रांसीसी द्वीप बहुत ही शक्तिशाली था। इसी प्रकार एलीघानी नदी पर डुकिस्ने-नामक फ़्रांसीसी क़िला था। इसकी शक्ति से वर्जीनिया-उपनिवेश के अँगरेज़ डरते थे। यही कारण है कि १७५४ में जॉर्ज वाशिंगटन-नामक व्यक्ति ने डुकिस्ने के क़िले पर आक्रमण कर दिया। परंतु इस आक्रमण में वह फ़्रांसीसियों से बहुत बुरी तरह से हारा।

इन्हीं दिनों योरप में सप्तवार्षिक युद्ध का प्रारंभ हो गया। इस युद्ध का मुख्य कारण यही था कि भारतवर्ष तथा अमेरिका पर फ़्रांस तथा इँगलैंड, दोनों ही अपना-अपना राज्य स्थापित करना चाहते थे। प्राशिया तथा इँगलैंड के विरुद्ध योरप के राष्ट्र आपस में मिल गए। मेरिया थेरेसा अँगरेज़ों की बेईमानी तथा स्वार्थ से तंग थी। अतः वह फ़्रांस से मिल गई। (वर्सेल्स की संधि)

लाचार होकर अँगरेज़ों ने १७५६ में हनोवर तथा प्राशिया के साथ संधि कर ली। १७५६ में फ़्रेडरिक दि ग्रेट ने ख़तरा जानकर स्वयं ही अपने शत्रुओं पर आक्रमण कर दिया। इसी वर्ष से योरप में सप्तवार्षिक युद्ध का प्रारंभ हो गया।

सप्तवार्षिक युद्ध के शुरू में इँगलैंड के अंदर फूट थी। मंत्री लोग आपस में लड़ते रहते थे। इन्हीं दिनों इँगलैंड में कलकत्ते की कालकोठरी की और ओहायो तथा सेंट लारेंस की

दुर्घटनाओं की ख़बरें पहुँचीं। फ़्रेडरिक दि ग्रेट अपने राज्य को बड़ी मुश्किल से बचा रहा था। ड्यूक ऑफ़ कंबरलैंड फ़्रांसीसियों से बुरी तरह पराजित हुआ। ड्यूक को फ़्रांसीसियों से कैपिट्युलेशन ऑफ़ क्लोस्टर ज़ेवन (Capitulation of Kloster Zeven)-नामक संधि करनी पड़ी। उसके अनुसार उसने हनोवर-प्रदेश फ़्रांसीसियों को दे दिया। मिनोर्का में फ़्रांसीसियों ने अँगरेज़-सेनापति बिंग पर विजय प्राप्त की। अँगरेज़ों ने बिंग से क्रुद्ध होकर उसको (१७५७ में) मरवा डाला।

इस भयंकर विपत्ति से घबराकर अँगरेज़-जनता ने पिट तथा न्यूकैसल को मिलने के लिये विवश किया। पिट ने सप्तवार्षिक युद्ध का अच्छी तरह से संचालन किया। उसने अंसन को नौ-सेनापति बनाया। पिट को यह विश्वास था कि इस विपत्ति के समय में इँगलैंड को बचाने-वाला एक-मात्र मैं ही हूँ। उसने युद्ध का नक़्शा बनाया।

भारतवर्ष इँगलैंड से बहुत दूर था। अतः उसने उसको ईश्वर के भरोसे छोड़ा, और राबर्ट क्लाइव को शाबाशी-पर-शाबाशी देता रहा। उसने युद्ध का सारा बल हनोवर-प्रांत में ही लगा दिया। दैव-संयोग से मिंडन-नामक स्थान पर अँगरेज़ों की विजय हुई। इससे हनोवर-प्रांत अँगरेज़ों के हाथ में आ गया। हनोवर पर प्रभुत्व प्राप्त करके अँगरेज़ों ने फ़्रेडरिक दि ग्रेट को सहायता पहुँचाई। इन सब सहायताओं को देते हुए भी पिट का ध्यान अपने देश के व्यापार-व्यवसाय को बढ़ाने की ओर ही था। जब कोई अँगरेज़ पिट से युद्ध के विषय में पूछता था, तो वह यही उत्तर देता था कि अमेरिका की फ़िक्र मत करो। अमेरिका की विजय जर्मनी में होगी। उसने अच्छे-अच्छे स्थानों पर योग्य मनुष्यों को ही चुना था। १७३६ में उसके कृपापात्र नौ-सेनापति हॉक् ने क्विबेरान के युद्ध में फ़्रांसीसी बेड़े को नष्ट कर दिया। इससे सारे समुद्र पर इँगलैंड का प्रभुत्व स्थापित हो गया। उसने इस प्रभुत्व के द्वारा फ़्रांसी-

सिया के भिन्न-भिन्न द्वीपों तथा उपनिवेशों को अपने क़ब्ज़े में कर लिया। पिट के तीन सेनापतियों—उल्फ़, अम्हर्स्ट तथा हाऊ (Howe)—ने उत्तरी अमेरिका को फ़तह किया, और फ़्रांसीसियों का प्रभुत्व वहाँ से सदा के लिये हटा दिया।

इतना ही नहीं, अमेरिका के अँगरेज़ी-उपनिवेशों ने परस्पर मिलकर कनाडा से भी फ़्रांस का प्रभुत्व नष्ट कर दिया। इन सफलताओं की ख़ुशी में ही जॉर्ज द्वितीय ऑक्टोबर, १७६० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७२७	जॉर्ज द्वितीय का राज्याधिरोहण
१७३१	वियना की द्वितीय संधि
१७३७	पोर्च्युअस-विद्रोह
१७३८	वियना की तृतीय संधि
१७३८	स्पेन से युद्ध (जैन्किन्स के कान का युद्ध)
१७४२	वाल्पोल का अधःपतन
१७४३	डैटिंजन का युद्ध। आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध में इँगलैंड का सम्मिलित होना
१७४५	फ़्रांटनाय का युद्ध
१७४६	कुल्लोडन का युद्ध
१७४८	एं-ला-शेपल की संधि
१७५४	हैनरी पैल्हम की मृत्यु
१७५६	सप्तवार्षिक युद्ध का आरंभ
१७५७	पिट का सचिव-तंत्र राज्य। पलासी का युद्ध
१७५८	मिंडन का युद्ध
१७६०	जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद
जॉर्ज तृतीय तथा अमेरिका की स्वतंत्रता का युद्ध
(१७६०—१७८९)

(१) जॉर्ज तृतीय का राज्याधिरोहण

१७६० में जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु हुई। अतः उसका लड़का जॉर्ज तृतीय के नाम से १७६० में इँगलैंड की गद्दी पर बैठा। राजगद्दी पर बैठने के समय नवीन राजा की उम्र २२ वर्ष की थी। इसका राज्य ६० वर्षों तक रहा। इन वर्षों में सारे भूमंडल पर बड़े भारी-भारी परिवर्तन हुए। इँगलैंड में राजा की शक्ति सर्वथा लुप्त हो चुकी थी। इसने उस लुप्त शक्ति को पुनः प्राप्त करने का यत्न किया। उसकी माता ने उसको यह शिक्षा दी थी कि "इँगलैंड में राजा स्त्री के तुल्य होता है। जॉर्ज, तू राजा बनकर दिखाना।" उसने जॉर्ज को लॉर्ड लोगों से बहुत कम मिलने-जुलने दिया; क्योंकि लॉर्डों का आचार भ्रष्ट था। जॉर्ज का परम मित्र लॉर्ड बूट था। यह चापलूसी करना बहुत अच्छी तरह जानता था। इसने जॉर्ज को स्वेच्छाचारी बनने के लिये उत्साहित किया।

जॉर्ज इँगलैंड में पला था। वह अँगरेज़ी अच्छी तरह से बोल सकता था। प्रजा को मीठे शब्दों के द्वारा मोहित करने की कला में वह चतुर था। मंत्रियों को चुनने में उसने पूरी स्वेच्छा-चारिता दिखाई। उसको यह अच्छी तरह से पता था कि उसकी शक्ति को बढ़ने से रोकनेवाले कौन-कौन-से ह्विग लोगों के घराने हैं। इसी उद्देश्य से उसने ह्विग-घरानों से सबसे पहले अपना नाता तोड़ डाला। वालिंब्रुक के नवीन टोरी-दल को उसने अपनाया, यद्यपि दिल से वह किसी भी दल के साथ नहीं था। उसने अपने को यथासंभव सब दलों के झगड़ों से पृथक्

रक्खा। इसमें संदेह नहीं कि अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने में उसने दलों को अपना साधन बनाया। उसने अपना ऐसा एक नया दल बनाने का यत्न किया, जो उसकी इच्छाओं के अनुसार ही पार्लियामेंट में सम्मति दिया करे। उसने राज्यासन पर बैठते ही चर्च तथा प्रजा के दुराचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। प्रजा ने भी शुरू-शुरू में उसका बड़ा सत्कार किया।

जॉर्ज तृतीय ने अपने जीवन में समय-समय पर बहुत अधिक वीरता दिखाई। विल्कीज़-विद्रोह (१७६९) में उसके महल पर हमला किया गया, और गार्डन-विद्रोह (१७८०) में कुछ लोगों ने लंदन को लूटने का इरादा किया। इसकी वीरता ने ही लंदन को बचाया, और राजमहल तक शत्रुओं को न पहुँचने दिया। '१७८६ में एक पागल स्त्री ने इस पर ख़ंजर का वार किया। पर इसने बड़ी चतुरता से अपने को बचा लिया। १७९५ तथा १८०० में भी इसके मारने का यत्न किया गया; परंतु अपनी वीरता से ही इसने अपने को बचाया।

वीरता, धैर्य तथा पवित्र आचार के होने पर भी जॉर्ज ने इँगलैंड को बहुत ही अधिक हानि पहुँचाई। यह तंग-दिल तथा स्वेच्छाचारी था। इसको अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत ही अधिक विश्वास था। जो मंत्री इसकी इच्छा के विरुद्ध काम करते थे, उनको यह हटा देता था। इन दुर्गुणों का परिणाम यह हुआ—

(१) इसकी ज़िद तथा स्वेच्छाचार के कारण अमेरिका इँगलैंड से सदा के लिये जुदा हो गया।

(२) विल्कीज़ के मामले को इसी ने अधिक बढ़ा दिया।

(३) आयर्लैंड की दशा को इसने बिलकुल ही सुधरने न दिया।

(४) कैथलिकों के विरुद्ध जो राज्य-नियम बने हुए थे, उनको

इसने हटने न दिया। कैथलिक-मतावलंबियों को सरकारी नौकरियाँ नहीं दीं।

(५) लॉर्ड-सभा में टोरी-लॉर्डों की संख्या बहुत ही अधिक बढ़ा दी।

उपर्युक्त हानिकारक बातों का मुख्य कारण यह था कि जॉर्ज स्वेच्छाचारी बनना चाहता था। योरप के सारे राजे मनमाने तौर पर प्रजा पर शासन करते थे। एक-मात्र जॉर्ज ही पार्लियामेंट के अधीन था। उसको यह कब पसंद हो सकता था? इस मुख्य कारण के अतिरिक्त कुछ और गौण कारण हैं, जिनको भुलाना न चाहिए—

(१) बहुत वर्षों से इँगलैंड में ह्विग लोगों की ही प्रधानता थी, टोरियों को कोई पूछता तक न था। इससे इँगलैंड में ह्विग-कुलीन-तंत्र राज्य हो गया था, जो कि जॉर्ज को पसंद न था।

(२) जैकोबाइट् लोगों का समूह नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था। विदेशी राजा के विरुद्ध जनता में कुछ भी भाव न था। क्रांति को हुए कुछ समय गुज़र चुका था, अतः राजा को राजगद्दी से उतारना सहज काम न था। टोरी-दल के लोग जॉर्ज के पृष्ठ-पोषक थे। इससे भी उसकी शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई।

(३) ह्विग-दल के लोग आपस में लड़ते रहते थे। राजा ने इन झगड़ों से खूब लाभ उठाया।

(४) ह्विग-दल के मुख्य मंत्री अपने साथियों को ही राज्य के उच्च-से-उच्च पद देते थे। इससे टोरी लोग बहुत ही असंतुष्ट थे। जॉर्ज ने टोरियों की पीठ ठोंकी, और उनको राज्य के ऊँचे-ऊँचे पद दिए।

शुरू में जॉर्ज को खूब कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। पिट तथा न्यूकैसल के सचिव-तंत्र राज्य ने नाविक तथा सैनिक विजयों के द्वारा अपूर्व कीर्ति प्राप्त की। जॉर्ज ने ह्विग-दल में फूट के बीज बोने शुरू

किए। वह युद्ध समाप्त करने के लिये भी यत्न करने लगा। यह क्यों? यह इसलिये कि वह धीरे-धीरे अपने उद्देश्य को पूरा कर सके। उसके पास धन कम था। युद्ध बंद होने पर ही उसके पास धन अधिक हो सकता था, और वह राज्य में शक्ति को प्राप्त कर सकता था। उसको प्रजा-प्रिय लोगों से भयंकर द्वेष था। ईश्वर की कृपा से पिट से छुटकारा पाने का उसको शीघ्र ही मौक़ा मिला।

नेपल्स का राजा डान कार्लो १७५९ में चार्ल्स तृतीय के नाम से स्पेन का राजा बना। उसने १७६१ में इँगलैंड के विरुद्ध फ़्रांस, स्पेन तथा इटली को अपने साथ मिला लिया। पिट इस संगठन की आशा पहले से ही करता था। यही कारण था कि वह स्पेन पर शीघ्र ही आक्रमण करना चाहता था। परंतु बूट ने धूर्तता से सचिव-मंडल को पिट के विरुद्ध कर दिया। यह स्थिति यहाँ तक पहुँची कि न्यूकैसल ने भी पिट का साथ छोड़ दिया। इस पर पिट ने इस्तीफ़ा दे दिया। पिट के साथ ही न्यूकैसल को भी राज्य-पद छोड़ना ही पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि लॉर्ड बूट राजा का मंत्री बना।

(२) बूट का सचिव-तंत्र राज्य तथा पेरिस की संधि
(१७६२-१७६३)

बूट ने पिट को प्रजा का अप्रिय बनाने के लिये उसको पेंशन देना शुरू किया, और उसकी स्त्री को चैथम की स्वामिनी बना दिया। शांति की इच्छा रखते हुए भी उसे पिट की नीति का ही अनुसरण करना पड़ा। उसने स्पेन पर आक्रमण किया, और स्पेनिशों से मनीला तथा वाना-नामक स्थान छीन लिए। १७६३ में उसने फ़्रांस से पेरिस की संधि (Peace of Paris) कर ली, जिससे इँगलैंड को बहुत लाभ हुआ। इस संधि के अनुसार फ़्रांस ने कनाडा तथा केप ब्रिटन को इँगलैंड के हाथ में दे दिया, और न्यूफ़ाउंड-

लैंड में मछलियाँ पकड़ने की आज्ञा दे दी। लूसियाना तथा ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका की सीमा मिसीसिपी-नदी नियत की गई। फ्रांस ने मिनार्का भी अँगरेज़ों को दे दिया। पांडिचेरी, चंद्रनगर आदि स्थान उन्होंने फ्रांसीसियों को लौटा दिए। इँगलैंड ने स्पेन को हवाना तथा मनीला लौटा दिए।

इस संधि से प्रुशिया का राजा फ्रेडरिक इँगलैंड से बहुत ही अधिक चिढ़ गया। उसने रूस के ज़ार पीटर तृतीय से मित्रता कर ली। इस मित्रता के अनंतर युद्ध से उसने भी अपना हाथ खींचा, और सिलीसिया को अपने क़ब्ज़े में कर लिया। इस युद्ध की समाप्ति होने पर जॉर्ज तृतीय ने अपना ध्यान योरप की राजनीति से हटा लिया, और वह इँगलैंड में शक्ति प्राप्त करने का यत्न करने लगा। योरप में प्रुशिया, रूस तथा आस्ट्रिया ने शनैः-शनैः शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया। इन्होंने इँगलैंड को ईर्षा की दृष्टि से देखना शुरू किया।

पेरिस की संधि के बाद बूट ने हैंडीफ़ॉक्स के सहारे ह्विग लोगों की शक्ति को नष्ट करने का यत्न किया; पर इस यत्न से वह स्वयं ही जनता में अप्रिय हो गया। लाचार होकर उसने १७६३ में महा-मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

(३) ग्रेनविल का सचिव-तंत्र राज्य
(१७६३-१७६५)

पिट तथा न्यूकैसल के अधःपतन के बाद ह्विग-दल अनेक विभागों में विभक्त हो गया था। जॉर्ज ने इन्हीं दलों में से एक दल के नेता जॉर्ज ग्रेनविल को महामंत्री बनाया। यह बहुत ही चालाक आदमी था। यह लोक-सभा का नेता बनने के योग्य था। इसमें सबसे बड़ा दोष यह था कि यह अनुदार विचार का था। इसके व्यवहार से शीघ्र ही जनता असंतुष्ट हो गई, और अमेरिकन उप-निवेश विद्रोह करने को तैयार हो गए। जॉर्ज तृतीय के राजगद्दी

पर बैठने के अनंतर बूट तथा जॉर्ज पर पत्र-संपादक लोग खूब आक्षेप करते थे। जॉन विल्कीज़ ने राजा तथा दरबारियों पर जो आक्षेप किए, उनसे प्रजा में खूब शोर मचा। ग्रेनविल ने विल्कीज़ को क़ैद कर लिया, और उस पर मुक़द्दमा चलाया। मुक़द्दमे में विल्कीज़ छूट गया। जनता ने उसको अपना 'हीरो' बना लिया।

१७६५ में ग्रेनविल ने स्टांप-ऐक्ट पास किया। इसके अनुसार अमेरिकन लोगों को पारस्परिक लेन-देन के दस्तावेज़ पर राज्य का स्टांप या टिकट लगाने के लिये विवश किया गया। इस राज-नियम के हानिकर परिणाम अभी प्रकट ही हुए थे कि जॉर्ज ने ग्रेनविल को महामंत्री के पद से हटा दिया, और रार्किंघम के मार्किस को उसके स्थान पर नियत किया। रार्किंघम बहुत योग्य आदमी न था। अतः इसने ऐडमंड बर्क से सहायता ली। बर्क बहुत ही बुद्धिमान् तथा विद्वान् था। इसी के दिमाग़ से रार्किंघम का राज्य कुछ समय तक सफलता-पूर्वक चला। इसने स्टांप-ऐक्ट को हटा दिया, और विल्कीज़ की गड़बड़ को भी मिटा दिया। जॉर्ज को यह पसंद न था, अतः उसने पुनः पिट को महामंत्री बनाया, और रार्किंघम को उसके पद से पृथक् कर दिया।

(४) पिट तथा ग्राफ़टन का सचिव-तंत्र राज्य

पिट ने अपना सचिव-मंडल बनाया। परंतु वह काम ठीक ढंग पर न कर सका; क्योंकि उसका स्वास्थ्य ठीक न था। उसने सभी दलों के लोगों से सहायता ली। पिट का मुख्य विचार यह था कि भारत का राज्य कंपनी से लेकर पार्लियामेंट को दे दिया जाय। उसने रूस तथा प्रुशिया से संधि की, और आयर्लैंड के कष्टों को दूर करने का यत्न किया। पर उसके स्वास्थ्य ने उसका साथ न दिया, अतः वह राज्य-कार्य से पृथक् रहने लगा। उसकी अनुपस्थिति में चार्ल्स टाउनशैंड ने अमेरिका पर नए-नए राज्य-कर लगाए।

विल्कीज़ को उसने जेल में डाल दिया। इससे १७६८ में जेल के बाहर लोगों ने विद्रोह कर दिया, और विल्कीज़ को स्वतंत्र करने का यत्न किया। ऐडमंड बर्क तथा जूनियस ने मंत्रिमंडल पर बहुत ही आक्रमण किए। इस पर पिट ने राज्य का कार्य बिलकुल छोड़ दिया। महाशय ग्राफ़्टन ने किसी-न-किसी तरह काम चलाया; परंतु जब वह भी काम चलाने में असमर्थ हो गए, तब उन्होंने १७७० में इस्तीफ़ा दे दिया।

(५) लॉर्ड नार्थ का सचिव-तंत्र राज्य

(१७७०-१७८२)

राजा का स्वेच्छाचार

जॉर्ज ने ग्राफ़्टन के पदत्याग करने पर लॉर्ड नार्थ को महामंत्री बनाया। वह बहुत ही चालाक था। अपनी चालाकी से ही वह १२ वर्ष तक लगातार महामंत्री बना रहा। वह राजा का परम मित्र था, और राजा के कहने के अनुसार ही काम करता था। पिट ने इस पर बहुत ही शोर मचाया, और कहा कि पार्लियामेंट तो राजा की दासी हो गई है। परंतु उसके कहने पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। जॉर्ज अपनी चालाकी से जनता में भी सर्वप्रिय बन गया, और मनमाने तौर पर राज्य-कार्य चलाने लगा। इससे ह्विग लोगों को भी अच्छी तरह शिक्षा मिल गई। उन्होंने अपनी बुराइयाँ दूर करना शुरू किया। फिर भी वे आपस में लड़ते रहते थे। अतएव राजा तथा लॉर्ड नार्थ की शक्ति दिन-दिन बढ़ती ही चली गई। राजा ने शक्ति का दुरुपयोग किया, और इँगलैंड को बहुत ही अधिक हानि पहुँचाई। उसी की बेवकूफ़ी से इँगलैंड के योरपियन शत्रु प्रबल हो गए, और अमेरिका इँगलैंड के हाथ से सदा के लिये निकल गया। इस कथन को स्पष्ट करने के लिये अब हम पहले अमेरिका की स्वतंत्रता का ही वर्णन करते हैं।

अमेरिकन क्रांति (१७७०-१७८३)

प्रत्येक बड़ी घटना के प्रेरक कारण बहुत ही पेचीदा होते हैं। इस क्रांति के कारण बताने में साधारणतः तात्कालिक कारणों पर ऐतिहासिक लोग बड़ा ज़ोर देते हैं; परंतु दूर के कारणों पर दृष्टि नहीं डालते। वास्तव में दूर के कारण ही आवश्यक होते हैं। उनके ज्ञात न होने से तात्कालिक कारण समझ में आ ही नहीं सकते। अतः पहले दूर के कारणों का वर्णन करके फिर तात्कालिक कारणों की व्याख्या करेंगे।

(१) अमेरिका की आबादियों में से प्रत्येक राज्य की रीतियाँ, व्यापारिक संबंध, स्वार्थ तथा धार्मिक मत भिन्न-भिन्न थे, और प्रायः प्रत्येक रियासत आपस में द्वेष रखती थी। ऐसी दशा में वे कैसे एक हो सकती थीं? न्यू ऐम्सर्डम में (जिसको अब न्यूयार्क कहते हैं) डच रहते थे। पेंसिल्वानिया और डिलावारे में प्रोटेस्टेंटों की अधिकता थी। मेरीलैंड में कैथलिक लोग और वर्जीनिया के निवासी राज्य के बड़े भक्त थे। ऐसी दशा में स्पष्ट है कि इँगलैंड की ओर से कुछ अतिप्रेरक कारण उत्पन्न हुए होंगे, जिन्होंने उपर्युक्त व्यापारिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय भेदभाव और स्वदेश के स्वाभाविक प्रेम तथा सम्मान का नाश किया, और इन औपनिवेशिकों को अपने स्वजातीयों के रक्त का प्यासा बना दिया। ये कारण कई प्रकार के प्रतीत होते हैं। शुरू से ही औपनिवेशिक लोग राज्य-प्रबंध में स्वतंत्र थे। कई उपनिवेशों में वे अपने तथा अन्य कर्मचारी स्वयं चुना करते थे; राजा या पार्लियामेंट किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करती थी। इन उपनिवेशों को उन अँगरेज़ों ने बसाया था, जो इँगलैंड को १६०३ तथा १६८८ के बीच छोड़ आए थे। यह समय जिस प्रकार राज्य के बल को घटाने, पार्लियामेंट तथा राजा के परस्पर

(Civil War) गृह-युद्ध में प्रवृत्त होने, राजों के सिर काटे जाने ,प्रजा-तंत्र राज्य पर क्राम्वैल की शक्ति के बढ़ने, जेम्स द्वितीय का अधि-कारों से निकलकर प्रजा को सताने और उस पर उसके राज्य त्यागने के लिये प्रसिद्ध है, वह पाठकों को ज्ञात ही है । औपनिवेशिकों में स्वतंत्रता, वीरता, धर्मपरायणता तथा अपने बल पर खड़े होने के भाव कूट-कूटकर भरे हुए थे ; और ये भाव अमेरिका में आकर अधिक दृढ़ हो गए थे। यहाँ उनकी स्वतंत्रता के कारण ये कहे जा सकते हैं—(१) विशेष पक्का धर्म,(२) सर्वसाधारण में शिक्षा-प्रचार,(३) राज्य-नियम का अनुशीलन,(४) स्वतंत्र राज्य, (५) इँगलैंड से ३००० मील दूर होना, (६) आपस में प्रत्येक व्यक्ति की समानता, (७) प्रत्येक के पास अधिक भूमि का होना, (८) सादा जीवन, और (९) इँगलैंड के राज्य का थोड़ा दख़ल ।

(२) इस प्रकार के स्वतंत्रतारूढ़ पुरुष स्वाधिकारों का कुचला जाना देखकर सह नहीं सकते थे । अतएव जब से उनके व्यापार पर इँगलैंड ने आक्रमण आरंभ किया था, तभी से उनके क्रोध की आग भड़कती जाती थी । १६५१-१६६० के नाविक राज्य-नियमों तथा अन्य नियमों के कारण अमेरिका की यह दशा थी कि वहाँ जो पदार्थ बनाए जाते तथा उत्पन्न होते थे, उन्हें अमेरिकन लोग इँगलैंड तथा उसके अधीन देशों के अतिरिक्त अन्य किसी देश को नहीं भेज सकते थे। समय-समय पर नए-नए पदार्थों पर उपर्युक्त बाधा लगाई जा रही थी । अमेरिका का व्यवसाय-व्यापार इस-लिये नष्ट किया जा रहा था कि इँगलैंड समृद्ध हो। इस पर तुर्रा यह कि अमेरिका के जंगल में जितने वृक्ष थे, वे राज्य की संपत्ति ठहराए गए। एक वृक्ष काटनेवाले को १०० पौंड जुर्माना देना पड़ता था। मतलब यह कि जिन वस्तुओं को औपनिवेशिकों ने स्वयं उत्पन्न किया

था, उनका उपयोग करने के लिये भी ३००० मील दूर पर स्थित माता की आज्ञा लेने की आवश्यकता पड़ती थी। इँगलैंड-माता ने यहाँ तक अधिकार का दुरुपयोग किया कि एक उपनिवेश (Colony) दूसरे उपनिवेश की बनी वस्तु को नहीं ख़रीद सकता था। वह वस्तु पहले इँगलैंड जाती थी, वहाँ से अँगरेज़-व्यापारी दूसरी बस्तियों में भेजते थे, और तब जाकर कहीं वे उपनिवेश उसे पा सकते थे। इस प्रकार के अस्वाभाविक नियमों से जब काम लिया जाता था, तो कब तक प्रकृति-माता इसका बदला न लेती ?

(३) यदि उपर्युक्त अस्वाभाविक सख़्ती न होती, तो भी एक स्वाभाविक कारण मौजूद था, जिससे अमेरिकन जुदा हो जाते। टर्गो (Targot) ने सत्य कहा था कि उपनिवेश फ़लों की तरह हैं। वे स्वदेश के साथ तब तक जुड़े रहते हैं, जब तक पक नहीं जाते। जब तक बच्चे में स्वयं अपनी रक्षा की शक्ति नहीं है, तभी तक उसे माता-पिता की सहायता की आवश्यकता है। ज्यों-ज्यों शक्ति बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों सहायता की आवश्यकता घटती जाती है। अतः प्रश्न यह उठता है कि क्या अमेरिकन उपनिवेश इतने शक्तिशाली हो गए थे कि उन्हें बाह्य सहायता की आवश्यकता नहीं थी? उत्तर इसका यही है कि यह शक्ति स्वतंत्रता देकर देखी जा सकती है, और अमेरिका की जब स्वतंत्रता देखी गई, तो किसी ने उसे छीना नहीं। हाँ, यह संभव नहीं था कि अन्य कारणों के न होने पर अमेरिकन इतना शीघ्र माता की सहायता का तिरस्कार कर पाते। कई घटनाओं से प्रतीत होता है कि अमेरिकन इँगलैंड से पृथक् होने को नहीं तैयार थे, इँगलैंड ने ही अपनी ग़लतियों से विरोध उत्पन्न किया।

(क) स्टांप(Stamp)-ऐक्ट के हटने पर इँगलैंड के लिये अमेरिकनों का फिर से प्रेम हो गया—बाज़ारों में रोशनी की गई, और उस दिन ख़ुशी मनाई गई। (ख) जब चैथम ने पार्लिया-

मेंट में ज़ोरदार वक्तृताओं से सबको समझाया कि अमेरिकनों को अधिकार देकर जीतना चाहिए, नहीं तो उसको जीतना असंभव होगा, तो उसकी मूर्ति अमेरिकनों ने बनवाई। (ग)१७७५ में जब द्वितीय कांग्रेस बैठी, तो उसने राजा, पार्लियामेंट तथा अँगरेज़ी-प्रजा के नाम अत्याचार हटाने के लिये अपील की। इन तीन घटनाओं से पता लगता है कि अमेरिकन इसका पूरा उद्योग कर रहे थे कि उनके साथ इँगलैंड का न्याय-पूर्ण संबंध बना रहे, और वे उससे पृथक् न हों। परंतु जब इँगलैंड को न्याय करते न देखा, तो उनको १७७६ में स्वतंत्रता की घोषणा करनी पड़ी।

अमेरिकन क्रांति के तात्कालिक कारण

अब हम उन कारणों का वर्णन करते हैं, जिनसे शीघ्र क्रांति निकट लाई गई—

१—कनाडा में फ़्रांसीसियों के साथ युद्ध करने के लिये सप्त-वार्षिक युद्ध के समय इँगलैंड ने जो सैनिक तथा आर्थिक सहायता अमेरिकनों से माँगी, वह न दी गई।

२—कनाडा के युद्ध में दोनों दलों ने एक दूसरे के अवगुण पूर्ण रूप से देख लिए। अमेरिकन साधारण योद्धा थे, और वे साधारण युद्ध में सम्मिलित न हुए थे। अँगरेज़-सैनिकों ने उन पर अन्याय किए, और उनके अफ़सरों को, यहाँ तक कि वाशिंगटन को भी, योग्य पद न दिए। इससे भी अमेरिकन नाराज़ थे। अँगरेज़ों की सुस्ती तथा गर्व स्पष्ट रूप से उन्होंने देखा था, और यद्यपि अँग-रेज़ सप्तवार्षिक युद्ध में भूमंडल के एक बड़े भाग के स्वामी बन गए थे, तथापि अमेरिकन उनसे डरते न थे।

३—१७६५ में उपनिवेशों से आय बढ़ाने के लिये ग्रेनविल (Grenville) ने स्टांप-ऐक्ट (Stamp Act) पास कराया, जिसके अनुसार दस्तावेज़ों पर स्टांप लगाना पड़ता था, और इँगलैंड

जो सेना उपनिवेशों की रक्षा के लिये रक्खे हुए था, उसके ख़र्च में यह आमदनी लगती थी। इस नियम पर उपनिवेशों में कोलाहल मच गया। कुछ लोग कहते थे कि इँगलैंड को कर लगाने का अधिकार नहीं; और बहुतों की यह सम्मति थी कि कर इँगलैंड लगा सकता है, बशर्ते कि पार्लियामेंट में हमारे प्रतिनिधि हों। यह मत प्रबल हो गया। चारों ओर से "No taxation without representation" अर्थात् "उत्तरदायी राज्य को ही राज्य-कर लेने का अधिकार है"— इस प्रकार के शब्द सुनाई देने लगे। वर्जीनिया (Virginia) ने तो यह प्रस्ताव पास कर दिया कि "कर लगाने का अधिकार केवल उपनिवेशों के प्रतिनिधि-राज्य को ही है।" फिर न्यूयार्क में एक जातीय महासभा (Congress) हुई, जिसमें शिकायतों की एक अपील बनाकर इँगलैंड भेजी गई।

४—इँगलैंड ने इस कोलाहल से भयभीत होकर १७७५ में उक्त नियम तो हटा दिया, परंतु यह बात दिखाने के लिये कि इँगलैंड को उपनिवेशों पर कर लगाने का अधिकार है, डिक्लेरेटरी-ऐक्ट पास किया गया। कर लगाने का अधिकार इँग-लैंड को है या नहीं, इसका फ़ैसला इँगलैंड ने यह किया कि उसे अधिकार है। किंतु अमेरिका ने कहा, अधिकार नहीं है। अमेरिका के क्रोध को बढ़ाने के लिये मूर्खता से उस पर भी म्यूटिनी-ऐक्ट (Mutiny Act) लगाया गया। इसके अनुसार राजा की सेना का ख़र्च अमेरिकन उपनिवेशों को देना होता था। इन दो कार्यों के भयंकर परिणाम होने लगे। थोड़े-से स्टांपों के अतिरिक्त सब स्टांप नष्ट कर दिए गए, और उपनिवेशों के राज्यों ने स्टांप का नियम हटा दिया। व्यापारियों ने जो माल मँगाया था, वह भी न भेजने के लिये लिख दिया, और नया माल नहीं मँगाया। स्वदेशी का प्रचार

होने लगा। धनियों ने भी पुरानी-पुरानी चीज़ें बर्तना शुरू किया। अमेरिका में बने वस्त्र पहनना और कई प्रकार की वस्तुएँ बनाना शुरू कर दिया गया।

५—आयात-कर। १७६७में इङ्गलैंड ने चाय-नियम (Tea Act) पास करवाया, जिसके अनुसार शीशा, सीसा, रंग, काग़ज़ तथा चाय पर, जब वह अमेरिका में जाय, तब कर लगाया जाना तय हुआ। उसकी आय सेना के ख़र्च के लिये नहीं, प्रत्युत राज-कर्मचारियों को वेतन देने के लिये थी। अँगरेज़ों की सम्मति यह थी कि अमेरिकन विद्रोही हैं। उनको राजभक्त बनाए रखने के लिये राजा के अफ़सर प्रयत्न करेंगे। अमेरिकनों को अब निश्चय हो गया कि इँगलैंड उन्हें निजी लाभ के लिये अधीन रखना चाहता है। उन्होंने उपर्युक्त वस्तुओं का व्यवहार करना ही छोड़ दिया, और उन वस्तुओं पर कर लेनेवाले कर्मचारियों को वे दंड देने लगे।

६—१७७० में बोस्टन के निवासियों से राज्य के सिपाहियों का झगड़ा हो गया। सिपाहियों ने तीन नागरिकों को गोली से मार डाला। इसको अमेरिका में भारी क़त्ले-आम कहकर प्रसिद्ध किया गया, और प्रतिवर्ष वे लोग उसकी वर्षगाँठ मनाने लगे।

७—१७७३ में यह बिल पास किया गया कि ईस्ट इंडिया कंपनी (East India Company) हिंदोस्तान से सीधे ही अमेरिका को चाय रवाना कर सकती है, और १ पौंड चाय पर केवल ३ पेंस का कर अमेरिका में देना पड़ेगा। इँगलैंड में चाय के ऊपर फ़ी पाउंड एक शिलिंग चुंगी थी। इससे भी अमेरिकन संतुष्ट नहीं हो सकते थे। बल्कि उनकी सम्मति हुई कि चाय सस्ती करके अमेरिकनों को विदेशी चाय ख़रीदने के लिये बाध्य किया जाता है। बोस्टन-नगर के बंदरगाह पर चाय उतारना निषिद्ध कर दिया गया। जब इस रुकावट पर भी जहाज़ बंदरगाह पर आए, तो रात के समय पुरुषों

का समूह आदिम अमेरिकनों के वेष में जहाज़ों पर चढ़ गया, और चाय को समुद्र में फेंक दिया। यह घटना Boston Tea Party के नाम से प्रसिद्ध है। जब इस घटना की सूचना इँगलैंड पहुँची, तो विद्रोह-दमन के लिये ये बड़े कड़े नियम पास किए गए—

(क) बोस्टन का बंदरगाह बंद किया गया।

(ख) मेसाचुसेट्स-उपनिवेश में (जिसमें बोस्टन स्थित है) राज-कर्मचारियों का नियत करना इँगलैंड के अधिकार में कर दिया गया।

(ग) गवर्नर को इस बात का अधिकार दिया गया कि वह जिन अपराधियों के मुक़द्दमों को चाहे, इँगलैंड या अन्य किसी उपनिवेश में भेज दे। उपर्युक्त तीन नियम ऐसे पास किए गए, जैसे सारे अमेरिका ने नहीं, केवल बोस्टन ने ही विद्रोह किया हो। परंतु सभी ने अपने को राज्य (States) कहते हुए १७७४ में एक सभा की, जिसमें युद्ध के लिये धन, सामान और रसद लाने की विधि सोची, और रक्त इंडियनों—अमेरिका के आदिम निवासियों (Red Indians)—से भी सहायता लेने का विचार किया।

८—१७७५ में मेसाचुसेट्स के गवर्नर ने सलेम-नामक स्थान पर जो कुछ तोपें थीं, उन पर क़ब्ज़ा करना चाहा। उसने वहाँ थोड़ी सेना भेजी; परंतु वहाँ के निवासियों ने मुक़ाबिला करके उन्हें लेने न दिया।

बोस्टन के समीप कांकर्ड-स्थान पर बारूद और हथियार थे। उन्हें लेने के लिये जो सेना भेजी गई, वह यद्यपि सफल हुई, परंतु लौटते समय उसके इतने सैनिक मारे गए कि जीत अमेरिकनों की ही हुई।

इस पर अमेरिकनों ने टिकनडरोगा (Ticonderoga) और क्राउन पॉइंट (Crown Point) नाम के दो क़िले जीत लिए, और इस प्रकार कनाडा की चाभी उनके हाथ में आ गई।

बंकर-हिल (Bunkers Hill) को, जो बोस्टन के समीप थी, अँगरेज़ लोग बोस्टन को जीतने के लिये अपने हाथ में करना चाहते थे। वह स्थान बारूद कम हो जाने से अमेरिकनों को छोड़ना पड़ा।

कनाडा पर आक्रमण—अमेरिका ने कनाडा को जीतना चाहा, परंतु कृतकार्य न हुआ; क्योंकि रास्ता जंगली था—रसद मार्ग में न मिल सकती थी। वह जिस स्थान को जीतना चाहता था, वह टिकनडरोगा से बहुत दूर था। दूत प्रायः इंडियन थे, और वे पत्र प्रायः अँगरेज़ों को जाकर दे देते थे। इनकी सब बातें अँगरेज़ों को ज्ञात होने से कुछ न हो सका।

१७७६ में इँगलैंड ने अमेरिका का विद्रोह शांत करने के लिये भाड़े की जर्मन-सेनाएँ भेजीं। इस पर अमेरिकन अत्यंत क्रुद्ध हुए, और जर्मनों ने जो अत्याचार किए, उनसे अमेरिकनों को बहुत ही बुरा लगा। १७७६ में अमेरिकन उपनिवेशों की कांग्रेस ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की, और यह राज्य-नियम बनाया कि सभी अमेरिकन उपनिवेश स्वतंत्र हैं, और न्याय भी यही है कि वे स्वतंत्र रहें। आज से इन अमेरिकन उपनिवेशों का ग्रेट ब्रिटन से कोई भी राजनीतिक संबंध न रहेगा, और इन उपनिवेशों को वे सब राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं, जो एक स्वतंत्र राष्ट्र को प्राप्त होने चाहिए।

अमेरिकन स्वतंत्रता का युद्ध (१७७६-१७८१)

१७७६ से १७८१ तक जो युद्ध अमेरिका में होते रहे, उनका वर्णन सामान्य पाठक को शिक्षाप्रद नहीं होगा। जो बड़े युद्ध हुए, उनका स्थान ऐतिहासिक हो जाने से सूचना के लिये उन स्थानों के नाम लिखे जाते हैं। जिसके नीचे एक रेखा है, वहाँ अमेरिकन हारे हैं, और जिसके नीचे दो हैं, वहाँ जीते हैं।

१—ट्रेंटन (Trenton) १७७६—१००० सिपाही तथा बहुत-सी तोपें पकड़कर वाशिंगटन ले आए।

२—ब्रांडिवाइन (Brandywine) १७७७—कॉर्नवालिस जीता ।

३—जर्मन टाउन (German Town) १७७७—सेनापति हाऊ जीता ।

४—प्रिंस्टन (Princeton) १७७७—उपर्युक्त दो पराजयों का असर जाता रहा, और न्यूजर्सी (New Jersey) को वाशिंगटन ने जीत लिया ।

५—साराटोगा (Saratoga) १७७७, ऑक्टोबर—सेनापति बर्गोयन (Burgoyne) की सारी सेना ने अमेरिकनों के आगे शस्त्र रख दिए ।

६—सवानाह (Savannah) १७७८—फ्रेंच बेड़े की सहायता होने से अमेरिकन अँगरेज़ों से हारे ।

७—कैंपडन (Campdon) १७७९—कॉर्नवालिस ने युद्ध जीता । आशा थी कि उपर्युक्त दो युद्धों से दक्षिण अमेरिका जीता जायगा; पर यह न हो सका ।

(६) योरप के युद्ध तथा राकिंघम और शेल्बर्न का सचिव-तंत्र राज्य (१७७८-१७८३)

ऊपर लिखी विजयों का योरप पर बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा । योरप के राष्ट्रों ने इँगलैंड की शक्ति को नष्ट करने का दृढ़ निश्चय किया । फ़्रांस ने १७७८ में इँगलैंड से युद्ध आरंभ किया । उसकी देखादेखी स्पेन के राजा चार्ल्स तृतीय ने भी इँगलैंड का साथ छोड़ दिया, और लड़ना शुरू किया । १७८० में हालैंड ने भी इँगलैंड से पूरा बदला चुकाने के लिये फ़्रांस तथा स्पेन से मित्रता करके इँगलैंड के ऊपर हमला कर दिया । १७८० में ही रूस तथा प्रुशिया ने भी इँगलैंड के साथ मित्रता का व्यवहार नहीं किया ।

ऐसी विपत्ति के समय अँगरेज़-जनता ने पिट की ओर दृष्टि डाली। पिट अमेरिका के साथ युद्ध नहीं करना चाहता था, और उसको इँगलैंड से मिलाना चाहता था। उसने अमेरिका पर जो राज्य-कर लगाए गए थे, उनका विरोध किया। जॉर्ज को पिट के विचार पसंद न थे। पिट का स्वास्थ्य भी ठीक न था। अतः वह मई, १७७८ में मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसकी मृत्यु से इँगलैंड अमेरिका की ओर से हताश हो गया। योरप के युद्ध से इँगलैंड का समुद्र के ऊपर से प्रभुत्व उठ गया। फ़्रांस के लोगों ने अमेरिका को सहायता पहुँचाने का यत्न किया। हज़ारों की संख्या में फ़्रांसीसी स्वयंसेवक अमेरिका में जा पहुँचे। जॉर्ज ने भी अमेरिकन युद्ध के लिये पूरी तरह से तैयारी की। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने जॉर्जिया तथा कैरोलिना को फ़तह कर लिया। १७८१ में उसने वर्जीनिया को फ़तह करने का यत्न किया; पर सफल न हुआ। लाचार होकर उसको यार्कटाउन की ओर लौटना पड़ा। यार्कटाउन पर उसको अँगरेज़ी बेड़े की सहायता न पहुँची।

फ़्रांसीसियों ने समुद्र की ओर से उसको घेर लिया, और अमेरिकनों ने भूमि की ओर से। "मरता क्या न करता" की कहावत के अनुसार कॉर्नवालिस ने अपने हथियार रख दिए। इसके अनंतर अमेरिकन लोगों ने दक्षिणी रिसालों को भी अपने हाथ में कर लिया, और अमेरिका पर से इँगलैंड का प्रभुत्व सदा के लिये हटा दिया।

इँगलैंड ने समुद्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये बहुत ही अधिक यत्न किया। शुरू-शुरू में इँगलैंड कितना अरक्षित था, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि एक अमेरिकन जहाज़ ने ब्रिटन के किनारे को खूब लूटा, और उसके व्यापार को बहुत ही अधिक नुक़सान पहुँचाया। योरप के राष्ट्रों ने मिनार्का तथा जिबराल्टर को घेर लिया, और बहुत-से उपनिवेशों पर अपना प्रभुत्व

स्थापित किया। यार्कटाउन की विजय के अनंतर फ्रेंच एडमिरल डि ग्रास ने जमैका जीतने का यत्न किया। १७८२ में जल-सेनापति रोड्नी ने डामिनीको के समीप ग्रास पर विजय प्राप्त की। मिनार्का पर शत्रुओं का अधिकार हो गया।

फ़्रांस ने भारतवर्ष को जीतने के लिये भी प्रयत्न किया। फ़्रांसीसियों ने हैदरअली से दोस्ती गाँठी। हैदरअली ने मदरास जीत लिया। मरहठों ने बंबई पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। फ़्रांसीसियों के सेनापति सफ़रन ने भारतीय समुद्र पर क़ब्ज़ा कर लिया। अँगरेज़ों को बंगाल के शासक वारन हेस्टिंग्स ने इन सब विपत्तियों से बचाया। उसने एक सेना-दल भेजकर मरहठों को पराजित किया। १७८१ में वांदेवाश के विजेता सर आयरकूट ने हैदरअली को पराजित किया।

आयर्लैंड ने भी अमेरिका की नक़ल करनी चाही। इसका मुख्य कारण यह था कि आयर्लैंड को अँगरेज़ों ने स्वार्थ का साधन बना लिया था, इँगलैंड के व्यवसायों को उन्नत करने के लिये आयरिश व्यवसायों को नष्ट कर दिया था। उच्च-उच्च राज्य-पदों पर अँगरेज़ ही विद्यमान थे। आयरिश पार्लियामेंट को नियम-निर्माण की पूर्ण स्वतंत्रता न थी। इन सब कष्टों से छुटकारा पाने के लिये आयरिश लोगों ने डब्लिन में एक सभा करके १७८२ में अपनी नियामक स्वतंत्रता (Legislative Independence) की घोषणा की।

ऊपर लिखी सारी विपत्तियों से अपने को बचाने में इँगलैंड ने अमेरिका को खो दिया। लॉर्ड नॉर्थ ने मार्च, १८८२ में सहसा इस्तीफ़ा दे दिया। जॉर्ज को यह कब पसंद हो सकता था? उसी के सहारे तो वह स्वेच्छाचारी बना था। लाचार होकर उसने राकिंघम को अपना मुख्य मंत्री बनाया। राकिंघम ने अपने सचिव-मंडल में राजा के बहुत-से मित्रों को रक्खा, और शैलबर्न के

अर्ल को राष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त किया। राकिंघम ने आर्थिक सुधार किए, और प्रतिनिधि-निर्वाचन में घूस आदि के प्रयोग को कम करने का यत्न किया। इसी बीच में फ़ॉक्स से शैल्बर्न का झगड़ा हो गया। इस झगड़े के कुछ ही दिनों बाद राकिंघम मृत्यु को प्राप्त हुआ, और शैल्बर्न प्रधान मंत्री बना। फ़ॉक्स तथा उसके मित्रों ने राज्य-पदों को छोड़ दिया। दैवसंयोग से पिट के पुत्र विलियम पिट ने शैल्बर्न का साथ दिया। यह अपने पिता के सदृश ही योग्य तथा नीति-निपुण था। नवंबर, १७८२ में शैल्बर्न ने अमेरिका से संधि कर ली। इस संधि के अनुसार इँगलैंड ने अमेरिका की स्वतंत्रता को मान लिया। स्पेन, फ़्रांस तथा हालैंड से भी संधि करने का यत्न किया। १७८३ में वर्सेलीज़ की प्रसिद्ध संधि (Treaty of Versailles) हुई, जिसकी मुख्य-मुख्य शर्तें निम्न-लिखित हैं—

(१) फ़्रांस को डंकर्क में दुर्ग बनाने की आज्ञा मिली। यूट्रैक्ट की संधि में यही बात रोकी गई थी। वर्सेलीज़ की संधि के बाद पुनः अधिकार मिल गया।

(२) स्पेन को मिनार्का मिला; और आफ़्रिका, भारत तथा वेस्टइंडीज़ के इलाक़ों में कुछ परिवर्तन किए गए। स्पेन को फ़्लोरिडा दे दिया गया।

(३) संयुक्त-राज्य अमेरिका को स्वतंत्र माना गया, और उसकी पश्चिमी सीमा स्पेनी लूसीयाना (Louisiana) रक्खी गई।

(४) हालैंड से नीगापट्टम लेकर अँगरेज़ों को दिया गया। इस प्रकार एक भारी क्रांति सफल हुई, जिसने इँगलैंड की कीर्ति पर काली छाया डाल दी। कुछ काल के लिये इँगलैंड योरप के राष्ट्रों की दृष्टि में अत्याचारी और निकृष्ट रहा। फ़्रांस ने अमेरिकनों को इँगलैंड के विरुद्ध सहायता देकर अपना बदला लिया।

इँगलैंड ने १७६४ से १७७४ तक जो विचित्र नियम अमेरिकनों के विरुद्ध पास किए थे, उनकी तह में निम्न-लिखित राजनीतिक सिद्धांत काम कर रहे थे—

(१) अँगरेज़ों की सम्मति थी कि मातृभूमि को ही राज्य करना चाहिए। कर लगाने का अधिकार मातृभूमि को ही है। इँगलैंड का ख़याल था कि फ़्रांसीसियों के हाथ से कनाडा लेकर अमेरिकनों को मैंने बचाया है, अतः अमेरिकनों को इँगलैंड का आजीवन कृतज्ञ तथा भक्त रहना चाहिए।

(२) उस समय संपत्ति-शास्त्र का निर्माण नहीं हुआ था। इसी-लिये अँगरेज़ों को राज्य-कर लगाने का तरीक़ा न मालूम था।

(३) अँगरेज़ लोग कर देने से अपने को बचाना चाहते थे; क्योंकि अमेरिका से करों द्वारा जितनी अधिक आय हो जायगी, उतने ही थोड़े कर इँगलैंड में लिए जायँगे।

(४) फ़्रांसीसियों को जीतकर अँगरेज़-जाति गर्व से भर गई थी, इसलिये वह समझती थी कि अमेरिकन गँवार हमारा क्या सामना करेंगे।

(५) राजनीति की विद्या ने उन्नति नहीं की थी, और जॉर्ज अपने अधिकारों को स्वेच्छानुसार काम में लाना चाहता था।

(६) अमेरिका इँगलैंड से बहुत दूर था। सात सप्ताह समुद्र-यात्रा में लगते थे। अतः गवर्नरों की तजवीज़ों पर शीघ्र और पूरा अमल नहीं हो सकता था।

(७) इसी दूरी के कारण उपनिवेशों के विषय में बहुत कुछ मालूम न था, और यह भी विचार था कि यदि उन्हें क़ाबू में न रक्खा जायगा, तो वे इँगलैंड से भी धनादि में बढ़ जायँगे।

(८) मंत्रियों को अमेरिका में स्थित राज-कर्मचारियों की सूचनाओं पर काम करना पड़ता था, और ये अफ़सर अमेरिकनों को

असभ्य समझते और शोर मचाने पर अत्युक्ति करके सूचनाएँ देते थे, अतः उचित नीति बर्ती जाना नितांत असंभव था।

अमेरिकन तथा अँगरेज़ों को युद्ध करने में कठिनाइयाँ— ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकन विना कठिनाइयों का अंदाज़ा लगाए ही एक शक्तिशाली राज्य के साथ युद्ध करने को उद्यत हो गए थे। उनके पास न तो कोई स्थायी स्थल-सेना तथा सामुद्रिक सेना थी, और न कोई दुर्ग या प्रबल जातीय सेना ही॥ फिर वे कैसे लड़कर स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते थे? उन्हें क्या मालूम था कि युद्ध कब तक चलता रहेगा? उनकी जातिय महासभा (कांग्रेस) रेतीले भवन के समान थी। भिन्न-भिन्न रियासतों ने कर तथा सेना एकत्र करने का अधिकार नहीं दिया था। जब ये अधिकार उनके अपने पास थे, तो पराजय होने पर निरुत्साह हो यदि वे सेना तथा धन देने से मुँह मोड़ें, तो फिर क्या होगा, यह मालूम न था। अमेरिका के सेनापति वाशिंगटन को भी बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यथा—

(१) बारूद की अत्यंत कमी थी, और यह कमी बंकर-हिल के युद्ध में ही शुरू हो गई थी।

(२) युद्ध बहुत विस्तृत स्थान पर हो रहा था। इन सब स्थानों को शत्रु-सेना से बचाना था।

(३) धन, इंजीनियर तथा शिक्षित अफ़सरों की भी कमी थी।

(४) मिलोशिया का नियत काल व्यतीत हो जाने पर युद्ध जारी रखने का विश्वास नहीं हो सकता था।

(५) सेनापति वाशिंगटन के विरुद्ध गुप्त मंत्रणाएँ होती रहीं। सेनाओं के अफ़सर विदेशी होने के कारण कार्यनाशक थे। जातीय महासभा स्वयं वाशिंगटन के विरुद्ध थी, और उसकी शक्ति न बढ़ने देना चाहती थी।

इस युद्ध में अँगरेज़ों की कठिनाइयाँ भी कम न थीं। जैसे—

(१) उन्हें योग्य सेनापति तथा अफ़सर नहीं मिले ।

(२) रसद और वस्त्रादि की भी कमी थी । उनके यहाँ सैनिक नियंत्रण भी काफ़ी न था ।

(३) सैनिकों के वस्त्र भारी थे । तोपें और गाड़ियाँ जंगलों में चलने योग्य न थीं ।

(४) जंगलों के रास्ते अज्ञात थे, इसलिये घने जंगलों को पार करने में बहुत कठिनाइयाँ उपस्थित होती थीं ।

(५) उनको देश की दशा भी ज्ञात न थी। अतःसामुद्रिक किनारों पर वे क़ब्ज़ा कर सकते थे । परंतु वह इतना बड़ा था कि उसके सँभालने के लिये महती सेना तथा बहुत धन की आवश्यकता थी ।

(६) सारे अमेरिका-निवासी इनके विरोधी थे, इसलिये इनके सिपाही पृथक्-पृथक् जहाँ जाते थे, वहीं मारे जाते थे । और, एक दुर्ग को जीत लेने से वही स्थान जीता जा सकता था, उससे अगला इलाक़ा बिना युद्ध के क़ाबू में न आ सकता था ।

(७) रसद की यहाँ इतनी कमी थी कि घास, लकड़ी तथा कोयले तक इँगलैंड से लाने पड़ते थे ।

(८) मंत्री सेनापतियों के कथनानुसार नहीं चलते थे ।

(९) छिपकर छापा मारना (Guerrilla War) अमेरिकनों को ख़ूब आता था; पर अँगरेज़ी सेना इसमें निपुण न थी ।

(१०) १७८० में फ़्रांस ने खुल्लमखुल्ला अपने बेड़े से अमेरिका को सहायता दी । जो द्वीप वेस्ट इंडीज़ (West Indies) में सप्तवार्षिक युद्ध के समय इँगलैंड ने जीते थे, उन पर फ़्रांस ने हमला किया । उनके बचाने के लिये जब सेना भेजी गई, तो अमेरिका के किनारों को घेरनेवाली सेना में कमी पड़ी । कुछ महीनों के बाद सारे योरपियन राज्य इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध करने पर उतारू हो गए। ऐसी दशा में अकेला इँगलैंड क्या करता ?

संक्षिप्त परिणाम—

(१) इस क्रांति ने एक योरप से भी अत्यंत समृद्ध साम्राज्य उत्पन्न कर दिया ; क्योंकि इस राज्य में स्वतंत्रता-प्रिय समृद्ध लोग रहते थे, अतः उनकी जन-वृद्धि में कोई संदेह नहीं था। १७६० में जन-संख्या ३६,२६,२१४ थी; पर १६०५ में ८,२५,७४,१६५ हो गई।

(२) संयुक्त-राज्य के (राष्ट्रात्मक) राज्य ने अच्छी तरह यह सिद्ध कर दिया कि किस प्रकार समानता तथा भ्रातृभाव होते हुए भिन्न-भिन्न प्रांत एक हो सकते हैं। साथ ही यह भी प्रकट किया कि भविष्य में वे ही राज्य प्रसिद्ध तथा उन्नत होंगे, जिनके देश बड़े होंगे। छोटे-छोटे देशवालों को कोई न पूछेगा, जैसे आजकल पुर्तगाल, डेन्मार्क आदि को कोई नहीं पूछता।

(३) व्यावसायिक प्रणाली (Mercantile System) को इस क्रांति ने कड़ी चोट पहुँचाई।

(४) इँगलैंड को यह शिक्षा मिली कि भविष्य में अपने उपनिवेशों तथा अधीन देशों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए, नहीं तो पके फल जैसे शीघ्र ही वृक्ष से पृथक् हो जाते हैं, वैसे ही वे भी पृथक् हो जायँगे।

(५) इस क्रांति ने प्रजा-तंत्र राज्य की नींव डाली। यह एक प्रकार का अच्छा दृष्टांत है कि यदि मनुष्य को उत्तम-से-उत्तम दशा में रक्खा जाय, और बाहर से उस पर कोई ज़ोर न डाला जाय, तो वह क्या-क्या उन्नति कर सकता है।

(६) इस क्रांति ने योरप में फ़्रेंच-क्रांति पैदा की। यदि यह सफल न होती, तो उपर्युक्त घटना भी न होती।

क्रांति से शिक्षा—

यह क्रांति कुछ बातों में बहुत शिक्षाप्रद है। यथा—

(१) राज्य को प्रजा पर अत्याचार न करना चाहिए, नहीं तो

कभी-न-कभी सताए हुए लोग अवश्य उठेंगे, और अपने शत्रु का नाश करेंगे, जैसे प्राचीन काल में हैलट लोगों ने स्वेच्छाचारी रोमन-कुलीनों का नाश किया।

(२) राज्य को अत्याचारी न होना चाहिए।

(३) प्रजा-तंत्र राष्ट्र की प्रजा अपने ही राजात्मक राज्य तक को शक्ति देने से डरती है।

(४) यदि शक्ति न देने से केंद्र का कमज़ोर होना, और कमज़ोर राज्य से जो हानियाँ होती हैं, उनका होना।

(७) लॉर्ड नॉर्थ तथा हैनरीफ़ॉक्स का सम्मिलित (the Coalition Ministry) सचिव-तंत्र राज्य (१७८३)

वर्सेलीज़ की संधि समाप्त होने के पूर्व ही शैल्बर्न महामंत्री के पद से हट गया। इसका मुख्य कारण फ़ॉक्स तथा नॉर्थ का विरोध ही था। १७८३ में ये दोनों आपस में मिल गए, और इन्होंने शैल्बर्न को महामंत्री के पद से हटा दिया। जॉर्ज तृतीय को यह पसंद न था कि नॉर्थ तथा फ़ॉक्स मुख्य मंत्री बनें। परंतु इसके सिवा और उपाय ही क्या था? १७८३ में फ़ॉक्स ने पार्लियामेंट में इंडिया-बिल पेश किया। इस बिल का उद्देश्य भारत का राज्य पार्लियामेंट के हाथ में देना था। ईस्ट इंडिया कंपनी को यह पसंद न था, इसलिये वह इस बिल के विरुद्ध थी। परंतु फ़ॉक्स ने किसी की भी परवा न की। उसने पार्लियामेंट से इस बिल को पास करा लिया। परंतु लॉर्ड-सभा ने न माना। जॉर्ज ने नॉर्थ तथा फ़ॉक्स को राज्य के पदों से हटा दिया।

(८) विलियम पिट का सचिव-तंत्र राज्य (१७८३-१८०१)

नॉर्थ तथा फ़ॉक्स ने राजा का अत्यंत विरोध करने के साथ ही सारे आदमियों को मंत्रि-मंडल बनाने से रोकने का प्रयत्न किया। इससे तंग होकर राजा ने विलियम पिट का सहारा लिया।

पिट को शुरू-शुरू में बहुत-सी तकलीफ़ें उठानी पड़ीं; परंतु उसने उन तकलीफ़ों की कुछ भी परवा न की। अपने विचारों पर वह पत्थर की चट्टान की तरह दृढ़ रहा। मार्च, १७८४ में उसने पार्लियामेंट का नए सिरे से निर्वाचन कराया। इस निर्वाचन से पार्लियामेंट में उसके पक्ष के लोग बड़ी संख्या में आ गए।

२५ वर्ष की उम्र में ही पिट ने महामंत्री के पद को ग्रहण किया था। वह दुर्बल तथा लंबे शरीर का और बहुत ही अधिक मेहनती था, अतएव उसने राज्य-कार्य में राजा का सहारा नहीं लिया।

१७८४ में पिट ने इंडिया-बिल पास किया, और कंपनी की शक्ति को बहुत ही अधिक बढ़ने से रोका। फ़ॉक्स तथा शैरिडन ने हेस्टिंग्स पर मुक़दमा चलाया। क़सूरों के होने पर भी हेस्टिंग्स छोड़ दिया गया। १७८८ में राजा बीमार पड़ गया। पिट ने उसका पूरी तरह से साथ दिया। अच्छे होने पर राजा पिट को बहुत ही अधिक चाहने लगा।

पिट का आर्थिक सुधार

पिट जिस समय महामंत्री बना, उस समय २० लाख पौंड का व्यय राज्य की वार्षिक आय से अधिक होता था, और जाति में राज्य की साख इतनी कम थी कि ३% के बांडों (Bonds) की क़ीमत केवल ५० थी। परंतु ३ वर्ष में पिट ने सब कठिनाइयाँ दूर कर उत्साह, बल तथा धन-वृद्धि के मार्ग पर जाति को आगे बढ़ाया। उसने यह आश्चर्य-जनक परिवर्तन भिन्न-भिन्न उपायों से किया —

(१) आयात चाय पर ५०% कर लिया जाता था। यह भारी कर देने से व्यापारी घबराते थे। उस समय लोगों के आचार अच्छे न थे, और कर न देकर चोरी से माल लाने में जो ख़तरा था, उससे वह कर अधिक था। इसलिये ४०,००० आदमी बिना कर दिए इँगलैंड में माल लाने का कार्य करते थे। देखा गया था कि

इँगलैंड में ख़र्च होनेवाली चाय का २/३ भाग और मद्य का १/२ भाग विना कर दिए चोरी से आता था। इस प्रकार की चोरी तथा आय की कमी को रोकने के लिये पिट ने केवल १२ १/२ सैकड़ा कर रक्खा। मद्य पर भी उसी प्रकार कर कम कर दिया। आय की कमी पूरी करने के लिये खिड़की(Window)-कर लगाया गया।

(२) उसने राज्य के लिये मुक़ाबले से ऋण लेने की रीति चलाई। पहली पार्लियामेंट के धनाढ्य सदस्य स्वयं या उनके मित्र बहुत ब्याज लेकर ऋण देते थे। परंतु पिट ने यह व्यवस्था की कि ऋण देने में जो कम-से-कम ब्याज लेगा, उसी से रुपया लिया जायगा। इससे एक तो ब्याज थोड़ा देना पड़ता था, दूसरे पार्लियामेंट का इस उपाय से जितना संशोधन हुआ, उतना उस संशोधन-बिल से न होता।

(३) उसने कर देने के पदार्थों की सूची बढ़ा दी, और विशेष सुखदायक तथा भोग्य पदार्थों पर कर लगाए। वर्तमान समय में उन पदार्थों में से कुछ पर कर लगाना उचित नहीं समझा जाता। किंतु इसमें संदेह नहीं कि उसने यह बड़ी अच्छी रीति चलाई थी।

(४) आय के लिये जो कर लिए जाते थे, उनमें बहुत गड़बड़ थी। सब पदार्थों के लिये भिन्न-भिन्न परिमाण नियत थे, जो कि ठीक तौर से ज्ञात भी न थे। इन राज्य-करों की बुराइयों का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि इनको प्राप्त करने के लिये बहुत-से छोटे-छोटे राज्य-नियम बनाने पड़े, जो कि संख्या में ३,००० से कम न होंगे।

(५) पिट अबाध व्यापार का पक्षपाती था। उसने पहले की व्यावसायिक प्रणाली उठाकर अबाध व्यापार की नींव रक्खी। फ़्रांस के साथ व्यापारिक संधि की, जिसमें आयात पदार्थों पर दोनों देशों से कम कर लेना निश्चित किया गया। इससे खूब व्यापार बढ़ गया। सन् १७८६ और १७८९ के बीच में पुरातन शत्रु के साथ

इतने संबंध रहे कि वे फिर केवल एडवर्ड सप्तम के समय में ही देखे गए। अमेरिका के साथ भी वह अबाध व्यापार करना चाहता था; परंतु यह स्वीकृत न हो सका। पिट अबाध व्यापार के द्वारा आयर्लैंड के व्यापार को बढ़ाना चाहता था, ताकि उसकी चीज़ें उपनिवेशों में इँगलैंड की चीज़ों की तरह खुल्लमखुल्ला जा सकें। ये उसके उपाय स्वीकृत (Pass) न हो सके। आयर्लैंड को बहुत वर्षों तक दुःख उठाना पड़ा, और उसी दुःख से प्रेरित होकर १७९८ में उसने विद्रोह कर दिया।

(६) जातीय ऋण को चुकाने के लिये सहायक स्थायी कोष (Sinking Fund) की दशा इस प्रकार सुधार दी कि १० लाख पौंड अवश्य ही उसमें ऋण चुकाने के लिये जमा रहते थे। उस धन-राशि को व्यय करने का अधिकार राज्य के हाथ में नहीं दिया गया। उसमें से जिन ऋणों का समय समाप्त हो जाय, उन्हें चुका दिया जाय, यह तय था। उसने ८ वर्षों में १३५ लाख से अधिक ऋण चुका दिया। परंतु फिर युद्ध के कारण अधिक ऋण लेना पड़ा, और उसका परिणाम यह हुआ कि राज्य १२% सूद की दर से ऋण लेता और ६% के हिसाब से ऋण देता था। घाटे के या जाति पर करों का अधिक भार बढ़ाने के सिवा युद्ध के समय सहायक स्थायी कोष-(Sinking Fund) रखना मुनासिब न था। पिट पर जो लोग उपर्युक्त आक्षेप करते हैं, वे विशेष दशा को भूल जाते हैं। पिट का अनुमान यह था कि युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायगा। १५ वर्षों के अनुभव को वह थोड़े समय के युद्ध के लिये कैसे छोड़ देता? उस कोष-फ़ंड के रहने से जाति का विश्वास बना रहता था, और उसके हटाने से राज्य की साख बहुत कम हो जाती थी। इसलिये सहायक स्थायी कोष रखना आवश्यक था। अतएव पिट को अबाध व्यापार का पक्षपाती (Free Trader) और वर्तमान उच्च सिद्धांत, जो व्यापारिक कर

तथा सामुद्रिक कर के विषय में बनाए गए हैं, उन पर १८वीं शताब्दी में अमल करनेवाला कहना चाहिए।

१७८५ में पार्लियामेंट की दशा—महामंत्री पिट के संशोधित बिल का महत्त्व समझाने के लिये इस समय यह आवश्यक है कि अठारहवीं शताब्दी की प्रतिनिधि-सभा (House of Commons) में जो रिश्वतख़ोरी फैली हुई थी, और जिसके कारण उस सभा को जाति का पूर्ण प्रतिनिधि नहीं कह सकते थे, वह ज्ञात हो जाय। उस बुराई को हटाने के लिये उस गिरे हुए समय में भी यत्न किए गए। परंतु १८३२ तक कामयाबी नहीं हुई। एक मोटा सिद्धांत यह है कि नगरों, बरोज़ तथा देशों को उनकी जन-संख्या, समृद्धि तथा शिक्षा के अनुसार मेंबर चुनने का हक़ होना चाहिए। चार्ल्स द्वितीय से पहले राजा नष्ट हो रहे स्थानों से पार्लियामेंट में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार लेकर योग्य स्थानों को दे देता था। यद्यपि यह भी पूर्ण रूप से नहीं किया जाता था, परंतु चार्ल्स को यह अधिकार कार्यरूप में परिणत करने नहीं दिया गया। तब से समृद्ध नगरों को सदस्य भेजने का कोई अधिकार न था, और उन स्थानों को, जहाँ कि केवल एक घर था, एक-दो सदस्य भेजने का हक़ था। लीड्स, बर्मिङ्हम, मंचेस्टर आदि नगर कोई सदस्य नहीं भेजते थे; परंतु ओल्ड सेरम (old Serum) के, जिसमें कोई चुननेवाला नहीं था, प्रतिनिधि चैथम, बर्क, जॉन, हार्म, लुक आदि पार्लियामेंट में बैठते थे। १७९३ में प्रजा की मित्र-सभा (जो कामंस के संशोधनार्थ बनाई गई थी) ने यह दिखाया कि—

(१) इँगलैंड में ३५ स्थान ऐसे थे, जो ७० प्रतिनिधि भेजते थे; परंतु उनमें चुननेवाला कोई नहीं था। अर्थात् भूमिपतियों या धनाढ्यों के हाथ में वे बरोज़ थीं।

(२) ४६ स्थानों में केवल ५० चुननेवाले थे, और उनकी ओर से ९० प्रतिनिधि आते थे।

(३) १६ स्थानों में १०० सदस्य चुननेवाले थे, और उनके ३७ प्रतिनिधि थे।

उपर्युक्त कुछएक सदस्यों (Members) को भेजना केवल धनाढ्यों (Lords) के हाथ में था।

ड्यूक ऑफ् नार्फोक् —११सभासद् (Members)भेज सकता था।
(लॉर्ड) लांस्डेल —६ ,, ,,
(,,) उर्लिंगटन —७ ,, ,,

इस प्रकार ½ भाग हाउस ऑफ् कामन्स (Commons) का भूमि-पतियों (लॉर्ड) के हाथ में था। स्पष्ट है कि जाति के हित के लिये यह सभासदों का ½ भाग कुछ न कर सकता था। वे सभा बनाने-वालों के कथनानुसार चलते थे। उपर्युक्त स्थानों को उजड़े हुए बरोज़ (Nomination or Rotten Boroughs) के नाम से पुकारा जाता था।

७० लाख की आबादी में केवल ३ लाख ही मनुष्य चुनने का अधि-कार नहीं रखते थे; पर इन चुननेवालों की स्थिति में भी भिन्न-भिन्न भेद थे। कहीं घरों के मालिकों को, कहीं किराए पर रहनेवालों को भी, कहीं रिवाज के अनुसार और कहीं राजा की विशेष आज्ञा से चुनने का अधिकार मिला हुआ था। सारे देश में ऐसा एक नियम नहीं था कि अमुक स्थिति के पुरुष को सदस्य चुनने का अधिकार होगा।

रिश्वत देने की भिन्न-भिन्न विधियाँ थीं। जहाँ साधारण लोगों को सदस्य चुनने का अधिकार था, वहाँ उनको महीनों शराब-कबाब खिला-पिलाकर और नक़द रुपए देकर उनसे अपने लिये सम्मति दिलाते थे। जब किसी को रिश्वत लेनी ही हो, तो जो अधिक देगा, उसी को सम्मति दी जायगी। इसका फल यह हुआ कि एक-एक सभासद् को हज़ारों पौंड ख़र्च करने पड़ते थे। परंतु ऐसे धनाढ्य भी मौजूद थे; क्योंकि उन्होंने भारतवर्ष से ख़ूब धन लूटा था। ये अँगरेज़ इँगलैंड में 'नवाब' के नाम से पुकारे जाते थे, और पार्लियामेंट का मेंबर

बनने से उनकी स्थिति उच्च होती थी। अतः ये नवाब अपने चुनाव में बहुत रुपए ख़र्च करते थे। १७८२ में पिट ने इनके विरुद्ध आवाज़ उठाई, और दिखाया कि यही नहीं कि ये नवाब रिश्वत देकर सभासद् हुए हैं, बल्कि कर्नाटक-नवाब के ७ प्रतिनिधि भी इस समय लोक-सभा (House of Commons) में मौजूद हैं। क्या यह संभव न था कि कोई शत्रु राजा सभासदों को रिश्वत देकर, अपनी ओर करके, इँगलैंड की समृद्धि और स्थिति पर कुल्हाड़ा चलावे? उस समय तक लोग इस रस्म के विरुद्ध कुछ सुनने को तैयार न थे, इस कारण पिट कुछ न कर सका। कई नगरों की समितियों (Corporations) को सभ्य भेजने का अधिकार था। वे मेंबरशिप बेचती, और उससे नगर का ख़र्च चलाती थीं।

बंदरगाहों तथा अन्य अच्छे-अच्छे नगरों में कर उगाहनेवाले अफ़सर और कर्मचारी लोग राजा के कृपा-पात्र को आप वोट देते थे, और दूसरों से भी यथाशक्ति दिलाते थे। ज्यों-ज्यों युद्धों के कारण कर बढ़ते गए, त्यों-त्यों इन राज-कर्मचारियों का प्रभाव भी राजा के अनुकूल मनुष्यों को चुनवाने में अधिक होता गया। ११,५०० कर्मचारी चुनने के अधिकारी थे, और ७० मेंबर उनकी सम्मतियों पर निर्भर थे। इस पर पार्लियामेंट ने इन लोगों से चुनने के अधिकार छीन लिए। पर बड़ी कठिनाई से यह संशोधन हो सका।

प्रजा के स्वतंत्र मेंबर का पार्लियामेंट में आना बड़ा कठिन था। ४० दिन तक वोट देने के दफ़्तर (Polls) खुले रहते थे। आजकल एक-दो दिन में ही आफ़त आ जाती है। उस समय राजा की गुप्त सहायता से मदोन्मत्त होकर गुंडे लोग क्या-क्या न करते होंगे! दिए हुए वोटों के गिननेवाले कार्यालय भी बेईमानी करते थे, जैसा कि १७८४ में फ़ॉक्स के चुनाव से स्पष्ट है।

इससे बढ़कर स्वयं लोक-सभा (House of Commons) अन्याय करती थी। जब किसी स्थान के चुने हुए दो-तीन मेंबरों के वोट

एक-से होते, या कोई अन्य झगड़ा होता, तो वह न्याय से फ़ैसला न करती थी। पर १७६२ के पश्चात् पार्लियामेंट ने यह अन्याय मिटाना शुरू किया। निर्णय होना जब वोटों पर निर्भर था, तो जब पार्लियामेंट में मामला पेश होता तब जिस पार्टी की संख्या अधिक होती वही पार्टी अपने दलवाले व्यक्ति को सदस्य क़रार देती। यदि पार्टी में एक मेंबर बढ़ता है, तो न्याय को पद-दलित किया जाय, तो कोई परवा नहीं। उस समय का आचार (Morality) इसी प्रकार का था।

उपर्युक्त उपाय वास्तव में कुछ भी न थे। राजा तथा मंत्री के हाथ में बड़े-बड़े उपाय थे, जिनके द्वारा अधिक सभासद् उनकी ओर होते थे। वे उपाय थे राज्य के ओहदे, गुप्त तथा स्पष्ट पेंशनें और भिन्न-भिन्न प्रकार की उपाधियाँ देना, लॉर्ड बनाना, ब्याज पर राज्य का नक़द धन देना, अधिक ब्याज पर ऋण लेना, अधिक धन देने पर युद्ध आदि के सामान देने के ठेके देना, लाटरी डालने का अधिकार-प्रदान इत्यादि। प्रत्येक उपाय के भी कई तरीक़े थे। इतने ही से पता लग सकता है कि किस प्रकार लोक-सभा के सभ्य प्रजा के प्रतिनिधि नहीं थे, और इसीलिये प्रजा का संशोधन अत्यावश्यक था।

इँगलैंड में कुलीन लोगों का राज्य कहना चाहिए, न कि प्रजा का ; क्योंकि कुलीनों का ही लोक-सभा में मुख्य भाग था। परंतु कहा जाता है कि १६८८ की क्रांति (Glorious Revolution) से लोग स्वतंत्र हुए। यह कैसे ? उस समय इँगलैंड में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता थी, और वह होनी भी चाहिए थी। उसके कारण चैथम, नॉर्थ, ग्रेनविल और पिट आदि संशोधन करने के लिये यत्न कर रहे थे। परंतु पिट या उसके साथी मि० ग्रे (Mr. Grey) का यत्न १७९२-१७९३, १७९७ में यों ही निष्फल गया;

क्योंकि फ्रेंच क्रांति से लोगों का संपूर्ण बल उसके बुरे असरों को इँगलैंड से हटाने में लगा हुआ था। क्रांति के कारण यह संशोधन ३० वर्ष पीछे पड़ गया। परंतु १७६५ तक इँगलैंड के राज्य को कुलीन-तंत्र इस कारण नहीं कह सकते कि—

(१) साधारण स्थिति के मनुष्य मंत्रिपद तक को प्राप्त कर सकते और पार्लियामेंट में अपनी बुद्धिमत्ता तथा वक्तृता से प्रजा का पक्ष पुष्ट करते थे। उदाहरणार्थ वाल्पोल, चैथम, बर्क्स, पिट आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

(२) लोक-सभा प्रजा की ज़िम्मेवार थी, पर प्रजा की सम्मति के लिये काम नहीं करती थी।

(३) पार्टियाँ दो थीं। वे एक दूसरी के दोष ढूँढ़ती थीं, और इसी से प्रजा के विरुद्ध कोई बात न हो सकती थी। परंतु अधिकार पाई हुई पार्टी प्रजा का हृदय जीतने के लिये, उसके लाभार्थ, कई नियम स्वीकार किया करती थी, ताकि दूसरे चुनाव पर भी उस पार्टी का राज्य रहे।

(४) प्रेस (Press) का—समाचार-पत्रों का—बल दिन-पर-दिन बढ़ता जाता था।

पिट का रिफ़ार्म्स बिल—१७८५ में पिट ने जो बिल पार्लियामेंट में पेश किया, उसमें तीन मुख्य बातें थीं—

(१) ३६ उजड़े हुए बरोज़ (Rotten Boroughs) से ७२ सभासदों के भेजने का अधिकार लेकर बढ़े हुए नगरों और लंदन को दे दिया जाय।

(२) उपर्युक्त बरोज़ उनके मालिकों को रुपए देकर ख़रीदी जायँ। उनके लिये १० लाख पौंड राज्य-कोष से देने होंगे। ७२ सभ्य इनकी ओर से आते थे। अपराध किए विना राज्य जायदाद कैसे छीन सकता है? और, दूसरे, वे मालिक बड़े बलवान् थे। वे हरजाना लिए विना उस बिल को स्वीकृत कैसे होने

देते ? इन्हीं कारणों से कि पिट ने उन बरोज़ के मालिकों को रुपए देना आवश्यक समझा ।

(३) ज़मींदारों तथा काश्तकारों को भी चुनाव का अधिकार दिया जाय ।

इन एक या दो तजवीज़ों से ९९ हज़ार चुननेवाले बढ़ जाते थे । परंतु राज्य और मंत्रिसभा के बहुत-से सभासद् इसके विरुद्ध थे, और प्रजा भी तीसरे संशोधन की पूरी आवश्यकता नहीं समझती थी । इसीलिये यह संशोधन स्वीकृत न हो सका, और जाति ३० वर्षों तक संशोधन के नाम से, क्रांति के कारण, घबराती रही ।

राजा की बीमारी में राज्य का प्रबंध—जॉर्ज तृतीय अपने ६० वर्षों के राज्य में ५ बार सख़्त बीमार पड़ा । उसकी बीमारी में राज्य का कार्य कौन चलावे, इस प्रश्न से राजा, राजवंश तथा पार्लियामेंट के अधिकारियों में शासन-पद्धति-संबंधी (Constitutional) कई झगड़े उठे । पहले इस प्रकार की दशा कभी नहीं उपस्थित हुई थी, अतः कोई विशेष नियम नहीं बना हुआ था । यहाँ हमें एक बार फिर इसका उदाहरण मिलता है कि पार्लियामेंट ने क्रमशः किस प्रकार दिन-पर-दिन उन्नति की है ।

१७६५ में जॉर्ज बीमार हुआ । दिल धड़कने (हौल-दिल) की बीमारी थी । यद्यपि राजा शीघ्र स्वस्थ हो गया, तथापि उसने यह सोच-कर कि कहीं मेरी अचानक मृत्यु हो गई, तो, युवराज के नाबालिग़ होने के कारण, राज्य अव्यवस्थित हो जायगा, युवराज के संरक्षक नियत करना आवश्यक समझा । राजा ने संरक्षक नियत करना अपना कर्तव्य समझा, और पार्लियामेंट ने अपना । परंतु रिश्वत के कारण पार्लियामेंट में राजा का ही पक्ष प्रबल रहा, और यह फ़ैसला हुआ कि संरक्षक परिमित हों । लॉर्ड बूट—(Lord Bute) को, जिसके संरक्षक होने की आशंका थी, संरक्षक बनने से रोकने के लिये

यह बिल स्वीकृत किया गया कि रानी तथा इँगलैंड में रहनेवाले राजवंश के लोगों को ही राजा के बीमार होने या मरने पर संरक्षक बनाया जाय, और युवराज के बालिग़ होने तक संरक्षक को सब राज्याधिकार प्राप्त हों। राजा ने उक्त मनुष्यों में से जिसे संरक्षक नियत किया, उसका नाम पृथक्-पृथक् तीन पत्रों पर लिखकर तीन स्थानों में रक्खा गया। उन पत्रों को मृत्यु होने पर गुप्तसभा (Privy Council) के सामने ही खोलना तय हुआ था। उपर्युक्त बिल में तो यही झगड़ा था कि संरक्षक (Regent) नियत करने का अधिकार राजा को है या पार्लियामेंट को? इसका निर्णय यह हुआ कि यह अधिकार दोनों को ही है।

१७८० में दूसरी बार राजा बहुत बीमार हो गया। उसका दिमाग़ भी बिगड़ गया। पार्लियामेंट की बैठक २० नवंबर को होनेवाली थी। परंतु जब तक राजा की वक्तृता से पार्लियामेंट का कार्य आरंभ न हो, तब तक पार्लियामेंट कोई कार्य नहीं कर सकती थी। मगर यह इतना आवश्यक समय था कि उस रिवाज को तोड़कर भी पार्लियामेंट की बैठक होने की आवश्यकता थी। राजा के संरक्षक और उसके स्थान पर कार्य करने के लिये संरक्षक (Regent) नियत करने के विषम प्रश्न सामने थे। युवराज के अन्यतम मित्र फ़ॉक्स ने उसके अधिकार बढ़ाकर उसका मामला ख़राब कर दिया। फ़ॉक्स ने कहा—"राजा के रुग्ण होने के समय युवराज को राज्य करने का उतना ही अधिकार है, जितना कि राजा की मृत्यु के पश्चात्। पार्लियामेंट को केवल यह निश्चित करना चाहिए कि वह कब से अपने अधिकार का प्रयोग करे।"

इस पर पिट ने जाँघ पर हाथ पटककर कहा—"मैं फ़ॉक्स से यह झगड़ा उठाने का बदला लूँगा।" पिट का मत था कि पार्लियामेंट को अधिकार है कि वह जिसको चाहे संरक्षक बनावे,

और जिसको न चाहे न बनावे। हाँ, अच्छा हो कि पार्लियामेंट अपनी उदारता से युवराज को ही अधिकार दे दे । प्रथम तो फ़ॉक्स का कहना ठीक न था । उसके कथनानुसार तो कोई मनुष्य ज़रा भी बीमार हुआ नहीं कि उसका पुत्र विना उसकी आज्ञा के उसकी जायदाद का स्वामी बन बैठता, जो कि सब शास्त्रों तथा रीति-रिवाजों के बिलकुल विरुद्ध था । दूसरे यह कि इससे पार्लियामेंट का अधिकार छिनता था, और फिर इस कथन के अनुसार तो राजा के हाथ से गद्दी ही छिनी जाती थी । इस पर युवराज ने स्वयं मान लिया कि संरक्षक बनने का मुझे अधिकार नहीं है । अब दूसरा प्रश्न यह था कि युवराज तथा उसके मित्रों की इच्छा के अनुकूल विना शर्तों (Restrictions) के उसे संरक्षक बनाया जाय, या शर्तें लगाई जायँ । पिट ने बहुत-सी शर्तें लगाईं । जैसे—

(१) राजा की जायदाद पर युवराज का कुछ भी हक़ न हो ।

(२) युवराज को लॉर्ड बनाने का हक़ न हो ।

(३) युवराज कोई ऐसी पेंशन या पद न दे, जिसको महाराज स्वस्थ होने और पूर्ववत् राज्य करने पर हटा सकें ।

(४) महाराज के शरीर तथा घर की रक्षा रानी के हाथ में रहे, और वही घर में नौकर आदि रख सके ।

उपर्युक्त विषयों के विचार में एक वर्ष लग गया । फ़ॉक्स आदि को विश्वास था कि राजा शीघ्र स्वस्थ न होगा । इसलिये झगड़े में जो समय जा रहा था, उसकी उन्हें कुछ परवा न थी । युवराज पिट से नाराज़ तो था ही, अतएव संरक्षक बनते ही वह पिट को हटाकर फ़ॉक्स को महामंत्री बनाता, इसमें ज़रा भी संदेह न था । पिट भी फिर से वकालत करने को तैयार था । परंतु वह अपना पद क़ायम रखने के लिये राजा के अधिकारों को कम नहीं

करना चाहता था। उसके सौभाग्य से राजा आराम हो गया। अब प्रजा राजा के शुद्ध आचरण को भली भाँति जान गई थी। यद्यपि अमेरिका अँगरेज़ों के हाथ से निकल गया था, तथापि उसमें जितना दोष राजा का था, उतना ही, बल्कि उससे भी अधिक, दोष पार्लियामेंट का भी था। पाँच वर्ष के संशोधन में पिट ने राजा के तथा अपने लिये प्रजा के हृदय में स्थान कर लिया था। राजा के स्वस्थ होने पर प्रजा ने बड़ी भारी ख़ुशी मनाई। जॉर्ज तृतीय के हृदय में भी पिट ने स्थान कर लिया।

१८०१ में फिर उसी रोग ने राजा को आ घेरा। उसके तीन कारण थे—(१) पिट का कैथलिकों की स्वतंत्रता पर झगड़ा करना, (२) स्वतंत्रता स्वीकार न करना, और (३) पिट का त्यागपत्र देना। एक मास के अंदर-अंदर वह फिर आराम हो गया। पर १८०४ में फिर हालत बिगड़ गई। इस बार भी आराम होने में महीना-भर लग गया। इस अरसे में उसके मंत्री उसके नाम से काम चलाते रहे। प्रथम प्रश्न यह उठ रहा था कि एक वृद्ध और बिगड़े दिमाग़वाले राजा से ठीक नियम-बद्ध कार्य की आशा कैसे की जा सकती है? इसलिये संरक्षक-सभा बनानी ही चाहिए। मंत्री यह दिखाते थे कि राजा आवश्यक कार्य कर सकता है। परंतु १८१० में राजा की दशा ऐसी बिगड़ी कि वह फिर राज्य न कर सका। उस समय भी १७८८ की-जैसी कारवाई की गई, और लगभग वे ही शर्तें युवराज के संरक्षक बनाने में लगाई गईं। ये शर्तें केवल एक वर्ष के लिये थीं। उस समय के बीतने पर राजा के समग्र अधिकार उसे दे दिए गए।

पिट और थर्लो—पिट ने थर्लो को, जो चांसलर ऑफ़् एक्सचेकर था, १७९२ में उसके उक्त पद से हटा दिया गया। १७८८ में थर्लो इस पद पर नियुक्त हुआ था, और भिन्न-भिन्न मंत्रियों ने अपने मंत्रित्व-काल में

उसे चांसलर के पद पर बना रहने दिया था। केवल सम्मिलित मंत्रि-मंडल के समय में वह इस पद पर न था। राजा का परम मित्र होने के कारण उसकी यह धारणा थी कि चाहे वह महामंत्री तथा पार्लियामेंट के विरुद्ध कुछ भी क्यों न कह दे, उसे उसके पद से कोई हटा नहीं सकता। संरक्षकता के मामले में थर्लो ने युवराज के साथ पिट के संबंध की कुछ गुप्त बातचीत प्रकट की थी, ताकि युवराज के संरक्षक बनने पर उसे कहीं उसके पद से अलग न कर दिया जाय। पिट को यह सब ज्ञात हो गया। उसने थर्लो पर विश्वास करना छोड़ दिया, और १७९२ में राजा की अनुमति लेकर उसे निकाल बाहर किया। इस घटना के दो आवश्यक परिणाम हुए—

(१) १७९२ से महामंत्री ही राज-काज में सबसे ऊँचा हो गया; क्योंकि कोई मंत्री भी, चाहे वह राजा का परम मित्र भी क्यों न हो, यदि महामंत्री की आज्ञा तथा नीति का उल्लंघन करता है, तो फिर उसे मंत्रिसभा में स्थान नहीं मिल सकता।

(२) राजा के मित्रों की पार्टी की शक्ति भी कम हुई। तब तो पिट विश्वास-पूर्वक अधिक स्वतंत्रता से काम करने लगा।

पिट और लॉर्ड लोग—पिट ने अपने समय में जितने लॉर्ड बनाए, इतिहास में देखा जाता है, उतने अन्य किसी भी राजा या मंत्री ने नहीं बनाए।

गुलाब-युद्ध के पीछे	साधारण लॉर्ड	४२
एलिज़बेथ	,,	६०
स्टुअर्ट्स् के समय में	,,	१७६
१७०० से १७८० तक	लॉर्ड बनाए गए	२७९
१७८० से १८२९ तक	,,	३८८

पिट ने अपने समय में ३८८ लॉर्डों में से १४० लॉर्ड बनाए। प्रथम पाँच वर्षों में ही ४० लॉर्ड बनाकर उसने उस समय अपने

साहाय्य के लिये लॉर्डों की अधिकता कर ली । किंतु संरक्षक को नए लॉर्ड बनाने की आज्ञा इसलिये नहीं दी कि वह इस उपाय को काम में लाकर अपनी ओर लॉर्डों की संख्या अधिक कर लेगा। इससे स्पष्ट है कि राजा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये और मंत्री अपने सहायकों को सम्मान देने के लिये लॉर्ड बनाना चाहते हैं । जॉर्ज ने तो पहले-पहल ह्विग (Whig) पार्टी की शक्ति तोड़ने के लिये बहुत-से टोरी-लॉर्ड बनाए थे, परंतु पिट उस उद्देश्य के अतिरिक्त लॉर्डों को तंग पार्टी या श्रेणी में मिलाना भी चाहता था । साथ ही राजा ने स्वयं अपने राज्य में लॉर्डों की संख्या दुगनी करके अपने राज्य में बड़े-बड़े परिवर्तन किए हैं—

(१) पहले तो वह एक पृथक् श्रेणी की छोटी-सी सभा थी; परंतु अब वकीलों, व्यवसायियों, व्यापारियों, बैंकरों, लेखकों, संपादकों और राजा के उत्तम सेवकों की सभा बन गई है । इस कारण प्रजा के साथ उसका संबंध अब बहुत बढ़ गया है, और वह भी एक प्रकार की प्रतिनिधि-सभा (Representative body) बन गई है । उसमें स्कॉटलैंड, आयलैंड तथा वेल्स के प्रतिनिधि भी हैं, और तीनों मिलकर सभा का भाग बनते हैं ।

(२) टोरियों की शक्ति बढ़ी हुई समझनी चाहिए । परंतु, फिर टोरियों की शक्ति कैसे कम हो गई, इस पर आगे प्रकाश डाला जायगा ।

(३) अब, लॉर्डों की संख्या अधिक हो जाने से, जब तक राजा बहुत अधिक लॉर्ड न बनावे, तब तक उसकी पार्टियों का परिवर्तन नहीं कर सकता । १७८० में यह ह्विग(Whig)-सभा थी । पिट के पश्चात् टोरी हुई । परंतु ऐसी टोरी बनते भी ३० वर्ष लग गए थे । इसलिये अब परिवर्तन करना अत्यंत कठिन हो गया है । सभा का जो भाग टोरी है, उसका निर्माण जॉर्ज का काम जानना चाहिए ।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७६०	जॉर्ज तृतीय का सिंहासनारोहण
१७६१	पिट का त्यागपत्र
१७६३	पेरिस की संधि
१७६५	स्टांप-ऐक्ट
१७६८	विल्कीज़-विद्रोह
१७७०	नॉर्थ का सचिव-तंत्र राज्य
१७७५	लैक्सिंगटन तथा बंकर-हिल का युद्ध
१७७७	साराटोगा का युद्ध
१७८२	जर्मन की विजय, आयर्लैंड की नियामक स्वतंत्रता
१७८३	वर्सेलीज़ की संधि, पिट का सचिव-तंत्र राज्य

चतुर्थ परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय—फ़्रांस की क्रांति तथा आयर्लैंड का इँगलैंड से मिलना (१७८९—१८०२)

फ़्रांस की क्रांति

योरप के इतिहास में फ़्रांस की क्रांति-जैसी घटनाएँ बहुत ही कम होंगी। लुई चौदहवें के दिनों में फ़्रांस की अंदरूनी हालत अच्छी न थी। राजा स्वेच्छा-पूर्वक प्रजा का शासन करता था। ज़मींदार (उच्च-कुलवाले) तथा पादरी लोग राज्य-कर से मुक्त थे। इससे सारे कर का भार साधारण प्रजा तथा किसानों पर जाकर पड़ता था। बड़े-बड़े ताल्लुक़ेदार लोग साधारण असामियों से बेगार लिया करते थे। ग़रीब किसानों को ताल्लुक़ेदारों से किसी प्रकार का भी लाभ नहीं था। बड़े-बड़े पादरी लोग चर्चों की संपत्ति से खूब लाभ उठाते थे। छोटे-छोटे उपदेशक तथा पादरी दिन-भर काम करते थे, परंतु उनको अपने काम का

उचित भाग भी न मिलता था। इस प्रकार सारा फ़्रांस बड़े-बड़े ताल्लुक़ेदार तथा पादरी और ग़रीब रैयत तथा छोटे-छोटे ग़रीब उपदेशकों में विभक्त था।

लुई चौदहवें के समय में फ़्रांसीसी राज्य की स्वेच्छाचारिता अंतिम सीमा तक जा पहुँची। लुई पंद्रहवें ने उस स्वेच्छाचारिता को और भी भयंकर रूप दे दिया। लुई सोलहवाँ हृदय का अच्छा, किंतु अकर्मण्य था। इसलिये वह उस असंतोष को जिसे उसके पूर्ववर्ती राजों ने जनता में उत्पन्न कर दिया था, दबा न सका, फ़्रांसीसी लोगों ने राज्य की बुराइयों से अपने आपको छुड़ाने का उपाय सोचना शुरू किया।

वालटेयर (Voltaire) तथा उसके संप्रदाय ने विचार की स्वतंत्रता पर ज़ोर दिया। उन्होंने ईसाई-मत पर आक्रमण-पर-आक्रमण करना शुरू किया। रूसो (Rousseou) ने समानता, स्वतंत्रता तथा बंधु-भाव का उपदेश करना शुरू किया। उसने जनता के सम्मुख यह रक्खा कि वह राज्य राज्य नहीं है, जो जनता का प्रतिनिधि न हो।

इन विचारकों के विचार सारे योरप में फैलने लगे। फ़्रांस में तो इन विचारों के कारण आग ही भड़क गई। इस आग को बुझाने के लिये लुई सोलहवें ने १७८९ की ५ मई को जनता के प्रतिनिधियों की एक सभा बुलाई। यह तिथि संसार के इतिहास में बहुत ही महत्त्व-पूर्ण है; क्योंकि इस तिथि से फ़्रांस की क्रांति का आरंभ समझा जाता है।

फ़्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा ने अपने को जातीय सभा के नाम से पुकारना शुरू किया। इसने देश की एक नई शासन-पद्धति तैयार की। सभा के सभ्य बहुत ही उदार तथा विचारशील थे। उन पर रूसो के विचारों का सिक्का जमा हुआ था। उनमें दोष केवल यही

एक था कि वे आदर्शवादी थे, और शासन के कार्य को नहीं जानते थे। इन्होंने नवीन शासन-पद्धति के अनुसार सारे फ़्रांसीसियों को समान अधिकार दे दिए, और देश में राजा की शक्ति को बहुत ही कम कर दिया। इन्होंने लोगों को धार्मिक मामले में स्वतंत्रता दी, और सबके लिये एक-से ही राज्य-नियम बनाए। धर्म के मामले में इन्होंने रोम से बिलकुल ही संबंध तोड़ लिया।

लुई सोलहवें को यह कब पसंद था? अतः वह इस शासन से अपने को बचाने का यत्न करने लगा। फ़्रांसीसी लोग भी बहुत ही अधिक सावधान थे। अतः उन्होंने राजा की एक भी चाल न चलने दी। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि राज-काज में जनता का हाथ बहुत ही अधिक बढ़ गया, और जनता ने राजा के स्थान पर स्वेच्छाचारी का रूप धारण किया।

पेरिस के लोगों ने बैस्टिल-नामक प्रसिद्ध जेल को तोड़ डाला, और राजनीतिक अपराधियों को छुड़ा लिया। जनता ने राजा को तथा सभा को पेरिस में रहने के लिये बाध्य किया। १७९३ में इस नवीन शासन-पद्धति को भी लोगों ने न माना, और कुछ स्वतंत्रता-प्रिय लोगों ने एक नए ढंग की शासन-पद्धति बनाई। ये लोग जैकोबिन (Jacobins) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्होंने राजा तथा रानी पर अभियोग चलाया, और उनको मृत्यु-दंड दिया। बड़े-बड़े पादरी तथा ताल्लुक़ेदारों को ढूँढ़-ढूँढ़कर मारा गया। ईसाई-मत यही समझा गया कि एक ईश्वर की उपासना की जाय, और जो बुद्धि कहे, वही ठीक है। जो लोग फ़्रांसीसी क्रांति के विरुद्ध थे, उनको बुरी तरह से मारा गया। यह सब होने पर राज-दल के लोग योरप की अन्य रियासतों में भाग गए, और उन रियासतों को फ़्रांसीसी क्रांति बंद करने के लिये प्रेरित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सारे योरप में लड़ाई छिड़ गई।

जर्मनी ने सारे योरप में यह घोषणा कर दी कि वह फ़्रांस में राज-तंत्र स्थापित करने के लिये तैयार है, पर शर्त यह है कि योरप के अन्य राष्ट्र उसको सहायता दें। जो लोग फ़्रांस की क्रांति के पक्ष में थे, उन्होंने अन्य योरपियन राष्ट्रों की प्रजा को भी क्रांति करने के लिये भड़काना शुरू किया। १७९२ में फ़्रांस ने आस्ट्रिया तथा प्रुशिया से लड़ाई शुरू कर दी। मित्र-दल ने फ़्रांस पर आक्रमण शुरू कर दिया। जैकोबिन लोगों ने राजा की हत्या करके प्रतिनिधि-तंत्र राज्य की रक्षा के लिये मित्र-दल से लड़ना शुरू किया। ये ऐसी वीरता से लड़े कि मित्र-दल के छक्के छूट गए। राइन-नदी तथा आल्प्स-पहाड़ तक फ़्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा का राज्य फैल गया।

इँगलैंड तथा फ़्रांसीसी क्रांति

शुरू-शुरू में इँगलैंड की फ़्रांसीसी क्रांति से सहानुभूति थी; क्योंकि वह स्वयं भी प्रतिनिधि-तंत्र राज्य द्वारा शासित होता था। महामंत्री पिट फ़्रांसीसी क्रांति के पक्ष में था। फ़ॉक्स ने वैस्टिल के पतन पर ये शब्द कहे थे कि "संसार में कितना बड़ा तथा अच्छा काम हुआ है।" स्थान-स्थान पर इँगलैंड में ऐसी सभाएँ स्थापित हो गईं, जो कि क्रांति-संबंधी समाचार जनता में फैलाने लगीं। बहुत-से अँगरेज़ों ने अपनी पार्लियामेंट में संशोधन करना चाहा, और बहुतों ने तो उसको फ़्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा के ढंग पर ही बदलना चाहा। इससे इँगलैंड में क्रांति हो जाने की संभावना हो गई। इस क्रांति से डरकर एडमंड बर्क ने फ़्रांसीसी क्रांति के विरुद्ध लिखना शुरू किया। उसका इसी मामले में अपने पुराने मित्र फ़ॉक्स से झगड़ा हो गया। इन्हीं दिनों में फ़्रांसीसी क्रांति के बुरे फल लोगों के सामने आने लगे। जातीय सभा ने जो-जो अत्याचार फ़्रांस में किए, उनको सुनकर अँगरेज़-जनता का हृदय काँप

उठा। लोगों ने बर्क का साथ देना शुरू कर दिया। इस पर पिट ने १७६४ में बर्क के कुछ साथियों को अपने सचिव मंडल में ले लिया। पिट ने भी इँगलैंड में क्रांति के भावों का फैलना रोकना शुरू किया। बेचारा फ़ॉक्स अपने विचारों में अकेला पड़ गया। अँगरेज़-जनता ने उसका साथ न दिया।

पिट ने धीरे-धीरे अपनी विदेशी नीति को बदलना शुरू किया। उसने घर में संशोधनों का करना क़तई बंद कर दिया। उसने हीबियस कार्पस ऐक्ट को पास होने से रोक दिया। ऐलीन (Aliens) ऐक्ट के द्वारा उसने विदेशियों पर कड़ी नज़र रखनी शुरू की। यह इस-लिये कि कहीं वे इँगलैंड में क्रांति के भावों को न फैला दें। बहुत-से ऐसे अँगरेज़-नेताओं को उसने क़ैद में डाल दिया, जो कि फ्रांसीसी क्रांति के भावों को इँगलैंड में फैलाना चाहते थे, और जिन्होंने इसी उद्देश्य से नई-नई सभाएँ स्थापित की थीं। यहीं पर इति न करके पिट ने एक क़ानून के द्वारा राजा के विरुद्ध कोई बात कहने तक को राज-द्रोह ठहराया। जो चूँ भी करता था, उस-को वह कड़ा दंड देता था।

इँगलैंड का फ़्रांस से युद्ध

क्रांति से डरते हुए भी इँगलैंड ने फ़्रांस से युद्ध करने का कुछ समय तक इरादा न किया। बर्क ने फ़्रांस से युद्ध शुरू करने के लिये पिट को बहुत ही अधिक समझाया-बुझाया, पर पिट ने कहना न माना। किंतु अपने विचार पर पिट देर तक स्थिर न रह सका। फ़्रांस के हस्तक्षेप से तंग आकर उसने १७६३ में फ़्रांस से युद्ध छेड़ दिया। पिट का ख़याल था कि यह युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायगा। परंतु ऐसा न हुआ। बर्क सदा यही कहता था कि यह युद्ध बड़ा भयंकर होगा, और बहुत दिनों तक चलेगा। दैवी-घटना से बर्क का कहना अक्षरशः ठीक निकला।

पिट योरप की रियासतों को, फ़्रांस के विरुद्ध, आर्थिक सहायता देता रहा। उसने अपने सैनिकों की शिक्षा में वह धन नहीं ख़र्च किया। इँगलैंड के युद्ध में पड़ने से जैकोबिन लोगों को कुछ भी हानि न पहुँची। वे पहले ही की तरह विजय प्राप्त करते रहे। उन्होंने जॉर्ज तृतीय के पुत्र फ़्रेडरिक को बुरी तरह से हरा दिया, और सारा हालैंड जीत लिया। पिट ने जैकोबिन लोगों के विरुद्ध जो सहायता पहुँचाई, उस सहायता को नेपोलियन बोनापार्ट (सेनापति) ने फ़्रांस तक नहीं पहुँचने दिया।

१७९५ में ब्रिटनी के अंदर अँगरेज़ों की जो सेनाएँ पहुँचीं, वे भी सफलता न प्राप्त कर सकीं। १७९५ में फ़्रांस से जैकोबिन लोगों का राज्य उठ गया, और वहाँ डाइरेक्टरी का राज्य शुरू हुआ। फ़्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा से प्रुशिया, स्पेन तथा अन्य योरप के राष्ट्र डर गए। हालैंड तथा स्पेन ने मिलकर इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। १७९६ में नेपोलियन बोनापार्ट ने मुख्य सेनापति का पद ग्रहण किया, और इटली से आस्ट्रिया को निकालकर इटली को फ़्रांस के साथ मिला लिया। प्रुशिया पहले ही युद्ध से अलग हो चुका था। इससे अब इँगलैंड अकेला रह गया। योरप का एक भी राष्ट्र उसका साथी न रहा। इँगलैंड अपने सभी प्रयत्नों में असफल होता रहा। उसके पास सिर्फ़ जहाज़ और रुपए ही थे। पिट ने योरप की रियासतों को फ़्रांस के विरुद्ध लड़ाने के लिये इतना सोना दिया कि इँगलैंड में सोने की बहुत कमी हो गई। इस कारण पार्लियामेंट की आज्ञा प्राप्त करके बैंक ऑफ़् इँगलैंड ने लोगों को नक़द रुपए देना बंद कर दिया। सारे इँगलैंड में बैंक-नोट चलने लगे। आश्चर्य तो यह था कि बैंक-नोटों का दाम नाम-मात्र को ही गिरा।

शुरू-शुरू में, सामुद्रिक युद्धों में, इँगलैंड ही विजयी रहा। फ़्रांस

ने समुद्र पर से भी इँगलैंड का प्रभुत्व हटाने के लिये हालैंड तथा स्पेन के जहाज़ी बेड़े से सहायता ली, और इँगलैंड पर आक्रमण करने का इरादा किया। १७९७ की फ़रवरी में नेल्सन ने फ़्रांसीसी बेड़े को बुरी तरह से परास्त किया, और इँगलैंड को बचा लिया। तब फ़्रांस ने आस्ट्रिया का सहारा लिया, और वह इँगलैंड को कुचलने की तदबीर सोचने लगा। उसने एक सेना आयर्लैंड में भेजने के लिये और नेपोलियन की सेना को इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये तैयार किया। १७९८ में मिसर में विद्रोह हो गया। बोनापार्ट ने माल्टा-द्वीप को अपने क़ब्ज़े में कर लिया, और मिसर में जा धमका। सर होरेशियो नेल्सन ने अबूकीर की खाड़ी में फ़्रांसीसियों के बेड़े को नष्ट कर दिया। यह युद्ध नील-नदी के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इसी युद्ध से मध्य-सागर पर इँगलैंड का प्रभुत्व स्थापित हो गया, और ऐसा मालूम पड़ने लगा कि नेपोलियन मिसर ही में अवरुद्ध रहेगा। १७९९ में मैसूर के राजा टीपू सुल्तान को मार्क्विस वैलेस्ली ने परास्त किया। टीपू नेपोलियन का मित्र था। अतः उसकी पराजय के कारण भारतवर्ष सदा के लिये फ़्रांस के हाथ से निकल गया।

१७९९ में योरप के अंदर फिर लड़ाई छिड़ गई। पिट ने आस्ट्रिया, रूस तथा अन्य कुछ रियासतों को अपने साथ मिला लिया, और फ़्रांस के विरुद्ध लड़ना शुरू किया। एक ही वर्ष की लड़ाई में फ़्रांस ने उन सब रियासतों को खो दिया, जिनको उसने पहले जीत लिया था। ठीक इसी समय नेपोलियन बोनापार्ट फिर फ़्रांस में पहुँच गया। १७९९ में उसने डाइरेक्टरी के राज्य का अंत कर दिया, और एक नए ढंग की शासन-पद्धति बनाई, जिसके अनुसार जनता की शक्ति नाम-मात्र को ही रह गई। जनता क्रांति से ऊब चुकी थी। अतएव उसने ख़ुशी-ख़ुशी नेपोलियन का शासनाधिकार

स्वीकार कर लिया। नेपोलियन ने रूस के ज़ार को इँगलैंड से जुदा हो जाने के लिये प्रेरित किया। उसने आल्प्स को नाँघकर आस्ट्रिया को मारेंगो के युद्ध (१८०० की १४ जून) में बुरी तरह से परास्त किया, और इटली को स्वाधीन कर दिया। आस्ट्रिया ने फ़्रांस से लूनेविल की संधि की और नीदरलैंड्स तथा राइन पर फ़्रांसीसियों का प्रभुत्व मान लिया।

इस समय इँगलैंड को फिर अकेले ही रहना पड़ा। रूस के ज़ार ने बोनापार्ट के कहने पर स्वीडन तथा डेनमार्क को भी इँगलैंड के विरुद्ध भड़का दिया। इस पर इँगलैंड ने बाल्टिक-समुद्र की ओर अपना जहाज़ी बेड़ा रवाना किया, और कोपन हेगन को फ़तह करके डेनमार्क-वासियों को संधि के लिये बाध्य किया। ठीक इसी अवसर पर रूस का ज़ार मारा गया। तब अलेग्ज़ैंडर प्रथम रूस का ज़ार बनकर गद्दी पर बैठा। इसने फ़्रांस का साथ छोड़ दिया। इसके साथ छोड़ते ही नेपोलियन अँगरेज़ों को नीचा दिखाने से निराश हो गया। उसको यह विश्वास हो गया कि अब वह अँगरेज़ों के जहाज़ी बेड़े को नष्ट न कर सकेगा।

अडिंगटन का सचिव-तंत्र राज्य और आमीन्स की संधि
(१८०१-१८०२)

नेपोलियन बोनापार्ट सारे योरप का प्रभु था, और इँगलैंड समुद्र का। दोनों ही एक दूसरे को हानि पहुँचाने में असमर्थ थे, दोनों ही लड़ाई करते-करते थक चुके थे। इँगलैंड तथा फ़्रांस संधि के लिये कुछ समय तक पत्र-व्यवहार करते रहे। १८०१ में पिट ने इस्तीफ़ा दिया। पिट के साथ ही सभी योग्य तथा बुद्धिमान् अँगरेज़ों ने राज्य-पद छोड़ दिए। अडिंगटन ने बड़ी मुश्किल से राज्य-कार्य सँभाला। उसने टोरी-दल के लोगों को ही अपने सचिव-मंडल में स्थान दिया। १८०२ में आमीन्स की संधि (Treaty of Amiens)

हुई। इस संधि के अनुसार माल्टा सेंट जॉन के नाइट्स को दे दिया गया। हालैंड ने लंका-द्वीप अँगरेज़ों के सिपुर्द किया। अँगरेज़ों ने जो-जो फ़्रांसीसी प्रदेश जीते थे, वे सब फ़्रांस को लौटा दिए।

फ़्रांसीसी क्रांति के समय, युद्ध के दिनों में, आयर्लैंड ने इँगलैंड को बहुत ही तंग किया। १७८२ में आयर्लैंड की अपनी पार्लियामेंट थी। इस पार्लियामेंट पर अँगरेज़ों का नियंत्रण न था। इसके सदस्य प्रोटेस्टेंट लोग ही थे। इससे आयर्लैंड के कैथलिक नाराज़ थे। उनको इस सभा से कुछ भी सहानुभूति न थी। सभा में रिश्वत के ज़ोर से राजा के मित्र ही प्रतिनिधि बनकर पहुँचते थे। इस कारण यह सभा जनता की प्रतिनिधि न थी।

फ़्रांसीसी क्रांति का आयर्लैंड पर बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा। १७८१ में वहाँ थियोबाल्ड उल्फ़ टोन (Theobold Wolfe Tone) ने 'सम्मिलित आयरिश-समिति' (United Irishmen) नाम की एक सभा स्थापित की। इस सभा के सदस्यों ने अपने को इँगलैंड से छुड़ाने के लिये फ़्रांसीसी क्रांति के तरीक़े काम में लाना शुरू किया। जो लोग इस सभा के विरुद्ध थे, उन्होंने आरेंज-समिति नाम की एक सभा बनाई, और सम्मिलित आयरिश-समिति का विरोध करना शुरू किया। इन सब विरोधों के होने पर भी सम्मिलित आयरिश-समिति की ओर आयरिश लोगों का झुकाव अधिक था। पिट के व्यवहारों से यह झुकाव और भी बढ़ गया।

उल्फ़ टोन तथा उसके साथियों ने फ़्रांस से सहायता प्राप्त करनी चाही। नेल्सन की सामुद्रिक विजयों के कारण फ़्रांसीसी राज्य उनको सहायता न पहुँचा सका। सहायता न मिलने पर भी १७६६ में आयर्लैंड में गृह-युद्ध हो गया। अँगरेज़ों ने विद्रोहियों को बड़ी मुश्किल से वाइनगर-हिल के युद्ध में पराजित किया। पिट ने लॉर्ड कॉर्नवालिस को आयर्लैंड भेजा। उसने पिट को सलाह दी कि

आयर्लैंड की पार्लियामेंट तोड़ दो, और अपने यहाँ की पार्लियामेंट में वहाँ के कुछ सभ्यों को स्थान दे दो। पिट को यह सलाह पसंद आई। उसने आयर्लैंड के कैथलिकों को मिलाने के लिये उन्हें प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार दे देने का प्रण किया। आयरिश प्रोटेस्टेंटों को घूस, पेंशन आदि अनुचित साधनों के द्वारा पिट ने वश में किया, और १८०० में आयरिश पार्लियामेंट को सदा के लिये तोड़ दिया।

ऐक्ट ऑफ् यूनियन के अनुसार ४ आयरिश पादरी और २८ आयरिश लॉर्ड लॉर्ड-सभा के सभ्य बनाए गए, और १०० आयरिश सभ्यों को पार्लियामेंट में बैठने का अधिकार मिला।

पिट ने कैथलिक लोगों पर से कड़े नियम हटाने का प्रयत्न किया; परंतु इसमें वह सफल न हो सका। उनको प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार न मिला। इसी झगड़े में पिट ने इस्तीफ़ा दे दिया, और अडिंगटन को प्रधान-मंत्री बनने का अवसर मिला।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७८९	फ़्रांसीसी क्रांति का आरंभ
१७९३	इँगलैंड का फ़्रांस से युद्ध
१७९८	नील का युद्ध—आयरिश-विद्रोह
१७९९	नेपोलियन का प्रथम कान्सल बनना
१८००	आयर्लैंड का इँगलैंड से जुड़ना
१८०१	पिट का इस्तीफ़ा देना
१८०२	आमीन्स की संधि

पंचम परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा नेपोलियन

(१८०२—१८२०)

नेपोलियानिक युद्ध का आरंभ

आमीन्स की संधि बहुत दिनों तक क़ायम न रह सकी। नेपोलियन अँगरेज़ों का शत्रु था। वह सिर्फ़ कुछ दम लेना चाहता था। संधि के कुछ ही दिनों के बाद उसने स्वेच्छाचारी बनने का प्रयत्न शुरू कर दिया। पोप से संधि करके उसने फ्रांस में रोमन कैथलिक-मत फैलाने का यत्न किया, पीडमांट तथा परमा को अपने हाथ में किया, और स्विटज़लैंड को फ़तह करने के लिये अपनी सेनाओं को रवाना किया। उस समय योरप का कोई भी राष्ट्र उसकी प्रबल शक्ति का सामना न कर सकता था। रूस का ज़ार अलेग्ज़ेंडर उसका परम मित्र था। जर्मनी में भीतरी गड़बड़ थी। लूनेविल की संधि करके जर्मनी का नए सिरे से संगठन किया गया। आस्ट्रिया तथा जर्मनी में परस्पर झगड़ा था। सारांश यह कि नेपोलियन को योरप के राष्ट्रों से कुछ भी भय न था।

योरप से निश्चिंत होकर नेपोलियन ने अँगरेज़ों से मिसर छीन लेना चाहा, और भारत के ऊपर से अँगरेज़ों का प्रभुत्व हटाने के लिये उसने मरहठों को भी भड़काया। इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये वह ख़ूब ज़ोर-शोर से तैयारी करने लगा। उसने इँगलैंड से माल्टा-द्वीप ख़ाली कर देने के लिये कहा। पर अँगरेज़ों ने यह न माना। इस पर उसने अँगरेज़ों को अन्य उपायों से तंग करना शुरू किया। १८०३ के मई-मास में ब्रिटन ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

यह युद्ध १८०३ से १८१४ तक चलता रहा। अँगरेज़ों ने योरप

के राष्ट्रों को नेपोलियन से लड़ाने की बहुत कुछ कोशिश की; परंतु वे इसमें सफलता नहीं पा सके। इसमें संदेह नहीं कि नेपोलियन भी अँगरेज़ों को परास्त नहीं कर सका; क्योंकि इँगलैंड में जातीयता का भाव उत्पन्न हो चुका था।

नेपोलियन ने एंटवर्प से लीहैव्र तक जहाज़-ही-जहाज़ जमा कर दिए। बोलोन में उसने अपनी छावनी डाली, और फिर वह इँगलैंड पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगा। उसने आयर्लैंड में विद्रोह खड़ा करने का यत्न किया; परंतु पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त कर सका। भारत में भी वह अँगरेज़ों को नीचा नहीं दिखा सका। १८०३ में लॉर्ड वेलेस्ली ने मरहठों को, असायी तथा अरगाँव के युद्धों में, बुरी तरह से हराया। दिल्ली को उसने अपने हाथ में कर लिया। उसने सब्सिडरी (सहायक) संधियों के द्वारा भारतीय राजों को इस प्रकार जकड़ लिया कि वे अशक्त हो गए। उनमें अँगरेज़ों के विरुद्ध सिर उठाने की ताक़त ही नहीं रह गई। अँगरेज़ लोग नेपोलियन के आक्रमण से अपने को बचाने में ही पूर्ण रूप से दत्तचित्त थे। अडिंगटन का सचिव-तंत्र राज्य बहुत ही कमज़ोर था। लोगों ने पिट को महामंत्री बनाने के लिये शोर मचाना शुरू किया। मई, १८०४ में पिट ने राज-काज सँभाला, और इँगलैंड की स्वतंत्रता को बचाने के उपाय सोचने लगा।

विलियम पिट का द्वितीय सचिव-तंत्र राज्य
(१८०४-१८०६)

पिट ने अपने मंत्रि-मंडल में सभी तरह की योग्यता रखनेवाले आदमियों को शामिल कर लिया। लॉर्ड अडिंगटन ने भी उसका पूरा साथ दिया। उसने पिट की मातहती में कार्य करना स्वीकार किया। पिट के राज-काज सँभालते ही अँगरेज़ों ने तैयारी करनी शुरू की।

३ लाख के लगभग अँगरेज़ों ने अपने को युद्ध के काम में अर्पण कर दिया, और अपने को युद्ध-स्वयंसेवक के नाम से प्रसिद्ध किया।

नेपोलियन ने १८०४ में अपने फ्रांस का सम्राट् होने की घोषणा कर दी। वह एक साल तक अँगरेज़ों पर आक्रमण करने का अवसर देखता रहा ; परंतु उसको ऐसा अवसर नहीं मिला। तब लाचार होकर उसने अँगरेज़ों के जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण करने का इरादा किया। उसने स्पेन के राजा चार्ल्स चतुर्थ को जहाज़ी बेड़ा तैयार करने के लिये विवश किया। चार्ल्स ने भी यह मंज़ूर कर लिया। इस पर अँगरेज़ों ने दिसंबर, १८०४ में स्पेन से युद्ध छेड़ दिया। १८०५ में संसार-प्रसिद्ध ट्राफ़ल्गर की लड़ाई हुई, और उसमें नेल्सन ने स्पेन के जहाज़ी बेड़े को तहस-नहस कर दिया। इस सामुद्रिक विजय के बाद अँगरेज़ निश्चिंत हो गए। उनका समुद्र पर एकाधिपत्य स्थापित हो गया। तब से अब तक सारे समुद्र के मालिक वे ही हैं। १८०५ में पिट ने पुनः योरपियन राष्ट्रों को नेपोलियन का विरोधी बना दिया। रूस, आस्ट्रिया, नेपल्स तथा स्वीडन, ये देश फ्रांस के विरुद्ध होकर इँगलैंड से मिल गए। २ दिसंबर, १८०५ को नेपोलियन ने आस्ट्रिया और रूस की सम्मिलित सेनाओं को आस्टर्लिज़ (Austerlitz)-नामक स्थान पर बुरी तरह से शिकस्त दी, और प्रेसबर्ग की संधि करने के लिये लाचार किया। इटली, हालैंड आदि देशों में उसने अपने परिवार के लोगों को शासक बना दिया। जर्मनी की छोटी-छोटी रियासतों को राइन के संगठन (Confederation of Rhine) में संगठित करके उनका शासन वह स्वयं करने लगा। आस्ट्रिया के राजा ने भी अपने को रोमन सम्राट् की जगह अब आस्ट्रिया का सम्राट् कहना शुरू किया।

योरपियन राष्ट्रों के नेपोलियन के अधीन हो जाने से पिट को

बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। आस्टर्लिज़-युद्ध के समाचार ने उसे सर्वथा निराश कर दिया । २३ जनवरी, १८०६ को पिट ये शब्द कहता हुआ मर गया—"हा, मातृभूमि, मैं तुझे किस अवस्था में छोड़े जा रहा हूँ !" पिट की मृत्यु ने इंगलैंड को पूरी शिक्षा दी। मंत्रियों ने आपस में मिलकर काम करना शुरू किया। फ़ॉक्स महामंत्री बना। उसने इँगलैंड के सभी योग्य व्यक्तियों को मंत्रि-मंडल में एकत्र किया। इसी कारण फ़ॉक्स के इस मंत्रि-मंडल को सर्वयोग्यता के मंत्रि-मंडल नाम से पुकारा जाता है।

सर्वयोग्यता का मंत्रि-मंडल (१८०६-१८०७)

Ministry of All the Talents.

फ़ॉक्स नेपोलियन का भक्त था, अतएव उसने नेपोलियन से संधि करने का यत्न किया। परंतु वह इस यत्न में कृतकार्य नहीं हो सका। दैवसंयोग से १२ सितंबर के दिन फ़ॉक्स की मृत्यु हो गई। १८०७ में दास-व्यापार (Slave Trade) को रोकने के लिये क़ानून पास किया गया। इसी वर्ष ग्रेनविल ने इस्तीफ़ा दे दिया; क्योंकि वह आयर्लैंड में कैथलिकों के सदृश ही अँगरेज़-कैथलिकों को सेना में स्थान देना चाहता था। पर जॉर्ज को यह पसंद न था। इसी कारण ग्रेन-विल को मंत्री का पद छोड़ना पड़ा। इस घटना के अनुसार जॉर्ज ने टोरी-दल के लोगों को ही राज्याधिकार दिया, और ह्विग-लॉर्डों को संपूर्ण उच्च राजकीय सेवाओं से पृथक् कर दिया।

टोरियों का साचिव-तंत्र राज्य (१८०७-१८३०)

१८०७ से १८०९ तक पोर्टलैंड का ड्यूक मुख्य मंत्री के पद पर रहा। इसकी मातहती में पिट के शिष्य केनिंग तथा कासलरे (Castlereagh) मुख्य-मुख्य पदों पर नियुक्त रहे। १८०९ में केनिंग तथा कासलरे आपस में लड़ पड़े, और पोर्टलैंड भी मृत्यु को प्राप्त हुआ। इस पर जॉर्ज ने स्पेंसर पर्सीवल को मुख्य मंत्री

बनाया। १८१२ तक यही मुख्य मंत्री के तौर पर काम करता रहा। इसके बाद लॉर्ड लिवर्पूल १८२७ तक मुख्य मंत्री के पद पर काम करता रहा। १८२७ में जॉर्ज पागल हो गया। उसके स्थान पर प्रिंस ऑफ् वेल्स काम करता रहा। इसने अपने पिता को तंग करने में कुछ उठा नहीं रक्खा।

इन इतने वर्षों में जनता का ध्यान लड़ाई की ओर ही था। टोरी-मंत्रियों ने बहुत समय तक नेपोलियन से कोई बड़ी लड़ाई नहीं छेड़ी। नेपोलियन ने १४ ऑक्टोबर, १८०६ को प्रशियन सेनाओं को जीता, और रूस को फ़्रीडलैंड के युद्ध में बुरी तरह से परास्त किया। १८०७ में रूस के ज़ार ने नेपोलियन से टिलसिट की संधि की, और इँगलैंड का साथ छोड़ दिया। १८०७ से १८१२ तक नेपोलियन तथा अलेग्ज़ैंडर की मित्रता एक-सी ही बनी रही।

इन विजयों के अनंतर नेपोलियन ने सारे योरप में इँगलैंड का माल जाना रोक दिया। उसकी यह कारवाई 'कांटीनेंटल सिस्टम' के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इससे सारे योरप में खाने-पीने का चीज़ों का मूल्य बहुत अधिक बढ़ गया। इँगलैंड ने भी नेपोलियन से परेशान होकर सारे योरपियन राष्ट्रों के उपनिवेशों को अपने क़ब्ज़े में कर लिया, और इस प्रकार अमेरिका के हाथ से निकल जाने का घाटा पूरा कर लिया।

टिलसिट की संधि के बाद भी पुर्तगाल ने इँगलैंड का साथ नहीं छोड़ा। उसने नेपोलियन के कांटीनेंटल सिस्टम को नहीं माना। इस पर नेपोलियन ने उसको जीतकर फ़्रांस में शामिल कर लिया। पुर्तगाल को फ़्रांस के साथ मिलाने के कुछ समय बाद स्पेन के राजा और उसके लड़के में झगड़ा हो गया। दोनों ने नेपोलियन को फ़ैसला करने के लिये बुलाया। नेपोलियन ने दोनों ही को गद्दी से उतारकर अपने भाई को स्पेन का

राजा बना दिया। इस पर सारा स्पेन उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। फ़्रांसीसी सेनाएँ स्पेन की जनता से बुरी तरह हारीं। अँगरेज़ों को भी नेपोलियन से बदला लेने का मौक़ा मिल गया। वे उस पर स्थल तथा जल, दोनों ओर से आक्रमण करने लगे। सर आर्थर वेलेस्ली ने पुर्तगाल में प्रवेश किया, और वीमीरियो के युद्ध में फ़्रांसीसी सेनापति को बुरी तरह नीचा दिखाया। इसी बीच में अँगरेज़ी-सेना का मुख्य सेनापति हेरी वार्राई बनाया गया। यह बिलकुल ही नालायक़ था। इसने सिंट्रा की संधि की, और पुर्तगाल से फ़्रांसीसी सेना को बाहर निकाल दिया। १८०८ में अँगरेज़ों ने सर जॉन मूर को एक बड़ी सेना के साथ स्पेन भेजा। तब नेपोलियन ने स्वयं आकर स्पेन पर आक्रमण किया, और सारे स्पेन को फ़तह कर लिया। फ़्रांसीसियों ने मूर का पीछा किया। कोरूना के युद्ध (Battle of Corunna) में मूर की मृत्यु हो गई। अँगरेज़ी-सेना बड़ी कठिनाई से अपने जहाज़ों पर पहुँच सकी।

नेपोलियन स्पेन को छोड़कर आस्ट्रिया की ओर बढ़ा; क्योंकि आस्ट्रिया ने भी फ़्रांस के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे। इँगलैंड ने उसे भी सहायता पहुँचाने का प्रयत्न किया। दो लाख के लगभग अँगरेज़ी-सेना युद्ध के लिये तैयार हुई। एंटवर्प पर आक्रमण किया गया। परंतु वहाँ सफलता न मिली। नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर विजय प्राप्त की, और उसको संधि करने के लिये लाचार किया।

अँगरेज़ी मंत्रि-मंडल ने १८०९ में आर्थर वेलेस्ली को प्रधान सेनापति बनाया। वह बहुत ही योग्य था, बहुत-से युद्ध जीत चुका था। उसने २० हज़ार सेना लेकर स्पेन में प्रवेश किया, और टेलावेरा के युद्ध में फ़्रांसीसियों को हराया। इस विजय के इनाम में वेलेस्ली वेलिंगटन का वाइकाउंट बना दिया गया। वेलिंगटन १८१० तक स्पेन में ही रहा, और बड़ी सावधानी से अपने को फ़्रांसीसियों

के आक्रमण से बचाता रहा। १८११ में उसने सेनासहित फ़्रांसीसी सेनापति को परास्त किया। इसी साल मार्शल वी० देशफ़ोर्ड ने अल्बूरोश-नामक स्थान पर फ्रांसीसियों को नीचा दिखाया। इन विजयों का परिणाम यह हुआ कि अँगरेज़ स्पेन तथा पुर्तगाल में टिके रहे।

१८१२ में फ़्रांस तथा रूस की संधि टूट गई। नेपोलियन ने ५ लाख फ़ौज लेकर रूस पर आक्रमण किया। वह मास्को तक जा पहुँचा; परंतु अंत में उसको लौटना पड़ा। शीत बहुत ही अधिक पड़ने के कारण उसकी फ़ौज के बहुत-से आदमी मर गए। इसी दिन से नेपोलियन के भाग्य ने पलटा खाया।

वेलिंगटन ने शीघ्र ही स्पेन तथा पुर्तगाल को फ़्रांसीसियों के पंजे से छुड़ा दिया। नेपोलियन की सेनाएँ लिपज़िग के युद्ध में जर्मनी से पराजित हुईं। १८१४ में फ़्रांस पर रूस, जर्मनी तथा इँगलैंड ने मिलकर चढ़ाई कर दी, और पेरिस को फ़तह कर लिया। नेपोलियन को क़ैद करके ऐल्बा के द्वीप में भेज दिया गया। पेरिस की प्रथम संधि की शर्तें तैयार की गईं।

इन्हीं दिनों अमेरिका ने इँगलैंड से असंतुष्ट होकर उससे युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध का मुख्य कारण यह था कि इँगलैंड ने अमेरिकन जहाज़ों को फ़्रांस में जाने से रोक दिया था। अमेरिका ने कनाडा पर आक्रमण किया; परंतु जीत न सका। रूस के ज़ार ने अँगरेज़ों तथा अमेरिकनों की लड़ाई को बंद करा दिया, और दोनों जातियों में समझौता करा दिया।

मार्च, १८१५ में नेपोलियन ऐल्बा से निकलकर फ़्रांस पहुँच गया। फ़्रांस ने उसका हृदय से स्वागत किया। नेपोलियन ने बहुत ही जल्दी फुर्ती के साथ तैयारी और चढ़ाई करके प्रुशिया की सेनाओं को लिग्नी पर परास्त किया। वेलिंगटन को भी क्रैटाब्रास-नामक स्थान से पीछे हटना पड़ा। १८ जून, रविवार के दिन वाटर्लू का

जगत्-प्रसिद्ध युद्ध हुआ। नेपोलियन को क़ैद करके सेंट-हेलिना भेज दिया गया। पेरिस की द्वितीय संधि हुई। लुई १८वें को फ़्रांस का राजा बनाया गया। १७९२ में फ़्रांस का जितना राज्य था, उतना ही रह गया। इँगलैंड ने हालैंड से सीलोन तथा केप ऑफ़ गुडहोप ले लिया। मिलान तथा वेनिस पर आस्ट्रिया का राज्य हो गया। प्रशिया को राइन-नदी के बाएँ किनारे की बहुत-सी ज़मीनें दे दी गईं। हनोवर-प्रदेश जॉर्ज चतुर्थ को मिला। पोलैंड को ज़ार ने सँभाल लिया। हालैंड तथा आस्ट्रियन नीदरलैंड आपस में मिला दिए गए। यह सारा योरपियन राष्ट्रों का बटवारा वियना-नगर में किया गया। इस विभाग से योरप की दशा स्थिर न रही; क्योंकि राजों को अपने-अपने स्थानों की चिंता थी।

इस युद्ध में इँगलैंड की बहुत ही अधिक क्षति हुई। सारे देश में राज्य-कर बढ़ गए। जातीय ऋण की कोई हद न रही। अन्न के नियमों (Corn Laws) के कारण नाज बहुत ही महँगा था। फ़्रांसीसी क्रांति से अँगरेज़ इतने डर गए कि वे पार्लियामेंट के सुधारों के नाम से काँपते थे। राज्य ने छः नियम बनाए, जिनके ज़ोर से सभा-समितियों को बिलकुल बंद कर दिया गया। १८२० में जॉर्ज तृतीय की मृत्यु हो गई।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८०३	फ़्रांस से इँगलैंड का युद्ध
१८०४	पिट का द्वितीय सचिव-तंत्र राज्य
१८०५	ट्राफ़लगर का युद्ध
१८०६	पिट तथा फ़ॉक्स की मृत्यु
१८०७	टिलसिट की संधि। टोरियों का सचिव-तंत्र राज्य
१८०८	वीमीरियो का युद्ध
१८०९	टैलावेरा का युद्ध

१८११	अल्कवेरा का युद्ध
१८१२	रूस को नेपोलियन न जीत सका । अमेरिका से युद्ध
१८१४	नेपोलियन का प्रथम अधःपतन
१८१५	वाटर्लू का युद्ध । पेरिस की संधि । वियना की कांग्रेस
१८२०	जॉर्ज तृतीय की मृत्यु ।

षष्ठ परिच्छेद

अठारहवीं सदी में इँगलैंड की व्यावसायिक क्रांति

आर्थिक उन्नति

जॉर्ज तृतीय के राज्याधिरोहण-काल में इँगलैंड एक-मात्र कृषि-व्यापार-प्रधान ही था । जॉर्ज प्रथम के राज्य-काल में इँगलैंड ने संसार का सारा व्यापार अपने हाथ में कर लिया । यूट्रैक्ट तथा एशियंटो की संधि से इँगलैंड का व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया । ब्रिस्टल-नगर के व्यापारियों ने दास-व्यापार से बहुत ही अधिक धन कमाया । धन के लोभ से इस व्यापार को किसी ने भी बुरा नहीं कहा । ईस्ट इंडिया कंपनी की विजय से इँगलैंड के व्यापारियों और सौदागरों को धन कमाने का और अच्छा अवसर प्राप्त हुआ । लंदन, ब्रिस्टल तथा ग्लासगो, ये बहुत बड़े नगर व्यापार ही की बदौलत बन गए । ब्रिटन की व्यापारिक तथा व्यावसायिक उन्नति का आधार शांति या स्वतंत्रता न थी । उसने युद्धों तथा एकाधिकारों के ही द्वारा अपना व्यवसाय बढ़ाया । अमेरिका की स्वतंत्रता के समय यह व्यापार इतना अधिक बढ़ चुका था, इतना बद्धमूल होकर फैल चुका था कि अमेरिका के स्वतंत्र होने पर भी इसकी स्थिति में किसी तरह का अंतर नहीं पड़ा ।

अठारहवीं शताब्दी के पूर्व भाग में इँगलैंड का कपड़े का रोज़गार क्रमशः चमकने और उन्नत होने लगा। पुराने ज़माने के सदृश ही पुराने औज़ारों तथा पुराने ढंगों से अँगरेज़-जुलाहे कपड़े बुनते थे। जॉर्ज तृतीय के राज्य-काल में सामान की उत्पत्ति के नए तरीक़े खोज निकाले गए। चार बड़े-बड़े आविष्कारों के सहारे अँगरेज़ी वस्त्र-व्यवसाय बहुत ही उन्नति कर गया। इसी समय जेम्स वाट ने भाप से चलने-वाले एंजिन में बहुत-से सुधार किए। अतएव एंजिन के ज़रिए ज्यों ही कपड़े वग़ैरह बुनने में इँगलैंड ने उन्नति की, त्यों ही इँगलैंड का वस्त्र-व्यवसाय बहुत तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। जान रोवक् के आविष्कार से इँगलैंड ने लोह-व्यवसाय को बढ़ाया, और चारकोल के द्वारा लोहे को पिघलाना शुरू किया। इसी प्रकार जोशियो वेज-उड के प्रयत्न से नार्थ स्टैफ़ोर्डशायर में बर्तनों का व्यवसाय चमक उठा। इन सब आविष्कारों के सहारे इँगलैंड ने कम ख़र्च पर अच्छी चीज़ें बनाना शुरू कर दिया।

व्यापार-व्यवसाय की उन्नति का सड़कों के साथ घनिष्ठ संबंध हुआ करता है। यही कारण है कि उल्लिखित आविष्कारों के बाद इँगलैंड में पक्की सड़कें तथा पक्के पुल अधिक बनाए जाने लगे। स्थान-स्थान पर डाकख़ाने खुल गए, और बहुत-से नगरों में प्रति-दिन डाक आने-जाने लगी।

पक्की सड़कों के द्वारा भारी सामान इधर-उधर ले जाना कठिन था। अतः लकड़ी की पटरियों पर घोड़ा-गाड़ियाँ चलाई जाने लगीं। यह आविष्कार सबसे पहले नार्थंबरलैंड तथा डर्हम में हुआ। यहाँ कोल की खानें थीं। कोल का साधारण सड़कों के द्वारा समुद्र तक पहुँचना कठिन था। धीरे-धीरे लकड़ी की पटरियों के स्थान पर लोहे की पटरियों का प्रयोग किया जाने लगा। उन पर भारी-से-भारी सामान इधर-उधर ले जाया जाने लगा। इँगलैंड

में लोहे की पटरियों का प्रयोग सबसे पहले १७७६ में हुआ था।

लोहे की पटरियाँ या रेलें बनाना, उन पर घोड़ा-गाड़ी चलाना और इधर-उधर सामान ले जाना बहुत ही सुगम था; परंतु इस कार्य में ख़र्च अधिक पड़ता था। यही काम नहरों के द्वारा भी हो सकता था। नहरों के बनाने में एक तो ख़र्च कम था, दूसरे नौकाओं द्वारा पदार्थों के इधर-उधर ले जाने में देश का नौ-व्यवसाय उन्नत होने की आशा थी। नहरों के सहारे देश शीघ्र ही नौ-शक्ति-संपन्न बन सकता था। इसी कारण १७२० में एक राज-नियम बनाकर उसके द्वारा मंचेस्टर तथा इर्वेल-नदी की नहरें बनाया जाना स्वीकार किया गया। इसी प्रकार एयर तथा कैल्डर के द्वारा नौ-व्यापार शुरू करने से यार्कशायर के वेस्टराइडिंग का व्यापार बहुत ही अधिक उन्नत हो गया। इतना ही नहीं, मंचेस्टर और लिवरपुल के बीच में भी एक नहर बनाई गई, और उसके द्वारा इधर-उधर सामान भेजा जाने लगा। १७५८ से १८०३ तक व्यापारी नहरों के संबंध में १६५ के लगभग नियम बने, और ३,००० मील की व्यापारी नहरें इँगलैंड में बन गईं। टेम्स, ट्रैंट, सैवर्न, तथा मर्सी नाम की चारों नदियों को नहरों द्वारा एक दूसरे से मिला दिया गया। ग्लास्टर सैवर्न से समुद्र तक एक नहर बनाई गई। ग्लासगो तथा एडिनबरा, इनवर्नेस तथा फ़ोर्ट विलियम, ये स्थान भी भिन्न-भिन्न नहरों के द्वारा मिला दिए गए। नहरों द्वारा सामान तथा यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने लगे। सारा इँगलैंड व्यापारी नहरों के जाल से घिर गया।

नहर तथा रेल के सहारे इँगलैंड शीघ्र ही एक व्यापारी या रोज़गारी देश बन गया। बंदरगाहों और लोहे तथा कोल की खानों के पास इँगलैंड के नए-नए व्यवसाय खुल गए। लंकाशायर कपड़े

के कारख़ानों के लिये प्रसिद्ध हो गया। वेस्टराइडिंग के छोटे-छोटे नगर भी वस्त्र-व्यवसाय के द्वारा अत्यंत अधिक समृद्ध हो गए। ग्लासगो के आस-पास स्थान-स्थान पर लोहे के कारख़ाने खुल गए। इस व्यावसायिक उन्नति का परिणाम यह हुआ कि इँगलैंड की आबादी बहुत ही बढ़ गई। १७५० में उसकी आबादी ६० लाख थी, परंतु १८०१ में ६० लाख हो गई।

पदार्थों की उन्नति में किस प्रकार भाप के एंजिन का उपयोग किया गया, इस पर अभी पीछे लिखा जा चुका है। व्यवसायी एंजिनों के द्वारा कलें चलाने और पदार्थ उत्पन्न करने से पुतलीघरों में श्रम-विभाग ने अपना रूप प्रकट किया। इसका परिणाम यह हुआ कि पदार्थों की उत्पत्ति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। इसी को व्यावसायिक क्रांति (Industrial Revolution) के नाम से पुकारा जाता है।

व्यावसायिक क्रांति से इँगलैंड के छोटे-छोटे क़स्बों ने नगरों का रूप धारण कर लिया। एक-एक कारख़ाने में सैकड़ों मज़दूर काम करने लगे। पूँजीपति लोग इन मज़दूरों को वेतन (Wages) देते थे, और इनके द्वारा खूब जेबें भरते थे। बहुत-से कारख़ानेवाले पूँजीपतियों का अपने मज़दूरों के साथ अच्छा व्यवहार न था। उनकी रुखाई, कठोरता तथा सख़्ती से मज़दूर तंग थे। मालिकों ने मज़दूरों को रहने के लिये जो झोपड़ियाँ दी थीं, वे बहुत ही बुरी, गंदी और तंग थीं। जिन मकानों में अधिकतर कपड़ा बुनवाया जाता था, वे बहुत ही गंदे, स्वास्थ्य-नाशक तथा अंधकार से परिपूर्ण थे। राज्य को मज़दूरों की बुरी हालत का कुछ भी ख़याल न था। पूँजीपति अपने लाभ की धुन में मस्त थे। उनको मज़दूरों के कष्टों की कुछ भी परवा न थी। मर्दों के ही बराबर वे औरतों और बच्चों से भी काम कराते थे। इनके साथ भी उनका कुछ भी

नरमी या दया का बर्ताव न था। भिखमंगों और आवारा लड़कों को बाध्य करके कारखानों में काम करने के लिये भेज दिया जाता था। मज़दूरीपेशा लोग अपढ़ और ग़रीब थे। उनको यह ज्ञान नहीं था कि वे अपनी तकलीफ़ों को कैसे दूर करें। राज्य को उनकी तकलीफ़ें दूर करने की कुछ भी चिंता न थी। जब कभी कोई कारख़ाना टूटता और कोई व्यापार का काम असफल हो जाता, तो उस समय मज़दूरों की जो दशा होती, वह अकथनीय है। वे भूक से तड़पते हुए इधर-उधर मारे-मारे फिरते थे। ऐसे दुःख के समय में उनको जो जिधर बहँका देता था, उधर ही वे बहँक जाते थे। कभी-कभी वे लोग सांघातिक साहस के काम करने पर भी उतारू हो जाया करते थे। पार्लियामेंट में अपने प्रतिनिधि भेजने का उनको कुछ भी सुबीता न था। इस कारण उनको पार्लियामेंट से कुछ भी सहायता न मिलती थी। इन्हीं दिनों ज़मींदारों तथा समृद्ध व्यवसायपतियों के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ। ज़मींदार लोग टोरी-दल के थे। अतः व्यवसायपति तथा व्यापारी उदार-दल के हो गए। उदार-दल के लिये हम स्थान-स्थान पर रेडिकल-शब्द का प्रयोग भी करेंगे।

इँगलैंड में व्यावसायिक क्रांति की तरह कृषक-क्रांति (Agrarian Revolution) भी उपस्थित हुई। १७६० तक प्रत्येक ग्राम में कुछ ज़मीनें ऐसी थीं, जिन पर किसी भी ग्रामवासी का अलग-अलग प्रभुत्व न था। सभी ग्रामीण उन पर अपने-अपने पशु चराया करते थे। व्यावसायिक क्रांति से इँगलैंड की जन-संख्या बढ़ गई, और नाज महँगा हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ज़मींदार लोगों ने उन भूमियों को भी जोतना शुरू कर दिया, जिन पर समष्टिरूप से ग्रामवासियों का अधिकार था। इतना ही नहीं, उन्होंने छोटे-छोटे किसानों को बेदख़ल करके बड़े-बड़े

खेत बनाए, और उन पर मज़दूरों की सहायता से ख़ुद ही खेती करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी छोटे-छोटे किसान बेघर-बार के हो गए, और मज़दूर लोग ज़मींदारों की ज़मीन को मज़दूरी लेकर जोतने-बोने लगे। इस महापरिवर्तन के उपस्थित करने में राज्य के नियमों ने भी बड़ा भारी भाग लिया। ये सब राज्य-नियम एनक्लोज़र-ऐक्ट्स (Enclosure Acts) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

बेघर-बार के होने से किसानों को बहुत ही तकलीफ़ उठानी पड़ी। नित्य रोज़-की-रोज़ मज़दूरी मिलने का कोई भरोसा नहीं था। कॉर्न-क़ानून के कारण उनकी हालत और भी बिगड़ गई। इन सब राज्य-नियमों से छोटे-बड़े ज़मींदारों को ही विशेष लाभ पहुँचा। मज़दूरों की हालत तो सभी जगह शोचनीय थी। पुराने ज़माने के बहादुर तथा शक्तिशाली छोटे-छोटे ज़मींदार भी संख्या में घटने लगे। उनकी जगह बड़े-बड़े ज़मींदारों ने ले ली। इसका मुख्य कारण राजनीतिक था। १६८८ के बाद ज़मींदारों का राजनीतिक महत्त्व बढ़ गया था। लोग राज्य में शक्ति प्राप्त करने के लिये ज़मींदार बनने का प्रयत्न करते थे। इससे ज़मीनों की क़ीमत पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक बढ़ गई। छोटे-छोटे पूँजीपति ज़मीनों को ख़रीदने में असमर्थ होकर और-और कामों में अपना धन लगाने लगे। इन सब परिवर्तनों से इँगलैंड में दरिद्र-भिखमंगों की संख्या बढ़ गई। जहाँ कुछ अमीर अपनी शान शौकत में मस्त थे, वहाँ जनता का बहुत बड़ा भाग पेट-भर रोटियों के लिये तरसने और कारख़ानों तथा खेतों में मज़दूरी करके ही जीवन-निर्वाह करने लगा। इस भयंकर दशा का अनुमान इतने ही से किया जा सकता है कि उन्नीसवीं सदी में इँगलैंड की सारी आबादी का सातवाँ भाग दरिद्र-संरक्षण फ़ंड (Poor Relief Fund) से सहायता प्राप्त करता था।

सारांश यह कि अठारहवीं सदी में इँगलैंड का व्यापार-व्यवसाय तथा आबादी बहुत ही अधिक बढ़ गई। पहले की अपेक्षा वह बहुत ही अधिक समृद्ध हो गया। परंतु वहाँ दुःख, कष्ट और असंतोष ज्यों-का-त्यों बना रहा। फ़्रांस की क्रांति से, तथा नेपोलियन-युद्ध के समय क़ीमतों के चढ़ने से मज़दूरों और ग़रीब भिखमंगों को जो तकलीफ़ें उठानी पड़ीं, उनका वर्णन करना कठिन है।

धार्मिक उन्नति

अठारहवीं शताब्दी में लोगों के धार्मिक विचार बिलकुल बदल गए। उनमें धार्मिक बातों के लिये वह जोश नहीं रहा, जो पहले था। यद्यपि भिन्न-भिन्न प्रभावशाली मनुष्यों ने जनता में धार्मिक विचारों के लिये जोश पैदा करना चाहा, पर वे सफल-प्रयत्न न हो सके। इन विचारों का प्रभाव समाज पर अवश्य ही पड़ना चाहिए था। जॉन हावर्ड ने क़ैदियों की दशा सुधारने का यत्न किया। टॉमस क्लार्कसन, विलियम विल्वरफ़ोर्स तथा कुछ अन्य मनुष्यों ने १७८७ में एक सभा स्थापित की, और नियम-पूर्वक दास-व्यापार का विरोध करना शुरू किया। पिट पर इस सभा का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा, और वह भी दास-व्यापार के विरुद्ध हो गया। १८०७ में पार्लियामेंट ने दास-व्यवसाय के विरुद्ध एक क़ानून पास किया, और दास-व्यापार को बंद करना अपना कर्तव्य समझा। इसी समय राज्य ने फ़ैक्टरी-नियमों के द्वारा श्रमिकों के कष्ट दूर करने का प्रयत्न किया, और उनकी हालत बहुत कुछ सुधारी।

सामाजिक उन्नति

अठारहवीं शताब्दी तक अँगरेज़ों की सामाजिक दशा बहुत उन्नत नहीं कही जा सकती। जुए तथा शराब का घर-घर में प्रचार था। जॉर्ज तृतीय के भोग-विलास ने जनता की सामाजिक उन्नति बिलकुल ही रोक दी थी। यह सब होने पर भी लोगों में पारस्परिक भेद दिन-दिन

कम होता गया। ग्रामीणों ने नागरिकों की बहुत-सी अच्छी बातें सीख लीं। व्यापारी लोगों तथा ग्रामीणों में पूर्ववत् भेद नहीं रह गया। जनता की प्रवृत्ति शान-शौकत की ओर बढ़ रही थी। चटक-मटक और भड़कीली चीज़ों की ओर लोग अधिक झुक रहे थे। यह होने पर भी रूसो के विचारों का प्रभाव मध्यम श्रेणी के लोगों पर इतना अधिक पड़ा कि उन्होंने अधिक मूल्यवाले भड़कीले कपड़ों की जगह साधारण कपड़े पहनना शुरू कर दिया। उच्च श्रेणी के धनाढ्यों पर रूसो के विचारों का असर नहीं हुआ; वे पहले ही की तरह क़ीमती कपड़े पहनते थे। पतलून और फुलबूट का प्रचार आम तौर से था। तलवार बाँधने तथा लंबे अँगरखे पहनने का फ़ैशन नहीं रह गया था। जॉर्ज तृतीय ने वेमाउथ-नामक स्थान को सर्व-प्रिय बना दिया, और उसके बड़े लड़के ने ब्राइटन-नामक गाँव को एक बड़े शहर का रूप दे डाला। इन्हीं दिनों घरों के भीतर भी अच्छी उन्नति हुई। साहित्य भी इस उन्नति के साथ ही उन्नत हो गया। अँगरेज़ी-भाषा में मधुरता तथा सरलता ने प्रवेश किया। आलिवर गोल्डस्मिथ तथा रिचर्ड विंस्ले शैरिडन आदि लेखकों ने पुरानी लेखन-शैली में बहुत ही अधिक उन्नति की। डेविड् गैरिक् (१७१६-१७७९) ने नाटकों के खेलने में कई सुधार किए।

स्टील तथा एडिसन ने अँगरेज़ी के गद्य को बहुत अधिक उन्नत किया। डॉक्टर सैमुएल जानसन ने अपनी सुंदर लेखन-शैली के कारण अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की। बड़े-बड़े लेखकों ने अख़बारों में राजनीति-संबंधी लेख लिखने शुरू किए। जोनाथन स्विफ़्ट तथा एडीसन ने यूट्रेक्ट की संधि के विषय में एक दूसरे के विरुद्ध बहुत ही उत्तम लेख लिखे। इसी समय की रचना स्विफ़्ट का गलिवर्स ट्रैवल्स(१७२६)-नामक ग्रंथ अति प्रसिद्ध है।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य भाग में अँगरेज़ी साहित्य ने और

भी अधिक उन्नति की। उसमें सरलता और मधुरता और भी अधिक बढ़ गई। लेखकों ने प्राकृतिक तथा ग्राम्य सौंदर्य का वर्णन करना शुरू किया, और लोगों के हृदयों से नागरिक जीवन की श्रद्धा हटा दी। टामसन, विलियम वर्ड्सवर्थ और सर वाल्टर स्कॉट तथा विलियम काउपर, बाइरन, शैली, कीट्स तथा राबर्ट बर्न्स आदि इस युग के प्रसिद्ध कवि तथा लेखक माने जाते हैं।

तृतीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद

जॉर्ज चतुर्थ (१८२०—१८३०)

जॉर्ज चतुर्थ का सिंहासनारोहण

जॉर्ज तृतीय की मृत्यु से इँगलैंड में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। राजकुमार ही जॉर्ज चतुर्थ के नाम से सिंहासन पर बैठा। वह स्वार्थी, भोगी, विलासी तथा अतिशय तुच्छ प्रकृति का मनुष्य था। राजगद्दी पर बैठने के बाद उसने सर्व-प्रिय बनने का यत्न किया, और इसी उद्देश से स्कॉटलैंड, आयर्लैंड तथा हनोवर-प्रदेश में दौरा किया। साधारण लोगों ने उसका बहुत ही अच्छी तरह से स्वागत किया। पर विचारशील राजनीतिज्ञों की आँखों में यह बात खटक गई। कुछ ही समय के बाद जॉर्ज चतुर्थ का स्वास्थ्य कुछ-कुछ ख़राब होने लगा। स्वास्थ्य ख़राब होते ही वह कुछ इष्ट-मित्रों को लेकर विंडसर तथा ब्राइटन-नामक स्थान में चला गया, और एकांत-वास करने लगा।

१७९५ में जॉर्ज ने ब्रोंजविक की स्वामिनी केरोलाइन से शादी कर ली। परंतु दोनों की आपस में अनबन हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों अलग-अलग रहने लगे। इन दोनों का एक-मात्र पुत्र १८१७ में मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब क्लेरैंस के ड्यूक विलियम को राज्य का उत्तराधिकारी नियत किया गया। जॉर्ज के सिंहासनारोहण के कुछ समय उपरांत कैरोलाइन इँगलैंड आई, और अपने को वहाँ की रानी बनाने का प्रयत्न करने लगी। इस पर जॉर्ज ने इसको तलाक़ देनी चाही। यह झगड़ा पार्लियामेंट में

पेश हुआ। लोग जॉर्ज के चलन-व्यवहार से बहुत ही असंतुष्ट थे। अतः उनको कैरोलाइन की बेइज़्ज़ती पसंद न आई। कैरोलाइन जनता की दृष्टि में सर्व-प्रिय हो गई। मगर राजा के मंत्रियों ने किसी-न-किसी तरीक़े से लॉर्ड-सभा से तलाक़ की मंज़ूरी ले ही ली। परंतु लोक-सभा के सामने यह प्रस्ताव रखने का साहस उसको न हुआ। अगले वर्ष कैरोलाइन मर गई। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग राजा से बहुत ही अधिक असंतुष्ट हो गए।

इँगलैंड की राजनीतिक स्थिति

पहले ही की तरह शासन में टोरी-मंत्रियों की प्रधानता बनी रही। जॉर्ज के गद्दी पर बैठने के कुछ ही समय बाद आर्थर स्किलउड ने सारे सचिव-मंडल को मार डालने के लिये एक षड्यंत्र रचा। यह षड्यंत्र ब्रिटिश-इतिहास में केटो-मार्ग-षड्यंत्र (Cato Street Conspiracy) के नाम से प्रसिद्ध है। थिस्लउड के एक साथी ने इस षड्यंत्र की ख़बर मंत्रि-मंडल को दे दी। सब कुचक्री पकड़े गए। षड्यंत्र रचनेवाले लोगों को यह अच्छी तरह से मालूम हो गया कि टोरी सचिव-मंडल जनता में कितना अप्रिय है। मंत्रि-मंडल के बीच आपस में भी मेल न था। लिवरपूल ने सबको संगठित करने का बहुत ही यत्न किया; परंतु वह सफल न हो सका। कैरोलाइन की तलाक़ के प्रश्न पर जॉर्ज केनिंग ने सचिव-मंडल का साथ नहीं दिया। ऐन इस मौक़े पर ही टोरी सचिव-मंडल के स्तंभ-स्वरूप लॉर्ड लंदनडरी ने १८२२ में आत्महत्या कर ली। इससे टोरी-मंडल बिलकुल शक्तिहीन हो गया। इँगलैंड के इतिहास में लॉर्ड लंदनडरी लॉर्ड कैसलरे (Lord Castlereagh) के नाम से विख्यात है। यह फ़्रांसीसी क्रांति के विरुद्ध था, और इँगलैंड में उसके प्रभाव को न आने देना चाहता था। इसी डर से यह अँगरेज़ी-क़ानून में किसी प्रकार का भी संशोधन न करना चाहता

था। परंतु केनिंग को यह पसंद न था। वह कैथलिकों को स्वतंत्रता देना चाहता था। वह उनके ऊपर से सब कठोर नियमों का बंधन हटाना चाहता था। फिर भी वह ह्विग-दल के विरुद्ध था; क्योंकि ह्विग-दल के लोग पार्लियामेंट का ही संशोधन करना चाहते थे। ह्विग-दल के लोग शक्तिहीन थे। उनका नेता अर्ल ग्रे था, जो जनता को पूर्ण रूप से अप्रिय था। पार्लियामेंट में दो व्यक्ति ऐसे थे, जो शक्तिशाली और ह्विग लोगों से सहमत थे। उनमें से एक का नाम हैनरी ब्रूहम और दूसरे का लॉर्ड जॉन रसल था। इँगलैंड के अगले इतिहास में इन दोनों व्यक्तियों का यथेष्ट भाग है।

लंदनडरी की मृत्यु के अनंतर लिवरपूल ने केनिंग तथा उसके मित्रों को अपने सचिव-मंडल में ले लिया। केनिंग परराष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त हुआ, और पार्लियामेंट में नेता का काम करने लगा। हास्किसन व्यापारिक समिति का प्रधान और मार्क्विस वेलेस्ली आयर्लैंड का लॉर्ड लेफ़्टिनेंट नियत हुआ। इसी समय रॉबर्ट पील गृह-सचिव (Home Secretary) के पद पर नियुक्त किया गया। इन सुयोग्य व्यक्तियों के सचिव-मंडल में आ जाने से ही १८२२ से १८२७ तक इँगलैंड में नए-नए सुधार हुए। ऐसा मालूम पड़ता था कि इँगलैंड में पिट का ज़माना फिर आ गया।

केनिंग ने परराष्ट्र-नीति में अपूर्व सफलता प्राप्त की। १८१५ के अनंतर योरप के कुछ शक्तिशाली सम्राटों तथा राजों ने अपने को पवित्र सम्मेलन (Holy Alliance) के रूप में संगठित किया, और फ़्रांसीसी क्रांति को अन्य देशों में फैलने से रोका। इन सम्राटों तथा राजों में रूस, आस्ट्रिया और प्रुशिया के शासक ही मुख्य थे। परंतु योरप की जनता को पवित्र सम्मेलन की नीति बिलकुल पसंद न थी। यही कारण है कि इसके विरुद्ध लोगों ने स्थान-स्थान पर

सिर उठाना शुरू कर दिया। स्पेन, पुर्तगाल तथा नेपल्स में लोग विद्रोही हो गए, और उन्होंने प्रतिनिधि-तंत्र राज्य की घोषणा कर दी। दक्षिणी अमेरिका के स्पेनिश तथा पोर्चुगीज़ उपनिवेश भी बिगड़ खड़े हुए, और उन्होंने मातृभूमि के कठोर नियमों के बंधनों से अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया। ग्रीस ने तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

पवित्र सम्मेलन के सदस्यों को जनता का सिर उठाना पसंद न था। अतः उन्होंने नेपल्स में आस्ट्रिया की, और स्पेन में फ्रांस की सेना को जनता के दबाने के लिये भेजा। इँगलैंड पवित्र सम्मेलन के विरुद्ध था। उसको योरप के सम्राटों का मेल तथा उनकी स्वेच्छाचारिता पसंद न थी। उसके विचार में नेपल्स आदि राष्ट्रों की स्वतंत्रता नष्ट कर देना अनुचित था। केनिंग ने पवित्र सम्मेलन के प्रति अपना विरोध प्रकट किया। अमेरिका ने इँगलैंड का साथ दिया। इसका फल यह हुआ कि स्पेन ने पुर्तगाल में हस्तक्षेप करना छोड़ दिया। इससे इँगलैंड का दबदबा योरप में और भी अधिक बढ़ गया।

यूनानी लोगों के साथ केनिंग की बहुत ही अधिक सहानुभूति थी। यूनानी लोग तुर्कों से लड़कर अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे। बहुत-से अँगरेज़ों ने यूनानियों का साथ दिया, और तुर्कों के विरुद्ध लड़ते-लड़ते मर गए। आश्चर्य तो यह है कि प्रसिद्ध कवि लॉर्ड बाइरन भी तुर्कों से लड़ा। १८२४ में बुख़ार से उसकी मृत्यु हो गई।

रूस के लोग भी यूनान के पक्ष में थे, और वे तुर्कों की बढ़ती हुई शक्ति को कुचल देना चाहते थे। चाहे जो हो, अँगरेज़ों को रूस की ईमानदारी में संदेह था। उनका विश्वास था कि रूस तुर्कों के साम्राज्य को नष्ट करके अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता है।

इसी कारण अँगरेज़ लोग रूस के बहुत ही विरुद्ध थे। परंतु केनिंग ने अँगरेज़ी जनता की इच्छाओं तथा विचारों का कुछ भी ख़याल न किया। वह रूस से मिल गया। उसने १८२७ में निकोलस प्रथम के साथ संधि कर ली। इस संधि के द्वारा रूस, इँगलैंड तथा फ़्रांस ने तुर्कों तथा यूनानियों के बीच में पड़ने का इरादा किया, और शीघ्र ही उनके झगड़े को निपटा देने की ठान ली। १८२७ में नैबोरिनो-नामक स्थान पर तुर्कों की अँगरेज़ों से मुठभेड़ हो गई। तुर्क भला अँगरेज़ों से क्या जीत पाते? फल यह हुआ कि अँगरेज़ों ने यूनान की स्वतंत्रता की रक्षा करके योरप में प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।

रॉबर्ट पील विचित्र प्रकृति का मनुष्य था। १८१९ में बैंक ऑफ़् इँगलैंड के विषय में उसने जो क़ानून पास किया था, उससे उसकी प्रसिद्धि बहुत अधिक हो गई थी। अब उसने इँगलैंड के फ़ौजदारी क़ानून की कठोरता को दूर करने का यत्न किया, और उसमें संशोधन करना चाहा। लगभग २०० अपराध ऐसे थे, जिनमें फाँसी के सिवा और कोई दंड न था। फ़ौजदारी नियमों की कठोरता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि वेस्ट-मिनिस्टरों के पुल में यदि किसी से ग़लती से कुछ गड़बड़ हो गई होती, तो उसको फाँसी दे दी जाती थी। अतः बहुधा जूरी लोग अपराधी को मृत्यु-दंड के भय से निरपराध कहकर छोड़ देते थे। पील ने इन कठोर नियमों को हटाने का यत्न किया, और वह पूर्ण रूप से कृतकार्य हुआ। सौ से अधिक अपराधों में मृत्यु-दंड हटाकर अन्य दंड नियत किए गए। सबसे बड़ी बात जो पील ने इँगलैंड के इतिहास में की, वह यह थी कि शासन-कार्य में ईमानदारी को बढ़ाया। उसने स्वयं शासन किया, और सब तरह की बेईमानियों से अपने को अलग रक्खा। इससे राज्य पर लोगों का विश्वास बढ़ गया।

व्यापारी-समिति के प्रधान हास्किसन को एक-मात्र आय-व्यय तथा आर्थिक विषयों में ही दिलचस्पी थी। उसने कई सामग्रियों पर से राज्य-कर उठा दिया। श्रम-समितियों के बनाने में जो क़ानूनी बाधाएँ थीं, उनको भी उसने हटा दिया। नाविक-नियमों (Navigation Acts) को भी उसने बदला। कारण, चार्ल्स द्वितीय के समय से इँगलैंड का यह एक मुख्य नियम था कि इँगलैंड में सामान का आना-जाना अँगरेज़ी जहाज़ों ही के द्वारा हो। नौ-शक्ति बनने के लिये पहले सभी देशों को इस नियम का सहारा लेना पड़ता है। इँगलैंड भी इसी नियम और शक्ति के सहारे नौ-शक्ति बना। अब इस नियम की इँगलैंड को उतनी ज़रूरत नहीं थी, अतः हास्किसन ने इस नियम में भी परिवर्तन किया। इसका मुख्य कारण एक यह भी था कि प्रशिया तथा अमेरिका, ये दोनों राष्ट्र इँगलैंड के जहाज़ों को अपने समुद्र में न आने देते थे; क्योंकि इँगलैंड उनके जहाज़ों को अपने देश में न घुसने देता था। इस कठिनता को दूर करने के लिये हास्किसन ने योरप के भिन्न-भिन्न देशों से व्यापारिक संधियाँ करना शुरू कर दिया; कुछ व्यापारिक सुविधाएँ दूसरों से लेकर उनके बदले में कुछ व्यापारिक सुविधाएँ उनको भी दे दीं। अँगरेज़ी में इस नीति को रेसिप्रॉसिटी(Reciprocity)-नीति कहते हैं।

१८२७ में लॉर्ड लिवरपूल बीमार पड़ गया, अतएव मुख्य मंत्री के पद पर काम करने में सर्वथा असमर्थ हो गया। राजा ने केनिंग को मुख्य मंत्री के पद पर नियत किया। वेलिंगटन, पील तथा पुराने टोरी लोग केनिंग से असंतुष्ट थे, अतः उन्होंने अपने पदों से इस्तीफ़ा दे दिया। केनिंग ने इन लोगों की कुछ भी परवा न की। वह बहुत ही अच्छे ढंग से इँगलैंड का शासन करने लगा। वह अपने समय का अद्वितीय राजनीतिज्ञ था। उसमें

जो कुछ कमी थी, वह यही कि उसमें गंभीरता न थी। किंतु छः महीने के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु से इँगलैंड की बहुत बड़ी क्षति हुई, इसमें शक नहीं।

केनिंग के बाद लॉर्ड गाड्रिच मुख्य मंत्री बना। यह अत्यंत दुर्बल तथा अशक्त था। जब नेवरीनो के युद्ध का समाचार इँगलैंड में पहुँचा, तब गाड्रिच बिलकुल घबरा गया। उसको यह न सूझा कि अब क्या किया जाय। वह मंत्रियों को ठीक ढंग पर न चला सका। जब मंत्रियों में आपस में ही वैमनस्य बढ़ने और झगड़ा होने लगा, तब उसने जनवरी, १८२८ में अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। इससे राज्य-शासन में पुराने टोरियों की शक्ति बढ़ गई। वेलिंगटन का ड्यूक प्रधान-मंत्री बना। पील पार्लियामेंट का नेता बन बैठा। गृह-सचिव के पद पर भी वह ज्यों-का-त्यों बना रहा। केनिंग के मित्रों ने वेलिंगटन का साथ दिया। परंतु कुछ ही समय के उपरांत इन्होंने अपने-अपने पद छोड़ दिए; क्योंकि इनके विचार वेलिंगटन से नहीं मिले।

इँगलैंड में धार्मिक संशोधन

पुराने विचार के टोरियों (High Tories) को छोड़कर सभी राजनीतिज्ञ कैथलिक लोगों के ऊपर से कठोर नियमों का बंधन हटाना चाहते थे। बहुत-से धार्मिक स्वतंत्रता-संबंधी प्रस्ताव पार्लियामेंट के द्वारा पास किए गए। परंतु लॉर्ड-सभा ने उनको मंज़ूर न किया। १८२३ में आयर्लैंड के भीतर एक प्रबल आंदोलन की लहर उठ खड़ी हुई। इसका नेता डेनियल ओकानल था। वह श्रेष्ठ और अपूर्व व्याख्यान देने की शक्ति रखता था, और प्रजा-प्रिय भी था। उसने कैथलिकों की एक समिति बनाई। इस सभा ने शीघ्र ही अच्छी शक्ति प्राप्त कर ली। इसने सारे अत्याचारों तथा कठोर नियमों का नियम-पूर्वक विरोध करना शुरू किया। पार्लियामेंट इस सभा

की शक्ति से डर गई, अतएव उसने १८२५ में इस सभा को तोड़ दिया। इस सभा को तोड़ते ही इसके स्थान पर एक नई सभा बन गई, और कार्य फिर उसी तरह चलने लगा।

ओकानल के कहने तथा समझाने से आयरिश वोटरों ने अपने पक्षवालों के लिये वोट देना शुरू किया। १८२८ में लोगों ने ओकानल को प्रतिनिधि चुना; परंतु वह कैथलिक होने के कारण, पार्लियामेंट में न जा सका। इसका परिणाम यह हुआ कि आयर्लैंड में कैथलिकों तथा प्रोटेस्टेंटों का झगड़ा चरम सीमा तक पहुँच गया। पार्लियामेंट को यह डर हो गया कि कहीं आयर्लैंड में गृह-युद्ध न छिड़ जाय।

केनिंग के साथियों के राजकीय पद छोड़ने के बाद मंत्रि-मंडल में वे ही टोरी लोग रह गए थे, जो कैथलिकों को स्वतंत्रता नहीं देना चाहते थे। मंत्रि-मंडल में केवल वेलिंगटन तथा पील ही दो ऐसे व्यक्ति थे, जो कैथलिकों से सहानुभूति रखते थे। आयर्लैंड की घटनाओं से ये लोग सावधान हो गए। १८२९ में वेलिंगटन तथा पील ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसके अनुसार कैथलिक भी पार्लियामेंट के सभ्य हो सकते थे। बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करने के बाद यह प्रस्ताव पास हुआ। ओकानल भी अब पार्लियामेंट में बैठ सकता था, बशर्ते कि लोग अगर उसको फिर प्रतिनिधि चुन लें। अस्तु। उसने अपने एक उद्देश में सफलता प्राप्त की, और इस सफलता से उत्तेजित होकर सम्मेलन (Union) को हटाने के लिये प्रयत्न शुरू कर दिया।

वेलिंगटन ने विदेशी नीति में परिवर्तन किया। योरप के झगड़ों में न पड़ना ही उसने उचित समझा। इस उदासीनता का परिणाम यह हुआ कि रूस ने टर्की तथा ग्रीस का बहुत-सा भाग दबा लिया। वेलिंगटन तथा पील ने घरेलू शासन में सुधार किया। १८२९ में पील

ने पुलिस-विभाग का नए सिरे से संगठन किया, और उसमें शिक्षित लोगों को ही भरती किया। पील तथा वेलिंगटन की इँगलैंड में प्रधानता होने के ज़माने में ही जून, १८३० को जॉर्ज चतुर्थ मर गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८२०	जॉर्ज चतुर्थ का सिंहासनारोहण
१८२२	केनिंग का राज्य-पद पर आना
१८२७	नैवरीनो का युद्ध और केनिंग की मृत्यु
१८२९	कैथलिकों को राजनीतिक स्वतंत्रता मिलना
१८३०	जॉर्ज चतुर्थ की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

विलियम चतुर्थ (१८३०—१८३७)

विलियम का सिंहासनारोहण

उन्नीसवीं शताब्दी में योरप के अंदर सभी जातियों में प्रजा-तंत्र राज्य तथा जातीयता के भाव उत्पन्न हो गए। फ्रांसीसी क्रांति ने प्रजा-तंत्र को जन्म दिया, और नेपोलियन के सार्वभौमिक एकसत्तात्मक भावों के विचारों ने जातीयता के भावों को प्रकट किया। पवित्र संघ के सम्राटों से यह कब सहा जा सकता था? उन्होंने इन दोनों ही विचारों को शांति, नियम तथा धर्म के विरुद्ध ठहराया। परंतु इन सम्राटों से इँगलैंड की कुछ भी सहानुभूति न थी, यद्यपि समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्वार्थों से प्रभावित होकर उसने इनका साथ अवश्य दिया। केनिंग ने जातीयता के भावों को उत्तम बतलाया, और पील तथा वेलिंगटन ने प्रजा-तंत्र राज्य को ही सबसे उत्तम राज्य कहकर अपनी राय ज़ाहिर की। जॉर्ज चतुर्थ के राज्य-काल में इँगलैंड ने बहुत ही अधिक उन्नति की। उसने कैथ-

लिकों को स्वतंत्रता दी, और दासों को गुलामी से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न किया। योरप की जनता 'पवित्र' संघ के विरुद्ध थी। १८३० में योरप-भर में घोर क्षोभ देख पड़ा। फ़्रांसीसियों ने चार्ल्स दशम को राजगद्दी से उतार दिया, और इँगलैंड के समान ही परिमित एकसत्तात्मक राज्य को स्वीकार करते हुए आर्लिंस के ड्यूक लुई फ़िलिप को राजगद्दी पर बिठा दिया। जर्मनी तथा इटली में भी इसी प्रकार के प्रयत्न अवश्य हुए; परंतु कोई अपने यत्न में कृतकार्य न हो पाया। दक्षिणी नीदर्लैंड्स के कैथलिकों ने प्रोटेस्टेंट-मतावलंबी डच लोगों से अपने को जुदा करने के लिये विद्रोह कर दिया, और 'बेलजियम' नाम का एक अलग राज्य स्थापित कर लिया। योरप की यह लहर मंद गति से इँगलैंड में भी आ पहुँची। फल यह हुआ कि इँगलैंड में भी बहुत-से सुधार हुए। वेलिंगटन इन सुधारों को नहीं करना चाहता था, अतः विलियम के गद्दी पर बैठते ही उसने इस्तीफ़ा दे दिया। विलियम बहुत ही सरल स्वभाव का था। दया तथा प्रेम से उसका हृदय भरा हुआ था। छल-कपट तो वह जानता ही न था। राज-काज हाथ में लेते ही उसने अर्ल ग्रे को प्रधान-मंत्री बना दिया।

अर्ल ग्रे का सचिवतंत्र-राज्य

राजनीतिक सुधार

अर्ल ग्रे इँगलैंड में राजनीतिक सुधार करना चाहता था। अँगरेज़-जाति भी इन सुधारों के लिये तैयार थी। अर्ल ग्रे ने ब्रूहम को चांसलर और लॉर्ड अल्थार्प को पार्लियामेंट का नेता नियत किया। केनिंग के मित्रों ने भी सुधारों को उचित ठहराया, और वे ग्रे के मंत्रि-मंडल में सम्मिलित हो गए। वाइकाउंट पामर्स्टन तथा लॉर्ड मैलबोर्न परराष्ट्र-सचिव नियत हुए। ये दोनों ही महाशय आगे चलकर अपनी योग्यता के कारण महामंत्री के पद पर चुने जायँगे।

राज्य के कार्यों से २३ साल तक अलग रहने के बाद ह्विग लोगों को राजकीय पदों पर आने का फिर अवसर मिला। इसका मुख्य कारण यह था कि अर्ल ग्रे ह्विग लोगों का मुखिया था।

दोनों पिटों के साथ सहमत होकर अँगरेज़ राजनीतिज्ञों का यह मत था कि पार्लियामेंट के प्रतिनिधियों के निर्वाचन के ढंग में दोष हैं। कई सदियों से प्रतिनिधि भेजने के लिये जो स्थान नियत थे, वे ही बने रहे। सामाजिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों के कारण उन स्थानों में बहुत परिवर्तन हो चुका था। व्यावसायिक क्रांति के कारण इँगलैंड के बहुत-से गाँव, बड़े-बड़े क़स्बे तथा नगर बन गए थे। उधर बहुत-से पुराने क़स्बे तथा नगर खँडहरों के ढेर ही हो रहे थे। हरएक ज़िला (County) अपने दो-दो प्रतिनिधि पार्लियामेंट में भेज सकता था; किंतु आश्चर्य तो यह है कि लंकाशायर तथा यार्कशायर-जैसे समृद्ध ज़िलों को एक भी प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न था। मंचेस्टर, शेफ़ील्ड, लीड्स तथा बर्मिंघम-जैसे बड़े नगरों का भी कोई प्रतिनिधि पार्लियामेंट में नहीं पहुँचता था। लंदन का समृद्ध भाग तक अपना एक भी प्रतिनिधि पार्लियामेंट में नहीं भेज सकता था। किंतु दूसरी ओर ऐसे भी बहुत-से खँडहरों से भरे हुए नगर थे, जिनको दो-दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त था। स्कॉटलैंड की भी यही दशा थी। इसका परिणाम यह होता था कि पार्लियामेंट में ज़मींदारों की ही तूती बोलती थी। उजाड़ वीरान नगरों पर जिन ज़मींदारों का प्रभुत्व था; वे ही अपनी ओर से पार्लियामेंट में प्रतिनिधि भेज देते थे। इससे पूँजीपति, व्यापारी तथा साधारण लोग बहुत ही असंतुष्ट थे।

जॉर्ज चतुर्थ के समय में ह्विग-दल के लोगों ने प्रतिनिधि-निर्वाचन के नियमों में संशोधन करने का यत्न किया। दो छोटे-छोटे बरोज़ से

प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार छीन लिया गया; परंतु यह अधिकार टोरी लोगों ने लीड्स तथा बर्मिंघम-शहर को न देने दिया। इस पर बार्मिंघम के नागरिकों ने चिल्लाना शुरू किया। इस शोर का ही यह फल था कि अर्ल ग्रे महामंत्री के पद पर नियुक्त हुआ।

मार्च, १८३१ में लॉर्ड जॉन रसल ने लोक-सभा में रिफ़ार्म-बिल (Reform Bill) पेश किया। दो बार पास किए जाने पर भी तीसरी बार यह पास न हो सका। इस पर उसने पार्लियामेंट का निर्वाचन फिर से करवाया। इस बार पार्लियामेंट में उसके पक्ष के बहुत-से लोग आ गए, और बिना किसी कठिनाई के रिफ़ार्म-बिल पास हो गया। ऑक्टोबर, १८३१ में लॉर्ड-सभा ने किसी एक दूसरे बिल को नहीं पास किया। इस पर इँगलैंड में हलचल मच गई। लोगों ने विद्रोह शुरू कर दिया। इससे लॉर्ड लोग डर गए। उन्होंने मई, १८३२ में वही बिल पास कर दिया। पर उसके साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि जिन ज़िलों से प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार छीन लिया गया है, उनके बारे में फिर विचार किया जाय। यह शर्त ग्रे को मंजूर न थी। अतः उसने विलियम चतुर्थ को यह सलाह दी कि कुछ नए लॉर्ड बना दिए जायँ। वे लार्ड-सभा के सभ्य हो जायँगे। ये नए लॉर्ड हमारे पक्ष में मत देकर पुराने लॉर्डों को हरा देंगे, जिससे बिल बिना किसी की शर्त के पास किया जा सकेगा। राजा ने यह सलाह न मानी। ग्रे ने इस्तीफ़ा दे दिया। वेलिंगटन ने नया मंत्रि-मंडल बनाना चाहा; परंतु वह सफल न हो सका। फल यह हुआ कि ग्रे का साचिव-तंत्र राज्य पूर्ववत् बना रहा, और रिफ़ार्म-बिल पूर्ण रूप से पास हो गया।

१८३२ के रिफ़ार्म-ऐक्ट द्वारा जिन बरोज़ की २००० से कम आबादी थी, उनसे प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार छीन लिया

गया। जिन बरोंज़ की आबादी २००० से ४००० तक थी, उनको एक प्रतिनिधि और इससे अधिक आबादीवाले बरोंज़ को दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया गया।

मंचेस्टर, बर्मिंघम, शेफ़ील्ड, लीड्स, नया लंदन और बरोंज़ इत्यादि स्थानों को दो-दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला। इतना ही नहीं, ग्रामीणों के वोट देने की शर्तें भी नरम कर दी गईं। टोरी लोगों को ये संशोधन पसंद न थे। उनकी राय में इन संशोधनों से अँगरेज़ों की प्राचीन शासन-पद्धति बिलकुल बदल गई थी। यह सच भी था; क्योंकि इस एक बिल से ही लॉर्डों तथा ताल्लुक़ेदारों की शक्ति तथा अधिकार बहुत संकुचित हो गए थे। पक्षांतर में व्यापारियों, व्यवसायियों तथा सर्व-साधारण की शक्ति शासन में बहुत अधिक बढ़ गई।

१८३३ में संशोधित पार्लियामेंट का प्रथम अधिवेशन हुआ। उसमें टोरियों की संख्या बहुत कम थी। सब-के-सब आयरिश सदस्य ओकानल के पक्षपाती थे। इसी समय आयर्लैंड के किसानों ने प्रोटेस्टेंट-चर्च को सहायता के तौर पर धन देना बंद कर दिया। इस पर पार्लियामेंट ने एक ऐक्ट बनाकर पार्लियामेंट को धन देना आवश्यक ठहराया, और उस सहायता को एक तरह के लगान का रूप दे दिया। संशोधित पार्लियामेंट गुलामी के सख़्त ख़िलाफ़ थी। अतः इसने १८३३ में इमैंसिपेशन-ऐक्ट (Emancipation Act) पास किया, और ब्रिटिश साम्राज्य में गुलामी का रखना नियम-विरुद्ध ठहराया। जिन लोगों के पास दास थे, उनको २,००,००,००० पौंड हर्जाने के तौर पर दे देना मंज़ूर किया गया। इसी पार्लियामेंट ने १८३४ में न्यू पुअर-लॉ (New Poor Law) पास किया, और ग़रीबों की सहायता के लिये मुनासिब ढंग पर प्रबंध कर दिया। १८३५ में म्युनिसिपल कार्पोरेशन्स रिफ़ार्म-ऐक्ट (Municipal

Corporations Reform Act) पास किया गया । इस ऐक्ट से नगरों की म्युनिसिपलिटी के प्रतिनिधि-निर्वाचन को सुधारा गया ।

पामर्स्टन परराष्ट्र-सचिव था । इसने स्वतंत्रता तथा जातीयता का पक्ष लिया । योरपियन राष्ट्रों को सहायता पहुँचाने में इसने इसी लक्ष्य को सामने रक्खा । इसने लुई फ़िलिप का समर्थन न करके बेलजियम को स्वतंत्र करा दिया । पुर्तगाल में, वहाँ की शासन-पद्धति के अनुसार, एक स्त्री को गद्दी पर बिठाया । स्पेन में भी इसने रानी इसाबला को ही सहायता पहुँचाई ; क्योंकि वही वहाँ की यथार्थ राज्याधिकारिणी थी ।

ह्विग लोगों ने राज्य में सुधार तो किया, पर प्रबंध में सफल न हो सके । अर्ल ग्रे ने कुछ ही समय के बाद इस्तीफ़ा दे दिया ; क्योंकि ह्विग लोगों के बीच आपस में ही झगड़ा चल रहा था । १८३४ में राजा ने लॉर्ड मेलबोर्न को महामंत्री बनाया । यह भी ह्विग-दल का था । इसने सब मंत्रियों को अपने साथ मिलाए रक्खा । यह बहुत ही विद्वान्, चतुर तथा उदार विचारोंवाला था । इसमें जो कुछ कमी थी, वह यही कि दृढ़ता तथा गंभीरता का अभाव था ।

ह्विग लोगों की शक्ति क्षीण होते ही टोरियों ने शक्ति बढ़ाना शुरू किया । सर रॉबर्ट पील बहुत ही योग्य व्यक्ति था । वह कभी का उन्नति कर चुका होता, यदि उसमें लज्जा और जोश की कमी न होती । वह ईमानदार, विचारशील तथा देश का परमभक्त था । बुद्धिमान्, विचार-शील अँगरेज़ों को उस पर बहुत ही अधिक विश्वास था । पील ने मध्यम श्रेणी के लोगों से मेल-जोल बढ़ाना शुरू किया । उसका यह विश्वास था कि ये लोग अब बहुत परिवर्तनों को पसंद नहीं करते । इन सब बातों का ख़याल करके उसने अपने शासन में आय-व्यय-

संबंधी विचारों को लोगों के सामने उपस्थित किया। उसने अपने को टोरी न कहकर कंज़रवेटिव कहना शुरू किया। वह शीघ्र ही सर्वप्रिय बन गया। विलियम चतुर्थ भी ह्विग लोगों से परेशान हो चुका था। नवंबर, १८३४ में उसने मेलबोर्न को पदच्युत कर दिया, और पील को नवीन मंत्रि-मंडल बनाने की आज्ञा दे दी। पील ने बड़े साहस के साथ राजा की आज्ञा शिरोधार्य की। पार्लियामेंट में उसके पक्ष के लोग बहुत ही थोड़े थे, अतः उसने नए सिरे से पार्लियामेंट का चुनाव कराया। पार्लियामेंट में कंज़रवेटिव लोग भी इतने अधिक न थे कि वह अपना काम निर्विघ्न चला सकता। अतएव पील ने १८३५ में इस्तीफ़ा दे दिया। मेलबोर्न फिर महा-मंत्री बना, और १८३७ तक राज्य का काम करता रहा। इसी साल विलियम चतुर्थ की मृत्यु हो गई।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८३०	विलियम चतुर्थ का सिंहासनारोहण
१८३२	रिफ़ार्म-ऐक्ट
१८३३	दासता का उच्छेद
१८३५	म्युनिसिपल कार्पोरेशन्स रिफ़ार्म-ऐक्ट
१८३७	विलियम चतुर्थ की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

विक्टोरिया—पील तथा पामर्स्टन

(१८३७—१८६५)

विक्टोरिया का सिंहासनारोहण

विलियम चतुर्थ के कोई पुत्र न था, अतः उसकी भतीजी विक्टोरिया को इँगलैंड का राज्य मिला। इस कारण हनोवर-प्रांत

इँगलैंड के हाथ से निकल गया ; क्योंकि उस प्रांत के नियमों के अनुसार हनोवर का शासन किसी स्त्री को नहीं दिया जा सकता था। जॉर्ज तृतीय का पुत्र, कंबर्लैंड का ड्यूक, अर्नेस्ट हनोवर का शासक बना। १८६६ में यह प्रांत प्रुशिया के साथ मिल गया, और जर्मन साम्राज्य का एक भाग हो गया।

विक्टोरिया की शिक्षा का प्रबंध उसकी माता के ही हाथ में था। माता ने उसको बहुत ही गुणवती, विदुषी, शांत-प्रकृति तथा साहसी लड़की बनाने का यत्न किया। राज्य-भार ग्रहण करने के समय विक्टोरिया की आयु १८ वर्ष की थी। अतः उसने शासन-भार लॉर्ड मेलबोर्न के ही हाथ में रक्खा। १८४० में विक्टोरिया ने प्रिंस अलबर्ट से विवाह कर लिया। अलबर्ट बहुत ही दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ तथा ईमानदार आदमी था। उसने रानी को किसी भी मंत्री के ऊपर विशेष रूप से निर्भर न होने दिया।

प्रिंस अलबर्ट और रानी विक्टोरिया एक दूसरे की सलाह लेकर राज-काज चलाते रहे। अलबर्ट ने रानी को यह मंत्र दिया कि एक-सत्तात्मक राज्य तभी सर्व-प्रिय हो सकता है, जब राजा उत्तम जीवन व्यतीत करे, और दलों के झगड़ों से अपने को सर्वथा अलग रक्खे। उसने एकसत्तात्मक राज्य के लिये वही काम किया, जो वेलिंगटन ने लॉर्डों के लिये किया था। प्रिंस अलबर्ट ने रानी को यह शिक्षा दी कि राजकीय अधिकारों के लिये लड़ना व्यर्थ है ; क्योंकि जनता में स्वतंत्रता के भाव दिन-पर-दिन बढ़ते जा रहे हैं। अतः उचित यही है कि जनता के विचारों और कार्यों को रोकने के बजाय उनके वेग को बहुत न बढ़ने दिया जाय। इसी में जाति तथा राजा का हित है। दलों की स्वेच्छाचारिता तथा झगड़ों को चरम सीमा तक न बढ़ने देना ही राजा का काम है। इसी में जाति की उन्नति का बीज है।

इस ऊपर-लिखी शिक्षा का बहुत ही अच्छा नतीजा हुआ । रानी का राज्य सर्व-प्रिय हो गया । रिफ़ार्म-बिलों के कारण सारी जनता ने राजकीय कार्यों में भाग लेना शुरू किया । इस प्रकार इँगलैंड ने धीरे-धीरे स्वतंत्रता तथा लोकसत्तात्मक राज्य की पूर्णता के लिये आगे पग बढ़ाना शुरू किया ।

इँगलैंड की सामाजिक दशा

रानी के गद्दी पर बैठने के समय इँगलैंड की सामाजिक दशा शोचनीय हो रही थी । आयर्लैंड इँगलैंड से अलग होना चाहता था । वह अपने गृह-शासन में संपूर्ण रूप से स्वतंत्र होने का इच्छुक था । पर ह्विग-राज्य को यह पसंद न था । लेकिन "मरता क्या न करता" के अनुसार वह इसके लिये लाचार था; क्योंकि इसके विना ओकानल की बहुमूल्य सम्मतियाँ उसको न मिल सकती थीं । आयर्लैंड के शासन में बहुत-से सुधार किए गए । आयर्लैंड के लिये दरिद्र-संरक्षण का क़ानून (Poor Law) पास किया गया । उसके अनुसार दरिद्रों को धन की सहायता देना आवश्यक ठहराया गया । रिफ़ार्म-बिल पास होने पर भी श्रमिकों को कुछ भी संतोष न हुआ; क्योंकि उनकी दशा पहले की-सी ही बनी रही । कॉर्न-ला के कारण अन्न का मूल्य अधिक था, और उनका वेतन पहले के समान ही थोड़ा था । इन्हीं दिनों में रॉबर्ट ओवन (Robert Owen) के समष्टिवाद के आधार पर चार्टिस्ट आंदोलन (Chartist Movement) उठ खड़ा हुआ । इसका आरंभ १८३८ में हुआ । फ़िियर्गस ओकोनर नाम के एक आयरिश ने एक चार्टर तैयार किया, जिसमें पाँच बातें हासिल करना आवश्यक ठहराया—

(१) सबको वोट देने का अधिकार होना चाहिए ।
(२) पर्चों या गोलियों के द्वारा वोट दिए जायँ ।

(३) प्रतिवर्ष पार्लियामेंट का अधिवेशन हो।
(४) पार्लियामेंट का मेंबर बनने के लिये जायदाद तथा संपत्ति की बाधा हटा दी जाय।
(५) मेंबरों को वेतन मिला करे।

१८३९ में चार्टिस्ट-दल के लोगों ने अपने को शारीरिक शक्ति-दल (Physical Force Party) के नाम से प्रसिद्ध किया। उन्होंने क़वायद शुरू की, सैनिक कार्यों को जारी कर दिया, और विद्रोह करने के लिये एक दल भी बना लिया। मन्मथशायर में न्यूपोर्ट-नामक स्थान पर इनका दल था। पार्लियामेंट ने इस जत्थे को नष्ट कर दिया। फिर भी बहुत दिनों तक राज्य को इनका डर बना ही रहा।

घर की तरह ही बाहर भी बहुत-सी गड़बड़ थी। अफ़ग़ानिस्तान के अमीर के साथ भारत का युद्ध छिड़ा था। कनाडा में अँगरेज़ और फ़्रांसीसी उपनिवेशों का आपस में झगड़ा ठना हुआ था। इन झगड़ों को तय करने में मेलबोर्न बिलकुल असमर्थ था। फिर भी उसने साम्राज्य में कुछ आवश्यक सुधार अवश्य किए, जिनको भुलाना न चाहिए। इँगलैंड में चिट्ठी-पत्री भेजने के लिये एक पेनी का टिकट लगाना ही काफ़ी समझे जाने का नियम इसी ने बनाया। १८३९ में पार्लियामेंट का बहुमत अच्छी तरह न मिलने के कारण इसने इस्तीफ़ा दे दिया। पील ने सचिव-तंत्र राज्य का संगठन करना नामंजूर किया। अतः दो वर्ष तक फिर मेलबोर्न ने राज-काज सँभाला। १८४१ के चुनाव में कंज़रवेटिव लोगों का बहुमत हो गया। इससे पील ने महामंत्री का पद स्वीकार कर लिया। इसका सचिव-तंत्र शासन १८४६ तक क़ायम रहा। रानी ने इसके साथ अच्छा व्यवहार किया, और अपने को दलों की दलदल से दूर रक्खा।

पील का सचिव-तंत्र राज्य

पील अपने समय का एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ था। मध्यम श्रेणी के अँगरेज़ उसको बहुत ही अधिक मानते थे। आय-व्यय का निश्चय तथा देश का प्रबंध करने में वह अद्वितीय था। उसकी वैदेशिक नीति का झुकाव शांति तथा सम्मिलन की ओर ही था। पामर्स्टन तथा मेलबोर्न के वैदेशिक सचिवों ने अनेक बार ऐसी बातें की थीं, जिनके कारण इँगलैंड किसी-न-किसी लड़ाई में फँस जाता। १८४० में पामर्स्टन फ़्रांस से इस बात पर लड़ने के लिये उद्यत हो गया था कि फ़्रांस ने मिसर में अपना आतंक जमाना चाहा, और मिसर के वीरपाशा को सीरिया फ़तह करने के लिये उद्यत किया था। फ़्रांस के इस कार्य से रूस, प्रुशिया तथा आस्ट्रिया, सभी चौकन्ने हो गए थे। १८४० में इँगलैंड से उल्लिखित तीनों राष्ट्र मिल गए, और उन्होंने स्टीरिया पर तुर्कों का ही क़ब्ज़ा क़ायम रक्खा। पामर्स्टन का ख़याल था कि तुर्क अपने शासन का सुधार कर लेंगे। इससे फ़्रांस चिढ़ गया। पील का वैदेशिक सचिव—लॉर्ड एबर्डीन—संधि और शांति के पक्ष में था। उसने फ़्रांस से मित्रता का व्यवहार किया। रानी ने भी उसको इस कार्य में पूर्ण सहायता पहुँचाई। १८४४ तथा १८४६ में फिर फ़्रांस और इँगलैंड में झगड़ा उठ खड़ा हुआ, और बड़ी मुशकिल से युद्ध होते-होते बचा। १८४२ में इँगलैंड की अमेरिका से संधि हुई। इसके अनुसार कनाडा की सीमाएँ नियत की गईं। इँगलैंड तथा अमेरिका के बीच फिर इसी प्रकार का झगड़ा उठ खड़ा हुआ, जिसका निर्णय १८४६ की संधि के अनुसार हो गया।

ह्विग-दल के पतन के पीछे ओकानल ने फिर लोगों को भड़-काना शुरू किया। इन्हीं दिनों आयर्लैंड में कुछ नवयुवकों ने नवीन आयर्लैंड (Young Ireland) नाम का एक दल बनाया, और

शक्ति तथा युद्ध के ज़रिए अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयत्न किया। जगह-जगह पर अधिवेशन किए गए, और जोशीली वक्तृताएँ दी गईं। टारा-नामक स्थान पर ओकानल ने यह भविष्यवाणी की कि कोई वह दिन अवश्य आवेगा, जब डब्लिन में आयर्लैंड की पार्लियामेंट बैठेगी। ऐसी भविष्यवाणियों तथा वक्तृताओं से अँगरेज़ डर गए। उन्होंने ओकानल को क़ैद कर दिया, और सभा करना रोक दिया। ओकानल पर षड्यंत्र रचने का अपराध लगाया गया। लॉर्ड-सभा ने उसको क़ैद से छुटकारा दे दिया। इस घटना के तीन वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई।

पील ने आयर्लैंड के मामले में अपनी वही पुरानी नीति रक्खी, जो उसके पूर्ववर्तियों की थी। हत्याओं को रोकने के लिये उसने शस्त्र-संबंधी क़ानून (Arms Acts) पास किया, जिसके अनुसार विना प्रमाणपत्र (Licence) के हथियारों का रखना ग़ैरक़ानूनी ठहराया गया। डबन-कमीशन के आधार पर ज़मींदारों के अत्याचार से कृषकों को बचाने के लिये एक प्रस्ताव पेश किया, जिसके अनुसार कृषक लोग ज़मीन की जो कुछ उन्नति करें, उसका ख़र्च भूमि छोड़ने के समय उनको दे दिया जाना तय हुआ। लॉर्ड-सभा ने इस प्रस्ताव को पास नहीं किया। किसानों की दुर्गति पूर्ववत् बनी रही।

पील ने आयरिशों को प्रसन्न करने के लिये आयर्लैंड में कई कॉलेज खोले; परंतु उनको राजनीतिक अधिकार नहीं दिए।

१८४५ में आयर्लैंड पर एक बड़ी भारी विपत्ति पड़ी। देश-भर के आलुओं में एक ख़ास तरह का कीड़ा लग गया, और आलू की फ़सल बिलकुल ही नष्ट हो गई। आधे से अधिक आयरिश दरिद्रता के कारण एक-मात्र आलू पर ही जीवन निर्वाह करते थे। अब वहाँ की आबादी भी पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक बढ़ चुकी थी।

आलू की फ़सल ख़राब होते ही हज़ारों आयरिश काल के कराल ग्रास बन गए। बड़ी मुशकिल से जहाज़ों द्वारा गेहूँ भेजकर बहुत-से ग़रीबों की जान बचाई गई। सच है, परतंत्रता मृत्यु से भी अधिक भयंकर है। ये सब दुर्भिक्ष आदि उसी परतंत्रता के खेल हैं।

मेलबोर्न के समय इँगलैंड की आमदनी ख़र्चे से कम थी। उसके सचिव-तंत्र राज्य के अधःपतन का एक मुख्य कारण यह भी था। पील ने उस कमी को दूर करने के लिये (१८४२ में) तीन वर्ष तक परीक्षा के तौर पर आय-कर लगाया, और बहुत-से स्थानों से आयात-करों को हटा दिया। गेहूँ पर राज्य-कर पूर्ववत् ज्यों-का-त्यों बना रहा। इस परीक्षा से उसको बहुत अधिक शिक्षा मिली। आयात-कर कम कर देने से इँगलैंड का व्यापार पहले से बहुत अधिक बढ़ गया। १८४५ के बजट में पील ने फिर तीन वर्ष के लिये आय-कर लगाया। कुछ नियत पदार्थों पर से उसने सब प्रकार के राज्य-कर हटा दिए। इससे उसके दल के बहुत-से लोग नाराज़ हो गए।

पील के समय में मज़दूरों की दशा पहले की-सी ही शोचनीय थी। छोटे-छोटे लड़कों से बारह-बारह घंटे तक काम कराया जाता था। खानों में काम करनेवाले मज़दूरों की हालत तो बहुत ही बुरी थी। इन सब दुःखजनक दृश्यों को कम करने के लिये पील ने १८४२ में फ़ैक्टरीज़ ऐक्ट (Factories Act) पास किए। उसके अनुसार १० वर्ष से कम उम्र के लड़के-लड़कियों को मज़दूरी करने से रोक दिया गया। १० से लेकर १३ वर्ष तक के लड़कों और लड़कियों से सप्ताह में केवल तीन दिन ही काम लेना उचित ठहराया गया। १८४४ के फ़ैक्टरी-नियमों के अनुसार ९ वर्ष से कम उम्र के बालक को रुई तथा रेशम के कारख़ानों में काम करने से रोक दिया गया। १८४७ में स्त्रियों

तथा बच्चों से १० घंटे से अधिक काम लेना राज्य-नियम के विरुद्ध ठहराया गया। ये नियम पास करने का मुख्य कारण यह था कि जाति का आचार तथा स्वास्थ्य दिन-दिन गिरता जाता था।

पहले ही लिखा जा चुका है कि मध्यम श्रेणी के अँगरेज़ों से पील का घनिष्ठ संबंध था। उसको यदि उनका प्रतिनिधि भी कहा जाय, तो कुछ अत्युक्ति न होगी। उसने अँगरेज़ों की व्यावसायिक उन्नति के लिये सभी प्रकार के यत्न किए। पील स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) के पक्ष में था। हाँ, केवल गेहूँ पर से ही वह आयात-कर नहीं हटाना चाहता था। कारण, गेहूँ पर से आयात-कर हटाने में इँगलैंड की खेती को हानि पहुँचती, और इस कारण इँगलैंड को दूसरों के अन्न पर भरोसा करना पड़ता। लॉर्ड-सभा के सदस्य अपने-अपने स्वार्थों को अपूर्ण रखकर गेहूँ पर से आयात-कर हटाने को तैयार न थे; क्योंकि इससे उनकी ज़मीनों की कुछ भी क़ीमत न रह जाती, उनकी आमदनी पहले की अपेक्षा कम हो जाती। किसान लोग भी ज़मींदारों के ही पक्ष में थे: गेहूँ पर से आयात-कर हटाते ही उनको कारख़ानों में काम करना पड़ता, जो उन्हें नापसंद था।

गेहूँ पर से आयात-कर हटाने से अँगरेज़-व्यवसायियों को विशेष रूप से लाभ था। देश में गेहूँ सस्ता होने से उनको श्रमिकों की मज़दूरी या वेतन नहीं बढ़ाना पड़ता था, और कच्चे माल के सस्ते हो जाने से व्यावसायिक वस्तुएँ तैयार करने में उनका ख़र्च पहले से बहुत कम हो जाता था। इसी से वे संसार के बाज़ार में एकाधिकारी बनकर अन्य देशों के व्यावसायिक बनने में बाधा डाल सकते थे। ये ही सब बातें विचारकर १८३९ में मंचेस्टर के व्यवसायियों ने कच्चे माल के ऊपर से आयात-कर हटाने के लिये एक समिति बनाई। इस समिति का नाम एँटी कॉर्न-लॉ-लीग (Anti-Corn Law-League)

रक्खा गया । इस समिति का प्रधान या नेता रिचर्ड काब्डन था । जॉन ब्राइट उसका पक्ष-पोषक था । इस समिति ने सारे इँगलैंड में शोर मचाया, और इँगलैंड की भावी समृद्धि का उज्ज्वल चित्र जनता के आगे रक्खा ।

इस समिति ने पील के विचारों को भी बदल दिया । परंतु वह गेहूँ का आयात-कर हटाने में असमर्थ था ; क्योंकि बड़े-बड़े ज़मींदार और ताल्लुक़ेदार उसका साथ देने को तैयार न थे । इन्हीं दिनों बेंजमिन डिसरेली ने ज़ोर पकड़ा । यह अपने ढंग का एक ही आदमी था । इसने पील का विरोध करना शुरू किया ।

१८४५ के आलुओं के अकाल से लोगों की आँखें खुलीं । उनको यह मालूम हो गया कि ग्रेट ब्रिटन की ज़मीन अपनी बढ़ी हुई जन-संख्या के पालन-पोषण में असमर्थ है । पील ने आयरिश दुर्भिक्ष के बहाने गेहूँ पर से आयात-कर हटाने के लिये लोक-सभा से प्रार्थना की । यह प्रार्थना न मानी गई । इसका परिणाम यह हुआ कि पील ने इस्तीफ़ा दे दिया । लॉर्ड जॉन रसल ने अपना मंत्रि-मंडल बनाने का प्रयत्न किया; परंतु वह सफल न हुआ । अतएव पील फिर अपने पद पर लौट आया, और शासन-कार्य चलाने लगा । १८४६ में उसने गेहूँ पर से आयात-कर हटाने का प्रस्ताव पेश किया; परंतु फिर किसी ने न स्वीकार किया । इस प्रश्न पर इँगलैंड में कई दल हो गए ।

कंज़रवेटिव तथा टोरी-दल
- (१) पील का दल=पील दल पीलाइट्स (Peelites)
- (२) बाधित व्यापारिक दल=प्रोटेक्शनिस्ट (Protectionists)

ह्विग-दल के लोग
- (३) उदार-दल = लिबरल (Liberals)
- (४) अतिउदार-दल= रेडिकल (Radicals)
- (५) मंचेस्टर-स्कूल (Manchester School) = मंचेस्टर दल

पील के पक्षपाती लोगों की संख्या बहुत कम थी। १८५० में पील की मृत्यु हो गई। उसके बाद लॉर्ड एबर्डीन उक्त दल का नेता बन गया। इस दल का प्रसिद्ध व्यक्ति विलियम एवर्ट ग्लैडस्टन था।

बाधित व्यापारिक दल (Protectionists) के नेता बेंटिक तथा डिस्रेली थे। इनका साथी लॉर्ड स्टैनले था। उसने १८४५ में पील का साथ छोड़ दिया था। इस प्रकार कंज़रवेटिव-दल के पील तथा बाधित व्यापारिक नाम के दो दलों में बँट जाने से ह्विग लोगों की शक्ति बढ़ गई। उन्होंने अपने को 'लिबरल' के नाम से प्रसिद्ध किया, जिसको हम स्थान-स्थान पर उदार-दल के नाम से भी लिखेंगे। उदार-दल भी आपस में बँटा हुआ था। उनमें एक तो रेडिकल-दल था, और दूसरा मंचेस्टर-दल। मंचेस्टर-दल के मुखिया ब्राइट तथा काब्डन थे। इन्होंने व्यापारियों व व्यवसायियों के स्वार्थ पूरे करवाने में राज्य को साधन बनाया। रेडिकलों ने भी प्रायः इनका साथ दिया। इँगलैंड में पील के पीछे बहुत समय तक इन्हीं लोगों की प्रधानता रही। इनकी प्रधानता से इँगलैंड का व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया, और इँगलैंड बहुत ही अधिक समृद्धिशाली बन गया।

लॉर्ड जॉन रसल का सचिव-तंत्र राज्य
(१८४६-१८५२)

पील के पतन के पीछे लॉर्ड जॉन रसल महामंत्री बना। उसने अपना वैदेशिक या परराष्ट्र-सचिव पामर्स्टन को बनाया। पामर्स्टन ने अपना कर्तव्य बड़ी योग्यता के साथ निबाहा। उसने इँगलैंड की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ा दी।

आलू की फ़सल मारी जाने से आयर्लैंड के लोग भूखों मर रहे थे। गेहूँ पर से आयात-कर कुछ-कुछ कम करने से भी उनके कष्ट दूर नहीं हुए। अँगरेज़ लोग आयरिशों के कष्ट सुनकर उन्हें सहा-

यता पहुँचाने को उत्सुक थे। लोगों ने चंदा जमा किया। परंतु व्यापारियों की धूर्तता के कारण उस धन से आयलैंड के दुर्भिक्ष-पीड़ितों को सहायता नहीं पहुँच सकी। आयरिश ज़मींदारों की आमदनी कम हो गई थी, अतः उन्होंने बड़े-बड़े खेतों पर मज़दूरों से खेती कराना शुरू कर दिया, और छोटे-छोटे काश्तकारों को अपनी ज़मीनों पर से बाहर निकाल दिया। काश्तकार लोग आयलैंड छोड़-कर अमेरिका आदि देशों में चले गए। इसका फल यह हुआ कि ५० ही वर्षों के बीच आयलैंड की जन-संख्या ८० लाख की जगह ५० ही लाख रह गई थी। जो आयरिश विदेशों में जाकर बसे, उन्होंने अँगरेज़ों के प्रति भयंकर घृणा के भाव रखना शुरू किया, और अपने बाल-बच्चों को भी यही शिक्षा दी।

१८४८ में योरप-भर में राज्य-क्रांति हो गई। फ़्रांसीसियों ने लुई फ़िलिप को सिंहासन से उतार दिया, और देश में प्रतिनिधि-तंत्र राज्य की स्थापना की। जर्मनी तथा इटली ने भी इसी ओर अपना पग बढ़ाया।

आस्ट्रिया की अधीनता से छुटकारा पाने के लिये इटली ने बहुत कोशिश की। सार्डीनिया के राजा चार्ल्स अलबर्ट ने अपने को इटली का राजा कहकर घोषणा कर दी। जर्मनी ने फ़्रैंकफ़ोर्ट में जातीय प्रतिनिधि-सभा की नींव डाली। इस क्रांति की लहर इँगलैंड में भी पहुँची।

चार्टिस्ट मूवमेंट के लोगों ने इँगलैंड में शोर मचाना शुरू किया। नवीन आयलैंड-दल के लोगों ने विद्रोह करने की तैयारियाँ कीं। चार्टिस्ट लोगों ने, १८४८ में, कैनिंगटन कामन में, एक सभा की। इस सभा से अँगरेज़ राज-कर्मचारी डर गए। दैव-संयोग से सभा में थोड़े ही लोग पहुँचे। नवीन आयलैंड-दल के लोग भी अपने प्रयत्न में असफल सिद्ध हुए। १८५१ में, हाइड् पार्क में, एक महा-

प्रदर्शिनी की गई। इसमें संसार-भर के सभी देशों की कारीगरी की चीज़ें इकट्ठी की गई।

१८४८ की इस योरप की राज्य-क्रांति को पामर्स्टन बुरा न समझता था। वह दुखी प्रजा का साथी था। आधे योरप के बीच हर गली हर कूचे में मारकाट मची हुई थी। राजपक्ष तथा प्रजा-दल के लोग एक दूसरे के खून के प्यासे थे। फ्रांस में लुई नेपोलियन ने शक्ति-संचय करके अपने को फ्रांसीसी साम्राज्य का सम्राट् कहकर उसकी घोषणा कर दी।

पामर्स्टन ने नेपोलियन तृतीय को सम्राट् मान लिया, और रानी अथवा मंत्रि-मंडल से इस बारे में पूछा तक नहीं। अतएव उसे परराष्ट्र-मंत्री के पद से हटा दिया गया। पामर्स्टन ने भी अगले एक प्रस्ताव पर रसल का विरोध करके, उसको इस्तीफ़ा देने के लिये विवश किया।

रसल का पतन होते ही इँगलैंड में बाधित व्यापारिक दल की प्रधानता हो गई। डर्बी के अर्ल स्टैनले तथा डिसरेली ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली, और पामर्स्टन को अपने साथ रक्खा। पील तथा ह्विगों के विरोध करते रहने के कारण १६ दिसंबर के दिन ह्विग-दल तथा पील-दल का सम्मिलित सचिव-तंत्र (Coalition Ministry) इँगलैंड का शासन करने लगा। एवर्डीन महामंत्री बना। पामर्स्टन गृह-सचिव और रसल पार्लियामेंट का नेता नियत हुआ। ग्लैडस्टन को कोष-सचिव का पद दिया गया। यह पील ही के समान आय-व्यय का निश्चय करने तथा बजट के बनाने में निपुण था।

एवर्डीन का सचिव-तंत्र राज्य (१८५३-१८५५) तथा क्रीमियन-युद्ध (१८५४-१८५६)

उस समय रूस का सम्राट् निकोलस प्रथम था। यह बहुत ही शक्तिशाली राजा टर्की को हड़प लेने की फ़िक्र में था। इसने

कई बार टर्की के लिये ये शब्द कहे —"हमारे बीच में एक बीमार आदमी है। वह शीघ्र ही मरनेवाला है। उसके मरने के बाद उसकी जायदाद का बँटवारा करने का प्रयत्न अभी से करना चाहिए।" उसकी नीति से इँगलैंड की शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचता था। पामर्स्टन ने सारी ब्रिटिश जनता को सब ऊँच-नीच समझाया, और रूस की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना आवश्यक प्रकट किया। फ़्रांस का नेपोलियन तृतीय अपने राजासन पर सुस्थिर तथा सर्व-प्रिय बनना चाहता था, इसी से वह भी रूस के विरुद्ध था।

इन्हीं दिनों दैवसंयोग-वश जेरूसलम में लैटिन क्रर्जी तथा ग्रीक क्रर्जी के बीच झगड़ा हो गया। निकोलस ने ग्रीक पादरियों का और फ़्रांस ने लैटिन पादरियों का पक्ष लिया। बेचारे तुर्कों ने लैटिन पादरियों का साथ दिया; क्योंकि उनको रूस का भय था। इसका परिणाम यह हुआ कि रूस ने माल्डविया तथा वालेशिया पर आक्रमण कर दिया।

यह देखकर इँगलैंड तथा फ़्रांस ने भी अपने जहाज़ी बेड़े दर्रे-दानियाल में भेज दिए। जनवरी, १८५४ में अँगरेज़ों के मित्र-दल का बेड़ा काले सागर में जा पहुँचा। रूस तथा अँगरेज़ों के मित्र-मंडल का यह युद्ध योरप-इतिहास में क्रीमियन वार (क्रीमिया का युद्ध) के नाम से प्रसिद्ध है; क्योंकि अधिकांश युद्ध क्रीमिया-नामक प्रायद्वीप में हुआ था। यह युद्ध सन् १८५४ से १८५६ तक होता रहा।

लड़ाई का आरंभ डेन्यूब-नदी से हुआ। डेन्यूब के किनारे तुर्कों के बहुत-से सुदृढ़ दुर्ग थे। उन दुर्गों के बल से तुर्कों ने रूसी सेना का आगे बढ़ना रोक दिया। अँगरेज़ी मित्र-मंडल ने वर्ना-नामक स्थान को जीत लिया। इस पर रूस ने माल्डेविया तथा वालेशिया से अपनी फ़ौज हटा ली। वर्ना-विजय के अनं-

तर मित्र-दल के जहाज़ों ने क्रीमिया पर आक्रमण किया। मित्र-मंडल की जहाज़ी सेना बीमार थी। उसकी रसद का भी प्रबंध ठीक न था। फिर भी सिवास्टोपल-नामक स्थान उसने घेर लिया। रूसियों से कई युद्ध हुए, जिनमें मित्र-मंडल की ही विजय हुई। १८५५ के सितंबर में क्रीमियन द्वीप अँगरेज़ों के क़ब्ज़े में आ गया। दोनों ही दलों के लोग थके हुए थे, अतः मार्च, १८५६ में पेरिस की संधि (Treaty of Paris) होकर क्रीमियन युद्ध समाप्त हो गया। संधि की एक मुख्य शर्त यह थी कि रूस काले सागर में अपने जहाज़ी बेड़े को नहीं रख सकता।

अभी लिखा जा चुका है कि क्रीमियन युद्ध के समय मित्र-दल की सेना में रसद आदि का प्रबंध अच्छा नहीं था। इस युद्ध के इतनी देर तक चलने का भी एक मुख्य कारण यही था। इस कारण ब्रिटिश जनता एवर्डीन के शासन से बहुत असंतुष्ट हो गई। इसका नतीजा यह हुआ कि पामर्स्टन महा-मंत्री बनाया गया, और लॉर्ड रसल ने उसका साथ दिया।

पामर्स्टन का सचिव-तंत्र राज्य (१८५५-१८५८)

१८५७ में पामर्स्टन ने अलग से अकेले ही चीन से युद्ध छेड़ दिया, और जनता ने उसका साथ दिया। १८५८ में उसने नेपोलियन तृतीय को ख़ुश करने के लिये पार्लियामेंट में एक प्रस्ताव पेश किया, जिसका आशय यह था कि नेपोलियन के विरोधी लोग इँगलैंड में न रह सकें, और उसके विरुद्ध घातक षड्यंत्र न रच सकें। पार्लियामेंट ने इस प्रस्ताव (Conspiracy to Murder Bill) को नहीं पास किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि पामर्स्टन ने अपना पद त्याग दिया। डर्बी तथा डिसरेली ने अपना मंत्रि-मंडल बनाना चाहा; पर वे सफल न हो सके। अतएव पामर्स्टन फिर महामंत्री हुआ।

इन दिनों योरप के बीच भयंकर और भारी परिवर्तन हो रहा था। इटली और जर्मनी संगठित हो रहे थे। १८४६ में सार्डीनिया का राजा विक्टर इमानुएल समग्र इटली का राजा बन बैठा। कूटनीति-निपुण प्रिंस बिस्मार्क ने प्रुशिया की शक्ति बहुत अधिक बढ़ाकर जर्मन-साम्राज्य की नींव डाली।

१८६१ में अमेरिका में गृह-युद्ध ठन गया। इँगलैंड के लोगों ने अमेरिका की दक्षिणी रियासतों को सहायता पहुँचाई। इससे उत्तरी अमेरिका के लोग इँगलैंड से नाराज़ हो गए। उन्होंने दक्षिणी रियासतों को फ़तह किया, और वहाँ से इँगलैंड में रुई का जाना बंद कर दिया। इससे लंकाशायर के कारख़ाने बंद हो चले। इँगलैंड पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। पर पामर्स्टन ने यह सारी समस्या बहुत ही चतुरता से हल कर ली। १८६० में कोंडन ने फ़्रांस के साथ व्यापारिक संधि की। इस संधि के अनुसार फ़्रांस ने भी स्वतंत्र व्यवसाय के क्षेत्र में क़दम रक्खा। ग्लैडस्टन ने आय-व्यय का बहुत ही उत्तम प्रबंध किया। इँगलैंड दिन-दिन समृद्ध होता जा रहा था, अतएव नवीन राज्य-कर लगाए विना ही राज्य की आय दिन-ब-दिन बढ़ रही थी। ऑक्टोबर, १८६५ को, ८० वर्ष की आयु में, पामर्स्टन परलोक सिधारा। पामर्स्टन की इच्छा-शक्ति बहुत ही प्रबल थी। अपने ही साहस तथा उत्साह से उसने उन्नति की। दयालुता तथा प्रेम-पूर्ण व्यवहार से वह सर्व-प्रिय बना। उसकी मृत्यु से इँगलैंड का एक शानदार आदमी चला गया; क्योंकि वह अपने समय का अद्वितीय व्यक्ति था।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८३७	विक्टोरिया का सिंहासनारोहण
१८३९	एक पेनी (इकन्नी) के टिकट का चलाना
१८४१	पील का सचिव-तंत्र राज्य

१८४६	कार्नलॉ (विदेशी ग़ल्ले पर कर) को हटाना। रसल का सचिव-तंत्र राज्य
१८४७	आयर्लैंड का दुर्भिक्ष
१८४८	योरप में राज्य-क्रांति। चार्टिस्टों की असफलता
१८५२	डर्बी-डिसरेली का सचिव-तंत्र राज्य
१८५३	एबर्डीन का सम्मिलित सचिव-तंत्र राज्य
१८५४	क्रीमियन युद्ध का आरंभ
१८५५	पामर्स्टन का सचिव-तंत्र राज्य
१८५६	पेरिस की संधि
१८५७	चीन-युद्ध
१८५६	पामर्स्टन का द्वितीय सचिव-तंत्र राज्य
१८६१	अमेरिका का गृह-युद्ध
१८६५	पामर्स्टन की मृत्यु

चतुर्थ परिच्छेद

विक्टोरिया—ग्लैडस्टन तथा डिसरेली

(१८६५—१८८६)

रसल का सचिव-तंत्र राज्य

(१८६५-१८६६)

पामर्स्टन की मृत्यु होने पर रसल प्रधान-मंत्री बना। उसने ग्लैडस्टन को पार्लियामेंट का नेता चुना। ग्लैडस्टन के चुने जाने का एक यह भी मतलब था कि अब इँगलैंड में राजनीतिक सुधार किए जानेवाले थे। राज्य में दिन-दिन मध्यम श्रेणी के लोगों की शक्ति कम हो रही थी। शासन लोक-तंत्र बन रहा था। इस कार्य में पूरे २० साल लगे।

पार्लियामेंट-संबंधी संशोधनों पर लोग बड़ी गंभीरता के साथ ग़ौर से विचार कर रहे थे। १८३२ के क़ानून से रोडिकल लोग बहुत ही असंतुष्ट थे। इस पर भी जनता का झुकाव सुधारों की ही ओर था। यही कारण है कि रसल ने बहुत-से सुधार किए, और डिस-रेली ने उन सुधारों को १८५९ में निश्चित रूप दे दिया। ग्लैड-स्टन ने १८६६ में एक रिफ़ार्म-बिल पेश किया। पामर्स्टन के साथियों ने इस बिल का विरोध किया, और वह पास न हो सका। फल यह हुआ कि रसल ने प्रधान-मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

डर्बी और डिसरेली का तृतीय सचिव-तंत्र राज्य
(१८६६-१८६८)

पार्लियामेंट या लोक-सभा में अपना बहुमत न होने पर भी डर्बी और डिसरेली ने अपना सचिवमंडल बनाने की चेष्टा की। पामर्स्टन के साथियों ने इसमें भी साथ न दिया। इस पर ब्राइट ने इस दल के लोगों को गुफा-निवासी दल (Adullamites) के नाम से पुकारना शुरू किया।

गुफा-निवासियों के अलावा उसके आगे कुछ और भी कठि-नाइयाँ थीं, जो कि भुलाई नहीं जा सकतीं। उन कठिनाइयों में से कुछ ये थीं—

(१) योरप में आस्ट्रिया तथा प्रुशिया का युद्ध हो गया था।

(२) खेती की हालत दिन-दिन ख़राब हो रही थी; क्योंकि पशुओं में प्लेग फैल गया था।

(३) १८६६ की दुर्घटना से व्यापार ढीला हो रहा था।

(४) श्रमिकों को फ़ैक्टरी में काम करने से संतोष न था। ये क़ानून के द्वारा अपने कष्टों को दूर करवाना चाहते थे।

(५) जमैका के आदिम निवासियों ने विद्रोह कर दिया था।

(६) जनता पार्लियामेंट का सुधार करवाना चाहती थी।

ऊपर लिखी अवस्थाओं को सामने रखकर डर्बी और डिसरेली ने १८६७ में एक नवीन सुधार क़ानून का प्रस्ताव (A New Reform Bill) पेश किया । इस सुधार के नियमों को देखते ही बहुत-से उसके साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया । सुधार-नियम के अनुसार इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड के क़स्बों में छोटे-छोटे घरों के मालिकों को भी प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार मिला जाता था । १० पौंड किराया और १२ पौंड लगान देनेवाला भी प्रतिनिधि चुन सकता था । भिन्न-भिन्न नगरों के प्रतिनिधियों को नियत किया गया । १० हज़ार से कम आबादीवाले शहरों को एक ही प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला । सुधार-नियम के अनुसार लीड्स, लिवरपूल, मंचेस्टर, बर्मिंघम और ग्लासगो की शक्ति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई ; क्योंकि इन नगरों को लोक-सभा के एक-तिहाई प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल गया । लॉर्ड सैलिसबरी के विरोध करने पर भी ये सुधार-नियम पास हो गए ।

इन्हीं दिनों आयर्लैंड के अंदर फिर हलचल शुरू हुई । १८६३ में आयरिश तथा आयरिश-अमेरिकनों ने फ़ीनियंस (Finians) नाम की एक गुप्त समिति स्थापित की। उसका मुख्य उद्देश्य आयर्लैंड में प्रतिनिधि-तंत्र राज्य स्थापित करना था। १८६७ में आयर्लैंड के अंदर एक विद्रोह हो गया। लंदन की क्लार्केन्वैल-नामक जेल की इमारत जला दी गई। इस पर ग्लैडस्टन ने आयरिश सुधारों के लिये प्रयत्न शुरू किया, और किसी-न-किसी तरह विद्रोह को शांत किया । डर्बी बीमार तथा बुड्ढा था । सारा काम डिसरेली ही करता था । ग्लैडस्टन ने जब आयरिश-सुधार का प्रश्न अपने हाथ में लिया, तब डिसरेली को पार्लियामेंट का बहुमत न मिल सका ।

फिर से पार्लियामेंट के मेंबरों का निर्वाचन किया गया; परंतु उसको सफलता न मिली। इस पर उसने इस्तीफ़ा दे दिया।

ग्लैडस्टन का प्रथम सचिव-तंत्र राज्य

(१८६८-१८७४)

ग्लैडस्टन लिबरल-दल का था, अतः उसके सचिव-तंत्र राज्य में रेडिकल-दल के लोग भी सम्मिलित हो गए। जॉन ब्राइट ने पूरे तौर से ग्लैडस्टन का साथ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि छः बरसों तक लगातार निम्न-लिखित सुधार किए गए—

(१) आयर्लैंड में जनता का अधिक भाग कैथलिक था। फिर भी उसको धार्मिक स्वतंत्रता नहीं मिली थी। १८६९ में एक नियम पास किया गया, जिसके अनुसार उसे भी कुछ-कुछ धार्मिक स्वतंत्रता दी गई।

(२) आयर्लैंड-निवासियों को अँगरेज़ों के बनाए हुए ज़मीन के क़ानूनों से बहुत ही कम संतोष था। लगान न देने में उपरा-चढ़ी प्रचलित थी। स्पर्द्धा (Competition) में आकर दरिद्र किसान उपज से भी अधिक लगान देना मंज़ूर कर लेते थे। कारण, ऐसा करने के सिवा उनके जीवन-निर्वाह का और सहारा ही क्या था? आलू-दुर्भिक्ष के बाद तो किसानों तथा ज़मींदारों के संबंध भी ख़राब हो गए। दोनों में दिन-रात झगड़ा होता रहता था। इन दोषों को दूर करने के लिये १८७० में ग्लैडस्टन ने आयरिश-भूमि-क़ानून (Irish Land Act) पास किया। इसके अनुसार ज़मींदार को किसानों के तईं भूमि पर से हटाते समय वह सब रक़म देनी पड़ती थी, जो कि वे भूमि की उन्नति करने में ख़र्च करते थे। इस नियम से किसानों की कुछ-कुछ रक्षा हुई।

(३) सन् १८७० में मंत्रि-मंडल ने प्रारंभिक शिक्षा-नियम (Elementary Education Act) पास किया। इसके अनुसार बालकों

की प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। ज़िलों की स्थानीय संस्थाओं को शिक्षा-कर लगाने की आज्ञा दी गई। इसी शिक्षा-कर के सहारे प्रारंभिक स्कूल चलाए गए।

(४) युद्ध-सचिव कार्डवेल (Cardwell) ने १८७१ में बहुत-से सैनिक सुधार किए। इन सुधारों के अनुसार स्थायी सेना के साथ-साथ कुछ स्वयंसेवकों की सेना तथा मिलीशिया फ़ौज रखना आवश्यक हो गया। १८७२ में बैलट ऐक्ट (Ballot Act) पास किया गया। इसके अनुसार लोक-सभा के सदस्यों का चुनाव पर्चियों के द्वारा किया जाने लगा। १८७३ म लॉर्ड सेलबोर्न (Lord Selbourne) ने जुडीकेचर-ऐक्ट (Judicature Act) पास किया। इसके अनुसार इँगलैंड में हाईकोर्ट स्थापित किया गया।

फ़्रांस तथा जर्मनी का युद्ध—जर्मनी की शक्ति दिन-दिन बढ़ती ही जाती थी। बिस्मार्क-जैसे राजनीतिज्ञ के नेतृत्व में उसने आस्ट्रिया को नीचा दिखाया। दैवसंयोग-वश फ़्रांस ने १८७० में जर्मनी से अचानक युद्ध ठान दिया। सीडान के युद्ध में फ़्रांस का राजा अपनी सारी सेना के साथ क़ैद हो गया। इस पर फ़्रांस ने अपने को प्रतिनिधि-तंत्र राष्ट्र के रूप में घोषित किया, और युद्ध पहले की तरह जारी रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि जर्मन सेनाएँ पेरिस में जा पहुँचीं। फ़्रांस की बहुत ही दुर्गति हुई। फ़्रांस को अलसास और लोरन के प्रांत जर्मनी को देने पड़े। युद्ध का सारा ख़र्च जर्मनी ने वसूल किया। इससे फ़्रांस की शक्ति बहुत ही क्षीण हो गई।

इस युद्ध में इँगलैंड ने भाग नहीं लिया। इस तटस्थता का परिणाम इँगलैंड के हक़ में अच्छा नहीं हुआ। रूस ने क्रीमिया-युद्ध की शर्तें तोड़कर काले सागर में अपने जहाज़ों को रखना शुरू किया। १८७२ में संयुक्त-राज्य अमेरिका ने अलबामा जहाज़ का पूरा

हर्जाना उससे ले लिया। इन सब ऊपर लिखी घटनाओं से लोग ग्लैडस्टन के शासन से असंतुष्ट हो गए। अब ये सुधारों से बहुत घबराने लगे। इत्तिफ़ाक़ से ग्लैडस्टन ने आयर्लैंड में एक विश्व-विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव का समर्थन जब उसके साथियों तक ने न किया, तो उसने इस्तीफ़ा दे दिया। डिसरेली ने अपना मंत्रि-मंडल बनाया। इस पर ग्लैडस्टन ने फिर काम करना शुरू किया; परंतु काम सफलता-पूर्वक न चला। जनवरी, १८७० में उसने पार्लियामेंट के संगठन को तोड़ दिया, और नए निर्वाचन के लिये कहा। नवीन निर्वाचन में अनुदार दल के लोगों का बहुमत हुआ। इस कारण ग्लैडस्टन ने पूर्ण रूप से इस्तीफ़ा दे दिया।

डिसरेली का सचिव-तंत्र राज्य
(१८७४-१८८०)

डिसरेली ने बहुत सावधानी से शासन का काम चलाया। १८७४ में वह बीकंस-फ़ील्ड का अर्ल बनाया गया, और पार्लिया-मेंट का नेता सर स्टैक्फ़ोर्ड नार्थकोट नियत किया गया। उसने आयर्लैंड की कठिनाइयों को दूर करने का यत्न किया। आयरिश लोग स्वराज्य चाहते थे। चार्ल्स स्टीवार्ट पार्नेल ने लोगों को बुलाकर जमा किया, और स्वराज्य प्राप्त करने के लिये उत्साह दिया। इससे आयर्लैंड में स्वराज्यवादियों का एक दल बन गया, जिसके सभ्यों ने आपस में काम करना शुरू कर दिया। इन लोगों ने पार्लियामेंट के नाक में दम कर दिया। इन लोगों ने पुरानी प्रथाओं को तोड़कर पार्लियामेंट को रात-रात-भर काम करने के लिये विवश किया, और कुछ भी काम न करने दिया। पार्नेल ने लैंडलीग नाम की एक और संस्था खड़ी की; और ज़मीन पर केवल कृषकों का ही स्वत्व स्थापित करने का प्रयत्न करना शुरू किया। किसानों को खूब भड़काया

गया। इससे आयर्लैंड में स्थान-स्थान पर भयंकर उत्पात होने लगे, परंतु अँगरेज़-राजकर्मचारियों ने इधर कुछ भी ध्यान नहीं दिया।

रूस-टर्की का युद्ध (१८७७-१८७८)—टर्की के कुप्रबंध से फिर योरप के राष्ट्रों में विरोध उठ खड़ा हुआ। टर्की ने ईसाई-रियासतों के अंदर अत्याचार शुरू किया। इससे वे विद्रोही बन गईं। रूस ने इन रियासतों को खुल्लमखुल्ला सहायता पहुँचाई। शुरू में बलगेरिया ने विद्रोह किया ; परंतु टर्की ने इस विद्रोह को शीघ्र ही दबा दिया। फिर सर्विया तथा मांटीनिग्रो ने सुलतान के विरुद्ध अपने हथियार उठाए ; परंतु वे भी सफल न हुए। १८७८ में रूस ने ईसाई रियासतों को सहायता पहुँचाई। बलगेरिया ने टर्की को परास्त करके कुस्तुंतुनिया पर अपनी सेनाओं को चढ़ा दिया।

कुस्तुंतुनिया पर रूस का प्रभुत्व अँगरेज़ों को पसंद न था। बीकंस-फ़ील्ड ने शीघ्र ही अपना जहाज़ी बेड़ा मारमोरा-समुद्र की ओर रवाना किया, और माल्टा की ओर भारतीयों की सेना भेजी। इस पर रूस ने सैनूस्टिफ़ैनो में टर्की से संधि कर ली। लॉर्ड सैलिसबरी ने इस संधि को न मानने के लिये ब्रिटन को प्रेरित किया। उसने कहा कि संधि योरप के राष्ट्रों की कांग्रेस के सामने होनी चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि बर्लिन में योरप के राष्ट्रों की महासभा हुई। इसमें बीकंस-फ़ील्ड तथा सैलिसबरी इँगलैंड के प्रतिनिधि होकर पहुँचे। बर्लिन की संधि के अनुसार बालकन-रियासतों के झमेलों को कुछ समय के लिये बंद कर दिया गया। बलगेरिया को सर्वथा स्वतंत्र कर दिया गया। पूर्वी रूमेलिया को भी कुछ-कुछ स्वतंत्रता दे दी गई। मांटीनिग्रो, सर्विया तथा रोमानिया बिलकुल स्वतंत्र कर दिए गए। आस्ट्रिया को वास्नियाँ मिला, और भू-खंड रूस तथा ग्रीस के हाथ आए। साइप्रस द्वीप को अँगरेज़ों ने हथिया लिया। इससे लघु एशिया पर अँगरेज़ों का दबदबा जम गया।

मिसर पर दो राष्ट्रों की हुकूमत (१८७६)—१८७६ में बीकंस-फ़ील्ड ने फ़्रांस से संधि की, और दोनों ही ने आपस में मिलकर मिसर के ऊपर हुकूमत करने का निश्चय किया। मिसर का असली राजा ख़दीव फ़िज़ूलख़र्च था। उसको अपने देश के हित की कुछ भी परवा न थी। उसने बेवकूफ़ी से स्वेज़-नहर के अपने सारे हिस्से अँगरेज़ों के हाथ बेच डाले। इससे अँगरेज़ों का स्वेज़ पर अखंड प्रभुत्व स्थापित हो गया।

बीकंस-फ़ील्ड विदेशी झगड़ों में ऐसा डूब गया कि उसने घर का कुछ भी ख़याल न किया। ग्लैडस्टन ने उसकी वैदेशिक नीति को देश के लिये हानिकर बतलाया। इसका परिणाम यह हुआ कि १८८० में पार्लियामेंट का नया निर्वाचन हुआ, जिसमें बीकंस-फ़ील्ड का बहुमत न था। इस पर उसने इस्तीफ़ा दे दिया, और ग्लैडस्टन ने शासन-भार अपने हाथ में लिया।

ग्लैडस्टन का सचिव-तंत्र राज्य (१८८०-१८८६)

ग्लैडस्टन ने राज्य का काम सँभालते ही अपना सारा ध्यान आयर्लैंड की ओर लगाया। उसने १८७० की तरह ही १८८१ में फिर से आयरिश लैंड-ऐक्ट पास किया। लगान का निश्चय करने के लिये भौतिक न्यायालय स्थापित किए। फिर भी आयरिश स्वराज्यवादियों ने लोक-सभा को पहले ही की तरह तंग करना शुरू किया। इससे परेशान होकर अँगरेज़-राजकर्मचारियों ने पार्नेल तथा उसके साथियों को क़ैद कर दिया। कुछ ही समय के बाद उसको फिर छोड़ दिया गया। इन्हीं दिनों आयर्लैंड के सचिव लॉर्ड फ़्रेडरिक् कैवांडिश और उनके सेक्रेटरी टी० एच्० बर्क को डब्लिन में किसी ने मार डाला। इन हत्याओं को रोकने के लिये **हत्याप्रति-रोधक नियम** (Prevention of Crimes Bills) पास किया गया। आयरिश सभ्यों का वाद-विवाद रोकने के लिये एक नया नियम पास

किया गया। इसके अनुसार पार्लियामेंट का बहुमत जब चाहे वाद-विवाद को बंद कर सकता था। इस नियम से आयरिश सदस्य चिढ़ गए, और उन्होंने राज्य का खुले तौर पर विरोध करना शुरू किया।

वैदेशिक हलचल ने फिर ग्लैडस्टन के मंत्रि-मंडल को परेशान कर डाला। भारत और अफ़ग़ानिस्तान का युद्ध छिड़ चुका था, जिसमें अँगरेज़ों को अफ़ग़ानिस्तान से पीछे हटना पड़ा। दक्षिण-आफ्रिका में बहुत-से आंदोलन हुए। ट्रांसवाल ने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा बड़ी ही मुशकिल से की। अरबीपाशा मिसर में विद्रोही हो गया। १८८२ में इँगलैंड ने मिसर को सेनाएँ भेजीं, और अरबीपाशा को बुरी तरह से शिकस्त दी। इससे मिसर पर अँगरेज़ों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। दैव-संयोग से मेंहदी के साथियों में आपस में ही फूट पड़ गई, और इससे सूडान की गड़बड़ भयंकर रूप धारण न कर सकी। इन्हीं दिनों रूस ने अफ़ग़ानिस्तान के रास्ते भारत पर चढ़ाई करने की तैयारी की। १८७८ में रूस और अँगरेज़ों की लड़ाई छिड़ ही जाती, पर बड़ी मुशकिल से मामला तय हो गया।

१८८४ में ग्लैडस्टन ने अन्य दरिद्र लोगों को निर्वाचन का अधिकार देने के लिये एक प्रस्ताव पेश किया। परंतु लॉर्ड-सभा ने अस्वीकृत कर दिया। ग्लैडस्टन ने कुछ समय के बाद फिर उसी प्रस्ताव को पेश किया, और अब की बार बड़ी मुशकिल से पास करवा लिया। इस क़ानून के अनुसार आबादी देखकर नगरों को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। लंदन-नगर के बाईस की जगह साठ और लिवरपूल तथा मंचेस्टर के नव-नव प्रतिनिधि हो गए। ग्लासगो तथा बर्मिंघम को सात-सात प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। इस प्रस्ताव से इँगलैंड में पूर्ण रूप से प्रजा-तंत्र राज्य स्थापित हो गया।

कंज़रवेटिव लोग ऊपर लिखे सुधार के विरुद्ध थे। उन्होंने आयरिश सभ्यों को अपनी ओर मिला लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जून, १८८५ में ग्लैडस्टन को इस्तीफ़ा देना पड़ा। नवंबर में लोक-सभा का नया निर्वाचन हुआ। आयरिश सभ्यों ने अपने वोट उदार-दल को दिए। इससे ग्लैडस्टन ने फिर राज्य का कार्य सँभाला। बहुत-से अँगरेज़ों ने ग्लैडस्टन का साथ नहीं दिया। जोज़फ़ चेंबरलेन निर्हस्तक्षेप-नीति के विरुद्ध था, अतः उसने अपना एक नया दल बना लिया।

एप्रिल, १८८६ में ग्लैडस्टन ने आयर्लैंड को स्वराज्य दे देने के लिये पार्लियामेंट में प्रस्ताव पेश किया। उदार-दल के ९३ सभ्यों ने अपने को लिबरल यूनियनिस्ट (Liberal Unionists) के नाम से प्रसिद्ध किया, और आयर्लैंड को स्वराज्य देने के विरुद्ध हो गए। ग्लैडस्टन ने पार्लियामेंट को तोड़ दिया, और नए सिरे से निर्वाचन करवाया।

जूलाई, १८८६ में पार्लियामेंट का फिर निर्वाचन हुआ। इँगलैंड ने पामर्स्टन के युग से निकलकर ग्लैडस्टन के युग में प्रवेश किया था, और इसके बाद अब उसने एक और नया रूप रख लिया। राजनीतिकों के नए-नए दल बनते जाते थे, जिनके अपने-अपने ढंग के नए-नए विचार थे। औपनिवेशिक तथा वैदेशिक नीति ने मुख्य रूप धारण किया; क्योंकि इँगलैंड का साम्राज्य बहुत अधिक बढ़ गया था। नई लोक-सभा में ग्लैडस्टन के दल के सदस्य न थे। अतः उसने इस्तीफ़ा दे दिया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८६६	डर्बी-डिसरेली का तृतीय सचिव-तंत्र राज्य
१८६७	द्वितीय रिफ़ार्म ऐक्ट
१८६८	ग्लैडस्टन का प्रथम सचिव-तंत्र राज्य

१८७०-७१	फ्रैंको-जर्मन-युद्ध
१८७४	डिसरेली का सचिव-तंत्र राज्य
१८७८	बर्लिन की संधि। अफ़ग़ान-युद्ध
१८८०	ग्लैडस्टन का द्वितीय सचिव-तंत्र राज्य
१८८२	मिसर पर अँगरेज़ों का आधिपत्य
१८८४	तृतीय रिफ़ार्म-ऐक्ट
१८८६	आयरिश स्वराज्य को पास करवाने में ग्लैडस्टन की असफलता

पंचम परिच्छेद

विक्टोरिया—स्वराज्य तथा साम्राज्य (१८८६—१९०१)

(१) सैलिसबरी का यूनियनिस्ट सचिव-तंत्र राज्य (१८८६-१८९२)

विक्टोरिया के अंतिम १५ वर्षों तक, १८९२ तथा १८९५ को छोड़ करके, ब्रिटिश-शासन में यूनियनिस्ट-दल की ही प्रधानता रही। १८८६ तथा १८९२ के बीच में सचिव-मंडल के अधिक सभ्य अनुदार-दल के यूनियनिस्टों में से ही थे। केवल हार्टिंगटन तथा चैंबरलेन ही उदार-दल के यूनियनिस्टों में से थे। प्रधान मंत्री लॉर्ड सैलिसबरी ने स्वयं ही परराष्ट्र-सचिव का काम करना शुरू किया। आयरिश सचिव जे० बाल्फ़ोर था। जी० जे० गोशन ने चांसलर का पद ग्रहण किया। आयर्लैंड में पहले ही की-सी अशांति विद्यमान थी। पार्नल ने ज़मीन के लगान की अधिकता के विषय में शोर मचाना शुरू किया। उसके साथियों ने युद्ध का उपाय (Plan of campaign)-नामक एक संगठन बनाया, और ज़मींदारों को लगान न देने के लिये असामियों को उत्तेजित किया। ज़मींदारों ने भी असामियों को अपनी ज़मीनों से निकालना शुरू किया।

इससे सारे आयलैंड में स्थान-स्थान पर विद्रोह शुरू हो गया। बालफ़ोर ने बड़ी चतुरता से सारी गड़बड़ सँभाली, और आयलैंड को पूर्ण रूप से ठंडा कर दिया। पार्नेल के सिर 'टाइम्स' पत्र ने बहुत-से दोष मढ़े, और आयलैंड की हत्याओं का एक-मात्र कारण उसी को बतलाया। जाँच के लिये पार्नेल के संबंध में कमीशन बिठाई गई। विचार में पार्नेल बेदाग़ छूट गया।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद पार्नेल पर असदाचारी होने का दोष लगाया गया। फिर भी १८९० में आयरिश निर्वाचकों ने उसी को पार्लियामेंट के लिये अपना प्रतिनिधि चुना। यह अँगरेज़ों को बहुत बुरा लगा। आयरिश लोग भी धीरे-धीरे अँगरेज़ों के कहने में आ गए, और पार्नेल के विरुद्ध होने लगे। उसने भी इन विघ्नों का अपूर्व वीरता के साथ सामना किया। १८९१ में वह परलोक सिधारा। उसकी मृत्यु के बाद ही आयलैंड दो भागों में विभक्त हो गया। कुछ लोग पार्नेल के पक्ष में थे, और कुछ पार्नेल के विरुद्ध। बड़ी कठिनता से जॉन रेडमंड ने आयरिश लोगों को लड़ने से रोका। इस घटना का यह परिणाम हुआ कि स्वराज्य का आंदोलन कुछ समय तक धीमा पड़ गया।

वैदेशिक नीति (१८८६-१८९२)—सैलिसबरी का ध्यान वैदेशिक नीति पर बहुत अधिक था। मिसर के कारण इँगलैंड तथा फ़्रांस के संबंध दिन-दिन खिंच रहे थे। जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली ने आपस में एक संगठन बना लिया, और फ़्रांस रूस से मिल गया। इँगलैंड योरप के झगड़ों से सर्वथा अलग ही रहना चाहता था; क्योंकि उसको दिन-रात अपने बढ़े हुए भारी साम्राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने का भय बना रहता था। इँगलैंड, मिसर के झगड़े के कारण, फ़्रांस से और भारतवर्ष की रक्षा के लिये रूस से दोस्ती नहीं कर सकता था। १८९० में

इँगलैंड ने जर्मनी से संधि कर ली, जिससे आफ्रिका-संबंधी झगड़ों का निपटारा हो गया। जंजीबार नाम का प्रदेश जर्मनी ने इँगलैंड को दे दिया, और इँगलैंड से हैलीगोलैंड नाम का द्वीप ले लिया। इससे जर्मनी तथा इँगलैंड के झगड़े कुछ कम हो गए।

गृह-नीति—सैलिसबरी ने बहुत-से घरेलू सुधार किए। १८८७ में उसने रानी विक्टोरिया की जुबिली की। १८८८ में एक राजनियम बनाकर स्थानीय संस्थाओं में जनता के अधिकार बढ़ा दिए। गोशन ने जातीय ऋण पर २$\frac{१}{२}$ ब्याज की दर कर दी। १८८९ में एक स्कीम तैयार की गई, जिसके अनुसार अँगरेज़ों का जहाज़ी बेड़ा और भी अधिक बढ़ा दिया गया।

सैलिसबरी के शासन के प्रति लोगों का विरोध दिन-दिन बढ़ने लगा। ग्लैडस्टन ८० वर्ष का बुड्ढा हो चुका था। फिर भी उसने आयर्लैंड को स्वराज्य देने का प्रबल प्रयत्न किया। सन् १८९२ के नए निर्वाचन में उसने बड़ी भारी कोशिश की। उसको ४० सदस्य अधिक मिल गए, इस कारण सैलिसबरी ने इस्तीफ़ा दे दिया।

(२) ग्लैडस्टन का चतुर्थ सचिव-तंत्र राज्य

(१८९२-१८९४)

बहुमत के अधिक न होने पर भी ग्लैडस्टन ने बहुत ही सावधानी तथा धीरता से काम चलाया। १८९३ में उसने एक नया ही आयरिश स्वराज्य-संबंधी प्रस्ताव पार्लियामेंट के आगे रक्खा, और वहाँ पास कराकर लॉर्ड-सभा में भेज दिया। लॉर्ड-सभा ने इस प्रस्ताव को नामंजूर किया। ग्लैडस्टन के मंत्रि-मंडल ने लॉर्ड-सभा के विरुद्ध आंदोलन करना शुरू किया, और यह शोहरत कर दी कि इस सभा को जनता की इच्छा का कुछ भी ख़याल नहीं है। १८९४ में ग्लैडस्टन ने इस्तीफ़ा दे दिया, और इसके तीन वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु भी हो गई। रानी ने रोज़बरी को महामंत्री चुना।

इसका सचिव-तंत्र राज्य केवल एक ही वर्ष तक रहा। इसने इस एक वर्ष में ही बहुत-से प्रस्ताव पेश किए; परंतु बहुत ही थोड़े प्रस्ताव पास हुए। सर विलियम हार्कोर्ट ने बहुत ही सफलता से बजट बनाया, और रोज़बरी ने वैदेशिक नीति में अपूर्व चतुरता प्रकट की। इसने स्वराज्य का प्रस्ताव पार्लियामेंट में नहीं पेश किया। आयरिश सभ्यों ने चिढ़कर इसका साथ नहीं दिया। जून, १८९५ में इसको भी इस्तीफ़ा देना पड़ा। लॉर्ड सैलिसबरी तीसरी बार महामंत्री बना।

(३) सैलिसबरी का तृतीय सचिव-तंत्र राज्य
(१८९५-१९०१)

अनुदार तथा यूनियनिस्ट-दल के लोग धीरे-धीरे एक ही विचार के होते जाते थे, और इस प्रकार वे एक ही दल में परिणत हो रहे थे। लॉर्ड सैलिसबरी महामंत्री होने के साथ ही परराष्ट्र-सचिव भी बना, और बालफ़ोर को पार्लियामेंट का नेता नियत किया। चेंबरलेन उपनिवेश-सचिव के पद पर नियुक्त हुए। रानी की मृत्यु होने तक सैलिसबरी ही राज्य-कार्य चलाता रहा। इन्हीं दिनों सर हैनरी केंबल-बैनरमैन ने धीरे-धीरे ऊपर उठना शुरू किया।

वैदेशिक समस्याओं ने फिर प्रबल रूप धारण किया। तुर्कों ने आर्मीनिया में भयंकर अत्याचार किए। इससे अँगरेज़ों का ख़ून उबल उठा। जनता ने इसमें राज्य के हस्तक्षेप करने के लिये पुकार मचाई। परंतु अन्य कोई भी राज्य इँगलैंड को सहायता देने के लिये तयार न था। रूस तुर्कों से मित्रता का भाव दिखा रहा था, और जर्मनी इँगलैंड को सहायता न देना चाहता था। क्रीट-द्वीप ने भी तुर्कों से अपने को छुड़ाना चाहा; परंतु छुड़ा न सका। इस पर यूनान ने क्रीट को सहारा दिया। परंतु वह भी तुर्कों से पराजित हुआ। तब योरपियन जातियों ने हस्तक्षेप किया, और क्रीट को तुर्कों के पंजे से छुटकारा मिल गया।

१८९५ में इँगलैंड तथा वैनजुला के बीच सीमा-संबंधी झगड़ा उठ खड़ा हुआ। अमेरिका ने झगड़ा निपटाना चाहा। इस पर इँगलैंड और अमेरिका की भी अनबन हो गई। बड़ी मुशकिल से झगड़ा तय हुआ, और इँगलैंड को बहुत-सी भूमि मिली। दक्षिणी आफ्रिका में, ट्रांसवाल के अंदर, गड़बड़ मच गई। जर्मनी ने ट्रांसवाल को सहायता पहुँचाने का यत्न किया। इस पर ब्रिटिश जनता भड़क उठी। फ़्रांस के साथ भी इँगलैंड का संबंध दिन-दिन बिगड़ रहा था।

मिसर में लॉर्ड क्रोमर ने शांति स्थापित की। लॉर्ड किचनर ने वहाँ के लोगों की एक अच्छी सेना तैयार की। १८९८ में अँगरेज़ों ने सूडान को जीतने का इरादा किया, और उसे शीघ्र ही जीत भी लिया। इस पर फ़्रांस का क्रोध बहुत अधिक बढ़ गया। यदि कहीं रूस फ़्रांस का साथ देने के लिये तैयार हो जाता, तो दोनों देशों में शीघ्र ही लड़ाई छिड़ जाती। फ़्रांस ने लाचार होकर, १८९९ में, इँगलैंड से संधि कर ली, और मिसर पर अँगरेज़ों का आधिपत्य स्वीकार किया।

१८९४ तथा १८९५ में चीन तथा जापान के बीच युद्ध छिड़ गया। जापान ने चीन को शीघ्र ही परास्त किया, और यह प्रमाणित कर दिया कि जापान भी एक महाशक्ति है, जो योरप के राष्ट्रों से किसी तरह भी कम नहीं। योरपियन जातियों की भी दृष्टि चीन की ओर गई, और सभी ने चीन को हड़प जाने का इरादा किया। रूस, फ़्रांस तथा जर्मनी ने चीन से व्यापार का अधिकार प्राप्त किया। इँगलैंड ने भी चीन में योरपियन जातियों को बेरोक-टोक खुल्लमखुल्ला आने दिया। रूस ने मंचूरिया को हथिया लिया, और ब्रिटन तथा जर्मनी ने कुछ चीनी बंदरगाह अपने क़ब्ज़े में कर लिए। १९०० में चीनियों ने योरपियनों पर आक्रमण कर दिया, और अपने देश से उनको बाहर निकालने की चेष्टा की।

योरपियन जातियों की विजय हुई, और चीन को पिकिन में संधि करनी पड़ी।

१८९७ में रानी की डायमंड-जुबिली मनाई गई। बोअर-युद्ध समाप्त होनेवाला ही था कि १९०१ में रानी की मृत्यु हो गई। तब रानी का बड़ा पुत्र, एडवर्ड सप्तम के नाम से, राजगद्दी पर बैठा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८८६	सैलिसबरी का यूनियनिस्ट सचिव-तंत्र राज्य
१८८७	रानी की जुबिली
१८८८	पार्नेल के संबंध में कमीशन बैठना
१८९२	ग्लैडस्टन का चतुर्थ सचिव-तंत्र राज्य
१८९४	ग्लैडस्टन का इस्तीफ़ा। लॉर्ड रोज़बरी का सचिव-तंत्र राज्य
१८९५	सैलिसबरी का तृतीय सचिव-तंत्र राज्य
१८९८	सूडान की विजय
१८९९	बोअर-युद्ध का आरंभ
१९०१	रानी की मृत्यु